प्रकाशक
राजस्थानी शोध-संस्थान
जोधपुर

परम्परा—भाग ६-७

मूल्य ७ रुपये

मुद्रक
हरिप्रसाद पारीक
साधना प्रेस जोधपुर

हमारे देश में ऐसे विचारवान् लोग हैं जो सलाह देते हैं कि पहले सारा-का-सारा आवश्यक साहित्य तैयार हो जाय और तब हम अपनी देशी भाषाओं को अधिकार देने की बात सोचें। मैं अपनी सारी शक्ति से इस बात का प्रतिवाद करता हूँ। यह सोचने का गलत ढंग है और अपने प्रति विश्वास के अभाव का द्योतक है। कविगुरु रवीन्द्रनाथ ने कहा है कि रास्ते पर निकल पड़ो। रास्ता ही तुम्हें रास्ता बतायेगा। हमें देशी भाषाओं का प्राप्य अधिकार उन्हें तुरन्त दे देना चाहिए। काम करते-करते जो साहित्य-निर्माण होगा वही सही और प्रामाणिक होगा।

—हजारीप्रसाद द्विवेदी
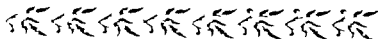
राजस्थानी साहित्य के उद्भव तथा विकास पर विचार करते समय विद्वानों ने आधुनिक भारतीय भाषाओं की परम्परा में उसे यथोचित महत्त्व दिया है। पर यह विचार प्रायः प्राचीन राजस्थानी काव्य की विशेषताओं के आधार पर ही होता रहा है। क्योंकि वीर, शृंगार एवम् भक्ति-रस की सृष्टि करने वाले कुछ प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थों का जो सम्पादन एवम् साहित्यिक तथा ऐतिहासिक मूल्यांकन यथेष्ट श्रम और सूझ-बूझ के साथ किया गया उससे राजस्थानी काव्य-सौष्ठव में निहित रूप तथा तत्वगत विशेषताओं को ही बारीकी से हृदयंगम करने का अवसर मिला।

पर इस विपुल काव्य-निधि के अतिरिक्त राजस्थानी गद्य साहित्य की भी बहुत प्राचीन और समृद्ध परम्परा रही है। उसका प्रकाशन तथा समुचित अध्ययन अभी नहीं हो सका जिसके फलस्वरूप यह गलत धारणा बन गई कि इस भाषा का गद्य-साहित्य नगण्य अथवा गौण है।

प्राचीन राजस्थानी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज और उसके विस्तृत अध्ययन से पता लगता है कि इस भाषा का गद्य साहित्य भी उतना ही प्राचीन और विविधतापूर्ण है जैसा कि अन्य कई आधुनिक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होता है।

राजस्थानी गद्य में यहाँ के समाज की राजनैतिक सामाजिक धार्मिक एवम् नैतिक मान्यताओं का युगों-युगों से कलात्मक अभिव्यक्ति मिलती रही है। बात ख्यात पीढ़ी वंशावली टीका वचनिका हाल पट्टा बही सिलोका खत आदि के माध्यम से समाज के संघर्षपूर्ण तत्वों सौन्दर्य-भावनाओं सृजनात्मक प्रवृत्तियों तथा अन्य कितने ही कार्य-व्यापारों का सुन्दर चित्रण हुआ है।

इसके अतिरिक्त स्थानीय राज्यों में राजकीय कार्यों के लिए भी बहुत समय तक इसी भाषा का प्रयोग होता रहा है जिससे हमें भाषा की जीवन्त शक्ति और समाजसापेक्ष अभिव्यक्ति-क्षमता का सहज ही अनुमान हो सकता है।

इस विविधतापूर्ण गद्य साहित्य में बातों का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। कीट-पतंग और पशु-पक्षी तथा पेड़-पौधों से लेकर महान् ऐतिहासिक घटनाओं इतिहास प्रसिद्ध पात्रों प्रेम-गाथाओं तथा पौराणिक आख्यानों तक को इन बातों में स्थान मिला है।

ऐसी हजारों छोटी-बड़ी बातें उपलब्ध हो सकती हैं, जिनमें कई बहुत छोटी और कई इतनी बड़ी कि उनका लिपिबद्ध रूप सैकड़ों पृष्ठों में जाकर समाप्त हो। बातों के इस विशाल साहित्य को मोटे तौर पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। एक तो वे बातें जिनका लिपिबद्ध स्वरूप बन गया है और जिनकी भाषा-शैली में स्थायी रूपगत विशिष्टता प्रकट होती है। दूसरी बहुत बड़ी संख्या उन बातों अथवा लोक-कथाओं की है जिनका कोई एक शैलीगत रूप लिपिबद्ध नहीं हो सका पर वे अभी तक लोगों की जबान पर ही हैं।

स्थानीय प्रभावों के कारण उनमें अधिक विभेद पाया जाता है और लिपिबद्ध बातों में जहाँ घटनाओं का एक बद्ध रूप परिपाटी से चला आया है वहाँ इन बातों में परिवर्तन के लिए सदैव गुंजाइश रहती है। बातों की रचना प्रणाली पर विचार करने से यह बात और भी स्पष्ट हो जायगी।

लिपिबद्ध बातों का यही स्वरूप प्रारंभिक स्वरूप नहीं था। प्रारम्भ में इनका स्वरूप भी मौखिक ही रहा होगा जैसा कि अन्य कितनी ही बातों का मिलता है। पर कालांतर में याद करने की सुविधा तथा संरक्षण के लिए प्रसिद्ध बातों को लिपिबद्ध रूप मिलता चला गया। लिपिबद्ध होने के पहले तो उनमें कई परिवर्तन हुए ही पर लिपिबद्ध होने के पश्चात् भी समय-समय पर उनमें परिवर्तन होते रहे हैं। इन बातों के इस रूप तक पहुँचने में कई कथा कहने वालों की सूझ-बूझ तथा वर्णन-रुचि का सम्मिश्रण है। कभी-कभी ऐसा भी देखने को मिलता है कि किसी एक बात की घटनाओं का किसी अन्य बात के साथ सम्बन्ध जोड़ दिया गया है। यहाँ तक कि ढोला-मारू की कथा के साथ नल-दमयंती का कथा तत्व भी कई प्रतियों में मिलता है। कथाओं के मूल रूप में इसी प्रकार की कई घटनाओं और पात्रों का संयोग असम्भव नहीं जिनके सम्मिश्रण से अन्तत बातों का उपलब्ध रूप बन सका और यही रूप अब समाज में

मान्य हो गया है। ये वार्ताएँ समाज की छोटी-बड़ी घटनाओं पर भी आधारित हैं, कपोल-कल्पित भी हैं और कई पौराणिक कथाओं के सहारे भी चली हैं। इन वार्ताओं की प्राचीनता के कारण अब यह कहना बहुत कठिन है कि किस बात में कितना मिश्रण हो जाने से उसका यह रूप बना। प्रसिद्ध ऐतिहासिक पात्रों से सम्बन्ध रखने वाली वार्ताओं का गम्भीर अध्ययन करने पर इस रचना प्रणाली का आभास अवश्य मिल सकता है क्योंकि इतिहास की कसौटी पर आने से इनमें निहित सत्य और कल्पना के अंश को परखा जा सकता है।

यहाँ हम लिपिबद्ध वार्ताओं को ही ध्यान में रख कर उनकी विशेषताओं पर विचार करेंगे। इन वार्ताओं का विषयगत वर्गीकरण मोटे तौर पर निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है—

१—पौराणिक
२—ऐतिहासिक
३—वर्णनात्मक
४—सामाजिक
५—वीर साहसात्मक
६—शृंगारिक और प्रेम सम्बन्धी
७—नीति सम्बन्धी
८—धर्म मत तथा देवी-देवताओं सम्बन्धी

वार्ता साहित्य इतना विस्तृत तथा विविधतापूर्ण है कि उसका पूर्ण वर्गीकरण करना सम्भव नहीं। फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिए किसी एक वार्ता की प्रमुख विशेषता को ध्यान में रख कर ही उस वर्ग विशेष के अन्तर्गत लिया जा सकता है। कई शृंगारिक वार्ताओं में भी प्रायः वीरता का पूरा वर्णन की सूची तथा अन्य कई नीतिपरक विवेचन मिल सकते हैं। प्रस्तुत संग्रह की 'ढोला-मारू' वार्ता को पढ़ने से यह तथ्य स्पष्ट हो सकता है।

इन वार्ताओं की कुछ सामान्य विशेषताओं पर विचार करते समय सबसे पहली बात ध्यान देने की यह है कि मूल रूप से इन वार्ताओं का निर्माण कहे जाने के लिए हुआ है। वर्तमान लिपिबद्ध रूप में आ जाने पर भी इनकी यह स्वाभाविक विशेषता कहीं न कहीं तक स्पष्ट रूप से मिलती। वार्ता की कथिकता, स्वाभाविक प्रवाह, वार्तालाप में निहित स्वाभाविकता और चटकीलापन आदि बातें का निर्वाह इस दृष्टि से ध्यान देने लायक है।

बात का प्रारम्भ भी विशेष ढंग से किया जाता है। कथा कहने वाला एका एक कथा प्रारम्भ न करके पहले-पहल उसकी भूमिका कुछ पद्यों के माध्यम से बांधता है। ये पद्य प्राय उस देश की भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओं के बारे में होते हैं जिसके साथ नायक-नायिका का सम्बन्ध होता है या फिर बात की प्रशंसा में ही कुछ पद्य कहे जाते हैं—

बात भली दिन पाधरा पैंडे पाकी बोर।
नर बौंकड़ा घोड़ा जबी लाडू मारै चोर॥

कोई नर भूखा कोई नर जागै।
मूर्खां री पागड़ियां बाफता में भागै॥

सार बाबा सार, मातासा पोडला।
कूकड़ा ना टार।

बातां हुन्वा मामला बरियां हुन्वा फेर।
नदियां बहे उतावली फिर फिर जासी मेर॥

बात में हुकारो फौज में नगारो।
भीजै बात रो कहणवाळा भीजै हुकारा रो देणवाळा॥

फिर कहेंगे—रामजी घणा दिन दे उज्जैण नगरी में देवसरमा नामे बिरामण रहे आदि-आदि।

हस्तलिखित बातों की प्रतियों में ये प्रारम्भिक अंश लिखे हुए नहीं मिलते क्योंकि इनका प्रयोग प्राय बात कहने वाले की अपनी रुचि पर निर्भर करता था। पर बातों के शिल्प को पूरी तरह समझने के लिए इन अंशों को जानना आवश्यक है।

इन बातों मे वर्णनों की सूची बहुधा पाई जाती है। अधिकांश बातों का प्रारम्भ भी वर्णन से ही होता है चाहे वह पद्य में हो या गद्य में। बातों के बीच में तो जहाँ भी अवसर मिला है वहीं प्रकृति की अनुपम छटा नगर की विशालता एवं सपन्नता दुर्ग की अभेद्यता युद्ध की भयकरता वीरों का रण-कौशल हाथी घोड़ों के सहाण नायिका का रावि रासि सौन्दर्य उसके शृ गारिक उपकरण विरह की सुकोमल भावनाओं का उल्लेख और मिलन की सुखद घड़ियों का वर्णन प्रसङ्गत शैली म जम कर किया गया है। ये वर्णन इतने सजीव

भौर मार्मिक हैं कि पाठक के कल्पना-पटल पर सजीव चित्र उपस्थित कर देते हैं। इसीसे अपेक्षित वातावरण की सृष्टि होती है जिसमें हमारी भावनाओं का तादात्म्य सहज ही उस काल के साथ हो जाता है। यहाँ संकलित वार्तों में इस प्रकार के वर्णनों को पढ़ने से इस तथ्य का प्रमाव सहज ही अनुभव किया जा सकता है। वर्णनों का आधिक्य कथा की प्रगति में अवश्य शिथिलता ला देता है पर उनकी सजीवता ही पाठक अथवा श्रोता को ऊबने नहीं देती।

इन वर्णनों में उपमाओं दृष्टांतों और उत्प्रेक्षाओं एवं अतिशयोक्तियों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। उपमाओं में रूढ़ उपमानों के अलावा कितने ही मौलिक उपमान भी प्रयुक्त हुए हैं जिनमें स्थानीय विशिष्टताओं की खूबी (Local Colour) अद्भुत नवीनता और ताजगी के साथ प्रकट हुई है।

वार्ताओं में भी गद्य के साथ पद्य का प्रयोग मिलता है। कई कल्पित कथाएँ तो पूरी की पूरी पद्य में ही मिलती हैं। ये पद्यांश वर्णनात्मक भी हैं और भावनात्मक भी जिसमें दूहा सोरठा गाथा सवैया चन्द्रायण गीत आदि छन्दों का प्रयोग अधिक हुआ है। इनका काव्य-सौष्ठव वयणसगाई के निर्वाह अलंकारों की खूबी और भाषा की प्रौढ़ता के साथ-साथ मौलिक सूक्तियों से निखर उठा है। किसी एक बात के कुछ पद्यांश थोड़े बहुत हेर-फेर के साथ किसी अन्य बात में भी दिखाई दे जाते हैं यह इनकी परिवर्तनशील रचना-प्रणाली के ही कारण है। गद्य और पद्य का यह मिश्रण एक दूसरे के पूरक के रूप में दिखाई पड़ता है। कई बातों में तो यह पद्य वाला भाग भी इतना पूर्ण और प्रभावोत्पादक है कि यदि इनके सूत्र को हटा लिया जाय तो पूरी बात विच्छिन्न गद्य खंडों के रूप में रह जाएगी।

सभी बातों के कथानक तत्कालीन समाज की भित्ति पर चित्रित हुए हैं इसलिए इनमें देशकाल का सुन्दर वर्णन उपलब्ध होता है। विभिन्न प्रकार और समय की बातों के अध्ययन से तत्कालीन समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों की जो महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है वह तथाकथित लिखित इतिहासों में उपलब्ध नहीं होती। प्रदेश का सामाजिक इतिहास लिखने में इस सामग्री मिलने वाली सहायता का महत्त्व असंदिग्ध है। मध्यकालीन राजस्थान के बहुत बड़े समाज का चित्रण इन बातों में हुआ है। यहाँ की शासन-प्रणाली जागीर प्रथा जातीय-व्यवस्था कलात्मक सृजन साहित्यिक वातावरण आमोद प्रमोद नैतिक मूल्य भाग्यवादिता रूढ़िनिर्वाह और जीवन-सिद्धांतों का बड़ा वैविध्यपूर्ण और

सर्वांगीण चित्र इन बातों के माध्यम से प्रकट हुआ है।

सामाजिक परिस्थितियों की भूमिका में ही अपेक्षित सत्य की सांकेतिकता अपने जीवन्त और पूर्ण रूप में प्रकट हो सकी है जिससे कथानक के शिल्प में देशकाल की विशेषताएँ अपने पूर्ण औचित्य के साथ प्रकट होती हुई प्रतीत होती हैं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इन बातों की शैली में लम्बे समय से परिवर्तन और परिवर्द्धन होते आए हैं फिर भी उनकी अपनी निश्चित शैलीगत विशेषताएँ अवश्य हैं।

आधुनिक कथा-साहित्य की शैली से इनकी शैली में बहुत भिन्नता है। आधुनिक कहानी के विकसित रूप में जो लेखक के व्यक्तित्व की निहृति सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण जीवन-यथार्थ का उद्घाटन करने वाला शिल्प-नैपुण्य और कथा तत्त्व की गतिशीलता आदि गुण दिखाई देते हैं—वे चाहे इन बातों में न हों पर वर्णनों की सजीवता औत्सुक्य का निर्वाह लयात्मक भाषा में काव्य का-सा आनन्द और सामाजिक सत्य की सहज अभिव्यक्ति आदि कुछ ऐसे गुण हैं जिनके कारण सैकड़ों वर्षों से इन कथाओं का समाज में महत्त्व रहा है।

इन बातों की कथा के विकास में स्थान-स्थान पर ऐसी घटनाओं का आगमन हुआ है जिससे नायक अथवा नायिका की उद्देश्य-प्राप्ति में निरन्तर विघ्न उपस्थित होते रहते हैं। एक विघ्न के हटने पर जब कुछ आशा बंधती है तो दूसरा विघ्न उपस्थित हो जाता है। विघ्न उपस्थित करने वाली इन घटनाओं का आगमन इस तरह करवाया जाता है कि औत्सुक्य का निर्वाह बराबर होता रहता है।

इन घटनाओं व पात्रों की अवतारणा में भूत-प्रेत शकुन स्वप्न देवी-देवता आकाशवाणी जादू-टोना आदि कितनी ही अलौकिक बातों का समावेश मिलता है। स्त्री और पुरुष के अतिरिक्त पशु-पक्षी तथा पेड़-पौधे भी पात्रों के रूप में उपस्थित हुए हैं जिनके साथ वार्तालाप हुए हैं। पक्षियों के साथ तो पूर्ण विश्वास करके नायिकाओं ने अपनी प्रेम-विह्वल वाणी में प्रिय को संदेश भजे हैं। कोकिल कीर, भ्रमर और बादल के अतिरिक्त कुरजा ने भी विरहणी की पीड़ा को पह चान कर उसका कार्य किया है। अपने पंखों पर पाती तक लिख डालने की स्वी कृति दी है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन बातों में मानव-हृदय का शेष सृष्टि के साथ बहुत सहज रूप में तादात्म्य स्थापित हुआ है। प्रकृति के साथ

मानव-भावनाओं का सीधा आदान प्रदान एक बहुत बड़ी विशेषता है जिससे भावानुभूतियों को अधिक विस्तार मिल सकता है।

बातों में नाटकीयता लाने के लिए कथोपकथनों का प्रयोग हुआ है। कई कथोपकथन बहुत छोटे हैं तो कई बहुत बड़े। गद्य और पद्य दोनों के माध्यम से इनका प्रयोग हुआ है। पद्य में प्राय वे कथोपकथन मिलेंगे जिनमें भाव-पूर्ण निवेदन अथवा व्यंग होगा। इनसे पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं के उद्घाटन में तथा कथा-सूत्र की प्रगति में सहयोग मिलता रहा है तथा कथा में रोचकता सजीवता और भाव प्रकाशन की अद्भुत क्षमता आ गई है।

जहाँ तक कथा-तत्व का सम्बन्ध है इनमें मुख्य कथा के अतिरिक्त छोटी-बड़ी अन्य सहायक कथाओं का भी प्रयोग मिलता है। प्रासंगिक कथा में भी कई बार दूसरी कथा आ जाती है और कई कथाओं का क्रम तो एक दूसरी कथा में से निकलता हो चला जाता है। राजामोज से सम्बन्ध रखने वाली कई कथाओं में इस तरह का तारतम्य मिलेगा। ऐतिहासिक पुरुषों से सम्बध रखने वाली कई कथाओं में छोटी बड़ी कथाएँ जिनका एक दूसरी से विशेष सम्बध नहीं है मिल कर नायक की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालती हैं। संकलित बातों में महाराजा पदमसिंह की बात इसी तरह की है।

उपरोक्त शैलीगत विवेचन में यह बात भी ध्यान देने की है कि कथानक के कई स्थलों पर पद्य में कही हुई बात श्रोताओं अथवा पाठकों की सुविधा के लिए फिर से गद्य में दोहराई जाती है पर वर्णन-शैली की रोचकता के कारण पुनरावृत्ति दोष दिखाई नहीं पड़ता।

इन बातों की भाषा पुरानी राजस्थानी है पर समय के दौरान में भाषा का रूप निरन्तर बदलता गया है इसलिए सम्पादित बातों की भाषा का रूप अधिक प्राचीन नहीं है। यहाँ प्रयुक्त भाषा का सबसे बड़ा गुण उसकी सहजता और सजीवता है। वर्णनात्मक स्थलों पर इतनी सशक्त भाषा का प्रयोग हुआ है कि सहज ही में चित्र उपस्थित हो जाता है। वार्तालापों में प्राय पात्रों के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग मिलता है। यहाँ तक कि कई बातों में तो मुसलमान पात्रों के मुँह से उर्दू अथवा फारसीमिश्रित भाषा प्रयुक्त हुई है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है इन बातों की मूल प्रकृति कहे जाने की है, अत भाषा में भी उसके अनुरूप ही मधारमकता रवानगी और सहजता है। भाव और वस्तु-वर्णन दोनों ही में भाषा की यह अभिव्यक्ति-क्षमता अपने औचित्य के साथ दृष्टिगोचर होती

है। जन-मानस के साथ इन वार्तों का बहुत नजदीक का सम्बन्ध है इसलिए जन मानस की भाव-निधि को वहन करने की क्षमता इनकी सहज विशेषता है। डिंगल अथवा राजस्थानी के अतिरिक्त शुद्ध संस्कृत तथा अरबी फारसी के शब्दों का भी सम्मिश्रण हुआ है। मध्यकालीन राजस्थान पर मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव रहने से विदेशी भाषा का यह प्रभाव स्वाभाविक ही है। अरबी फारसी के कुछ शब्द तो राजस्थानी में घुलमिल कर एक हो गए हैं और उनका आज भी प्रयोग होता है।

इन वातों की समाज को बहुत बड़ी देन रही है। प्राचीन काल में जब शिक्षा और ज्ञान अर्जित करने के लिए आज की सी व्यवस्था न थी तो समाज को बहुधा आवश्यक ज्ञान इन्हीं वातों के माध्यम से दिया जाता था। जनता तथा शासक वर्ग के संस्कारों का निर्माण करने में इन वातों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। प्रायः कथा कहने वाले संध्या के समय कामकाज से निवृत्त होकर जब कथा कहने बैठते थे तो धीरे-धीरे श्रोतागण एक कल्पना लोक में खो जाते और जहाँ बीच-बीच में रोचक वर्णन अथवा काव्य की पंक्ति आती वहीं वाह-वाह की झड़ी लग जाती और कथा कहने वाला दूने जोश से कथा कहने लगता। इससे श्रोताओं का मनोरंजन तो होता ही था पर जाने-अनजाने व कितने ही जीवन मूल्यों को भी ग्रहण करते थे। ऐतिहासिक कथाओं के माध्यम से इतिहास के ज्ञान के साथ-साथ आदर्श पुरुषों की चारित्रिक विशेषताओं का परिचय होता था। नीति संबंधी वार्तों से व्यावहारिक ज्ञान और प्रेम-संबंधी वार्तों से प्रेम का अलौकिक आदर्श ग्रहण होता था। पौराणिक वार्तों से आध्यात्मिक उन्नति के तत्व ग्रहण किये जाते थ। इस प्रकार ये वार्तें युगों-युगों से अपने नाना रूपों में जन-मानस को ज्ञान की गरिमा से विभूषित करती रही हैं।

अलौकिक तत्वों का प्रवेश व अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन देख कर इन्हें कोरी कपोल-कल्पित गप्पें समझ कर टाल देना बहुत बड़ी भूल होगी। इन वातों का सामाजिक मूल्यांकन करते समय इनसे व्यंजित होने वाले सत्य को ही ग्रहण करने की आवश्यकता है क्योंकि वही इनकी उपादेयता है और इसीमें इनकी सार्थकता भी निहित है। यहाँ के मानव की परिवर्तनशील सामाजिक एवं नैतिक मान्यताओं को जानने का बहुत बड़ा साधन तो यह साहित्य है ही इसके अति रिक्त शाश्वत सत्य का उद्घाटन करने वाली कथाओं का सार्वदेशिक तथा सार्व कालिक प्रभाव सदैव बना रहेगा इसमें भी कोई संदेह नहीं।

सुन्दर अक्षरों में लिपिबद्ध की हुई और रंगीन कपड़ों की जिल्दों में बंधी हुई प्रेम-कथाओं को कितने प्रेमियों ने विरह के एकान्त क्षणों में पढ़ा होगा ? ढोला और मरवण के वार्तालाप कितनी प्रमजन्य सुकोमल भावनाओं को उद्वेलित कर सके होंगे ? विकराल काल के चिर पाश में बंधे हुए मानव ने इनकी अलौकिक कल्पना में खोकर कितनी बार उन्मुक्तता की सांस भी होगी ? इस पर विचार करें तो बातों की अद्‌भुत महत्ता का आभास सहज ही हो सकता है।

बड़े ही आश्चर्य की बात है कि शताब्दियों से समाज की नानारूपेण प्रवृत्तियों और समस्याओं का इतना बृहद् तथा जीवत चित्र प्रस्तुत करने वाली बातों के साहित्यिक महत्व पर अभी तक गंभीरता से विचार नहीं किया गया। राजस्थानी गद्य की विविधता और उसके विकास को समझने के लिए इनसे बढ़ कर अन्य साधन शायद ही उपलब्ध हों। वस्तु और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से इनका महत्व असंदिग्ध है। राजस्थानी काव्य के शोध कार्य में भी इनसे यथोचित सहायता मिल सकती है। क्योंकि कितनी ही काव्य-कृतियों के साथ परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप में इनका संबंध जुड़ा हुआ है। भारतीय कथा-साहित्य के आपसी संबंधों को जोड़ने वाले सूत्रों एवं प्रभावों को भी इनके माध्यम से सहज ही ग्रहण किया जा सकता है क्योंकि कई बातों के विभिन्न स्वरूप अलग-अलग प्रांतों में भी उपलब्ध होते हैं।

आधुनिक राजस्थानी साहित्य के नव-निर्माण में जहाँ कविता अपनी नवीन अभिव्यक्ति-क्षमता ग्रहण कर चुकी है वहाँ कथा साहित्य के क्षेत्र में भी प्रयोग होने लगे हैं। पर आधुनिक गद्य-रचना में मौलिकता और सहज साहित्यिक गांभीर्य लाने के लिए प्राचीन बात साहित्य का सर्वांगीण अध्ययन आवश्यक है। ऐसा किए बिना हम अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में पोषित शिल्पगत विशेषताओं और भाषागत सशक्त परम्पराओं से लाभ नहीं उठा सकेंगे और जिसके बिना हमारा साहित्य स्थानीय विशेषताओं को आत्मसात कर, विश्वास के साथ आगे नहीं बढ़ पाएगा।

यहाँ अब प्रस्तुत बातों के सम्पादन के संबंध में कुछ कहना आवश्यक है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है बातों का प्रारंभिक रूप मौखिक था लिपिकारों ने उसे लिपिबद्ध किया है। लिपिबद्ध करते समय उन्होंने प्रायः वह सतर्कता नहीं बरती जिसकी अपेक्षा लिखित साहित्य में होती है। कई प्रतिलिपियों को देखने से यह भी आभास होता है कि लिपिकार की असावधानी या

प्रज्ञान से भाषा की अशुद्धियों के अतिरिक्त और कई त्रुटियाँ भी रह गई हैं। ऐसी स्थिति में बात को ज्यों का त्यों न रख कर कुछ परिवर्तन कर देना आवश्यक हो गया।

व्यक्तिवाचक शब्दों के भिन्न भिन्न रूप एक ही बात में प्रयुक्त हुए हैं। जैसे मारवणि के लिए मारवण, मारू, मारवणी, मारवी आदि रूप मिलते हैं। हमने पहला रूप ही ग्रहण किया है। कई क्रिया-शब्दों के भी दो रूप मिलते हैं, जैसे बोल्यौ और बोलियौ, मेल्यौ और मेलियौ आदि। ऐसे शब्दों के दोनों ही रूप रख गए हैं—पर वाक्य के प्रवाह को ध्यान में रख कर। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि पद्य में या स्थल विशेष पर अर्थ-विशेष में प्रयुक्त होने वाले शब्द-रूप में उसके औचित्य को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन नहीं किया गया है इसलिए पद्य में मारवणि शब्द के उपरोक्त सभी रूपों को स्थान मिला है। बचपन की अवस्था में मारवणि के स्थान पर 'मारू' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसे उचित समझ कर उसी रूप में ग्रहण किया गया है।

राजस्थानी में 'ब' तथा 'व' के बीच की ध्वनि प्रकट करने वाला अक्षर व भी प्रयुक्त होता है। इसके उच्चारण में बड़ा सूक्ष्म भेद है। 'बात' शब्द स्वयं प्राचीन प्रतियों में 'वात' लिखा हुआ मिलेगा पर उच्चारण की सुविधा और सरलता को ध्यान में रखते हुए हमने 'व' के स्थान पर 'ब' का ही प्रयोग किया है।

इसके अतिरिक्त वाक्यों में जहाँ अपूर्णता अथवा अस्पष्टता लगी वहाँ भी आवश्यक परिवर्तन किए गए हैं।

मूल प्रतियों की लिखावट में पूर्णविराम का अवश्य कहीं-कहीं प्रयोग हुआ है पर पैराग्राफ तथा अल्पविराम आदि चिन्ह नहीं मिलते। प्रकाशन के आधुनिक ढंग और स्पष्टता को ध्यान में रख कर हमने यथा-स्थान इन चिन्हों को अपना लिया है। पद्यांशों में प्राय दीर्घ ह्रस्व आदि की त्रुटियों को ठीक कर लिया गया है और मात्राओं की पूर्ति के लिए भी इसी प्रकार के कुछ आवश्यक परिवर्तन किए गए हैं। ढोला-मारू की बात के दोहों में इस प्रकार की त्रुटियाँ अधिक थीं जिनको शुद्ध कर दिया गया। ऐसा करने में ढोला-मारू रा दूहा (सम्पादित) से भी पूरी सहायता ली गई है। पर सब मिला कर प्रयत्न यही रहा है कि बात अधिक से अधिक अपने मौलिक रूप में पाठकों तक पहुँच सके। राजस्थानी गद्य साहित्य की रचनाओं को प्रकाश में लाने का यह हमारा पहला प्रयत्न है इसलिए पूरी सतर्कता बरतने के बावजूद भी त्रुटियों का रह जाना
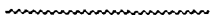
सम्भव नहीं। आशा है इस दिशा में कार्य करने वाले विद्वान वार्ता साहित्य की इस अमूल्य निधि को प्रकाश में लाने का यत्न करेंगे। यह संग्रह तो केवल प्रारम्भ मात्र है। परिशिष्ट में प्रसिद्ध वार्ताओं की सूची भी इसी उद्देश्य से दी गई है।

मंगाणा कुँवरसाहिब देवीसिंहजी अगरचन्दजी नाहटा तथा सीतारामजी लालस का मैं आभारी हूँ जिनके सौजन्य से मुझे बहुत सी वातों का संकलन [illegible] तथा अध्ययन के लिए मिला।

अंत में जिन महानुभावों ने जिस किसी रूप में हमें सहायता पहुँचाई है और परामर्श दिया है उनके भी हम आभारी हैं।

—नारायणसिंह भाटी

मरुधर देस मंझार, सयल जग जग प्रसिधी
नामे पुंगळ नयर[1] पुहु, दिस वर्ळ प्रसिधी
राज करै रिमराह जगट[2] पिंगळ प्रथवीपति
प्रतपै जसु प्रताप जांग जळहर जिम दीपति
देवति नाम उमा धरणी मरवणि तस पूं कुंवरि
चौसठि कळा सुन्दर चतुर, सिरै नार पुण सुन्दरि।

मरुधर देस रै बिच[3] सगळा ही सहरां प्रसिद्ध पुगळ नामै म्हारो नगर। तिण रै विच रमी राजा राज करै छै। तिण रै पिंगराजा पुत्र छै—बडो प्रथीपत दातार। जळहर जिम दीपै छै। तिणरै उमादे बडी प्रसमी छै। तिणरी बात कविस्वर विस्तार करने कहै छै—

देसां माहे दीपतौ[4] परगट मरुधर देस।
तिहां नर नारी ऊपजै नरां उत्तम नरेस॥
ऊंचा मिन्दर चोबरा ऊंचा घणा अवास।
धवळ झरोखा जाळियां सीसै सूधा वास॥
राज करै राजा तिहां पिंगळ जोरा प्रवीण।
चोगळिया[5] भीनो रहै, नित दिन मैहे लीन॥
मंतरां माहिनिस करै, चमन सोहत प्रतिरंग।
कोटड़िया चन्दिमल[6] हुवै राम छत्तीस सुरंग॥
मन सोहत घर हुलस मन भमी राज करि रीत।
राजलोक पंणी भली पाळै माहिनिस प्रीत॥

मरुधर देस रै बिचै पुंगळ नामै नगर, तठै पिंगळ राजा राज करै छै। आठ हजार घोड़ा छै। दोय सौ हाथी छै। पांच हजार पायक[7] छै। बारै बरस रो पिंगळ राजा टीकै[8] बैठो छै। तीन बरस माहे वैरी दुस्मण मारि नै आपरणी आंण[9] मनावी छै। पनरै बरस में राजा हुवो छै। मनि रूपवंत भोग भमर[10] छै।

एक समै राजा सिकार चढियो छै। कन्क[11] सरव साथै लीया छै। पण प्रस वार जुदा जुदा विखर गया। राजा एकलो रण[12] रै विचै भमतो भमतो थाको। उन्हाळा[13] री रात हुती तिणसूं राजा नै त्रिसा[14] घणी व्यापी। जितरै एक

———

[1]नगर [2]बीच [3]मे [4]देदीप्यमान [5]आंखों में [6]राज-रंग
[7]पैदल [8]उत्तराधिकार प्राप्त किया [9]प्रभुत्व स्वीकार कराया [10]आनंद
लूटने वाला [11]फौज [12]अरण्य जंगल [13]गर्मी [14]प्यास।

मोटो व्रिख दीठौ तिण हेट जाय ऊभो रह्यौ। आगे देखै तौ एक भाट बैठौ छै तिण कन्है पांणी रो वागळो[1] भरियो छै। राजा भाट न वतळायौ। तरै भाट आय मुजरो कियौ सीतळ पांणी पायौ। तद राजा तिरपत हुवौ। भाट राजा सू घहोत राजी हुवौ। राजा भाट नै पूछण लागौ—भाटजी थे अठै किसै कांम पधारिया छौ। कठै रहौ छौ। तद भाट बोल्यौ—महाराज हू मळधर गढ रहू छू मांगणी करणै निसरियौ छू। और तौ वडा-वडा गढपति सगळा[2] ही जाच्या[3] अबै पिंगळ राजा री कीरत सुण जाचवा आयौ छू। तर राजा भाट नै आपरो नांम वतायौ। तरै भाट राजा नै ओळखियौ[4]। मन मांही उछाह आयौ छै। वळ राजा पूछियौ—भाटजी थे किसा गांव नगर दीठा सो कहौ।

भाट कह्यौ—म्हें इतरा देस दीठा मरहठ देस मेवात वम देस गौड बंगाण कछ, पचाळ दखण माळवो मुलतांन कासमीर, खुरसांण इतरा देस दीठा। वळ सिंघल दीप दीठौ जठै पदमणी अस्त्री छै। गुजरात सोरठ सवाळख सिंघ और ही समुद्र परे घणा घणा सहर दीठा। तरै पिंगळ राजा वोलियौ—थे इतरा सहर दीठा छ त्यां मांहि कोई अपूरव[5] वस्त दीठी होय सु कहौ। तद भाट बोल्यौ—महाराज म्ह तो अपूरव वस्त अनेक दीठी छ सो कहतां अत न आवै। पण आपरै मन में जिकण री दरकार[6] होय सु कहौ। राजा बोल्यौ—थ इतरा सहर दीठा छै,त्यां मांही कोई रूपवत अस्त्री हंस रो बच्चो मेळ रो गरभ किरती रो झूमको चौसठ कळा री खांण रूप निधान अगनयणी इसी अनोपम अस्त्री होय तो म्हांनै परणीजण री खांत[7] छै। थ कोई दीठी हुवै तो कहौ।

भाट बोल्यौ—महाराज हू बरस पच्चीस बारै फिरियौ—परदेसां[8]। तठै रूपवत चतुर अनेक अस्तरियां दीठी पण एक जाळोर नगर छै तठै सांवतसी देवड़ो राज करै—

> सिर मलार[9] आबू धणी चढ जाळोर दुरंग।
> तिहां सांवतसी देवड़ो अमलीमाण[10] अभंग॥

जाळोर नगर रो धणी सांवतसी देवड़ो छै। तिण रै अमली पटरांणी छै।

---

[1] पानी रखने का बरतन-विशेष [2] सब [3] याचना की [4] पहिचाना [5] अपूर्व [6] चाह [7] इच्छा [8] अन्य पृथ्वी-खंड [9] घनी वनस्पति वाला पर्वत [10] अधिकार का उपभोग करने वाला।

तिणरी पुत्री ऊमादे वडी छै, तिका आंणीज—विधाता आप हाथ घड़ी छै। वळ सिलोक छै—

चंदन वदन चंपक वरण मधुर ममता[1] वैण।
कंचन नैण कीण भ्रुटी चंदन परिमल अंग ॥
मति मदभुत संसार इस नारी रूप रसाल।
नारी ऊमादे कंवरि, कोमळ कंचन वाल ॥
तूझ सरीखो को पुर्ई[2] धामण[3] नै भरतार।
जोगी थाई जाम्ह ज्यूं, कर मेलै करतार ॥

इतरी भाट पिंगळ राजा नै कही तद राजा कुम्पाळी[4] होय कह्यौ—प्रो काज प्रमांण चढ़े[5] इसी कोई मकल बतावो? इतरी बात करतां राजा रो कटक बिखर गयौ हुतौ सो भांग मळो हुवौ। तद राजा नगर मांहे आयौ। भाट नै साथे ल्यायौ। अबै राजा री हुजूर भाट बैठो रहै छै। नवा दूहा गाहा कहि नै राजा नै रिझावै[6] छै। पण राजा ऊमा देवड़ी नै खिण मात्र विसरै नहीं।

अेक दिन राजा आपरा परधान बुलाया। जैसळ खवास बुलायौ। सारां ही नै मसलत[7] बूझ नै जाळोर साम्ह त्यारी कीधी। पछै भाट नै केई अमोलक[8] वस्त्र गहिणा देय नै साथे मेलिया। घणी भळामण[9] दीन्ही अर कह्यौ—प्रो काम प्रमांण चढ़ै ज्यूं कीजै।

हिवै पठासू चल्यो साथ सगै भाऊ भाट नै जैसळ खवास आस्या तिके जाळोर नगर आय उतरिया। तरै सांवतसी देवड़ पिंगळ राजा रा परधान आया सुण नै घणी मनुहार कीधी। पछै परधानां नूं पूछियौ—थांनूं अठै पिंगळ राजा किसै काम मेलिया छै। परधान बोलिया—थां सूं मन परच छै। थारी कुंवरि अपछर जिसी तिण रो रूप भाटां सुणियौ जद राजा रै मन उछब ऊपनौ तरै आप कन्है म्हांनै मेलिया छै। थारी कुंवरि[10] मांगे छै। तरै सांवत सी देवड़ो आखियो—कंवरि री तो सगाई कीधी। पैली तो जूनागढ रा धणी मांगी हुती। पछै बीद घणा बरसां मांहे देसनै उत्तर दीधो[11]। अबै उदैचंद राजा चावड़ो छै, तिण रै रिणधवळ कंवर पुत्र छै। अनहद से गुजरात रो धणी छै। तिणनै म्हे ऊमादे कवरि दीधी। पण अजेस टीकी अज थाल मानी न छै। टीको देण छै।

---

[1]मान [2]मिले [3]स्त्री [4]पुलकित [5]पूरा हो [6]रिझाता है
[7]सलाह [8]अमूल्य [9]जिम्मेवारी [10]कुमारी [11]दिया।

मूंढो निरलज्ज तिको गुमराह छै। निबळ पुरस छै। प्रस्नी निलज्ज छै, तठै राजकुंवरि मसूजर दीजै। सगाई करण मै तो कीधी हुती पण अबै तो म्हांमे कुंवरि घो।

इतरी बात राजलोक मांही भ्रामी सांभळी तरै परधानां मै मांहे बुलाया अर अेक उपाय रांणी कीधी। जैसळ नै कहण लागी—जोतखियां[1] कहूयो परस अेक तांई वाई नै लागो[2] सूझै नहीं। बरस अेक पछै लगन थापस्यां। महिना अक पहिली अेक असवार थां कन्है मेलस्यां[3] सो थ जांन री सजाई[4] कर नै भाबूजी री आज्ञा[5] रै मिस भाय उतर ज्यो। तद कुंवरि पिंगळ राजा नै परणाय देस्यां। उवैधद रिणधवळ नै, कवरि परणीज भी जद अक दिन पहुसी भावमी असस्यां सु अक दिन में कोई भावणी भावै नहीं। लगन तो टळै नहीं धरे म्हे पण निरदोस रहस्यां इसो मतो थापनै परधानां नै सीख दीवी। घणो द्रव्य सिरपाव देय विदा किया। परधान पुंगळ भाय पहुंता[6] पिंगळ राजा सूं मिल्या। सारा समाचार कहूया तरै राजा घणी खुस्याळ हुवो।

अब इठीनै परधान अर कागळ[7] आयै जावै छै। सांवतसी पण बहोत राजी छै। अबै तो साबा भाडो अक महीनो भाय रहूयो। सांवतसी देवड़ै असवार मेल पिंगळ राजा नै समभो[8] दियी। तद पिंगळ राजा जांन री सजाई कीधी। घणा घोड़ा ऊंठ हाथी सेझवाळ[9] तयारी किया छै। मदा बडा गड़पती जांनी हुवा छै। इण तरै सूं केसरिया बागा करि घणा आडंबर सूं जांन चढी छै। दिन दस मारग मांहे लागा। लगन रै दिन आळोर नगर भ्रोण उतरिया। सांवतसी देवड़ो आया सुण बहोत राजी हुवो। कटक[10] देख लोक अळमळिया। परजा पूछण लागी—ये राजा कुण छै, सिय पधारसी ? तरै पाछो उत्तर कहै छै— कोई कहै मनी। पूगळगढ रो धणी पिंगळ राजा छै। भाबूजी री जात्रा करण नूं जाय छै।

इतरै गोधूळक[11] बेळा हुई। तरै सांवतसी देवड़ै अर भ्रामी सांम्हेळो[12] करि पिंगळ राजा नै मांहि लिया। पछै ऊभा देवड़ी मैं परणाई। पिंगळ राजा री सूरत

---

[1]मुनी [2]ज्योतिषियों [3]लग्न [4]भेजेंगे [5]तय्यारी [6]यात्रा [7]पहुंचे [8]कागज [9]संकेत [10]बरात जाती हुई गाड़ियां [11]फौज [12]गोधूलि बेला [13]बर को सामने के पहले घर के भ्रमर से लाने की रस्म।

पिंगळ राजा उणहीज[1] घड़ी चढ़ियो। ऊमा देवड़ी नै पीहर राखी। पिंगळ राजा परणीज नै पूगळ नगर कुसळ सूं आय पहुंता। इतरै रिणधवळ री जांन आई। तरै सांवतसी देवड़ो साम्हो जाय मिळियो। घणी मरज करनै जाय कह्यो—राज मोड़ा क्यूं पधारिया? म्हैं कांई करां? म्हांरो तौ दोस कोई नहीं। दोस आपमी रो छै। म्हे तो लगन वेळा तांई वाट जोई[2]। राज पधारिया नहीं। सोच घणोई ऊपनौ[3]। राज सरीखा सगा कठा सूं मिळै? पण कुंवरि रा करम में इसो घर नै वर लिखियो नहीं। म्हैं जोड़ लगन टळतौ पांच बरस तांई[4] साझो सूझै नहीं। इतरै ओक पूगळ गढ रो धणी पिंगळ राजा आबूजी री जात्रा जावतो हुतो सु अठै आय निसरियो। तिणनूं कुंवरि परणाय दीधी।

इसो सुण रिणधवळ कुंवर रिसाणो[5]—म्हांरी मांग पिंगळ राजा नै परणाई? उदैचंद राजा बोल्यो—म्हांसूं सांवतसी पात खोसी। मन मांहि क्रोध आण आपरै सहर गयो। पछै थांरै आहोमांही खेध[6] लागी। सोवनगिर[7] सूं आडू कांनी गांव लूटण लागा। देस बसै नहीं। इसी बात पिंगळ राजा सांभळी। सांवतसी देवड़ा नै कहायौ—थे कहौ तो म्हे पग थांरी भीड़ आवां। तरै सांवतसी कहायौ—राज तकलीफ मती करावौ। सोवनगिर किणही सूं भी लिजै नहीं। आपे अलसमार परा जासी।

पूगळ नगर मांहि धेसळ नांम खवास छै। आपरा मन में बुध[8] केळवे छै। घरे गायां घणी छै, तिण मांहि धोळी गाय दोय निपट[9] सखरी[10] छै, त्यांनै सगळी गायां रो दूध भेळो करिनै पावे। वां दोन्यूं गायां रै केरड़ा[11] हुवा तिके निपट सखरा छै। त्यांनै दूध अणामावता पावै छै। घोड़ा दांमर रातै छै। घोड़ा री पायगा मांहि बंधीजै छै। घोड़ां बराबर धाम पावै छै। यूं जावतां करतां बैलिया मगरा आछा हुवा। पछै यक हल्की[12] बैल[13] करवाई। दोनूं धवळ[14] जोतरिया। धेसळ आप चढ़यो। दिन दिन रै विसै अेके कोस पधारै

---

[1]उसी [2]देखी [3]उपजा [4]तक [5]नाराज हुआ [6]झगड़ा [7]पर्वत विशेष [8]बुद्धि [9]पर्यन्त [10]अच्छी [11]बछड़े [12]हल्की [13]सवारी की बैलगाड़ी [14]बैल।

छै। यूं करतां महिना बारा हुवा। बेलियां नै घणा समझाविया। पछै राजाजी नै दिखाया। राजा देख महोत खुस्याळ हुवौ छै।

पिंगळ राजा सांवतसी देवड़ा नै आदमी मेल कहायो—अबै थे आणौ[1] करौ। तद सांवतसी घणोही बिचारियौ पण बात दाय कोई बैसे नहीं। कुंवरि नै ऊमणो दे मेलीयां। तद ऊंट घोड़ा रथ सेजवाळ खवास पासवान साथ हुवा सो उदैचद लगै[2] नहीं। बाट रोक्या छै। अनरथ होय माल जाय। सरै सांवतसी आदमी नै कहयो—जे मारग विसम छै। आप थांनै[3] परधान मेलो तौ आणौ करां। कुंवरि नै घरे पहुंचायां पछै सारी बात दोरी[4] छै। इतरो कहि आदमी नै सीख दीधी। आदमी पाछै आय पिंगळ राजा आगे मारग री सगळी बात कही। बात सुणि पिंगळ राजा बीसळ खवास[5] नै बुलायौ पछै कहण लागा—सांवतसी कहायो छै—थांनै परधान मेलौ ज्यूं आणौ करावां। तिणसूं इतरो काम तूं बळै करि—

बीसळ नै पिंगळ कहै करि आंखी परिमाण।
बिन सेवग में बेगड़ी अब आवै इण ठाम॥
सांचो लोक[6] तूं थही तूं सेवक तूं स्याम।
आवै तैं परधानगी कर अब मेरौ काम॥
लोचनगिर की चहुं दिसे कंचा[7] मारग बाट।
पंथी को पूछइ तणी नहीं न लखै बाट॥
कटकी को आणा करां तौ मन कहै नाथ।
सांवतसी बैठा बकां बन्धन कैसे काम॥

इसरी बात पिंगळ राजा बीसळ नै कही ताहरां बीसळ बोल्यौ—

बचन सुणे राजा तणा बीसळ कीध प्रणाम।
तौ हुं लोक लाहरों[8] जो साक थे काम॥

पिंगळ राजा नै बीसळ कहै छै—देवड़ीजी नै दोय दिन मांहै आण तौ चाकर। इतरो कह ब न सम्भे कीधी। बेही अवळ ओतरिया[9]। बीसिया किल्ला'क छै—घड़ी मांहै दोय जोजन[10] जाय तोही थकै नहीं। भूखोही मरै नहीं। अब बीसळ दीठै मारग चालै छै। बाट घाट सगळा जाणे छै। मारग में और ही नाम से अर

---

[1]गौना [2]बरदाश्त [3]तुमको से [4]आसान [5]नाई [6]सेवक [7]बन्द हुए [8]तुम्हारा आपका [9]चोटे [10]योजन।

ही नाम बतावे और ही गांव बतावे। परभात रो चास्यौ दिन आथमते[1] जाळोर आंण उतरियौ। अब सांवतसी राजा मांम्हळियौ। ताहरां जैसळ नै मांहे बुलाय मिळिया। पछै झाली नै बात पूछी। अकण रात में सारा ही समझ गया। चौथै दिन आंने घरै रह्यो। कंवरि रो हथलेवो कियौ—भो किणही जांण्यौ नहीं। प्रेम लास रो ऊमर्यो दीधो छै सु म्हे अठे रास्यौ छ। म्हारा मन में छै सु मोनै पाछा सू पौंहचावस्यां[2]। अवार[3] तो कुंवरि नै मेल्हां छां। सारी सजाई कर न मांझ रै समै मुकळायौ कीधौ। ऊमा देवड़ी नूं सीख दीधी। उठा सु हालिया। विसांमो कठेही ले नहीं। पवन ज्यूं चालिया जाय छ। पूगळ नगर रै बिचे आय पुहता छ। बहिल[4] छोड नै उतरिया तद पिंगळ राजा आपरो कटक[5] परवार मनै सांम्ही आयौ। पछै ऊमा देवड़ी अर राजा रै मोड बांध नै घणा आडम्बर सू घणा गाजा बाजा चवर ढुळतां मांहे पैसारौ[6] कियौ। पटरांणी सनै घरे आयी—या बात उदयद रिणधवळ सांभळ नै दिलगीर[7] हुवी।

पटरांणी पिंगळ तणी अपछर रै उणिहार।
आई ऊमा देवड़ी सुन्दर इण संसार ॥
मोड ज बंधी मारवी आय अवतरी पेट।
पूरे मासे पदमणी जनमी रायज नेट ॥
सुन्दर रूप सुहामणो कै उरवसी[8] अवतार।
सबद सु आवै पदमणी भमर करै गुंजार ॥
नृपति भाऊ भाट नै कीधी कोड़ पसाव[9]।
चास्यौ मढधर पदमणी प्रणमि पिंगळ राव ॥

राजा भाऊ भाट न लाख पसाव करि सीख दीन्ही। राजा रा मन में घणी उछाह छै। पटराणी सू प्रेम घणौ छ। सुख भोगतां रांणी रै आधान रह्यो। नव महिना पूरा हुवा। पुत्री जनम हुवौ। नांम मारवणि दीधौ। अपछर रै उणिहार छ। भमरा घनै रहै छ सु सघळा ही पदमणी कहै छ।

बरस दोय बोल्या पछै बरसै बूठौ मेह।
सह[10] पाणी सविरोड सह बणगा नवा विरह ॥

---

[1] अस्त होते [2] पहुँचाएँगे [3] अभी [4] बैल गाड़ी [5] फौज
[6] प्रवेश निम्न चित्त [7] उदासी [8] उर्वशी [9] कवि को दिया जाने वाला
करोड़ रुपये की कीमत का इनाम [10] जानवरों के पिने पात्र।

मारवाड़ रा देस में छेक न आवै पीड़ ।
कै तो होय अवरसणी कै फाकी कै तीड़ ॥
पड़ जड़ कारण जोगिन्दा देवें दादर जान ।
पोहकर[1] जड़ पांणी प्रबळ, सुणि पिंगळ राजान ॥

आ हकीकत जांण आप पांणी री सुगि नै पिंगळ राजा उठाळा[2] री तयारी कीवी । आपरो भाई गोपाळदास छै, तिणनै गढ़ री धणी भळांमण दीवी । घणी जणांनो सांमान गढ में ही राख्यौ । भाई नै कह्यौ—गढ री तरफ सूं म्हे थां पका भचीता[3] छां । तद गोपाळदास बोल्यौ—महाराज आप जमा खातर राखो । किणही बात री चिन्ता मत करो । अबे राजा पिंगळ सगळी सराजांम[4] राजलोक हाथी घोड़ा ऊंठ गाय भैंस आदम भ'र उठाळो कियो छै ।

पिंगळ उठाळौ कियौ आयौ पोकर नीर ।
जड़ पांणी परगळ[5] जिहां हुवौ ज सुख सरीर ॥

राजा पिंगळ बूढे पोहकर आंण उतरियौ । उठै नीका जड़[6] छै । निरमळ पांणी भरया छै, तिण सूं गायां भैंस्यां रो दूध सवाद ज्यादा होवण लाग्यौ । राजा अर प्रजा सुखी हुवा तिण सूं कायम करै उठै हीज नैठा कर दीना ।

आ तौ बात मारवणि री उतपति री कहि । हिवै साल्हकुंवर री उतपति कहै—

हिव किव बोलो मीपनै देव तणौ परमाण ।
बेद मिळै मणचिंत्यौ वाणि म जांणै भाण ॥

नळवरगढ़ मे नळ राजा राज करै तिण रै दमेती पटराणी छै । पण राजा रै पुत्र नही तिण री चिंता घणी छै—

नळ राजा नळवर रहै आछी रिद्ध अपार ।
अभी अनोपम कांमणी सुख भोगै[7] संसार ॥
इक चिन्ता मन मे घणी नाहीं पुत्र रतन ।
तिण कारण आवे इसो व्याकुळ अबूणी मन ॥
माहा मारग पूछियौ कहियौ तेण उपाय ।
पुत्र थही आपै भलो पोहकर देव मनाय ॥

---

[1]पुष्कर [2]बाहर छोड़ कर विदेश के लिए रवाना होना [3]निश्चित [4]सम्पूर्ण व्यवस्था [5]कुल [6]पर्याप्त [7]घास आदि [8]उपभोग करते हैं ।

नळ राजा पुत्र रै वास्तै अनेक उपाय किया । गोगा गुसांई, खेतपाळ सेयी देवता झाड़ा पळ्थाणी जड़ी बूटी औखद[1] घणा ही उपाय कीधा तौ ही पुत्र नहीं । इसी गमे अेक परदेसी ब्राह्मण आय निसरियो—वेद-पाठक तिण नै राजा पूछियो । तद ब्राह्मण कह्यो—थे धाराहजी री जात्रा[2] बोलो । थारै पुत्र होवै । तरै राजा रांणी पोहकर धाराहजी री जात्रा बोली तद रांणी दोनौं रै आसा[3] रही । महिना पूरा हुवा । पुत्र रो जनम हुवो ।

जात्रा बोली राय नळ प्रगटयो पुत्र रतन ।
उच्छब[4] घणा मंगळ हुवा मोद भयो दिन दिन ॥

राजा रै घणी खुस्याळी हुई । वधाई बंटी । बंदीवान[5] छोडिया । उमरावा नै घोड़ा सिरपाव दिया । नट ब्रह्म पोखिया । राजा प्रजा रै घणी खुस्याळी हुई । पुत्र रो नाम ढोल्हकुंवर दीधो । माता प्रतपारो दोय आखि ढोलो नाम दीधो । बरस तीन हुवा राजा रांणी बेऊं[6] अेणा अेक रात सूता सरै सुपनो आयो—जाण् पोहकरजी री जात्रा करां । परभात हुवौ तद नळराजा परधान नै राज भुळायो । आप लोक सहित घणी द्रव्य लेय जात्रा चालू तयार हुवा । राजा दळबळ सहित रवाने हुवो । पोहकर आंण उतारो कियो ।

राजा मनमें चितवे आय करीजे जात ।
राज भळायो आपणो परधानां परभात ॥
साथै लिय[7] लीन्ही घणी आयो पोहकर तीर ।
स्नान करी मन हरखियो निरमळ सरवर नीर ॥
जात्रा कीधी जतन सूं पूजा करै पवित्र ।
परज मेह गोतूं फळ सामम रति सो पुत्र ॥

राजा नळ प्रथम ही धाराहजी पूज्या । पोहकर सनान करि और ही सगळा[8] देव पूज्या । राजा रांणी खुस्याळी हुवा । जात्रा संपूरण करी—

दान अबर मन उलसियो प्रगटयो पावन भाग ।
सारी सिरझा राव नै दिया उतारा बाग ॥
उलस्यो उदार विधि गवरू[9] भरवै नीर ।
बहु दिन पछै हाथिनी साथै गुलगुल मोर ॥

---

[1]औषधि [2]देवता के स्थान पर जाकर प्रसाद चढ़ाना [3]गर्भ
उत्सव [5]कैदी [6]दोनों [7]धन-दौलत [8]सभी [9]मातात ।

बार मास निसरू रह्या सरवर तणै प्रसंग ।
रमत ध्यान विनोद रस मणै छेहु रस रंग ॥

बरसाळी आगे जब पिंगळ राजा रा डेरा पाखती[1] नळ राजा पण डेरा कर दिया । पिंगळ राजा रै बहोत प्यार छै । अेक दिन नळ राजा सिकार निसरियौ हुतौ । इतरै मूंडा आगे अेक सुसौ[2] आय निसरियौ[3] तिण आरां नळ राजा घोड़ो दियौ । सुसौ पिंगळ राजा रा डेरा मांही धस गयौ ।

अेक दिनां नळ रायवी चढ़ियौ आप सिकार ।
सुसौ दीठौ म्हासती[4] दीन्हौ घोड़ो मार ॥
भाजौ पिंगळ राय रै गयो ज डेरा मांहि ।
पूठी ऊभा देखड़ौ कहि[5] नीचौ जो नाहि ॥
दीठौ राजा देखनै रांणी दीठौ राय ।
मन मांही अचिरज[6] कियौ मदवो रूप अथाह ॥
देखौ ऊभा देखड़ौ राजा वांमी वाप[7] ।
जो मानस मैं मारि नै तिणरी मोटो माप ॥
पूरब राम पाछी फळ्यो आयौ सघळो सत्य ।
पिंगळ आडो आवियौ मिळिया भर भै बत्थ ॥
साथ छड़ू विह ऊतरयौ नळ राजा ससनेह ।
कीधी जमत अमी परै पिंगळ राजा देह ॥

राजा बाग मांमै ऊभौ रह्यौ । पाछौ फिरण आगौ इतरै पिंगळ राजा बारै आयौ । दोनूं राजा माहोमांहि मिळिया । उतरि मजबाळ मांडी । कसूंबा[8] बनाया । गोठ ठावकी कर जीमण री तयारी करी । पांतियां दे दोनूं राजा भळा जीमिया । पछै दोनूं राजा चौपड़ रमै छै । इतरै मांहे मारवणि री धाय आपरा घरां सूं राजलोक मांहे आय छी सु ढोलाजी रै पाम ताय दीठी तद अकरण पिंगळ राजा रा चाकर नूं पूछियौ—आ कुण छै ? उण कह्यौ—मारवणि री धाय छै । ताहरां[9] नळ पूछियौ—आ गोद में बटी कुण री छै ? जद धाय बोली—बेटी पिंगळ राजा री छै । जद ढोलाजी रै बापभाई पूछियौ—धायजी थांरो नांव कासूं ? धाय बोली—म्हांरो नाम है मां धाय । नळ पूछियौ—राजाजी रै कितरी महळ[10] छै ? बाई दोहिती कुणरी छै ? धाय बोली—राजाजी रै

---

[1]पास [2]खरगोश [3]निकला [4]बैठा [5]कटि [6]आश्चर्य [7]प्रणाम अफीम [9]तब स्त्री ।

महल त्यार छै। बाई दोहिली देवड़ां री छै। नळ आपमाई पूछियौ—राजाजी रो अठै आवणौ क्यूं हुवौ ? आप बोल्या—अठै पांणी घणा घर उठै मह न बूठौ जिण सूं खड़[1] पांणी रो कसालौ[2] हुवौ तद अठै आय रह्या। इतरी वातां आपस में हुई। पछै नळ राजा पिंगळ राजा कनां सूं सीख मांग ऊठिया।

मारग में आवतां ढोलाजी रै आपमाई राजा नळ सूं मारवणि री सगळी हकीकत कही। नळ कहण लागौ—मारवणि घणी सरूप[3] छै। आ ढोलाजी नै परणाईजै तौ भली। पछै राजा नळ डेरै आयौ। आय दरीखानै बैठौ। परधानां उमरावां सारी मारवणि री हकीकत कही। नळ कह्यौ—आ सगाई होवै तौ भली। राजा नळ रावळा मांहि गया। रांणियां आगै मारवणि री सरब हकीकत कही। मारवणि सूं ढोला रो विवाह करस्यां। जद रांणियां कह्यौ—भली बात छै। राजा नळ बारै आय कामदारां परधानां नै कह्यौ—आप म्हे पिंगळ राजा रै उठै जावां तठै म उणांरा ठावा माणसां सूं सगाई रो कहाय कीजो। परधानां कह्यौ—प्रमांण आछै। पछै नळ राजा पोसाक सारा साथ रै पहराय सुखपाळ[4] बैसि कोतल छड़ीदार, चोबदार, मकीब भली सजाई इतमाम[5] सूं पिंगळ राजा रै डेरै आया। डोढियां आगै उतरिया। साहुरां चौबदारां पिंगळ राजा नै मुजरायौ[6]। आपरै डेरै नळ राजा पधारिया छै। इसो सुण नै पिंगळ राजा सांम्हा आय मिळिया। दोनूं राजा दरीखानै[7] गिलमां[8] रा बिछावणा ऊपर बैठा। दोनूं राजा राजा वातां करै छै। इतरा में नळ राजा रै परधान पिंगळ राजा रा परधानां नूं कह्यौ—थांरै डेरै राजा नळ आप मांगण पधारिया छै। आ हकीकत पिंगळ राजा रा परधानां आपरा धणी नूं कही—मारवणि ढोला नै परणावौ राजा नळ भौत चाहै छै। राजा कह्यौ—भली बात। पछै राजा पिंगळ नळ राजा सूं अरज करण लागौ—म्हारा देस मांहि आम पांणी रो कसालौ हुवौ जद म्हे रावळी धरती मांहि आंण रह्या छां। इसो सुणि नळ राजा बोलियौ—आ किसी बात। धरती रावरीज छै। म्हारी थांरी अब हीज छै।

राजा नळ आदर कियौ जिम राजा कह लोग।
दम दाग न पवड़ा पै मोता पै भाग ॥

---

[1] घास [2] अभाव [3] सुन्दर [4] विशेष प्रकार की सवारी [5] ठाट बाट से
[6] खबर की [7] बड़ा बैठक का कमरा [8] गद्दे।

पिंगळ राजा घणो खुस्याळ हुवो। ताहरां राजा नळ बोल्यो—मारू म्हांरि खोळ[1] घालो। ताहरां पिंगळ बोल्यो—आप फुरमावो[2] सु कबूल कियो। पण म्हे अणार बीसै आया छां। ताहरां नळ राजा बोल्यो—बीसो क्यारो छै? ज्यांरै हाथी घोड़ा हसम[3] रैत सारी ही साथै छै। थे मारू म्हांनै द्यो तिण सूं आपणो विसेस हितारथ[4] होय। ताहरां पिंगळ राजा कह्यो—प्रमाण। आप राजी तिकूं कबूल। आ मारवणि म्हे आपरै खोळै घाली। इसो सुण नळ राजा खुस्याळ हुवो।

सगपण होवै जो गुणी बड़ै[5] प्रीत असमान।
नळवर राजा पिंगळै कहिया महुवा वैण॥
कुंवर अनोपम मोहर मम थांरी संसार।
तिण नै मारू दीजियै दीसै देवकुमार॥
तब राजा पिंगळ कही बात एह प्रमाण।
सही करै सैणा तरी पूछी नै परिमाण॥

नळ राजा बोल्यो—अकरसा कुंवरि नै बुलावो ज्यूं म्हे देखां। हेमां धाय मारू नै नळ राजा री हजूर ल्याई। नळ राजा देख खुस्याळ हुवो।

नळ जब निरखी मारवी जांणै बियो[6] मयंक।
उज्जळी[7] धानीर अति कोई नहीं कळंक॥

नळ राजा मारवणि री खोळ भरी। सीख दीवी। पछै नळ राजा पिंगळ राजा कनां सूं सीख मांग डेरै आया।

राजा नळ रावलोक मांहे गयो अर कह्यो—म्हे कंवर री सगाई कीवी। ताहरां सारो रावलोक राजी हुवो। राजा पिंगळ पण रावलोक मांहे गयो। मारवणि नै लडावण[8] लागो। तद उमा देवड़ी बोली—आज बाई नै क्यूं लडावो छो। ताहरां पिंगळ राजा हस नै कह्यो—मारवणि खोळा नै दीवी। आज सगाई करी। आ हकीकत सुणि उमा देवड़ी बोली—धिग[9] म्हारो सुहाग। म्हारी डीकरी मोनूं बिण पूछ्यां ही दीवी। म्हांरै तो बेटी जीव छै।

भाखै[10] उमा देवड़ी मानस हीय विचार।
मोह पियारी मारवी दीवी समदां पार॥

---

[1]गोद [2]कहो [3]सेना [4]हितार्थ [5]बड़े [6]दूसरा [7]उजाला
[8]प्यार करने लगा [9]धिक [10]कहती है।

कंवा मणवीठी कुंवर कियौ न धनमन काम ।
पटरांणी मू पी कहै, जिहां वीर त्यां जाय ॥
राजा रांणी यूं कहै, देखे कंवर सुजाय ।
तौ सगपण कीजै तरै, बीठां भाई थाय ॥

ताहरां पिंगळ राजा री रांणी नळराजा नूं कहाडियो—जु आवतही कंवरजी नै हेकर दांमेळज्यौ । ताहरां नळ राजा पोसाक बणाय सिरपाव पहिराय मेलियौ ।

नळवर नळ राजा तणौ ढोलो कंवर अनूप ।
रांणी राव पिंगळ तणी रीझै देखी रूप ॥

रांणी कंवर नूं देख महोत राजी हुई । खोळ भराई । सीख दीधी अर पिंगळ राजा सूं कहयो—

पिंगळ रावरी मारवी दीधी समवां पार ।
भाखे ऊमा देवड़ी आसम हीय विचार ॥

रांणी बोली—महाराज आप सगाई कीधी सो घी भलो काम कियौ पण मर्व विवाह सौ पिंगळ आम कीजै । अबार विवाह करस्यां तौ लोग कहसी—बेटी देस मीखो काढियो ।

रांणी राजा सं कहै बात विचारी बोल ।
विव दियां व डीकरी[१] हांसी करसी लोग[२] ॥

ताहरां पिंगळ राजा बोल्यौ—

जिम बे भाखी तिम करी रांणी सुणी सचित ।
राजा रांणी सं कहै, मे भी सगपण चित ॥

इतरी वारता राजा रांणी रै हुई । पछै भला पिंडत बुलाय लगन थापियो[४] । रगराग हुव छै । पघर रा तोरण थाम रोप्या छै । घणा उछाह[५] करै छै ।

मीने मेघ मांडहो[६] तोरण थंम अमोल ।
गांव सवेरे परणिया मारवणी नै ढोल ॥
पिंगळ विवाह रचावियो पड़िया मेघ पुरांण ।
बण भटियांणी मारवी ढोलो कूरम रांण ॥
पिंगळ राजा री कुंवरि, नळ रो कंवर उछाह ।
ढोलो मारू परणिया छोटी ऊमर मांह ॥

---

[१]लगा [२]सहर्षी [३]मोक [४]निश्चित किया [५]आनन्द [६]बहु पद के लोग ।

मौज समन्दी मांपणा बंस बधारै बांन।
डोम परणी गाजमी वे कोड़ी लख दांन॥
मारू सिरै महलियां[1] दीसो सिर दंवरांह।
पड़वा काम न जाणहि, मौठा बोलगियांह॥
प्रति मोटै भाडंबरां किमी विवाह वेग।
भरण गरण परणा बहुत पिंगळ मरवर तेग॥

इण तरै घणा उछाह सू विवाह कीधो। पछै पिंगळ राजा डायजै[2] घोड़ा ऊठ चाकर छोकरी सोना-रूपा रा थाळ भौर ही घणी प्रम्म दीन्ही। मीलकरि[3] सुखपाळ रथ १२ पेजवाळ १२, हसरा डायजे दीन्हा।

भवै पुगळ नगर सूं पिंगळ राजा रै भाई गोपाळवारा कागद मेलिह्यो—भाप वेगा[4] भावज्यो। भठै सुगाळ हुवो छै। पछै कागद मेनै राजा पिंगळ नळ राजा रै डरे भाया। कागद दिखाय नै भरज कीवी—भबै म्हांनू घरां री सीख होवै। पछै नळ राजा घणी मनुहार सूं गोठ जिमाई। पिंगळ राजा नै सीख दीवी। नळ राजा पण पहु चावण भाया छै। उठै नळ राजा कह्यौ—थे इतो डायजो दीन्हो सु तौ बडो काम कियौ पण मारू नै भकरसां मल्हो। ताहरां पिंगळ बोल्यौ—मारू मोळी छै। भाय विनां माय विनां भठी भेक रहै नहीं। भबार सौ बरस सात भथवा भाठ तांई कोई मल्हां नहीं। ताहरां नळ राजा पण सीख मांग पाछो भायो। भापरा देस नै चढ़ियौ।

पिंगळ पुंगळ भाविया वेघे वधी सुगाळ।
ठिनू न मेली सासरै भजेस मारू बाळ[5]॥
नळ राजा हिव भापणा भायौ नरवर देस।
गांम गांम रा लोक सह लेसे भाया पेस॥
नळ राजा भावै उच्छळ, परणा बात सुणाय।
बात करै भाया चरै, ढोला नै परणाय॥

नळ राजा परघांनां लोकां भाग नरवर परणामां रा सगळा समाचार कह्या। *रावळो[6] सारो ही राजी हुवौ। पिंगळ राजा पण भाई गोपाळवास भागै भौर* ही रावळां भागै मारू परणायां रा समाचार कह्या। सारै सहकोई राजी हुवा। नळ कहण लागा—म्ह बडो काम कियौ।

---

[1]महिलाओं में [2]दहेज में [3]हाथी विशेष [4]जल्दी [5]छोटी [6]राजवर्गी।

यूं करतां मारवणि वरस तेरा री हुई। ढोलो कंवर पण वरस सोळा रो हुयो छै।

सालहकंवर आयो हिवै[1] जोबन में भरपूर।
राजा मन में जाणियो पिंगळ हुई सनूर[2] ॥
मत कोई जाणावज्यो मारवणि विरतंत[3]।
सुण मळगी नै मुंछ नर, पछै नै मुरट अनंत ॥

नळ राजा आपरा पवास पासवानां सगळांहीन वरजिया—ढोला नै मारवणि री दिस जणावो मती। ढोला री सगाई माळवै करस्यां।

माळव देस सुहामणो जंह सुखिया सहुलोक।
परधानां सालह नै देसी सगळा थोक ॥
माळव देस सुहामणो भीमसेन भूपाळ।
माळवणि धी तसु तणि सुन्दर नै सुकमार ॥

माळव देस रै विसै भीमसेन राजा कनै नळ राजा परधान मल्हिया। तद परधानां भीमसेन राजा नूं कह्यो—राजा री कंवरि नळ राजा मांगै छै। कंवर आपरी ओळियां[4] पास छै। तरै भीमसेन राजी हुवो। आपरा कुटंब राजलोकां नै पूछी सावो थापियो। सावो देनै आपरा परधान साथै मल्हिया तिकै आंण नळ राजा सूं मिळिया। सावो मिनायो[5]। नळ राजा जांन करि चढियो। आय नै ढोला नै माळवणि परणाई।

माळव देसाधर धणी राजा भीम नरिंद[6]।
तासु तणी धी माळवणि सुन्दर सिर मकरंद ॥
सालहकुंवर रो नामरी दियो मन आणंद।
सबगां न मोदै कुंवर, ज्यूं तारां मैं चंद ॥
गरवै परब मरण भगा पण पा हमरी प्रीत।
मारीजी ढाई[7] बिना चउटै माहि चीत ॥
हाथ मुरायण हाथियां हीमा निरु मै पंथ।
नगर पधारा दिया बढ अंबारी मैं एंथ ॥
दोरो निरा परणावियो अणगढ दीया हस्त।
दानो पडि मुण भोगवै माळवणि रै मरम ॥

भीमसेन राजा आपरी बेटी ढोला नूं परणाई। घणो दत्त दायजो १०२ हाथी

---

[1]मन [2]प्रकाशमान [3]वृत्तांत [4]गोद [5]तय किया [6]राजा [7]साथी।

पांच सौ घोड़ा पचास नगर दतरा दे सीख[1] दीधी। नळ राजा ढोले नै परणाय घरे आया। माळवणि अति चतुर छै तिण सूं कंवरजी अति हेत राखै छै। महलांहीज रहै छै—

माया मच्छर मद हियै जोबन जोम प्रताप।
माया मन अति रंग सूं सुख मांहि दिन जात॥
चतुरपणै सारी हियै ढोला सेती प्रीत।
लागी रंग मजीठ ज्यूं चतुरपणी बहु चीत॥
ढोरी माळवणि हियै करै कतूहळ केळ।
ढोलो ममगांनी बणी माळवणि मनमेळ॥
छोळ्यां बरसां माळवि कंठज बरसां बीस।
जोड़ी इसड़ी तो मिळै जो तूठे जगदीस॥
इसी विकसी माळवी भर मद यावै कंत।
ढोलो मोहित अति थयो दाड़िम जेहा दंत॥
माळवणि चौथे चनू[2] मारू मारै सत्य[3]।
पिण ढोलो जाणै नहीं बीसड़िया मेमत्त॥
बैण न मोरै माळविण इसनै करै नेह।
प्रीत मजारस सुखकरण बणि मीठे बयणेह॥
नित नवली मोजां करै, नित नित नवली सेव।
ढोलो माळवण प्रेमनउ हुयो[4] हुयो हेव[5]॥
ढोलो मोहयो[5] माळवि ज्यूं मधुकर बनखेह।
बहु वां मन लागो इयां सारीखे समखेह॥

ढोलोजी माळवणि रे वसि हुवा छै, तिण सूं माळवणि ऊपर सासू घणी रीस में छै।

अेक दिन रै समाजोग कंवरजी पण बारै पधारिया छै। जनास पासवानां मुजरो कियो तद माळवणि विचारियो[6] आज तो सासू रै पगै लागण जावूं। ताहरां घणां अहंकार मांन सूं पगे लागण आयी। सासू माळवणि नै देख बोलती हुई—हूं तो अठा सूं परी ऊठस्यूं। माळवणि रो मुहडो[7] देखूं नहीं। पगे लगाडूं नहीं। तरै सासू रा मुंहडा आगै दोय च्यार पुराती-चाकरी लुगायां[8] हुती त्यां

---

[1]दिया [2]बहुत [3]सत्य अगाधारण [4]प्रेम [5]मोहित किया [6]विचार किया [7]मुंह [8]स्त्रियां।

कह्यौ—ध गुनो माफ करो। पछे मागणऱ्यौ। तद वारो कह्यौ मानियौ। माळवणि भाय पग लागी। जद सासू बोली—कोई नहीं भर कहण लागी—

गरव गहली माळवण कहियौ कोइक बोल।
मारवणि पळगी हुई, तव मोहयौ तें ढोल॥

सासू भापरी गरिमां सू कहै लागी—यही बहू मारवणि रो पांणी भरस्यां। इसो सुण माळवणि सासू पन्हां सू मुरछि परी ऊठी। माळवणि घरे जाय विचारियौ—सासू सुसरौ मो ऊपर गाढ़ा रीस में छै, सु मारवणि रो पांणी करागी। म्हांरी ढोड नी कवरजी ताई छ, स हू म्हारे जतन गाढ़ी करू।

तरै पाघरी कवरजी री हजूर धाई। कवरजी ढोलिय बैठा छै। माळवणि धांन मुजरौ कियो तद कवरजी हाथ पकड़ ने घणा भादर सू माळवणि नै ढोलिय बैसाणी। पण माळवणि बेदल घणी छै। तद कंवरजी पूछियौ—ये ऽम्विगीर क्यू? माळवणि बोली—हुज भाज मोनू सखियां कहे लागी—तू इसरी सुहाग रो गरब करै सु तौने कवरजी सुहाग रो कासू दीन्हौ? ढोलोजी बोलिया—ध विचर मत करो। कहस्यौ तिको देस्यां। थां उपरन्त म्हारै कांई छै। म्हारा जीव छ सोही म्हे थांनू दीन्ही छै। भौर ही थारे जान्जे सो मांगो। हू थाने देस्यू। तद माळवणि बोली—भाप देस्यौ पण सुसरोजी नहीं दवी। ढोलोजी बोलिया—मोनू थायमी सु थारो हुकम कोई लोप नहीं। ताहरां माळवणि बोली—थ्यारे ऽम ग मागग म्हांनै सूपीजै। सोदी म्हांनै सूंपी थ। म्हारै विगर हुकम भापमू कोई दम साग मिनण पावै नहीं। मळ डोढ़ीदार, ख्वास पासवान रायळीऽजूर गारे ही म्हांगहीज रहै। इतरो कवरजी कन्हां सू मांगू छू।

कवरजी इण बात रा कागर लिग दीन्हौ। कबूल कियौ। माळवणि भापरा इतवारी चाकर भमा भाग टापा मांनस भादमी से ढौड़ चुनावा। तिणां नै घोड़ा सिरपाव घणो इन दे राजी किया। पछे विलगाहेत नै कह्यौ—ध भादमी चाळीस भथवा पचास तांइ नौ भ्यारा ही थांनी मळवग्गड़ रा दरवाजा रहौ। विलगाहेत नै सोंप्या राग्या। विलगाहेत नै कवरजी री हजूर राग्या। मांग्नि जारा नै नोर्ग नै कन्यो—कोई पुगळगढ़ या भादमी बाय लिग कन्दै

---

¹बात ²पूरी मैं बर भारर ³इतना बना ⁴बदसर ⁵विना
⁶पूरी भाजार मक।

मारवणि रो कागद होय तौ कागद खोस नै फाड़ नांखज्यौ अथवा म्हांनै पहु घतौ करज्यौ। आदमियां नै मार नांखज्यौ। इसी मळांवस[1] दे च्यार दरवाजां आदमी राख्या—

तिहां माळवणि राखिया पीहर पोहरायत[2]।
पंथी जु पिंगळ मारगां मारण आवै मित्त ॥

इण भांति माळवणि ढोलाजी नै वसि किया छै।

इतरा मांही नळवरगढ़ में अेक परदेसी घोड़ां रो सौदागर घोड़ा लेय नै आयो छै। उणांरा घोड़ा घणा ढोलाजी लिया। ताहरां सौदागर मास पांच नळवरगढ़ मांहि रह्यौ। उठा सूं पईसा घोड़ां रा चुकाय दिया तद सौदागर परो हालियौ। पूगळगढ़ आंण[3] उतरियौ छै। अठै पिंगळ राजा घणी मनुहार करि राखियौ। घोड़ा दो च्यार मोल लिया। हिवै मारवणि री वात चालै छै।

जिम जिम मण अमसर्‍या[4] किया ठार पड़ंती जाय।
तिम तिम मारवणी तणौ तन तरणायौ[5] जाय ॥
हंस गवण कदळी सुजंघ कटि केहरि जिम खीण।
मुख ससहर खंजन नयण कुच श्रीफळ कंठ वीण ॥

मारवणि पदमणि नै चद्रमा सो वदन मगसोचणी हंस की सी गति कटि सिंघ सरीखी छै। काया सोळमा सोनो मुख री सौरभ किस्तूरी जिसी छै। गात री सौरभ[6] चदन सरीखी छै। नासिका जांणै सुवा री चांच तथा दीपक री सिखा सरीखी छै। पयोधर श्रीफळ जिसा। वांणी कोमल जिसी। दांत जांणै दाड़िम कुळी। वेणी जांण नागणी। वांह जांण चंपा री डाळ। अेडी सुपारी सी नै पगथळी स्यांम[7] री जीभ सरीखी छै। वळ मारवणि मांहे सौ अेनेक गुण छै पण कवेस्वर कहै छै—अेकण जीभ करि विसराहेक गुण कह्या जाय। वळ मारवणि रै सातवीसी सहेल्यां छै तिके पण महा सुघड़ छै। त्यांसू मारवणि वात विगत करती दिन विहावै छै।

इसै सम मारवणि गांव सूं अस कोसक माग छै उठै खेलण नै गई। उठै ही सोदागर उतरिया छै।

---

[1]बंदोबस्त [2]पहरेदार [3]आकर [4]अमिसार [5]उभार पर [6]सौरभ [7]स्याम।

साम्ह सभी सौदागरे, आ मग नयर उभार।
बैठा हंस तिण अवसरे[1] नयणां नीर निवार ॥

सौदागर मारवणि नै महा अद्‌भुत देवगना जिसी देखनै कह्यौ—

सुन्दर सोहग सुन्दरी अहर[2] अराता[3] रंग।
केहर लंकी खीण कटि, कोमळ नेत्र कुरंग ॥

पछै सखियां नै पूछियौ—

तिण देखत ही पूछियौ कुण है राजकुमारि।
किह पीहर किह सासरौ किणत कहौ सुविचारि ॥

सहेलियां बोली—

कुंवरि पिंगळ राव री मारवणि इण नाम।
नळवरगढ़ ढोले कुंवर, परणी पोहकर[4] ठाम ॥
बात सुणी सौदागरे, आख्यौ सर्व वतांत।
बाळपणे परण्या बिन्है[5] अन्तर पड़ियौ अनन्त ॥

फेर सौदागर कह्यौ—

हौ जोवण पै मेलिया ढोले कुंवर तुम्हां।
को अवगुण था गोरड़ी किण कारणौ[6] अम्हां ॥
सिण परै हौ जोयणां[7] झिळमिळ बीजळियांह।
ढोलो मरवर सैरियां[8] मरवण घुंघटियांह ॥

इतरा मांहि सखियां बोली—सौदागरजी थे कठासूं पधारिया छौ? ताहरां सौदागर बोल्यौ—हूं नळवरगढ घोड़ा बेचण गयौ छौ उठै महीना पांच-सात रह्यौ। ढोलजी म्हांरा घोड़ा लिया। मोसूं घणी महरबानगी करै छै। म्हारै भाई हुवा छै। तद सहेलियां बोली—उठा री म्हांनै हकीकत तो कहौ। कासूं रंग ढंग छै? इतरै सौदागर नळवरगढ़ री हकीकत कहै छै।

इतरै समै[9] पिंगळ राजा रो खवास घोड़ो फेरवा[10] सारू आंण निसरियौ[11] सु ऊ पण वस गयौ। मारवणि छांनैसी बातां सांभळै[12] छै। सौदागर बोल्यौ—ढोलाजी तो भीमसेन राजा री बेटी माळवणि परणियौ छै, तिण रै वस[13] पड़ी

---

[1] अवसर पर [2] अधर [3] लाल [4] पुष्कर [5] दोनों [6] कहो [7] योजनों पर [8] शहर में [9] समय [10] दर्शनार्थे [11] निकला [12] सुनती है [13] वश में।

२

छै। थ्यारां ही दरवाजा आपरा आदमी राख्या छै। खवास ढोलाजी कन्ने आपरा पीहर रा राख्या छै। डोढ़ियां माल्मी आपरा पीहर रा छै। मठा सूं आदमी मल्हौ छै जिको तौ नळवरगढ़ में ही घसण[1] पावै नहीं। कागळ[2] कोस सेवै सू तौ माळवणि नै जाय सूंपै अर आदमी नै मारनांखै छै।

आ हकीकत सुणि राजा रै खवास राजा री हजूर कह्यो। ताहरां पिंगळ राजा सौदागर नै बुलाय सारा समचार पूछिया। सौदागर सारा ही कह्या। यळ सौदागर बोल्यौ—कंवर मोटौ दातार, कामदेव रो अवतार छै। आपरी बेटी पण पदमणी छै। इतरी हकीकत सुण सौदागर नू सीख दीवी। पिंगळ राजा रै मन में चिन्ता घणी छै—

सौदागर संदेसड़ा सांभळिया सकणेह।
मारवणि मनमथ हुई, मुक्सी[3] पळ नकणेह॥
सबै सहेली साथ करि, करि आवै मैमंत[4]।
स्यामा आवण साजिवौ चलै न चाढ़ौ चित्त॥

मारवणि विरह री मैमंत हुई थकी सखियां साथै चाली आवै छै। इसै समै उतराद री घटा हुवी तिण मांहि मेह गाजियौ। तद मारू बोली—

बीजळियां निलज्जियां[5] जळहर तूंही लज्जि।
सूनी सेज विदेस पिव मुधरइ मुधरइ गज्जि॥

इतरै बीज[6] खिवी ताहरां बीज नै दूहो कह्यौ—

बीजुळियां चहळावहळि, आभइ आभइ श्रेक।
कदी मिळ उण साहिबा कर काजळ की रेख॥
बीजुळियां चहळावहळि, आभइ आभइ च्यारि।
कद रे मिलूंसी सज्जणा लांबी बांह पसारि॥

इतरी बात करती थकी विरह-मैमत हुई मारू घर आई। पण सखियां सूं वात विगत करै नहीं। मन मांही कंवरजी बस रह्या छै सु रातै सूतां सपनो आयौ—जांणै कंवरजी आण मिळिया छै। जागी जद देखै तौ क्यूंही नहीं। जद मारू श्रेकण सहेली नू कहै—

---

[1] घुसने [2] कागज [3] छलकाये [4] विभोर [5] स्वामा [6] निर्लज्ज बिजली [7] चमकी।

जाण हु हिवड़ै हुवो सैणां हंदो[१] साथ।
जे सुपनो साचो हुवै तौ जाणूं पळ जाय॥

सुहिणा[२] आया फिर गया मैं सर भरिया रोय।
आम सुहागण नींदड़ी सजना देखूं सोय॥

जब जागूं तब एकली जब सोऊं तब बेय[३]।
सुपना मोनै चेतरी[४] बीजी तीजी हेम॥

सुपना तौ मोनै बही[५] तोनै बहुम्मी भम्म।
सौ कोसां सज्जण बसै सूती नी पळ भम्म॥

सुपना में सज्जण मिळया मैं भर भाली बत्थ।
नींद गई पिउ बीछड्या जागत पटकूं हत्थ॥

जब सोऊं तब जागवै जब जागूं तब जाय।
मारू ढोलो संभरै[६] इण पण रमण विहाय॥

बहियां सोइ बिदेस पिव तन हिय न जावै ताप।
बाबहिया[७] मासाढ बिन बिरहण करै विलाप॥

सौ जोबण[८] सज्जण बसै रैण सतावै माय।
इण परदेसी बल्लहां[९] बरी सतावै माय॥

सपनै सज्जण पाइया हु सूती गळ लाय।
भीर न खोलूं भंजड़ी मत सज्जण फिर जाय॥

सखी सहेली माखली[१०] सुपनां पिव मिळियाह।
फिट रे नयण कुलक्खणा जागी मैं गमियाह[११]॥

मारवणि सखियां नै पूछै—

मारवणि सखियां कहै मो परणाई केम।
पीव रूठै जाणा नहीं हु मेकसड़ी प्रेम॥

इतरा विलाप करण लागी तद सहेल्यां बोली—

इक म्हां मन इचरज[१२] हुवो सांभळ[१३] बात सप्रेम।
त्यां मणबीळ[१४] सज्जणां क्यूं कर लागो प्रेम॥

---

[१]का [२]सपना [३]दो [४]सती [५]जमाई [६]याद करती है [७]पपीहा [८]योजन [९]वल्लभ [१०]आनन्द लूटेंगे [११]खोनये [१२]आश्चर्य [१३]सुनो [१४]मनदेखे।

सगळी सखियां मारू नै कहै लागी—थांईजी थांनै बिनां देख्यां प्रेम इसटियौ सु कांई जांणीजै ? परणियां नद तौ बरस होइ रा छा। कंवरजी तीन बरस रा छा। वीवाह पाळी मांहे हुवौ छौ सु थांनै याद ही आवै नहीं। कंवरजी नूं पिछांणो[1] ही नहीं अर प्रेम इतरो लगायो छै। थे रात दिन कंवरजी रो समरण[2] करो छो। अक पल भूलो न छौ सु म्हांनै घणो अचरज हुवै।

सखियां आखै[3] मारवी तूं मन निहचै[4] रात।
माळवंवाळ[5] मत करै म्हांनूं सांची आख॥

तद मारू बोली—थे अणदीठां री बात कही सु सांची पण सिंघ रा बच्चा नूं हाथी मारणा कुण सिखावै छै? अर थे कांई और बात मन में विचारता होस्यौ पण म्हारै तौ मन अेक निकवळ[6] ध्यांन कंवरजी रो हीज छै। कंवरजी री सूरत म्हारा हिरदा मे बस रही छै। रात सूती नै कंवरजी आंण जगावै छै। रात-रात भर नींद आवै नहीं। म्हांरी खोड़[7] तौ अठै छै अर जीव मळवरगढ़ में छै। थे धीरज बधावौ सु म्हे बात जांणां छां। पण मन कंवरजी सूं मिलण नै घणौ आखतौ[8] पड़ै छै।

सखी थे सज्जण बल्लहा वे अणदीठा होय।
पल पल भीतर संभरै[9] न विसरै खिण कोय॥
स सनेही समदां परै, बसै सु हीय मझार।
कु सनेही कर आंगणै सात समंदां पार॥
जे जीवण ज्यांही तणौ, धो ज्यां चित्त बसंत।
आप दूब पमोहरां ज्यूं बाळक चूसंत॥

यूं विलाप करतां रात नीठ[10] काढ़ी। परभात रै समै सखियां जाय रांणी देवड़ी आगै मारवणि री सारी हकीकत कही—

सखियां रांणी सूं सकळ, विवरायै[11] सहनांणि।
ढासहढ़ूंवर सुपनै मिळै पदमण अंग कुमलांणि॥
ढोला सूं सुपनै मिळै मारू चित्त उदास।
काबद वेगा मोकळौ[12] खबर मंगावौ खास॥

---

[1] पहिचानते [2] स्मरण [3] कहती है [4] निश्चिन्त [5] ढासमटोल [6] केवल मात्र [7] शरीर [8] उतावला [9] याद करती है [10] मुश्किल से [11] वर्णन किया [12] भेजो।

अबै राणी सखियां गोखै आई। तरै समाचार सांभळ[1] नै सखियां नूं पाछी कहै लागी—ढोलोजी तो माळवणि रै वस छै सु माळवणि मारग आपरै वसि कीना छै। आपणौ कासीद जाय निको मारियौ जाय छै। मैं तौ कागळ समाचार घणा ही मेल्या पण पाछौ कोई आवै नहीं। वळ आदमी मेलूं जिका मरण सूं डरता जाय कोई नहीं।

> पूंगळ की तिय पदमिणी[2] ढोलै बिरह न होय।
> माळवणी मारै तिहां पूंगळ पंथी कोय॥
> बाट न कोई बहि सकै कबा बाट जळांह[3]।
> नरवरगढ पहुंचै नहीं संदेसा सयणांह॥

वळ राणी सखियां नै कहै—

> राणी सखियां नै कहै, सुण बावड़ी समझ।
> समझाई रानी सबै माफ महिला मझ॥

सखियां पाछी मारवणि कन्है आई। पाछा सूं राणी वळ आदमी मेल्यो—ढोलाजी कन्है। साथ कागद दीन्हौ तिण मांहै घणी मनुहार लिखी। कासीद नरवरगढ जाय पहुंतो[4]। तद माळवणि रा आदमियां कासीद नूं मार नाखियो। कागद सवाय माळवणि नै सूंप्यो तिण कागद बांच फाड़ नाखियो। आदमियां नूं सिरपाव दियो। यूं करता बरस बीतो पण ढोलाजी ताईं कागद कोई पहुंतो नहीं। अक दिन रै समाजोग तिसडिये महल मारवणिजी पोढ्या छै। इतरै पपीहा बोल्यो तिण सूं कहै लागी—

> काम बनावण पिय कहण बोल न बाबहियाह[5]।
> हूं मूं बाहर मोरडी कहि प्रिय आवण कांह॥
>
> गगिया मो परदेस पिय तन ही न आवे ताप।
> बाबहिया आगाड़ प्रिय बिरहण करै बिलाप॥
>
> बाबहिया नै बिरहणी दो बिहु अेक सभाव।
> जद ही बरसै घन घणौ तबहि कहै पिय आव॥
>
> बाबहिया डूंगर रहण[6] करि हमारो गांव।
> सारी रात पुकारियौ मि लै पिय को नांव॥

---

[1] सुनकर [2] मजे [3] सुमनो मे [4] पहुंचा [5] पपीहा [6] अजान बाला।

बाबहिया नीस पंखिया मगर[1] ज काळी रेह ।
मत पावस सुणि विरहणी तड़फ तड़फ जिव देह ॥

बाबहिया चढि डूंगरे, चढि ऊंचे री पाज ।
मत ही साहिब बाहुड़ै सुण मेहां की गाज ॥

विलापात करतां करतां मारवणि नूं घड़ी दो नींद आगी छै। इसै समै सर मांहे कुरझां बोली। तद मारू जाग नै कुरझां सूं बोली—

कुरझड़ियां कुरळावसी[2] बरि पाछिले बरंग[3] ।
सूती सज्जण संभरया[4] करवत बूही अंग ॥

कुरझड़ियां कळियळ किया सरवर पहली तीर ।
निसि भर सज्जण सांभरया नयणे बूठा नीर ॥

सखियां कुरझां नै कहै छै—म्हारी बाईजी थांनै ओळभो[5] देवै छै। थे अबोली रह्यो। मारू नै थांरो साद ओरमो[6] लागै छै। थे रात नै क्यूं कुरळो छो। थांरा भरतार[7] तो कन्है छै। बीजी थांनै किण बात री चाह छै सु थे कुरळो ? म्हांरी बाई नै थांरो साद सुणियां विरह उमटै छै, जद थांनै ओळभा देवै छै। इसरी सुण कुरझां बोली—

जुग मंम जीवन जिसो घटै न नवळो नेह ।
एक विहाई[8] सज्जणां जम करसी जुग जेह ॥

मारू बोली—

राते सारस कुरळिया पाखि रहे पव ताल ।
जांकी जोड़ी बीछड़ै तांको कूण हवाल ॥

वळ मारू कुरझां नै कहै लागी—

कुरझड़ियां थी पांखड़ी थांकउ बिनउ बहेसि ।
सायर लंघी[9] प्री मिळउं प्री मिळि पाछी देसि ॥

म्हे कुरझां महिरांण री पांखां किणहि न देसि ।
बरिया सर बैठी रहां उड धाबेरि[1] बहेसि ॥

---

[1]पीठ पर [2]करुण स्वर में बोलने पर [3]पानी के पड़ने पर [4]याद किया [5]उपालंभ [6]मनभावना विरह-व्यथा जगाने वाला [7]पति [8]बिन [9]सोचकर [10]बहुत दूर ।

आथमणी[1] उपराठिया दिक्खण सांमहियांह[2] ।
ढोल सरीसो कूरमड़ी ढोला नूं कहियांह ॥
माणस हुवां त मुख चवां[3] म्हे छां कमड़ियांह ।
पिव संदेसो पाठविसु, लिखदे पांखड़ियांह ॥
पांखे पांणी बाहरा, फळि काजळ वहिल्लाह ।
मयणां तणा सदेसड़ा मुख बचने कहियाह ॥

इतरा दूहा विलापात रा मारवणि कहिया तिके ऊमा देवड़ी सरब सुण्या । सुण नै पिंगळ राजा आगे आय हकीकत कही—

सहि प्रियतम संदेसड़ा मारवणि कहियाह ।
माता मन में जाणियो विरह वियाप पियाह ॥
राणी ऊमा सांमळ्या[4] मारू तणा वयण ।
ऊमा मन में जाणियो मारू मेलूं सयण ॥
आवै ऊमा देवड़ी सांमळ पिंगळ राय ।
विरह वियापी[5] मारवी नहि रायण रै दाय ॥

ऊमा देवड़ी राजा पिंगळ नै सारी हकीकत कही । ताहरां राजा पिंगळ बोल्यो—

नित नित नवला साँहिया नित नित नवला लाज ।
पिंगळ राजा पाठवै ढोला तेड़ण काज ॥
जहां का इन आवै नहीं यहां का उन न जाय ।
ढोला-मारू बिच सरीसड़ा बीच पहाड़[6] थाय ॥

पिंगळ राजा ऊमा देवड़ी नै कहण लागो—कई कोई आदमी तो घणा ही मेल्हिया[7] पण पाछो कोई आयो नहीं । सारा ही मारिया गया ।

राजाजी घणा दलगीर थका बैठा छै, तरै रांणी बोली—मैं तो आपनै कहयो छो—इतरी ऊळगी[8] मत द्यो । तद राजा बोल्यो—सू तो पार पड़ी पण अबै ये कहो तो भीमसेन पुरोहित नै मेल्हां[9] । रांणी बोली—भली बात छै, मेल्हो । तद भीमसेन पुरोहित नूं हजूर बुलाय नै राजा कहयो—पुरोहितजी थे मळवार गढ़ पधारो । ढोलर नै बुलाय ल्यावो । ताहरां पुरोहित कहयो—प्रमाण ऊंचा सरू । इतरा मांहे मारवणि री मन मेहेली सुणनी हुती तिण आय मारवणि नै कहयो—

---

[1]पश्चिम [2]सामने तरफ [3]कहें [4]सुने [5]व्याप्त हुई [6]पहाड़ी [7]भेजे [8]दूर [9]भेजें ।

पहली आपरी सखी नूं सिखाया हुता उण सखी नै हजूर बैसांणी। मूंढै आगै ढाढी बैठा छै, त्यांने संदेसा रा दूहा कहै छै—

मारू सखी सिखावियां मारू राम उपाय।
दूहा संदेसा तणा दीया तिहां सिखाय॥
मळयर देस सुहामणो[1] जे ढाढी जावेस।
मारू तणा संदेसड़ा ढोले कंवर कहेस॥
ढाढी जो ढोलो मिळै कहे अमहीणी बत्त।
जण कणियर री कंब ज्यूं, सूकी तोइ सुरत्त॥
पंथी अेक संदेसड़ो लग ढोले पहुंचाय।
जोबन खीर-समुद्र[2] हुए, रतन ज काढी जाय॥
पंथी अेक संदेसड़ो जब ढोले पहुंचाय।
चंपा केळिनि फळि गई, स्वाद जु बरसज जाय॥
पंथी अेक संदेसड़ो मग ढोले पहुंचाय।
जोबन जावै प्राहुणो[3] अेमेरी कर जाय॥
पंथी हाथ संदेसड़ो धण बिलखंती[4] देह।
पग सूं काढी लीहटी[5] उर आंसुवां भरेह॥
संदेसा मत मोकळी प्रीतम तू आवेस।
आंगळड़ी ही गळि गई, नयण न बांचण देस॥
जे ढोला न आवियो सावण पहली तीज।
बीजळ तणै झबूकड़ै[6] मूंध[7] मरेसी खीज॥
जे ढोला न आवियो काजळियां री तीज।
चमक मरेसी मारवी देख लिवंती बीज॥
हिवड़ा[8] भीतर पैस कर, ऊगो सज्जण रूख[9]।
नित सूकै नित पल्लवै[10] नित नित नवला रूख॥
अकथ कहाणी प्रेम की किणसूं कही न जाय।
गूंगा का सुपना भया सुमर सुमर पिछताय॥
चंदण देह कपूर रस सीतळ गंग प्रवाह।
मन रंजण तन उल्हसण[11] कदी मिळसी नाह॥

---

[1]सुहावना [2]क्षीर सागर [3]पाहुना [4]बिलखती हुई [5]लकीर [6]चमक से [7]मुग्धा [8]हृदय [9]वृक्ष [10]पल्लवित होता है [11]उल्लसित करने वाला।

मारग[1] मेक हिलोर दे भाड़ सकई तो भाड़ ।
बाड़िमां में बसिक्यां काम उजाड़ उजाड़ ।।

हिवै ढाढी पूगळगढ़ सूं चालिया छै। पोहर रात गयां ऊहड़ सोळ सी रै गांव जाय उतरिया छै। पछै डेरौ कर, दोन्यू भाई सुभराज करण नैं ऊहड़ सोळ सी रै दरबार गया। उठै जाय सुभराज कियौ। उरसी-पैमी बात करनै पूछियौ—ठाकरां रावरा गांव सूं नळवरगढ़ कितरा कोस छै? ऊहड़ बोलियौ—थांरै नळवरगढ़ कासूं काम छै। तद ढाढी बोलिया—राजा नळ बडौ दातार छै, तिण नै जाचवा जावां छां। ताहरां ऊहड़ बोलियौ—जाचण जावौ छौ सु म्हांनै मालम छै। भर पे म्हासूं डरो मती। म्हे थांनूं नळवरगढ़ रा सारा समाचार कहस्यां।

चाचिग[2] चावण ढाढिया[3] ऊहड़ सांम्हा जोय।
ज्यांरै अैसी मोरड़ी चाल न पावै कोय।।
पे जावौ छौ नळवरै, ढाढी सुणौ ज बात।
माळवणी चौकी रहै, पंखियां करै ज घात।।

सारा ही नळवरगढ़ रा समाचार ऊहड़ सोळ सी ढाढियां नै कह्या। माळवणि री चौकी[4] रहै छै तिकी सारी हकीकत कही। ढाढियां नै घणी आदर दीन्हौ। सवारी जायगां डेरी दिरायौ। ढाढी रातै उठै रह्या। परभात ही डगो साथ ऊहड़ सोळ सी कनै आया। आय नै सुभराज कियौ—

ऊहड़ मोटौ राजवी सोळ सी सिरताज।
थासूं मिळियां मन महे आणंद हुआ ज आज।।

ऊहड़ कनां सूं सीख मांग ढाढी आगा चालिया छै। मारवणि पूगळ बैठी दिन गिणै छै। ढोला री वाट देखै छै। नितका[5] काग-मोर उडावै छै। एक दिन रै समाजोग[6] परभात ही मारवणि ऊठ झरोखै बैठी छै। इण समै काग आंगण मोड़ै[7] बोलियौ। ताहरां मारवणि बोली—कंवरजी पधारै तौ उडज्या। इण भांत पाकी काग-मोर उडावै छै। वळ काग नै कहै छै—

कागा पीव न आवियौ किंयौ बडेरो चित्त।
जकडी होय त दोय बळि ॥ मेल्हाड़ी मित्त।।

---

[1]मित्र [2]याचक [3]जसे [4]पहरा [5]हर रोज [6]इत्तफ़ाक [7]दरवाजे पर।

कागा देसां पिव बसै उडी तिहां चलि जाय ।
ले मारू की पांसळी[1] ढोला देवत जाय ॥

मारवणि कायस सूं इण भांति विलापात करै छै । ढाढ़ी उल्हड़ सोळसी नखे[2] सूं चालिया हुता सो कितराहेक दिनां में नळवरगढ़ आ पहुंता ।

आगे दरवाजा चौकीदार बैठा छै त्यां सूं ढाढ़ियां रै धको[3] हुवौ । चौकीदार मार-मार ऊठिया । तद दोनूं भाई ढाढ़ी अर पांच सात चाकर हुता तिकै तरवार ढाल तीर कांबठा उभारया[4] । वळ कहण लागा—ठाकर पधारौ छौ तिणहीज भांत पधारज्यौ । तरै थां पण जांणियौ—अबै तो सरीखीज[5] वाजै । ताहरां चौकीदारां मांहे अेक दांनौ[6] आदमी हुतौ तिकौ कहण लागौ—इणां नूं हकीकत पूछ खानाजमी[7] करौ । ताहरां चौकीदार पूछण लागा—थे कठा सूं आया ? कठै जास्यौ ? तद ढाढ़ियां कह्यौ—देस मांहे राजा नळ नूं जाचण आया छां । म्हे यूं जांणता के राजा मांगण आवै त्यांनै मरावै छै, तौ कोई आवता नहीं । तद चौकीदार बोलिया—थे पुगळगढ़ रहौ छौ मारवणि रा समाचार ल्याया छौ तौ आपणै आछौ[8] होसी । ताहरां ढाढ़ी बोलिया—म्हे तौ पिंगळ-गढ़ नो दीठौ न सुणियौ न कोई मारू नै ओळखां[9] । थे भला रजपूत होय इसी बात कासूं कहौ ? चौकीदारां ढाढ़ियां नै ऊंचा नीचा घणा ही लिया पण ढाढ़ी सधीर[10] रह्या । पछै चौकीदारां ढाढ़िया री सगळी वरो भांत-भांत कर पांच सात वार उथळ-पुथळ दीठौ तौ ही कागद कोई निजर आयौ नही । तद ढाढ़ी बोलिया—अहो रजपूतां म्हे तौ जाचण आया छां । म्हां कनै क्यांरा कागद होसी । बेकांम म्हांम फोड़ा[11] क्यूं पाड़ौ । ताहरां ढाढ़ियां नै छोड दीन्हा । वळ कहण लागा—कागद ल्यावसी सु अेकलो आवसी इतरा क्यांनै आवसी । पछै ढाढ़ियां आपरै किसब[12] सूं गाय-बजाय गाढ़ा राजी किया । तद चौकीदारां ढाढ़ियां नै उठै राखिया । अेक रात घणा हीड़ा[13] किया । सहर री पण सारी हकीकत कही—च्यार दरवाजा छै, ये छौ मारवणि री चौकी छै । उठै थां सूं सेवस[14] करसी । अेक बारी छै—उत्तर दिस भूं मालवा कुमारी रा घर कन्है ।

---

[1]पसली [2]पास [3]टक्कर [4]बाहर निकाले [5]बराबरी का झगड़ा [6]बूढ़ा पुराना [7]मनका-विश्वास [8]अच्छा [9]पहिचानते हैं [10]दृढ़ [11]तकलीफ [12]हुनर [13]बेगार [14]मेल-जोल ।

उठै उणरो आवतो छै सु उणनै पे राजी कर मोल्यो । इतरी हकीकत सुण राजी हुवा । परभाते[1] चालिया सु सोच करता जाय छै । गढ़ री झांकी[2] छै उठै गया । कुमारी न्याव[3] पचावती[4] हुती उठै ढाढी जाय कह्यो—बाई अठै म्हांनै आछीसी जायगां डेरा नै बतावो । कुमारी बोली—थे मारू रा समाचार ल्याया छो । ताहरां दूजो भाई बोलियो—म्हे तो जांणां नहीं मारू कुण छै, कठै वसे छै ? पछै हाथ सू एक मोहर कुमारी नू देवण लागो । था बोली कांई छै ? ढाढी कह्यो पछै देख लेई । कुमारी देखै तो मोहर छै । तरै घणी राजी हुई । कुमारी रो घर दरबार कन्है हिज छै । उठै कुमारी ढाढियां नै ले गई । न जाय पाछी जायगा करी दिरायो—

> कूड़ कपट मन मेल्हजी माया मळ्यार वेस ।
> मळ्यार कुंवर भेटस्यां मन में चित प्रवेस ॥

ढाढियां कुंमारी नू कह्यो—बाई ढोलाजी री हजूर माळवणि न होय जद तूं म्हांनै खबर दीजे । कुमारी बोली—माळवणि न होय जद क्यूं ? तद ढाढियां कह्यो—लुगाई नै मुजरो नहीं करण रो म्हांरै नेम[5] छै । उठा पछै ढाढा कुमारी रो भोगजो ढाढियां रहण लागो ।

एक दिन रै समै माळवणि नवबीसी सहेल्यां साथे लेय नै बाग मांहि खेलण नूं गई छै । तद कंवरजी बारै पधारिया । ताहरां खवास पासवानां सगळा आणि मुजरो कियो । कंवरजी दरीखांनै[6] बैठा छै । इसै समै कुंमारी रै मांणस आण ढाढियां नै कह्यो—थे औसर आवै छो तिको अवार छै । कंवरजी दरीखांनै आया छै । इसो सुण ढाढियां सिरपाव पहरिया । बीण सज कर मुजरा नै चालिया । ढाढियां जाय दरवान नै समाह कहवायो—बारै ढाढी ऊभा छै । कंवरजी कह्यो—हजूर आवै । पछै ढाढियां आय नै मुजरा किन्यो । कंवरजी फुरमायो—हेटा बैठो । पछै कंवरजी फुरमायो—गावो । ताहरां ढाढियां मारवणि रा सनेसा रा दूहा मारू राग मांहि गाया ।

> ढाढी गाया निसह भरि, सुणियो साल्ह सुजांण ।
> थाई पांणी मच्छ ज्यूं, बेलत भमर बिहांण[7] ॥

---

[1]प्रभात में [2]राजा के दर्शन देने का स्थान [3]धाया [4]पनाती [5]प्रण [6]बैठक [7]सवेरा ।

ढाढ़ियां सवेसा रा दूहा पोहर दिन छतां गावणा मांडिया था सु गावतां गावतां आधी रात गई। जद कंवरजी नै तो ब्याळू ताई रसोड़ै बुलाया। ढाढ़ियां नै सीख दीवी। वां न पूछियौ कोई नहीं। ढाढ़ियां साथै बुनियादी आगली चाकर थौ तिण नै मेलियौ—थणांरी अबता खावण-पीवण री आथा वोळा री सारी ही थारै हवाले छै। अथा जतन करजै। इसरी कहि आप रसोड़ै आरोगण पधारिया। सै कोई उमरावां नै पण आप कन्है बैसाणिया। आपरै थाळ आयौ। सह कोई सिरदारां नै थाळी आई। यूं आरोगतां मनवाळ करतां रात पाछली पोहर अेक आय रही। कंवरजी घणा दिनां सूं बारै पधारिया छै सु सै कोई उमराव लोक मुजरै आय भेळा हुवा छै। स कोई साथ वातां–विगतां करतां रात बवीत हुई। कंवरजी पण रात नीठ नीठ काढ़ी। मन में अचभो छै। वेसां ढाढ़ियां नै पूछू—अठा ढोलो मारवणि कुण हुवा छै।

पी फाटी पी ऊगियौ आमा पूछण बत।
कही न तिण री वारता जिसुकी आया रत॥
कवण देस तैं आविया किहां तुम्हारो वास।
कुण ढोलो कुण मारवी राति मल्हाया वास॥

सद ढाढ़ी कहै लागा—

पूगळ हूंता आविया पूंगळ म्हांको वास।
पिंगळ राजा तास घू मरवा नांवै पास॥
मारवणी पिंगळ धू यूं अपछर रै उणिहार।
बाळपणै परणी पछै, भूल न लीन्ही सार॥
सवेसे ही घर घरणा कद आवण कद वार।
अबसि न आमा पीहरा[1] सेह मिलाइ पंवार॥

साहरां ढोलाजी बोलिया—आ हकीकत व्योरा सूं कहो। ढाढ़ी बोलिया—कंवरजी म्हांरी तो कहण री आसंग[2] कायनी। आपरा उमराव खवास पास-वान सारा ही जांणै छै। यानै पूछो। साहरां ढोलाजी सह कोई नै पूछियौ। मारवणि सूं डरता कोई बोलै नहीं। सह कोई कहण लागा—ढाढ़ियां नै हिज पूछौ। वळ ढोलेजी कहयौ—ढाढ़ियां थे हिज कहौ। ढाढ़ी बोलिया—कंवरजी कहां तो मारिया जावां। ढोलोजी बोलिया—थांनै किण रो डर छै? वळे

थांरा¹ चावता मैं कंवरजी आपरा चाकरां नै ढाढ़ियां दोळा² राख्या । ताहरां ढाढ़ी बोलिया—पूगळनगर रो धणी पिंगळ राजा तिण री बेटी मारवणि उणरा मेल्या म्हे अठै आया छां । वळ ढाढ़ी कहण लागा—

> चंद मुखी हंसा गवणि कोमल दीरघ केस ।
> कंचन वरणी कामणी वेगी³ आव मिळेस⁴ ॥

तद ढोलाजी रै मन भाव ऊपनी—

> ढोल मन आरति हुई, सांभळि ए विरतंत ।
> के दिन मारू विसर गया वई⁵ न ग्यान गिणंत ॥

ढोलोजी आ हकीकत सुण गाढ़ा राजी हुवा । वळ कहण लागा—थांरा हाथ रो कागद छै ? ताहरां ढोलियां कह्यौ—हुसी राज वांचस्यौ ? तद कंवरजी ढाढ़ियां नै घणौ सनमान दीधौ ।

> राजा धण मादर किसी पूछै कुसळ खेम ।
> संवरा पूणियां पछै, हियड़ौ⁶ धरौ न हेम ॥

वळ ढोलाजी पूछियौ—मारवणि रूपी⁷ छै ? ताहरां ढाढ़ी बोलियौ—

> वन विहाड़ी घन वही घन मयूर⁸ घन धार ।
> सुलखणी सुन्दर तणी साहिब पूरी सार ॥

वळ ढोलाजी पूछियौ—मारवणि किसीहेक छै ? ताहरां ढाढ़ियां कह्यौ—

> ममर चाम विसेख किम चामा हुंस चलाय ।
> मारू ज्यां निरखी नहीं ज्यांही जनम अमारथ ॥
> हेमन्त चीह किम कहूं मारू रूप अपार ।
> संकर तूं ना पास्यै उस उदार भवतार ॥

वळ ढाढ़ियां नै मुख वचन समाचार मारवणि कह्या छा सु सगळा ही कह्या । पण ढाढ़ी डरै छै । ताहरां ढोलोजी बोलिया—भ बोलस⁹ छौ । तद ढाढ़ी बोल्या—कंवरजी आपनै दीठा सौ घणा राजी छां पण मरण सूं डरां छां । अठा ताईं सौ म्हे झूठ सांच कर जीवता आया । दूजा कागद लेयनै आवता जिका पूगळ वैसरा सौ आदमी मारया गया छा । ताहरां ढोलोजी ढाढ़ियां नै घणी दिलासा दीवी ।

---

¹उनके ²चारों ओर ³शीघ्र ⁴मिलो ⁵आतुरता ⁶विमाता ⁷हृदय ⁸मधुरी ⁹मधुरता ¹⁰ हताश भयभीत ।

कहयौ—ये म्हारा जीव सुवाणा[1] छो । ताहरां ढाढ़ियां वीण[2] री नाळी खोल नै मारवणि रा हाथ रो कागद कवरजी रै हाथ दीन्हौ । कवरजी कहण लागा—वाह-वाह बड़ा चावता सू कागद ल्याया । ताहरां ढाढ़ी बोलिया—महाराज कवार कागद यू न ल्यावता तौ किण विध पहुचता । वळ कागद देखता सी म्हे पण मारिया जावता । ज्यांरी वा'र[3] ही होती नहीं ।

पछै ढोलाजी मारवणि री कागद भेय छाती सूं भीड़ियौ —

ढाढी ले कागद दियौ लिखियौ मारू नेह ।
ढोले उर सू भीड़ियौ घणा तणी सनेह ॥

फर ढोलजी घण हेत सू कागद वांचणौ मांडियौ[4] । कागद मांहि घणी मनवार कीधी तिका बांच-बांच कवरजी हुसे छै । कागद महि दूहा लिखिया छै तिका मांयै छै—

कूंकू कागद मन्तवरै पाठवियौ[5] सयणेह ।
मन वांचंती महल्लियौ[6] टपकंते नयणेह ॥

दुरजण वयण न संभरै, हिरदा में चिपरेह[7] ।
कच्चा नाल बधाह ज्यूं खिण-खिण चीता रेह ॥

कागद थोड़ो हित घणौ मोपै लिख्यौ न जाय ।
सायर में पाणी घणी (सू) गागर में न समाय ॥

कागद लिखू कपूर सूं, विच विच लिखू सलाम ।
साहिब मुख दीठां बिनां सुख सोऊं तौ हरांम ॥

धबकै जौ प्रियतम मिळै पलक न छोडू पास ।
रोम रोम में बिच रहु ज्यू कलियन में बास ॥

सूता सपने मैं मिलै इक रातै सौ बार ।
मन राख्यौ हि न रहै कर मेलै करतार ॥

ढोला जे आया नहीं जोड़ा दिनां क मांह ।
तौ आयां न लाभसी[8] मारू पंजर मांह ॥

ढोले कागद बांचियौ लाग्यौ मनछ सनेह ।
मिळवा हिवड़ौ हुलस्यौ[9] जिम वाबीहा मेह ॥

---

[1]प्यारे [2]वीणा [3]पुनरागम, सुनवाई [4]लगाया [5]प्रारंभ किया [6]भेजा [7]भिगोया [8]भूलता है [9]मिलेगी [9]हुलसित हुआ ।

कागद बांच नै ढोलोजी बोलिया—

> कागद आखर आछिया कोइक वर्ई कुवांण ।
> कै पंथी मीना मुआ (कै) लिखणहार अजांण ॥

इतरो सुण ढाढी बोलिया—

> भरै पलटै भीभरै, भीभर[1] ही पलटेह ।
> ढाढी हाथ संदेसड़ा धण बिलपंती[2] देह ॥
> कागद भळिया आंसुआं नैणे मेह बिलग्ग[3] ।
> पढि पढि धूव पपोहरा उघट[4] उघट लिए लग्ग ॥

कागद बळ छै—अेक नळ राजा नै दूजी दमैती रांणी नै जिके पण पहु पाया । अ घणा राजी हुवा छै ।

अबै ढोलेजी नै मारवणि सू मिलण री चिंता घणी छै । ताहरां आळ मात बोल्यौ—आपनै पण वगो पधारणी होसी । पण हमें ढाढियां नै सीख दो । थांरै सै कोई आतुर होसी । नळ माळवणि जाणियौ तौ यांसू खेचळ[5] होसी ।

> संदेसा छह सांभळ कहियां तिहां संभाळ ।
> माळवणि सूं संकता[6] सीख वर्ई ततकाळ ॥
> ढोला तणा संदेसड़ा दिल सैणा कहियाह ।
> हू आवू छू पावसी वेगो ही बहियांह ॥
> सीख समीपै ढाढीहां दीन्ही लाख पसाव ।
> ढोलो मन मैं हरखियौ हरख्यो नळ्वर राव ॥

ढाढियां नै ढोलजी सवालाख रो पसाव कियौ । मोटा दोय—हजार दोय रिपियां रा दोय ऊंठ—दोय सै रिपियां रा दोनां भायां नै मोळा रा कडा किरंगी सिरपाव सोने री मासा सोने रा हथियार और ही अब घणी ही दीन्ही छै । पांच सै रिपिया नळ राजा दिया छै । दोय सै रिपिया अर वीस सवागा दमैती रांणी दिया छै । नळ राजा पिंगळ नै कागद लिख दियौ छै जिण में घणी मनुहार लिखी छै । कागद दमैती रांणी अेक तौ ऊमा देवड़ी नै लिखियौ अर दूजो मारवणि नै लिखियौ छै, जिण में घणी दिलासा लिखी छै । नळ लिखियौ छै—थांम अब मास ढोलो आवै छै । थे समाधानसूं रहज्यो । ढोलजी पण घणी मनवार सूं मारवणि नै कागद लिख्यौ

---

[1] उद्वेग में आकर [2] बिलपती [3] लगकर [4] जुगकर [5] छेड़छाड़
[6] भयभीत [7] सुहागिन स्त्री की पोशाकें [8] खबर लिखना ।

छै। दस हजार रिपियां रो गहणो मल्यो छै। पांच हजार रोक[1] मल्या छै। आपरा पैरण रा कड़ा-मोती मारवणि कन्है मल्या छै। कागद में लिख्यो छ—म्हे कड़ा-मोती थां कन आस्यां जद पैरस्यां। हूं पण बेगो आवूं छूं। म्हारो जीव थां कन्है छै, थां बिन अक घड़ी ही जाय छै सो मळ्ने[2] छै। इणरो कहि ढाढ़ियां नै सीख दीवी। आप घोड़ असवार होय पहुचावण गया। भाऊ भाट पण साथ छै। घणी दूर तांणी पहुचाया। ढाढ़ियां नै कह्यौ—मारग में जतनां सूं जाज्यो।

ढोलजी पाछा हजूर आय मां सूं पूछियो—मांजी मोनै कठेई बळे परणायो छे। मां बोली—बटा पिंगळ राजा री बेटी मारवणि परणाई थी। ब्याव री सोजी सारी हकीकत कही। तद ढोलजी मां सूं कह्यो—राज हुकम करो तो अकर तो पूगळ जावां। तद मांजी बोलिया—पूगळ सिधावो[3] तो और कांई आछो[4] छै। पण माळवणि हासल देसी नहीं। इतरै कंवरजी मां कन्हां सूं सीख मांग उठिया।

कंवरजी आया नहीं छै जितरै माळवणि कई बातां बिचारै छै। कंवरजी आपरै महल पधारिया सु पैजार[5] पहरियां ही ढोलिये बैठा। उदास थका सोच करै छै। माळवणि री बडारण[6] आय कंवरजी नै कह्यो—अरोगण पधारो। ढोलजी वडारण नै कह्यो—म्हांनै तो अबार कोई भावै नहीं। तद बडारण पाछी जाय माळवणि नै कह्यो। तद माळवणि कंवरजी री हजूर आय नै कह्यो—राज पैजारां न खोली कटारी न खोली। उदास थका बैठा सु कांई अमाई छै? तद ढोलोजी वडारण नै बोलिया—जे थे मूंढा री कांई दीठो? म्हे तो इसा[7] हीज छां।

अणद संभरणी[8] माळवणि प्रिय कांई चळचित्त।
कइ मारवणि सुधि सुणी कइ था नवली बत्त॥
मन मांहे इण न बोलिया मुळकी रीमा आज।
था थे समगमणा[9] कहोन के घर काज॥
चित्त चालण[10] ज्यों चतुर ज्यां दर धंम धाय।
जो दांता[11] चीरा[12] करे, भीतर भेदी आय॥

---

[1] रोकड़ [2] मुश्किलाई [3] जावो [4] चाहिए [5] पगरखी आदि [6] राज महल री दासी [7] ऐसे-मन [8] मर्माहत हुई [9] विचित्र [10] हृदय [11] दांतन [12] पंथ।

ताहरां ढोलजी मन री बात प्रकासी—माळवणि म्हारै तौ अक महल और सांभळी छां। तद माळवणि बोली—आ बात झूठी छै। किण ही गोडै ठगाया न छौ? ताहरां ढोलेजी बोल्या—पेट सूं ढाढी सेंगू आया छा त्यां साथे मारवणि रै हाथ रो कागद आयो छै। त्यांनै मास पसाव करि पाछी सीख दीन्ही। तद माळवणि बोली—मैं यूं सांभळियो छौ के हेक कंवरजी नूं प्रह थी तद राजानी नू पडितां कह्यौ—हण कंवरजी नूं अेक नीच रै घरे परणावो जिम मार[1] टळै। तद अेकण नीच रै घर परणाया छा सु वा महल होवै तौ जाणां नहीं। बीजी तौ कोई नहीं। आप सारा लोगां नै पूछे देखौ।

पैलां माळवणि सारा लोगां मै सिखाय मेल्हिया हुता। पछै कंवरजी लोगां नू पूछियौ तद लोगां डरतां थकां बाहिज[2] बात कही। तद कंवरजी अेक पुरोहित घर रो मनवत[3] हुतौ तिण रै घरे गया। पुरोहित रो नांव ग्रीकरण छै तिण आगे जाय ढोलजी सारी हकीकत कही। अर वळ कह्यौ—

> ग्री करणू ममसमी बाथी मारू बोल।
> मो मन दूहा रखिगा[4] मीव म आवै कोय॥

ढोलोजी पुरोहित नै कहण लागा—ग्रीकरणजी थे पूंगळ जाय खबर ल्यावौ। देसां मारवणि रा सवेसा ढाढी ल्याया छा सो आ बात सांची छै के झूठ छै। म्हे तो मारवणि रा समाचार सांभळया छै। म्हारै तौ मारू सूं मोह ल्यावा छै। माळवणि कहै छै, लोग कहै छै—आ बात झूठी छै। तिण री खबर लय नै वेगा पधारज्यो।

> पूंगळ प्रोहित मेल्हिया आपं चंव जवास।
> मारू थसी मुझ मने खबर ज ल्यावौ तास[5]॥

ग्रीकरण पुरोहित साथे आप रो हतवारी थको सवास छै, सु मलियौ। बीस असवार साथ दीन्हा। पछै दिन दस बारह में पुरोहित जाय पहुंता।

राजा पिंगळ सांभळ बहोत राजी हुवौ। पूछियौ—पुरोहितजी राज महरबानी कर पधारिया सु तो रावळो[1] घर छै पण कांई काम होय सो फरमावौ। तद पुरोहित कह्यौ—कंवरजी मारू री खबर करण नूं मल्हिया छै सु म्हे आय पाछी

---

[1]मकान का कु प्रभाव [2]वही बात [3]सम्मान भाने [4]उसकी [5]आपका।

खबर देम्या तद कवरजी मठै पधारसी। कवरजी रो जीव मारवणि माहि छ। इतरो सुण पिंगळ बोलियो—म्हांनै इण री चिन्ता घणी छै, सु था तो कवरजी म्हां ऊपर घणी महरबानी करो। इतरो कह पुरोहितजी नू भली सी जायगा' डरो दिरायो। घणा हीडा[1] किया। दिन पांच सात राखिया। पछै पुरोहितजी मारवणि नू कह्यायो—आप म्हांनै अबै पाछी सीख दिरावो। तद मारवणिजी पुरोहितजी नू आपरी हजूर बुलाया। पुरोहित हजूर ऊभो छै। मारवणि उरमा पैला[3] सुणाय बोळ भा देवै छै—हज मोन कवरजी मनां ही बिसार मग्नी। जाज्यो म्हारो भाग हू अबै किसै प्रकार जीवू? अबै तो कवरजी नू कहज्यो—म्हारी बेगी सम्भाळ[4] करै। तद पुरोहित कह्यो—असा राज प्रमांण। पछै कह्यो—मांजी सीख दिरावो।

इतरो सुणि मारवणि परेच[5] ऊदी करि पुरोहितजी रै हाथ सिरपाव सीकी देण लागी। इसै समै पवन सूं मारी परेच उड गई। ताहरां पुरोहित री अर रायास री निजर मारवणि आई। मारवणि री सोवी देखतांई दोनूं मुरछागत आय हेठा पड़िया। तद सहेलियां दौड़ पीपळामूळ रगड़ सचेत कर उठाया। इतरै पद खवास तो अमूज मे मुवो।

मह सिंगार कर मारवी सखियां मियो ज साथ।
मुरछै[6] चवरगिवी मुवो बीड़ी रहियो हाथ॥

पुरोहित सचेत होय मारू कनै आय ऊभो रह्यो। ताहरां मारू बोली—

प्रोहित बोले मोरछ्यो मारू करै बखाण।
जोबन महरो भेष छै, मीण[7] भयो मो तण॥

वहती संक[8] मन भ्यमा बिन कहियां तन तार।
मो जोबन मैमन हुवो बिरहण करै बिलाप॥

परणी बरसां डाहरी जाबन पहुता आय।
प्रोहित जानू आसियो[9] बीजो मासम पाय॥

प्रोहित आस्यो मांग कर, मजी रियो जुहार।
कवर होवे आगम्यो मनां न मावी बार[10]॥

---

[1]जय [2]सेवा-चाकरी [3]पाले-पोसे के [4]सुध लें [5]परदा [6]मूर्छा से
[7]क्षीण [8]शंका करता है [9]कहा [10]देरी।

पुरोहितजी राजा पिंगळ भर मारवणि कन्हां सू सीख मांग उतावळा खडिया। दिन दस मांहि नळवरगढ़ भाय पहुंता।

इसै समै पोहर दोय रात गई छै। मेह वरसै छै। बीजळी भबूका[1] देय छै। सीळी[2] बाव[3] बाजै छै। कंवरजी झरोखे बैठा मारवणि रो रूप खिण-खिण चितवै[4] छै। उण वेळा झरोखे कन्है पुरोहितजी भाय निसरिया[5]। घोड़ा री पोड़ां बाजतां सुण झरोखा सूं देखण लाग्या तद पुरोहितजी निजर भाया।

पुरोहितजी मनमें विचार करण लागा—भबार तो कंवरजी पोढ़िया होसी तिण सूं भबार तो भापणै घरां जावां। परभाते कंवरजी री हजूर जास्यां। इसी जास सगळा साथ नूं कह सीख दीवी। भाप घरे गया। पाछा सूं कंवरजी मन में विचारियो—मारवणि री किसी हकीकत हुसी सु सुगाई भागे पुरोहित कहसी। तद कंवरजी पण पाछा सूं पुरोहित रै घरे तुलछी बीड़ो[6] छो तिण मांहि जाय बैठिया। इतरै पुरोहितजी हथियार खोल ढोलिया ऊपर बैठा छै। मूंढा[7] भागे पुरोहितांणी बैठी छै।

पुरोहितांणी बोली—

> जिण जोवण कज मेल्हिया ढोलै कुंवर तुम्हां।
> कही पुरा कीहि पोरसी जिम दाखवो अम्हां॥

तद पुरोहित बोल्यो—

> देखण बीहा जिम रहू माक बीच पुणेह।
> इण सेजरी पुरा नहीं चाह न भावै[8] नेह॥

इतरी हकीकत सुण ढोलाजी मन में खुसी हुवा भर महल पधारिया। पछै परभात रै समै पुरोहित कंवरजी री हजूर भायो। तद कंवरजी पूछियो—कद भवाग भठै भू भायो नहीं? तद पुरोहित कहयो—मारवणि रो रूप देख ढोला मैं मुरछा भाई। मनै तो सगळ-सुमळ उठायो इतरै कद गवाम तो सुणी। तद ढोलाजी बोलिया—मारवणि इसी छै? पुरोहित कहयो—भाप सरीखो[9] बिनीज छै।

> चंद वदनि मृगनयणी मराण[10] बदलि विवेक।
> मान केली[11] भनदरा[12] इण ताणी नहिं भव॥

[1]चमक [2]ठण्डी [3]पवन [4]चिन्तन करता है [5]निकले [6]घोड़ों का
भगर [7]मुंह [8]सिर [9]प्रशंसा करता है [10]समान [11]जैसी
[12]कमल।

मारू नारी पदमणी बोलै इमरत बोल।
चंप चंप की ओपमा बरणै कवि किल्लोल॥

पुरोहित भांत-भांत सू मारवणि रा वखांण किया। ढोलोजी सुण बहोत राजी हुवा। पछ पुरोहित नू कहयौ—मारू सू मिलण री तौ बात घणी छै तौ ही माळवणि नै छोडे[1] न हालणी पण आवै नहीं। इसो कहि पुरोहित न सी सीख दीवी। आप माळवणि रै महल आय ढोलिया ऊपर बैठा। उरसी-परसी बात कर ढोलजी कहयौ—

माळवणि तूं मन-गमी आवै सह विवेक।
हिरणाखी हंसनै कहौ (तौ) करां दिसावर एक॥

माळवणि बोली—

बड़ नरवर मति दीपतो ऊंचा महल मवास।
बर कामण हरणाखियां किसी दिसावर जास॥

तली नाव तंबोळ रस सुरह सुगंधी वाह।
पग मींडा मांसण तुरी किसी दिसावर त्याह॥

तद ढोलाजी कहयौ—

ईडर राजा भोळपण ये ये कहौ त जाह।
चोब चढ़ावां आभरण[2] माळवणि मेंमाह॥

माळवणि फेर कहयौ—

ईडर राजा भोळपण जानूं जाण न देस।
इण बैठा ही आभरण मोल मुंहगा लेस॥

साहिब कच्छ न जाइये तिहां पटायो दम[3]।
मींमळ[4] मैण सुरंग[5] बस भूख्यौ जाइस संग॥

सिंधे न जामस बाल्हिया सिंध दिसावर काम।
राव कूंवर राजा तणा चोज दिसावर काम॥

साहिब रहौ न राखिया कोइ प्रकार किमांह।
का थां कामण मन वसी का म्हां दुहवियाह[6]॥

पछ माळवणि बोलवै हूं भी दासी तुम्ह।
बिना चोद मीवर वर्त सो प्रभाती मुम्ह॥

---

[1]छोड कर [2]पहने [3]दुर्भेद [4]रमणरे [5]सुन्दर [6]नाराज हुए।

ढोला मारवणवूमरणी नख सूं कोई भीत।
हमनी कुरण सूं मामळी कसी तुम्हळै[1] चीत॥

तद ढोलाजी कही—

सुण सुन्दर साची कहां[2] मानै मन री भांति।
मो मारू मिळबा तणी करी विलम्बी कांति॥

माळवणि री तन तप्यो विरह पसरियो अंग।
ऊभी थी बड़हड़ पड़ी चांएी जसी भुयंग॥

माळवणि मुरझागत भांण हेठी पड़ी जद सहेलियां पवन घाल पीपळामूळ घिस नीठ सावचेत करी।

सीतळ पांणी छांट मुख बीझण्यां ढुळै वाय।
हुई सचेती माळविणि पिव प्रगास मिलवाय॥

बाहन घोड़ा मेल कर, चाले कायर चोर।
कंत न चाली जण दिसे वेस वई की चोर॥

सह पायक ऊतर दियै समझै नहीं विचार।
वैण न मेलै माळवण नैस न चाडै वार॥

वेस सुरंगी मुह[4] सुगळ मीठा बोला सोम[5]।
मारू कामण मुंम विखरा बे हुर दूठै होम॥

विरहण काम मराळवी[6] मारू हंदो देस।
मंहिळां सिरहर मारवी मो मन लाग्यो वेस॥

माळवणि विचार किन्यो—कंवरजी रहण रा नहीं तद बोली—

चळ रत्ता नू धामुड़ी ताम्बीला पहिमाह।
म्हांनी कहियी को करो घर बैठा रहिमाह॥

ढोलोजी विचार किन्यो—माढ-हाला[7] तो मुगाई जीव देसी। तद दोय मास उठै रहिया।

नेहा बंध न बंधिया बळि रहिया दुय मास।
स सनेह बोली नहीं मन मारू रै पास॥

---

[1]तुम्हारे [2]कहे [3]पंखा [4]बरती [5]भोप [6]तिरस्कार करना [7]बुरे हाल में।

ढोला ढील म मेल्हजे मारवणि नै बोल ।
अंबर ढींबौ उन्नम्यौ हे चीतारयौ बोल ॥

पग पग पाणी पंथ सिर, मह्ही बादळ मांह ।
पावस आयौ पदमणी कही त पूगळ जांह ॥

मारवणि बोली—

ढोला सावण आवियौ ऊमट आयौ मेह ।
चमकण लागी बीजळी दाझण[1] लागी देह ॥

प्रीतम कामणगारिया थळ थळ बादळियांह ।
घण बरसंतै सूकिया भू सूं पांगरियांह ॥

बादळियां हरियाळियां बिच बिच बेलां फूल ।
जे भरि बूठौ भादवौ मारू देस अमूल ॥

डूंगरिया हरिया हुवा बनां झिंगोरै मोर ।
इण रित तीनूं संचरै, चाकर मंकड़ [?] चोर ॥

फौज [?] घटा बग दामणी बूंद लगै सर बेम ।
पावस पिव बिन वल्लहा[2] कहि जीवीजै केम ॥

जिण रुत बहु बादळ झरइ, नदियां नीर प्रवाह ।
तिण रुत साहिब वल्लहा मो किम रखण विहाय [?] ॥

सावण आयौ साहिबा पगे बिलूंबी नार ।
अब्बल बिलूंबी बेलड़यां नरां बिलूंबी नार ॥

दूसरो सुण ढोलाजी बोलिया—

आज धरा दिस ऊनम्यौ काळी घड़[3] सिखरांह ।
या धण देसी ओळंभा कर कर लांबी बांह ॥

मारवणि बोली—

ढोला म हुय उतावळौ[4] मिळस्य[5] दईं कै लेख ।
म्हांको कहियौ जो करौ बरसाळा लग देख ॥

मारवणि कह्यौ जद ढोलाजी बरसाळा ताईं थळ रह्या ।

बरसाळा लग आससी मारवणि बीणोद ।
मारू जिम जिम संभरै जळ मूकै नयणांह ॥

---

[1]जलने [2]वल्लभ प्रिय [3]घटा [4]उतावला [5]मिलेगा ।

माळवणि ढोलो कहै, हिव म्हां सीख करेह।
ऊन्हाळो बरखा बिन्हे[1] रहिया तूझ सनेह॥

तद माळवणि कहै—

सीयाळै तौ सी पड़ै ऊन्हाळै लू वाइ।
बरसाळै भूंइ चीकणी चालण रितु न काइ॥

जिण रित मोती नीपजै सीप समंदां मांह।
तिण रित ढोलो ऊमटयौ हम की माणस जाह॥

जिण दीहे तिज्जी तिवै हिरणी मयमद खाम[2]।
तांह दिहां री गोरड़ी पड़वी म्हारी धाम॥

जिण रित नाग न नीसरै दाझै बन खंड राह।
जिण रित माळवणि कहै, कुण परदेसां जाह॥

जिन छोड्या मोती रमण ठमका मोर पयम्म।
तिण रित नेह न छांडियै है बालम वड मन॥

सांभळ ढोलाजी कहयौ—

माह महारस मयण[3] सब मति ऊमटै मनंग।
मो मन भायौ मारवण देखण पूंगळ रन॥

ढोलो हल्लाणौ[4] करइ, धण हल्लिवा न देइ।
झब झब झूबै पाघड़ै[5] डब डब नयण भरेह॥

माळवणि बोली—

हालूं हालूं मत करौ हियड़ा साल म देह।
वे सांचे ही हालस्यौ मूंगा पल्लाणेह॥

ढोलो कहै—

थां मूंगा मैं चालस्यां मोह निचीतौ[6] होय।
रहवारी ढोलो कहै, करही माडौ जोय॥

चसाळियौ चढ़ने मिळै चढ़ियां जोयण जाम।
रहवारी ढोलो कहै, सो मो चावै साम[7]॥

---

[1]दोनों [2]कर्म [3]मदन [4]रवानगी [5]रवाना से [6]निश्चिन्त
[7]पसन्द।

रैबारी कहयौ—

ढूंगा चीबड़ चौवड़ा ऊंट कम्याळा कांण[1] ।
जिण मुख नागरवेलियां सो करहो केलांस[2] ॥
नागरबेली नित चरै पाणी पीवै गंग ।
ढोला रइबारी कहै करहो मेक सुचंग ॥

ढोलो मातुर हाथ कहै—

किण मढि चाबूं चूंखरा किण मुख खाउं सण्ण ।
कवण[3] मसेरी करहलौ मूंघ मिळावै मण्ण ॥

करहो कहै—

मो मढि चाबी चूंखरा मो मुख खाही सण्ण ।
हूं न मसेरी करहलौ मूंघ मिळाऊं मण्ण ॥

तद ढोलोजी करहा रै मोहरी घात पीळ रै बारणै झांप बांधियौ । ढोलोजी कम्मर बांधण नै महल पधारिया । इतरै माळवणि नै खबर हुई सु माळवणि करहा कन्है आई ।

माळवणी मन झूमणी[4] आई करण विमास ।
रइबारी पूछी करी आई करहा पास ॥

भाय नै कहयौ—

म्हारा भाई करहला बात इती मो बेह ।
जब ढोलो चढि नीसरै[5] तद थोड़ो हुय रेह ॥

तद करहो बोल्यौ—

थोड़ा हुवा त डांभिया[6] बाबा मुख मराह ।
थे वे सज्जण रळि-मिळी म्हे विच दुख सहाह ॥

माळवणि कहयौ—

बांधूं वड़ री डाहड़ी नीरूं नागरबेल ।
डांभ संवाळ हाथ सूं चोपड़ सूं चपेल ॥

---

[1] कामे वाले [2] घोड़े के समान [3] कौन [4] खिन्न [5] निकले
[6] डामणी—लंगड़े ऊंट का पैर ठीक करने के लिए गरम लोहे से दाग लगाना ।

करहो कहै—

> मन ही मेली मेकली करहो करइ कलाप ।
> कहियौ कीसा सामि की सुंदरि सही सराप ॥
> सुन्दरि भो सारो[1] नही कुंवर कहेसी मम्म[2] ।
> साहिब चित्त उपाकियौ जिम भेलाणी बग्ग ॥

माळवणि कह्यौ—

> करहा सुख सुन्दर कहै, मिहर[3] करी मी भाव ।
> साहिब म्हारो ऊमह्यौ हिव तवळी तो साव ॥
> भाई कह वळळभसूं मालवदेस मिरेस ।
> हुठ हुठ करहा कुंवर नै मत लेजाव विदेस ॥

माळवणि करहा नै मापरो करे पाछी महल भाई । ढोलोजी कमर बांध करहा कन्है माया । करहा नै उठाय ऊभौ कियौ सु तीम पगां रै पांग ऊभौ हेकण नम मोडो होय रह्यौ । ढोलाजी रै चढ़ण री ताकीदी छै । इतरा में कागो विनायक बासियौ तद माळवणि विचारियौ—ऐ तौ चालण मे सुगन सतरा हुआ । ताहरां विनायक ऊपरां री सांभळी इतरै ढोलाजी रैबारियां नै बुलाया । रैबारी माय ऊंठ दोळा फिरिया । ताहरां माळवणि री सखियां माय नै कह्यौ—करहा नै रामै छै । ताहरां माळवणि मेकण सहेली सावे कहायौ—

> ढोला म्हारा बाप रै छो करहां री बग्ग[4] ।
> पे करहो चोखो हुवै (तौ) गाघड़ दीजै दग्ग ॥

तद कागो विनायक (गयौ) बोलियो छो तिण नै पकड़ मगायौ घर डांम दीन्हौ । तिण दिन रो मो वाणो छै—'ऊंट बुड़ाय र गधा डांमीजै' । तिम दिन तो ढोलाजी रै चढ़ण रो महूरत सो तौ टळियौ । ढोलाजी महल पधारिया । करहा नै तबोळाण रै घरै बांधियौ । मेक रैबारी करहा रा जतन[5] साम राख्यौ छै ।

पछै माळवणि पण ढोलाजी कन्है माई । दोनूं मेकण ढोलियै बैठा छै । माळवणि पिचारियौ—जबरजी रहण रा नहीं—चालसी । ताहरां कह्यौ—

> पिव माळवणि पयहरै[6] हास्या घूंघळ देस ।
> ढोला दिन मे हेकसा चाला चणा सहेस ॥

---

[1]बस [2]मार्ग [3]महर, कृपा [4]टोला मुण्ड देस रेस [5]घोड़ नर ।

ढोलोजी कह्यो—

मोरी रास्या म रह्यां जास्यां पूंगळ देस।
ढामा विच में हेकला जासा मणा सहेस॥

मोरी ध्यान हुव[1] करी थां क्यां गमण मरेस।
म्हे तौ रास्या ना रह्यां ज्यास्यां पूंगळ देस॥

माळवणि तूं मत भमी तूं थे नीकी नार।
पूंगळ हुवै मुलक में महि माक रुळिहार[2]॥

माळवणि ढोलाजी नै घणा ही विलमाया पण ढोलाजी रहै नहीं। ताहरां माळवणि कह्यो—मो नै नींद आवै जद पधार्ज्यो। ढोलजी कह्यो—असी बात छ। थांनै नींद आसी जद हालस्यां।

माळवणि घणो ही हठ कियौ। पनरा रात दिन तांई सारीसी जागी। सोळव दिन अेक घड़ी रात गयां कंवरजी कपट[3] नींद सोय रह्या। तद माळवणि विचारियौ—कंवरजी तौ पोढ़िया छै, हूं पण थोड़ी सी वार सोय रहूं। इतरै माळवणि तो सोय रही सो अघोर-निद्रा[4] आय गई। तद ढोलाजी उठै ऊठ्या। हालण नै आय करहो भेंकियो।

पाणी टापर वाव मुख भेंक्यो पग दुमार।
कपट किया चूकता[5] किसा कणी वार॥

तद ढोलजी कह्यो—

करहा तू र वधावसी म्हानूं चाल न देय।
निराळ आमै नहीं (तौ) जास्यां पूगळ देस॥

माळवणि जावै नहीं करहा तू न कसाय।
जो सुन्दर जागै नहीं तौ मळ मार्वै आय॥

ढोलजी पन्तां आधी रात ग पोळ रिवाड़ खिड़किया[6]। ढोलजी बळ करही टहूकियो तद माळवणि जागी। सपेन होय मै देखे तो ढोलो नहीं। तद हिय निहाव पड़ियो। ढोलजी पडतां कह्यो—

दीने करह वमाविवी करि निरुपार क्पार।
पासां तौ मिटस्यां मळ नम्बर बोल्द कुगार॥

कम [1]समान पैन्हे वाको [2]बनारसी महरी मीर [4]गहरी घाराव
[5]चोंक

माळवणि पण विलाप करण लागी—

ढोलो चाल्यौ हे सखी बाज्या विरह निसांण ।
हाथे चूड़ी खिस पड़ी ढीला हुआ संधांण ॥
ढोलो चाल्यौ हे सखी बज्या दमांमा ढोल ।
माळवणि रोवे तज्या काजळ तिलक तंबोळ[1] ॥
सज्जण चाल्या हे सखी दिस पूगळ दीहेह ।
सायधण[2] लाल कवांण ज्यूं, ऊभी कड मोड़ेह[3] ॥
सज्जण चाल्या हे सखी सूना करे प्रवास ।
जळ न पांणी ऊतरै, हियै न मावै सांस ॥
सजह चलंती पगठिया आंगण वीखड़ियांह[4] ।
सो मो हियै लगाड़ियां भरि भरि मूठड़ियांह ॥
सज्जण चल्ले[5] पुण चलै जुग भी चल्लणहार ।
सून्या लागी मेसड़ी पया न सींचणहार ॥
ये वाड़ी ये वावड़ी ये सर बेरी पाळ ।
वे साजन वे दीहड़ा[6] रही संभाळ संभाळ ॥
बाबा बाळ देसड़ो जांह कूमर नहि कोय ।
तिस चढि देखूं वाहड़ी हियो न उरळो होय ॥
सारसड़ी मोठी पुणै पुणै त कुरळां काम ।
सगुण पियारा जी मिळै मिळ त विछड़ै काम ॥
सज्जण हाल्या हे सखी चड़ री गाहळ मोड़ ।
हियो मळसी काळज्यो दीनूं लेग्या तोड़ ॥

इतरा विलापात कर नै माळवणि सखियां सूं ढोलाजी सारै दौड़ांणी—हूं भाज ढोलाजी नै पाछा वाळी। सहेलियां दौड़ी पण करहा री खोज न लाधी। जिसै मारग थळ रै पासै सारस बोल्यौ। सहेलियां जाण्यो करहो बोल्यौ। आगे देखै तो सारस पुगै छै। तद कह्यो—

सारस रै मिस पातरी[7] जांणै करह मराय ।
देखूं थळ ऊपर चढी जांण पंखिय जाय ॥

---

[1]तंबोल [2]स्त्री कामिनि [3]मोड़े हुए [4]पदचिह्न [5]चले गये
बिछड़े [6]दिन सूनी।

सहेलियां ढोलाजी नै पूगी नहीं तरै माळवणि कन्है आई। आय नै कह्यौ— कंवरजी तौ म्हांरी निजर कोई आया नहीं। इसो सुण माळवणि निरास हुई अर विलाप करण लागी—

हूं रे जीव निलज्ज तूं निकस्यौ जात न ढोहि।
प्रिय बिछुड़त निकस्यौ नहीं रह्यौ लजावण मांहि॥

सज्जणियां सिधाय कर, मंदिर बैठी आइ।
मन्दिर काळै नाग ज्यूं लहरी दे दे खाइ॥

सज्जण पुहता समन्द तूं तर तर पक्की[1] रेण।
अवगुण अेक न संभरै रहु बिसूंवी नेण॥

साईं वेरे सज्जणा राते हस परि कन्न।
चर ऊपरि भार बळै झालि प्रकाळी चून॥

सोरठा

गया मळती राति परजळती पाया नहीं।
से सज्जण परभाति वरहड़िया चुरसांण[2] ज्यूं॥

ढोलाजी अर माळवणिजी रै अेक सूवो हुतौ जिणनै माळवणि ढोलाजी पासै मल्है थी।

सूवा अेक संदेसड़ौ बार सरेसी तुझ्झ।
प्रीतम पासै जायनै मुई सुणाई[3] मुझ्झ॥

इतरी हकीकत सुण सूवो उडियौ सो चंदेरी रै तळाव आय पहुतौ।

चंदेरी बूंठी बिच सरवर केरी तीर।
ढोलै दीठउ आविया भाम पहुता कीर॥

ढोलेजी पूछियो—

कह सूवा किम आविया ढोलो पूछै वत्त।
कै माळवण भेलियौ कन्हा[4] पमीपै मत्त॥

सूवो बोल्यौ—

माल्ह कंवर सूवो कहै, माळवणि मुख जोय।
प्रांण न रहियौ माल्हविण संपरण[5] नामै तोय॥

---

[1] पकी [2] चमचार [3] सुनाना [4] पा [5] साम्यन।

इतरो कह्यौ तोई ढोलोजी बोलै नहीं । तद सूवो कह्यौ—

कहि न सकूं बीहतौ[1] हेकण बात हुईह ।
राज मपूठा वाहुड़ी[2] मारवणी मूईह ॥

इतरो सुण ढोलजी बोलिया—

मत्ता मोराण बोलणा सुवो न सुखियो कोय ।
सायर केरा कंवल ज्यूं झुर झुर पीयर होय ॥

मळ ढोलाजी कहण लागा—जे सांचांणी मुई छै तो इतरी चाकरी म्हांरी तूं पण कर ।

जस मरण अमरण मरण अगर, तेल फुलांची मेह ।
दुख पाहुरोई मारस्यां माळवणि बामेह[3] ॥

तद सूवो बोलियौ—

सिधी सिधावो सिध करो बेगा ही वळियाह ।
ऊमर केरा कंवल ज्यूं सहगोठा फळियाह ॥
ढोल सुवा नै सीख दी जा पंखी ग्रहवास ।
उडि र पाछौ आवियौ मारवणी कै पास ॥

सूवो माळवणि कन्है पाछो आयौ—कहण लागौ—

सूवो पाछो आवियौ ढोलो मनौ न आव ।
मो कहियां वळियौ नहीं तौ थौं केहो न्याव ॥
सूवे वैण सुणाविया ढोले कहिया सीख ।
यह मरजागत माळवण सकै न ऊभी होय ॥

माळवणि सुवा रा कह्या समाचार सांभळ नै बिलापात करै छै । ढोलोजी चंदेरी रा तळाव सूं दातण कर चढ़िया सु चंदेरी रा बजार मांहे आया । ताहरां अेक ब्यवहारियो बोलियो—ठाकरां अठासूं साठ कोस ऊमर सहर छै सु थांरै मारग मैं छै । अक सायत नै ठहरो आपनै कागद लिखदयूं जो आपण[4] ताईं पहुंचै । ढोलो ऊभो रह्यो । ब्यवहारियो थांसैं हेला करतो आवै छै—बड़ा सिरदार थां सरीखा पुरुस आदमियां सूं ही म्हारो काम सझियो[5] नहीं तो और सूं ही कांई समझसी । ताहरां ढोलोजी कह्यो—ऊभा रह्यां तो समझै कोनी । थांरै काम छै तो ऊठ

डरता हुआ [2]लौटी [3]दाह-कर्म करना [4]संध्या [5]पार पड़ा ।

झेंकावूं[1] छूं। तूं म्हारे गढ़ि बैस। कागळ लिख मोनूं देय परो उतरे। साहुरां व्यवहारियौ ऊठ ऊपर बैसि कागळ लिखण लागौ। कागळ पूरौ हुवौ जितरै सहर आय गयौ। व्यवहारियौ देख हियौ फूट मूवौ।

पछै ढोलोजी पोहकर रा तळाव री पाळ आय निसरिया तठै थंभ-तोरण दीठा। हेकण आदमी नै पूछियौ—अे थंभ-तोरण कुणरा छै। अठै कुण परणिया हुता। साहुरां आदमी बोल्यौ—

थंभ र चौक पुरावियां पढ़िया वेद पुराण।
अठ मरियांसी मारवी ढोलो कूरम रांण॥

ढोलोजी पूछण लागा—अे ढोलो-मारवणि कठारा वासी हुता। आदमी बोल्यौ—नळवरगढ सूं नळ राजा आयौ थौ पुस्करजी री जात्रा देवण नै अर पिंगळ राजा अठै किणै आया था। पिंगळ राजा री बेटी मारवणि अर नळवर राजा रो बेटो ढोलो यां दोनां रो विवाह अठै हुवौ छै।

करहो चढ़ी तिसाहियो[2] आयौ पोहकर तीर।
ढोले ऊपर पाइयौ निरमळ सरवर नीर॥

पंमळ देस सुरंग थळ, कोहो ऊंचा नीर।
ढोलो चढ़े उतावळा तैखा दर्भ न तीर॥

देस कुरंगी ढोलणा भला चिखूटा आय।
मन बंछित लाभै नहीं करहो कासूं खाय॥

करहा नीर जब चरणा कंटाळी अर फोग।
नागरवेली करहला थां चरणी नह जोग॥

करहा नीर झोप चर, बाट ब्रसंतर दूर।
झाल[3] विलगा नीरणी सो बण रही स दूर॥

इतरो सुण करहो तौ मन मे घणौ रिसाणौ[4]। ढोलोजी चढ़िया।

भति मरण समाहियौ[5] चढ़े न पूगळ बाट।
तीजै पहर लंघाहियौ आडावळा री बाट॥

अबै करहो चालै। भूख पण लागी तिणसूं मुधरो[6] चालण लागौ। तद ढोलोजी बोलिया—

---

[1]बैठा हूं [2]प्यासा [3]डाल [4]नाराज हुआ [5]उपमित हुआ [6]मन्द गति से।

करहा तूझ विसासड़ै वीसरिया सह काम।
रखे बीच चाली करै मारू न मेळ धाव॥

ताहरां करहो पण राजी होय कहण लागो—

सब सह चाहि म कंबड़ी रांगो देह म चूर।
बिहु दीपां बिच मारवी मो भी केती दूर॥

ढोलाजी उतावळा चढ़िया जाय छै। इतरै पळां[1] मांहे ढोलाजी मारग भूला। अेक अबाळ[2] तठै छाळियां[3] चरावै छै। जिणनूं पूछियो—पूंगळ नगर रो मारग किसो? तद अबाळ कह्यो—कासूं काम छै? ढोलाजी नै नकारै री धर भूल बोलणी रो प्रतिबंध हुतो। तद ढोलेजी बोलिया—म्हारो सासरो[4] छै। ताहरां अेबाळ सुसरा रो नै लाडी[5] रो नाम पूछियो। ढोलाजी बोल्या—सुसरा रो नाम पिंगळ राजा अर लाडी रो नाम मारवणि। ताहरां अबाळ बोलियो—बडा ठाकर पुगळ री बेटी मारवणि तो म्हारी सायण छै। काल ही म्हारै साथे छाळियां चारती हुती। इतरो सुण ढोलोजी मन-मम[6] हुवा। पाछो वळण[7] रो मतो कियो। तद करहै धीरज बंधाय कह्यो—

कम कम ढोला पंथ कर, ढांण[8] म चूकै ढाळ।
या मारू पूगी महल आवै झूठ अबाळ॥

करहा रा कह्या सूं ढोलाजी मळ पाचा हालिया। इतरा में ऊमर सूमरा नै ढोलाजी रै आवण री खबर हुई छै सु आपरो भाट पुगळ राजा रै मारग में राख्यो छै, तिण नै कह्यो—सू ढोला नै मारवणि रा औगण[9] समझावे[10]। भाट मारग में ढोलाजी नै आय मिल्यो अर पूछण लागो—राज कठा सूं पधारिया? ढोलाजी कह्यो—आया तो नळवर सूं अर जास्यां पूंगळ। उठै म्हे परणिया छां। इतरी हकीकत कहि पछै ढोलाजी पूछियो—भाट थे कठासूं आया? भाट बोल्यो—महाराजकुमार हूं पूंगळ थी आयो। तब ढोलेजी पूछियो—थ पिंगळ राजा री मारवण दीठी? तद भाट बोल्यो—

जिण धण कारण ऊमह्यो तिण धण सरस संदेस।
तिण मारू रा तन बिस्या[11] पंडर[12] हुआ न केस॥

---

[1]टीबों में [2]चकरिया [3]बकरियां [4]ससुराल [5]बहू [6]उदास हुए [7]लौटने [8]ऊँट की तेज चाल [9]अवगुण [10]बताना [11]बीते हुए, छन गए [12]सफेद।

ढोला मोडौ म्हांकिमी गइ बाळापण वेस[1] ।
अब थण होई डोकरी[2] आए कहा करेस ॥

इतरो सुण ढोलाजी रो मन बेदिल हुवौ—

करहा कहि कासूं करां जो मैं हुई अकाह ।
मरवर केरा मोणसा कासूं कहिस्यां जाह ॥

अबै ढोलाजी अदस थका हळ्या-हळ्या[3] जासिया जाय छै। इतरै अेक रैबारी लुगाई साथै जाय छै। रैबारी ढोलाजी नै पूछियौ—राज कठासूं पधारिया आगै कठै पधारस्यौ ? ढोलेजी बदिस थका बोलिया—पिंगळ जास्यां। रैबारण चतुर छी मारवणि भळी रमी छी अर पिंगळ राजा कांडी सिनाया छा सु जाणे छी। तद रैबारण ढोलाजी नै कहण लागी—अेक म्हांरी अरज सुणौ—आपनै भाट मिळियौ सु ऊमरा रो छै। बे आपणां लागू[4] छै। राज उणरी बात मानसी नहीं।

दुरजण केरा बोलड़ा मत पातरजौ कोय ।
अणहूती[5] हूती कहै, सगळी साच न होय ॥

अेक बरस री मारवी बिहु बरसां रो कंत ।
उण रो जोबन बहि गयौ तूं क्यां जोबनवंत ॥

ढोलोजी मन में राजी हुआ चढ़िया जाय छै। आगै चारहठ मिळियौ तिण पूछियौ—कठा सूं चढ़िया आवौ छौ ? ढोलोजी बोल्या—आया नळवरगढ सूं अर पूंगळ जास्यां। चारहठ कह्यौ—राज[6] आपरी बाट जोवै छा। इतरो सुण ढोलो ऊठ झेंक[7] मीठो उत्तर धण हेत सूं मारवणि रा समाचार पूछण लागौ। तद चारहठ दूहा कह्या—

गति गंगा मति सोमती सीता सील[8] सुभाव[9] ।
महिळां सरहर मारवी, अवर न दूजी काम ॥

भमणी रमणी गहुरणी सुकोमळी न सु कब्ब ।
गोरी गंगा नीर ज्यूं मन गरवी तन अब्ब ॥

मारू घूंघट दिट्ठ[10] मैं, अेता सहित फुणिंद[11] ।
कीर भमर कोकिल कमळ, चंद मयंद मयंद ॥

---

[1]वयस [2]बुड्ढी [3]धीरे-धीरे [4]दुश्मन पीछे पड़े हुए [5]अनहोनी
[6]पिंगळ राजा [7]ऊँट बैठ कर [8]शील [9]स्वभाव [10]देखे
[11]नाग ।

मारू देस उपन्नियां ताहं का दंत सुसेत ।
कूंझ बचां मोरंगियां खंजर जेहा नैत ॥

अहर पयोहर मुख नयण मीठा जेहा मख्ख ।
ढोला अेही मारवी जांणै मीठी दख्ख ॥

ढोला सायधण मा ए नै झीणी पासळियांह ।
कै भाभै हर पूजियां (कै) हेमाळै[1] गळियांह ॥

मारू सी देखी नहीं मण मुख दोय नयणांह ।
चोड़ो सो मोळी[2] पड़ै दिणयर[3] ऊगंताह ॥

जेता मारू मांहि गुण जेता तारा अम्भ[4] ।
उज्जळ-चित्ता[5] साजणां कहि किम दाखूं सम्भ ॥

चोसू चारण ढोलाजी नै कहै लागी—राज बेगा पधारो दिन थोड़ी छै । मारू माहि तो गुण अनेक छै सो कहतां अंत न आवै ।

इतरो सुण ढोलोजी बोलिया—अबार तो मारू रै गहणो लेजावो जो सु भी आपरी निजर छै । आपरा रूड़ा मोती दिया । मारू पसाव करि सीख दीधी ।

दोनूं भाई ढाढी अब नळवरगढ सूं हालिया छै अबै पूंगळ आण[6] पहुंता छै । दोनूं ढाढी मन में विचारै छै—हम म्हांनै आवतां मारग में घणा दिन लागा छै । ढोलोजी पधारिया होसी । पूगळ आयनै ढाढियां पूछियो—ढोलोजी पधारिया कै नहीं ? तद लोग बोलिया—अबरकी तो कोई पधारिया नहीं । वाट जोवै छै । पछै ढाढी राजाजी री हजूर आया । नळ राजा रो कागद दीन्हो । कागद बांच'र नळराजा घणो खुस्याळ हुवो और ही ढोलाजी रा समाचार सुणि खुसी हुवा । कागद अेक दमेती रो ऊमा देवड़ी नै दीन्हो । ढाढियां नै मारवणिजी हजूर बुलाया पछै समाचार पूछण लागा तद ढाढियां मारग रा उठा रा सगळा समाचार कह्या । नळ कह्यो—

मारू ढोलो दीठ[7] म्हे, सबै सुरंगी छत्र ।
पग ना दीन्हा पागड़ै[8] बागा भालै[9] हत्थ ॥

---

[1]हिमालय [2]भ्रम [3]सूर्य [4]अम्भ आकाश [5]उज्ज्वल चित्त वाले
[6]आकर [7]देखा [8]रकाब में [9]पकड़ कर ।

इतरो सुण मारू बोली—

सांझ पड़ी मह आवियो कोयल पयो महल्ल।
सर[1] चूकै पारध[2] ज्यौं मूंध[3] मरोड़ै हल्ल॥

इतरै ढाढी ढोलाजी रै हाथ रो कागद मारवणि नै दीन्हौ। तद मारू कहयौ—

कागळिया[4] मत मोकळी मोल मुहुणा नेह।
अक्खर भीजै आसुवां नैण न वांचण देह॥

मारू ऊभै बाटड़ी ऊभी आंगण[5] थह।
काग़ळ वळ भेळा करै नांखै नैण भरेह॥

सोहू मुहंघी वाटली मोती जड़ी ज हाथ।
जांभू सासह जगाइया छोटी मोकळ रात॥

इतरी अपमा री बात सखियां नै कही अर ममाणी चारणी पण कन्हा री तिकण में देवतमी[6] हुती तिण आगे मारू कहे लागी—हम म्हार तौ आज सगळी डावी अग फुरके छै। तद चारणी बोली—

जांघ फरूकै कर फुरै, कर फुर अहर[7] फुरंत।
नाभि मूंधळ जै फुरै तौ पिव संग मिळंत॥

मारू निहचै राखि मन चित्त दुभांगै मित।
सज्जण बैगा आवसी मिळसी चारो चत॥

ममाणी चारणी मारू नै धीरज बधावे छै—ढोलरजी आज अठी पधारसी। अबै मारू प सवाढा[8] री तयारी करी। इसी बातां चारणी मारू नै कह छै। अर ढोलोजी पण मारू मातर करहा नै उतावळो लड छै—

करहो चडे मन थमी आयो ढोलो येह।
इतरी बरसी मोवतां[9] पगां न मायी बह॥

ढोलोजी पण पिगळ माय पहुंता छै अर मारू नै पण माळनै[10] म छ सु रमण नै वारे आई छै। ममाणी चारणी पण आयै छै। सातबीसी महेलियां अर बीबी गुणाइयां महर री सायै छै। बाग में सुह रमण[11] लागी छै। मूहर[12] गाईजे छै।

---

[1]तीर [2]शिकारी [3]मुग्धा मारवणि [4]कागज [5]आंगन [6]देवज्ञ [7]अधर [8]स्नान [9]बार करने पर [10]जी ममता [11]गेलने [12]नृत्य के साथ गीत-विशेष।

इतरा में ढोलाजी पूंगळ रै गोरि[1] में आया छै। सूरज-तब अस्त हुवो छै जिण सूं गांव री खबर कांई पड़ै नहीं। बाग मांहि कोहर[2] छै, तठै सातवीसी सहेलियां सूं मारू रमती थी तिण रो कोळाहळ सांभळि नै ढोलाजी कोहर दिस आया। इतरै ढोलाजी करहा नै कांब बाही[3]। ताहरां करहो करकूकियौ तद अमाणी चारणी बोली—

मारू ढोलो आवियौ करहो कर कुमेह।
सहित सूरा सज्जणा सूधो सूध[4] मेह॥

इतरै ढोलोजी पण कोहर आया। कोहर कन्है पांणी री खेळी[5] भरी थी तठै करहा नै पांणी पावणी मांडियौ[6]। करहो पीवै नहीं तद ढोला कह्यौ—

करहा चरी करीलिया पान बिसारि म रोम।
सरवर मांहे चिरमियौ बूहड़िय मुह कोम॥

मारवणि तौ ढोलाजी नै जांणै नहीं। ढोलोजी पण मारू नै जांणै नहीं। चारणी मांहे बेमतम हुती सु आ बोल्यौ—ढोलाजी छै। ताहरां ढोलाजी कह्यौ—

सब ही स्यौ सब नाकिया सब ही के मल्हार।
देख्स मारू बहिरौ[7] सह बाम्हा[8] सुहार॥

अबै मारू ज्यूं वो दीठो नहीं दीठि भूपती काइ सहेलियां मांहे भव गई। पछै सहेल्यां साथै होय महल पधारिया।

ढोलोजी बाग मांहे उतरिया अर बागबान डेरा करासियौ[9]। अेकण बामबाम आय पिंगळ राजा नै बधाई दीन्ही—हजू ढोलोजी पधारिया छै। तद पिंगळ राजा हाकिमां नै मलिया—देखौ देखौ कंवरजी बाग मांहे उतरिया छै। तद हाकिमां मुजरो कियौ। हाकिमां आय पिंगळ राजा नै खबर दी—महाराज कंवर पधारिया छै। जद पिंगळ राजा ठावा[10] उमराव कंवर ढोलाजी सांम्हा आया। आयनै मुजरो कियौ। पछै ढोलाजी नै दरबार मे आया। राजा पिंगळ सूं आंणि मजरो कियौ।

अबै पिंगळ राजा आपरा खवास नै कह्यौ—कंवरजी नै मरदन[11] करावौ

---

[1]बस्ती की सीमा [2]कुआ [3]लगाई, मारी [4]बरसा [5]कुए पर जानवरों के पानी का स्थान [6]प्रारंभ किया [7]बिना अमावा [8]लड़कियां [9]पकड़ा [10]समझदार [11]मर्दन।

पोसाक वणायो। तद खवास कंवरजी न सपाड़ो[1] कराय सिरपाव कियो। घणा केसर अरगजा में गरक[2] हुवा। ढोलाजी री रूप छीवी[3] देख न सहेलियां सगळी राजी हुई।

अबै मारवणि पण सनांन कियो। अनेक सौरम सुगंध चोवा चंदन रा विलेपन किया। केसां में मोती सारि[4] सोळै सिणगार सजि तयार हुआ छै। हिवै पिंगळ राजा कंवरजी नै कहयो—आप उतावळा घणा पधारिया छो सु थाका होस्यो। महल पधारो। सुख करो। ताहरां ढोलोजी महल पधारिया। पिंगळ राजा रा खवास पासवान सारा ही साथे हुवा तद ढोलाजी साळियां सहेलियां री सारी हकीकत वांने पूछ लीन्ही छै।

पछै सहेलियां आय ढोलाजी री घतराई परखण लागी। मारू री छोटी बहन हुती—मालहकंवर तिण नै ढोलाजी कन्है मेली—देखां ढोलाजी पिछाणै[5] कै नहीं। तद ढोलेजी देख नै कहयो—आ मारू नहीं मारू रो उणिहारो[6] छै। वळै कहयो—मालहकंवर पाधारो अर, घणो आदर सनमान दियो।

मालहकंवर तो ऊपरां सब ओक मारू नार।
तिस माहि दूजी तिका मारू रूप अपार॥

सहेलियां कहण लागी—कंवरजी सरीखा चतर कोई नहीं। पछै मालहकंवर तो उरली ऐसी बात करनै ढोलाजी नखा परो ऊठी।

अबै मारवणिजी रै सारै सगळी राजलोक सरब सखियां साथै छै। ताहरां सखी मतवाळी थकी जांणै किरखो री मूंजको असमांन री उतरी मोत्यां री लड़। थाका हुस सरीखी पगा दती चली आवै छै। बीजो राजलोक कहण लागो—आज ढोलाजी नै स्वारा दरसस्यां।

मारू पैली तो करहा कन्है गई। आय करहा री निछरावळ करी। तिणनै चौक रै थोचोबीच वांधियो छै। सहेलियां कन्हां सू करहा रो हीस कड़ायो छ। ताहरां मारू बोली—

करहा तू मन सिरजियो मेल्यो साल्ह सुजाण।
चाकर मरै म मामही तू हिम कारण जाण॥

---

[1]स्नान [2]सराबोर [3]छवि [4]पिरोकर [5]पहिचानते [6]स्वरूप।

इतरा में राजलोक आय करहा री निछरावळ कीधी । करहा रा घणा जतन किया । सहेलियां कह्यो—

> कंवर सताही आविया ज्यांरी जी मन चाह ।
> करहो जस ही आवियो मरवण मिळवी नाह ॥

इतरी बात राजलोक करहा सूं कीधी । सात बीसी सहेलियां मारवणि राजलोक सारोही साथ ढोलाजी कन्हे आय छै—

> मारवणी सिणगार करि, मंदिर कूं मलपंत[1] ।
> सखी सुरंगी साथ करि, गय गयणी[2] गम गंत ॥
>
> सोवै सज्जस आविया जांकी जोती वाट ।
> ढोला नावै घर हुई बेसणु नामी खाट ॥
>
> धन्न धन्नंतई बावरै उलटणी जांणु मयंक ।
> मारू चाली मंदिरे, सरिखे बादळ चंद ॥
>
> मारू चाली मंदिरे, चम्पउ बादळ मांहि ।
> बागे गयंद उलट्टियौ कज्जळ बन रै मांहि ॥

मारू ढोलेजी री हजूर आय मुजरो कियो । तद ढोलेजी ऊठि नै मारू नै घणी समभांम दीधी । हाथ पकड ढोलिया ऊपर बैसांणी । आम्हा-साम्हा की निजर हुवा ।

> ढोलै बांध्यौ बीयणी मारू बांध्यौ नेह ।
> ज्यार आंख मेळउ हुई हैसां बंध्यौ सनेह ॥
>
> मारू बैठी सेज सिर श्री मुख देखै तास ।
> पूनम केरे चंद ज्यू, मंदिर हुवौ उजास ॥
>
> ढोले मन आणंद हुवौ चतुर तणे अवनेह ।
> मारू मुख सौरंभियौ[3] आवि भमर भणणेह ॥
>
> कंठ बिलग्गी मारवी करि कंचुवा[4] दूर ।
> चकवी मन आणंद हुवौ किरण पसारया सूर ॥
>
> आघा मूल उतारियौ बण कंचुवौ पर्लंह ।
> भूमै पड़िया हंसला भूखा मालधरेह ॥

---

[1] चली [2] गजगामिनि [3] सौरभयुक्त [4] कंचुकी ।

ढोलो मारू एकठा करे कतूहळ केळ।
जाणी चंदण रूंखड़ी बिसमी नागरवेल॥

भाजे रळी वधावणी भाजे गवळ मेह।
सखी अमीणा गोठ में दूधे बूठा मेह॥

ज्यूं सामूंदां लहरां ज्यूं धरती सूं मेह।
चंपक बरणी बाल्हमो चंदमुखी सूं नेह॥

ढोलो मारवणि रमता हिताळम सूं धापै न छै। वळ काव्य-रस भवे छै—

सुंदर चोरे संग्रही सब सीखा सिणगार।
मरवणी नीमी नहीं कहि सखि कवण बिचार॥

तद कहयो—

महर रंग रती हुई मुख काजळ मसिभ्रम।
जाणी मुंगाहळ घणी, केण न दूसी भम॥

महेल्यां जाळयां मांहि झांकती हुती तिके बोली—

सज्जण भाषा हे सखी जाँ बिण कहियाह।
पय चंपा प फूल ज्यूं, महके महमहियाह॥

ढोलोजी कहण लागा—अब म्हांनै सीख दिरावौ। पिंगळ राजा बोल्यौ—घणा बरसां सूं कंवरजी पधारिया छौ महीनो एक अठै रहौ। जद ढोलाजी कहिया—रहणो सकै नहीं। सीख रो हुकम होय। तद पिंगळ राजा कह्यौ—भली बात। अबै मेलण री तयारी करां छां इतरै वीस दिन अठै रहौ। ढोलोजी बोल्या—रथ सझवाळा रो काम नहीं। म्हे तो अठारा हाल्या[1] ठेट नळवर जास्यां। बीच कोई रहां नहीं। म्हे हेरण ऊठ चढि ठठ जास्यां। जद पिंगळ राजा कह्यौ—म्हारी धरती खोटी[2] छै, अठै राज साथ मत पधारौ। आपणे ऊमर सूमरो लागू[3] छै। तद ढोलोजी बात मानी। राजा पिंगळ रथ जुताय मारवणि नै मांहि बैसाणी। सझवाळा मांहि सहेलियां बैठी छै। बीबापरी[4] साथ दोन्ही छ। सो असवार साथै दीया।

ऊमर सूमरा नै ढोलोजी आया री खबर हुई छै सु मारग बांधिया छै—ढोला नै मारस्यां अर मारवणि नै उरी लस्यां।

---

[1] चलते हुए [2] बुरी [3] पीछे पड़ा हुआ [4] वह दासी की दीकरी संगोती है।

सोवन घड़ित सिंगार बहु, मारवणि मुकळाइ ।
पग ठेवर वासी बहुत धीम्ही पिंगळ राइ ॥

हिव सूमर हेरा हुवै मारू फूलण हार ।
पिंगळ बोळावा[1] दिया सोढ़ह सौ असवार ॥

ढोलोजी पहल वासे थळां[2] में रह्या । अळगा-अळगा असवार चौकी रह्या छै । इसै समै दोनूं जणा वातां करै छै—एकण सेज बैठा थका । ताहरां ढोलाजी पूछियौ—थे इतरा दिन क्यूंकर काढ़िया[3] । ताहरां मारू बोली—ठाकरजी साहब जितरा हेक दिन सौ मोनूं खबर न छी । सौदागर आया पाछै खबर हुई छै । उठा पछै दिन दोरा घणा ही निसरिया । आप ताईं[4] आदमी मेलवा सू आदमी सौ मारिया गया ।

पछै ढोलोजी कही—था बिना दिन गया तिके बरस ज्यूं बीत्या । वळे कहण लागा —

मारू थारा दुख घणा किम हूं कहूं न सार ।
आवर ती बावन रह्या तुझ गुण अंत न पार ॥

यूं वातचीत करतां रात्रि-वासो[5] लियो अर नींद आय रही तद दोनूं पोढ़ि रह्या । मारवणि रै सरीर री सौरभ किस्तूरी जिसी छै । उठै पीवणा सांप घणा हुता तिण सूं रात सूती मारवणि रो सांस पीम्या तिण सूं मारवणि निरजीव होय गई । परभाते जगाई जागी नहीं । ताहरां ढोलोजी धीणाधरी उसी नै सगळा ही आंणि भेळा हुवा । ढोलोजी अति विलापात करण लागा—

निसि भर सूती सुंदरी आलम कंठ विलग्गि[6] ।
मोहण-वेली मारवी पीवी नाग भुयंगि ॥

जिण देसे विसहर घणा काळा नाग भुयंग ।
सूती निरजीत मारवी ढोला भेल्ही संग ॥

वाही[7] थी दुख वेसड़ी वाही थी रस वेलि ।
पीवे पीवी मारवी जास्या सूती मेलि ॥

मारू मारू कळइयां ऊमळ देती धार ।
हस में है हुंकारडो हियडो फूटणहार ॥

---

[1]पहुंचाने के लिए [2]रेगिस्तान [3]निकाले बिताये [4]लिए [5]रात भर का विश्राम [6]लगाकर [7]थोई ।

मोसाळ कहण लागा—कवरजी दुख मती करो। मारू नै दाग दो घर म पाछा चालो। मारवणिजी री छोटी बहन चंपावती थांनै परणावस्यां[1]। ताहरां ढोलोजी बोल्या—

इण भव मारू कामणी अन भव पाळी इण सन्न ।
पूंगळ सूं सह को चलउ[2] न करउ म्हांकी कन्न ॥

ढोलोजी घणा ही साद[3] दिया पण मारू जागी नहीं। ढोलोजी कहै—

बळसी ढोलो इम कहै बळ[4] अविमात[5] करेह ।
मारवणी पीयै बसी हू ही साथ करेह ॥

तिण वेळा सिव पारवती समाजोग सूं तिण ठौड़ आय निसरिया। तद जोगी रै भेस सिवजी बोलिया—

नर नारी सूं नयूं बळै नर सूं नारि बळंत ।
साम्हईंवर जोपी कहै पहली[6] कैम मरंत ॥

तद पारवती कहै—

संकर सूं अरजी करै, प्रीत मिळै जिण पाहि ।
जो स्वामी[7] महिमा करै, तो मारवणि जीवाहि ॥

पछै पारवतीजी अेक पल पाछ छिप रह्या। महादेवजी रो जीव तातूं-मातूं[8] करण लागो। तद पारवतीजी पाछा आया तो सिवजी बोल्या—थांन दीठां बिना घड़ी अेक हू घणो अरथन पायो। तद पारवतीजी बोलिया—महाराज इसी पीड़ लुगायां री साराही मै हुवै छै। मारवणि रै हेत ढोलो सारै बळै छै। इण री दया देख मारवणि नै जिवाड़ो। सदा सिवजी ढोला नै कहण लागा—लुगाई री सारी मती बळो। तद ढोलोजी बोलिया—

सिव तू तौ ढोलो कहै, कूड़ी बस्त न कन्न ।
हुणा जीणा अेकठा[9] मरणा मारू सन्न ॥

महादेवजी विचारियो—ढोलो सरै-मन[10] बैठा छै। ताहरां सिव अम्रत छांटियो मारवणि जीवती हुई।

---

[1] ब्याह देंगे [2] जीना [3] आवाज [4] कमपुष [5] अमित प्रमर [6] पहले [7] स्वामी [8] बेचैन [9] एक साथ [10] पक्का विचार।

हुई सचेती मारवी ढोलै मन आणंद।
जांण अंधारी रयण मे प्रगट्यौ पूनमि चंद॥

मारवणि नै सचेत करि सिव-पारवतीजी अलोप[1] होय गया।

मारवणि ढोलाजी नै पूछण लागी—अकहा भळा कासूं कीधा ? तद ढोलोजी बोलिया—मारवणि थे निरजीव होय गया छा। पीवणो सांप थांनै रात मै पी गयौ छौ। अबै हालण री तयारी करै छै—

के मेल्या पूंगळ दिसह, किहीं भळाया भार।
सालहकुंवर करहे चढ़्यौ बसि चाली मार॥

ऊमर सूमरे नै ढोला-मारू रै आवण री खबर मिळी तद आय मारग बांधियौ। बैठा मतवाळ कर रह्या छै। तद अै मारू री निजर आया। ताहरां मारवणि बोली—कंवरजी अ भला न छै। यां सूं टळ[2] नीसरो[3]। अे आपणा दुसमण छै। ढोलाजी नै टळण री सौगम हुवी तिण सूं टळिया नहीं। इतरा में ऊमर सूमरो आडो आय फिरियौ—

ऊमर बैठो करहलो बीळ मारू ढोल।
आवौ कंवरां मद पियां बोलै मीठा बोल॥

ऊमर ढोलाजी नै कहि लागौ—राज उरा[4] पधारौ। टळ'र क्यूं नीसरो छो। घड़ी एक उतरी ज्यूं भेळा अमल-पाणी करां[5]। पछै म्हे म्हांरै गसै[6] आस्यां राज राज रै मारग पधारज्यौ। इतरी मनुहार करि करहा री मोहरी झालि[7] करहा नै झेंकायौ। तद ढोलाजी ऊंट री मोहरी मारवणि नै झिलाई, आप ऊमर सूमरा सांम्हे गया। आगे गलीचां रा बिछावणा हुय रह्या छै, जठै ढोलोजी जाय बैठा छै। तद ऊमर कह्यौ—

ढोला थांका देस में निपजै तीन रतन्न।
एक ढोलो बीजि मारवि करहो कंकू वन्न[8]॥

ताहरां मारवणि रै सारां पीहर री डूमणी ऊभी छ तिण विचारियौ—अे घात सझी छै। म्हे यां रा वाल्हा[9] अवर[10] आया छै। काई समझावण करू। ऊंट रो गोडो पण बंधियौ छै—यूं सोच करै छै।

---

[1]अदृश्य [2]टल कर [3]निकलो [4]इधर [5]अफीम आदि लें [6]रास्ते [7]पकड़ कर [8]वर्ण [9]प्यारे, मीठे [10]और।

गीत गावती डूंमणी बैसी मगळी बात ।
करहा ढोलो ऊमरै, कहि समझाई बात ॥

ताल तणक्कै पिव पिवै करहा ऊमाळ ह्वे[1] ।
मन काढेसी ढोलड़ा जिहि[2] नु कारण देह ॥

सयण सल्यां में मंडियौ मोहन रंग सुरंग ।
धण लीजै पिव मारिजै छोडि बिराणो[3] संग ॥

मारवणी नु मति चतुर, हिमैं जु भेद विमार ।
जो कंता नूं कामड़ी करहा वाबै मार ॥

डूंमणी रा कह्या सू मारवणि समझी । करहा मैं कांब वाही अर करहो ऊन तीनां पगां सूं हालतौ हुवौ । तद ऊमर बोलियौ—करहो आण पावै नहीं । साहरां राजपूत भ्रालण न ऊठिया । तद मारू बोली—ठाकरां क्यांनै दोड़ो ? थां कन्हां पकड़ावै नही । इणरा भणी मैं मल्ही जु पिसास[4] नै पकड़ै । तद ऊमर कह्यौ—ढोलाजी करहो पकड़ बेगा पधारौ । राजपूतां नै कह्यौ—थ ढोला दोळा[5] रहज्यौ । पछै ढोलोजी करहा मैं आय पहुंता । विमासि नै करहा नैं ऊभौ राखियौ । तद मारवणि कह्यौ—

ढलमिण मारवणी कहै सांभळि कंथ सुजाण ।
भागा चूकौ ऊमरौ बापू रख्यै भापाण ॥

या हकीकत सुणि ढोलोजी झकि चढ़िया । ढोलोजी मारू सांम्ही जोयौ । मारू री आंख्यां में इमरत पईं छै, तिण सू ढोलाजी रो भ्रमम उतर गयौ । तद मारवणि कह्यौ—आप करहा मैं तावौ[6] लड़ौ । अर ढोलोजी करहा नै कांब वाही । साहरां ऊठ तीन पागां रै पाण पवन ज्यूं उडियौ जाय छै । साहरां ऊमर बोलियौ—ढोलो जाणे न पाव । साहरां ऊमर सूमरो पांचसै असवारां थी[7] चढ़ियौ—

ऊमर ऊवाचढि चरे, पन्नागिया पवंग[8] ।
सुरतांणी मूझा पवंग[9] चढ़िया एक चतुरंग ॥

एक इसी ऊमर चलै पंथां बहै पलांण ।
जो भावै जिण लाग बंध करहा नैं कैताण ॥

---

[1] भूखारी बन्द गया है [2] जिसि [3] पराया [4] विश्राम के बाहर [5] पास चारों तरफ [6] तेज [7] से [8] घोड़े [9] घोड़े ।

पछै राजा नळ पंडितां नै बुलाया समूरतौ पूछियौ। ताहरां पंडित कह्यौ—महाराजजी आज रो समूरत सो आछौ छै। जद राजा नळ आपरो खवास सिनायौ अर कहाड़ियौ—आज रो महूरत आछौ छै। कोट में पधारो। कंवरजी कह्यौ—असी मोत सेजवाळो चुपायौ। अबै कंवरजी मोड़े चढ़िया छै। सारी सहेलियां मगळ गावै छै। ढूमणियां वधावा गाय रही छै। बत्तीस बाजित्र[1] बाजे छै। नाटिक नृतकारी कर रह्या छै। इण भांत सांमळी करि[2] पधाय नै ढोलाजी नै गढ मांहे लिया। आयनै नळराजा र पग लागा। नळराजा बहोत राजी हुवौ। खवास पासवान उमराव साराही कंवरजी सूं मिळिया। मुजरा पछ नळ राजा कंवरजी नै सीख दीवी सु महलां-दाखल[3] हुवा। सारा ही सहर मांहे वधाई बटी। उछाह हुवौ। ढोलाजी महलां आय सारा राजलोक सू मुजरो कियौ। राजलोक सारे ही निछरावळ[4] कीवी। पछै ढोलेजी खवास पासवानां नै सीख दीवी। इतरा मांहे मारवणिजी ढोलाजी री हजूर आई। पछै माळवणि पण सिणगार करि सखियां रै झूलरै ढोलाजी री हजूर आई। तीनू ही जणा झूलि[5] मांहे बैठा छ। राजलोक सारो ही जाळियां मांहे झांकै छै।

मारवणि नै माळवणि ढोलो तिण मझार।
मेघण मंदिर रंग रमै जी जोड़ी करतार॥

ताहरां माळवणि ढोलाजी नै पूछण लागी—कंवरजी किसी भांत पधारिया किण विध आया। ताहरां ढोलजी अवाळ री भाट री चारण री मारग में जिको हकीकत हुई छै तिका सारी ही कही। नळ ढोलेजी पूगळ रा घणा घणा वखांण[6] किया। पिंगळ राजा रा आपरी सासू ऊमा देवड़ी रा घणा वखांण किया। ताहरां माळवणि बोली—

तवतण माळवणी कहै सांभळ कंत सुरंग।
सबळ देस मुहामणा[7] मारू देस विरंग॥
बाळ बाबा देसड़ौ पांणी संदी तांति।
पांणी करे कारणै प्री छंडै अधराति॥

---

[1]बाद्य यंत्र [2]स्वागत करने की रस्म अदा कर [3]महलों में प्रविष्ट हुए
[4]आत्मीयजन के सिर पर कोई वस्तु या द्रव्य घुमा कर दान कर देना
[5]झूला [6]बखान प्रशंसा [7]सुहावने।

बाबा म देई मारवां बर कुंमारि रहेसि ।
हाथ कचोळो[1] सिर घड़ो सींचंती न मरेसि ॥

जिण भुइ पन्नग पीवणा कयर कंटाळा रूंख ।
आके फोगे छांहड़ी हूंछां[2] भांजै भूख ॥

ताहरां मारवणि बोली—

बळवी मारवणी कहै, मारू देस सुरंग ।
बीजा तौ सगळा भला माळव देस बिरंग ॥

बाळ बाबा देसड़ो जंह पांणी सेवार[3] ।
ना पणिहारी झूलरै[4] ना कूवै लैकार ॥

बाळ बाबा देसड़ी जंह फीकरिया[5] लोग ।
मेक न दीसै गोरिया घरि घरि दीसै सोग ॥

तरै ढोलाजी बोलिया—

मारू देस उपन्निया त्यांका दंत सुसेत ।
कूंझ-बची-गोरंगियां खंजर जेहा नेत[6] ॥

मारू देस उपन्निया सर ज्यूं पाधरियांह ।
कड़वा कदे न बोल ही मीठा बोलणियांह ॥

देस सुरंगो भुइ निमळ, न दियो दोस बळांह ।
घर घर चंदवदनियां नीर चढ़ कंमळांह ॥

सुणि सुन्दर केसो कहा मारू देस वखांण ।
मारवणी मिळियां पछ जांण्यो जनम प्रमांण ॥

ढोलोजी मारवणि रा घर मारवाड़ रा बखांण किया ताहरां झगड़ो भागो[7] । माळ माळवणि जांण्यो—म्हनी कहण्यां तौ कवरजी बुरो मानसी तिण सूं सरावै[8] पण हासी[9] करती जाय छै । माळवणि इण विध सराह पण करै मसकरी पण करै तोही ढोलो मारू रो बुरो न मानै । बीजो राजलोक आपरै ठिकाणै गयौ ।

ढोलोजी घर दोनां राणियां बैठा बात करै छै ।

---

[1]कटोरा [2]पुष्ट [3]ऊंचा [4]भुजा [5]फीके कमजोर [6]नेत्र
[7]समाप्त हुआ [8]सराहना करती है [9]हँसी-मजाक ।

जिम मधुकर नै केतकी जिम कोइल[1] सहकार।
मारवणी मन हरखियौ जिम ढाले मरलार॥

मारवणि नै माळवण पायौ छै भरतार।
महलां माहि रंग रमै बिसरै सबरी बार॥

रायजादो ढोलो रमै प्रिया ज मारू संग।
केसर भरणी साथ में भेली मारू अंग॥

मारवणि सूं ढोलाजी रो हेत घणौ छै। घर रा महल-माळिया सगळा दिखाया छै। तद सीधा राजलोक बोलिया—आज तौ मारवणि नै बाग दिखावण लेजावां। तद सगळो राजलोक भेळो होय नै बाग गया। उठै मारू नै सगळी जायगा दिखाई। पछै राजलोक मारवणि नै कहण लागा—थे उठै पूगळ में दूहा कह्या सो म्हे अठै सांभळिया[2]। राजलोक कहै—

मारू तूं तौ मोहणी[3] सह सिणगार सपूर।
महिलां मांहि उजासड़ी[4] जाण क ऊगौ सूर॥

इतरी बात तौ बाग मांहे हुई पछै सारो राजलोक महिलां पधारियौ। ढोलोजी पण दरीखाना सूं ऊठ महल पधारिया। मारवणि ढोलाजी रै हजूर आई। तद ढोलोजी बोलिया—

मारू महलां संचरी कनक बरणे लाट।
पूगळ मांहे ऊपनी[5] नरवर हुवी उजास॥

ढोलाजी मारू सूं अति प्यार राखै छै। सासू-सुसरा पण मारू रो मांन घणौ करै छै। मारू पण सासू-सुसरा रा कयन में रहै छै।

अबै पिंगळ राजा डायजौ भेजियौ छै। मारवणि रा सासू-सुसरा नै सबागा करड़ा केकांण घणा ही दीधा। मारवणि नै पचास हजार रुपिया रो गहणा—पांच हजार रो सोना रो गहणो मोतियां रो गहणो हार-गजरा मेलिया छै। सातबीसी सहेलियां भेळी छै ज्यांनै च्यार हजार रो रूपा रो गहणो। दस हजार रो सोना रो गहणो सहेलियां सारू मेल्यौ छै। पिंगळ राजा रो परधांन डायजो ले र आयौ छै, तिण रो ढोलाजी घर नळराजा घणी मनवार करै छ। साथे दादी पण आयी छै।

---

[1]कोकिल [2]सुने [3]मोहिनी [4]प्रकाश [5]उत्पन्न हुई।

मारवणि भणा उछाह मति मल्हार बाज्या ढोल।
ससनेही सयणां तणा कळि[1] में रहिया बोल॥

ढोले मारू भणा सुख विलास कीधा नै जुग-जुग ज्यांरा बोल रहसी। ढोला मारू रा बात दूहा मगर-वल्ह[2] गामा तिणां नै लाखपसाव ढोलाजी दियौ।

अबै ढोला मारू री बात सुणसी तिणां नै ढोला मारू रो सुख होसी। दुख उपजै नहीं। विस खुस्याळी रहसी।

इति श्री ढोला-मारू री वारता दूहाबंध संपूरण
संवत् १८७२, भादवा सुदि १४

---

[1]कलियुग [2]दोनों ढाढियों के नाम जो मारवणि का संदेश लेकर गये थे।

करै । रात दिन हजरत हजूर मांही रहै । यूं रहतां करतां जलाल बरस बारह में हुवौ । तरै हथियार बांध बादसाह कन्है मुजरै आइयौ । तरै खवास बादसाह रै नै जलाल रै बिचै खांडौ खड़ौ कियौ । जलाल सलाम कीवी । तरै नाम पूछियौ—ए नौजवान कमर बांध किस तरफ तयार हुवे और बीच में खांडा क्यूं खड़ा किया है ? तब जलाल बोलियौ—जे हूं ही बादसाह रौ लड़को छूं सो सलाम तौ बरोबरी रै दावै नहीं करूं तौसूं खांडौ बीच रै मांही खड़ौ कियौ । और सिपाही छां कठै ही पेट भरणौ नूं आसस्यां । बादसाह कह्यौ—दस हजार री जागीर पावौ छौ आगे तीन हजार रोकड़ हुकमरत[1] रा ही पावौ छौ तौही निबाह[2] क्यूं ना हुवै ?

तब जलाल बोलियौ—चाकरी खूब करावौ पण बादसाहां रौ अमल-दस्तूर[3] दुरस्त करियौ चाहौ तौ म्हारे मुरातब[4] माफक मनसब[5] देवौ । बादसाह कही—*मनसब क्या लेवोगे ? जलाल कही—पाऊं सोयकसो पण पक्को हफतहजारी*[6] मनसब देवौ तिणसूं चौदह हजार असवार जेका मौजूद पास रहै नै लाख एक रिपिया छेमाहिया देवौ । तिण में सात हजार छळ त राजूं रै हजार सात बरकअंदाज रहै । सिळिया सिळिया हजार चौदह असवार रहै । हजार चौदह *पियादा रहै । दूजो हजार अगई लोग सिपाही रहै ।* तरै खुसी आवै सो चाकरी करावौ । करड़ी मुहीं[7] में भजौ । इतरौ देवौ तौ रहूं । चाकरी हजूर री करूं ।

तरै बादसाहजी हंस नै फुरमान कियौ—हफतहजारी मनसब रिपिया लाख रो दे । तरै जलाल जागीर में आदमी भेज्या । भला सिपाही धारादार[8] आप-आप रा राखिया । हमेसां खुसी में गरकाब[9] रहै । कलावत[10] तवायफां[11] सात चाकर राखिया । राम-रंग में मस्त रहै । अमराव मुजरै नूं आवै त्यांनै कस्तूरी कपूर री गोळी कर मिसट मुहगे मोल रो बीड़ो देय इतर में गरकाब रहै । हमेसां गोठां हुवै । दूबळा-लोग[12] जिका आवै आप-आप आवै । गरीब

---

[1]हाथ खर्च [2]निर्वाह [3]राज्याधिकार देने की रस्म [4]दरजे के [5]पद विशेष जिसमें रोकड़ या सवार रखने का खर्चा दिया जाता है [6]मनसब विशेष [7]*कठिन परिस्थिति* [8]खानदानी [9]*डूबा हुआ* [10]गायक गाने वाली एक जाति [11]गाने का पेशा करने वाली औरतें [12]गरीब लोग

खैरात पावै। गरीबां नू निसका[1] नाज, कपड़ो जिको चावै सो पावै। दावी गुणीजन पावै। इनाम पावै। पेटिया खावै। गुण गावै। मौजां करता जावै।

बागां मांही सैलां करै। गुलाबजळ री तूंगां[2] सूं सांपड़ै[3]। छिड़काव गुलाब रो हुव। केसर-कस्तूरी भीमसेनी कपूर रो मरदन हुवै—तिणरो बीच मचियो रहै। सो इण भांत जलाल गहरी मौज माणद सूं रहै। फूलां री तिबारा[4] दारू पी'र मस्त रहै। दिनरात सारो साथ मतवाळा छकियो रहै। सो इण भांत जलाल राजस करै।

तिण समै सिंध समुद्र रो बादसाह भवर तिण रै बीबणी बगम जगणजात तिणरी कूख दोय बटी हुई—बड़ी मूमना छोटी बूबना। बड़ी बरस अठारह में छोटी बरस पनरै मांही हुई जद बादसाह खासा[5] हजूरियां नू फुरमाई—जे बायां मोटी हुई। असी बायां छै तिमाही बर जोवो। सो बादसाह जलाल री बात सुणी थी—

> जलाल हाथां ऊपरै, बाक सामुंदणीह[6]।
> ऊगणां[7] रितां विमाह[8] रै माल को गाहणीह॥
> मांगीकर दातार में रणवणी[9] जस जग्म।
> आयो घर महं मनमथी जलाल जैसो नग्ग॥

ये दोहा सुण नेप गाहणी री बात पूछी। तरै बादसाहजी कहियो—जलाल बड़ो दातार, भोगी भवर[1] छैल छै, तिणनूं मूमना तो जलाल नूं देवो। आ पण बहोत सुघड़ छै। मूमना विसेस समझदार नहीं छै तिणसूं आ बादसाह अगतमायथी नूं देवो। तिणरै तीन सौ साठ हुरमत छै, पण मोटो सगो छै। इसगो बिचार कर दरबार रा आदमी गाग देय काजी नै मुर्द कर हाथी घोड़ा कपड़ो मेवो रोकड़ बेबहा मारेळ टीके भेजिया। इजीफत सारी कही। सो चालतां चालतां थट्टेनगर पहुंचिया।

बादसाह नूं खबर हुई—सिंध समुद्र रै बादसाह रै दोय बटी छ, त्यांरा मारेळ

---

[1]नरेश [2]गरम पदार्थ रखने का बड़ा बर्तन [3]स्नान करते हैं [4]तीन बार भट्टी पर चढ़ाया हुआ तेज शराब [5]खास [6]मुसलमान स्त्री [7]संयुक्त के [8]विवाह [9]रण-कुशल रसिक बहुत ज्यादा भोग करने वाला।

आइया छै। बड़ी मूमना तिकी बादसाह नूं। छोटी बूबना तिकी जलाल नूं छ। बादसाह दोनां री बात सुणी थी जींसूं कही—छोटी हमारे होवे तो आछी। तरै काजी अरज करी—जलाल सुघड़ छैल छै, नै बूबना पण सयाणी छै—जिणसूं जोड़ी देख मग्या है। बादसाह कही—सुघड़ छैल क्यूं करके जाणिये। तरै कह्यो—सांपड़े[1] जणां माथा रा केस उळझ्या देवे पछै कांगसी केसां रै ऊपर धरै तिकी पागरी[2] चली आवे अटकाव नहीं होवे धरती तक चली आवे सो पूरो सुघड़ छैल कहीजै। सो इसड़ो जलाल छै। और आप बड़ा हो जिणसूं बड़ी लड़की आपरै ताई देणी फुरमाई है। तरै बादसाह कहियो—तुम जलाल रै पास जावो और छोटी रा नारेळ हमारे ठहरावो सो हम रजामंद हैं। इतरो कह काजी नूं चाहियो[3] इलायच दियो सो काजी सलाम गयो। तद बूबना रो नारेळ बादसाह नूं अर मूमना रो नारेळ जलाल नूं बंधायो। आया था तिकां नूं रीझ-मौज[4] मिजमानी देय बिदा किया।

पछै बादसाह जलाल नूं कहियो—ब्याहण कूं चढो। तरै जलाल कहियो—आमाजी हूं कछु जितरो सामान दिरावो। तद बादसाह हंस'र पूछी—मांगो। तद जलाल कही—सात सौ घोड़ा कुमारी इकमोसा हजारी तिकी सुनहरी रूपहरी साखत दिरायजे और खजाना सूं रोकड़ दिरायजे। दीजो साथ सामान सगळौ म्हारो थे हीज।

तरै नवलाख रिपिया रोकड़ हाथखरच नूं दिराइया[5] और आवतां जावतां रो रोकड़ खरच दिरायौ। और बादसाह खुस होय कह्यो—जलाल बादसाहां रै पूगड़ा[6] होय जैसा ही है। रोजगार रो हुकम दस्त हुवो। तद जलाल आपरा सात सौ सांईना—अेक रंग अेक रूप अेक अवस्था त्यांनै आप जसी पोसाक कराई। केसरिया बादसाई पारचो जवस जामा कपड़ो कमरबंध पाग सब नूं बधाई। घोड़ा सातसौ अबलख समदा भवर, गंगाजळ सजम कुम्मेत और गुलदावे फुलवारी तयार कराया त्यांरै सुनहरी रूपहरी साग साखत साज सजाया। बड़ाऊ पलांण मडाइया छै सो सारीखां नू सरभरा कर चढ़णे नू दिया। बादसाह कह्यो—जे चाहो सो और लवो। तद हाथी तीन सौ गहणा सूं भरक

---

[1]स्नान करते समय [2]सीधी [3]मनचाहा [4]प्रसन्न होकर इनाम आदि देना [5]दिये [6]शाहजादा [7]खातिर।

थका लिया । सो हजार चौवद घोड़ा और हजार चौवद प्यादां सूं चढ़ियौ । सवारी बणाय बादसाहजी रै मुजरै नूं आइयौ । बादसाह झरोखै आय सवारी देख बहुत ही खुस हुवौ अर कह्यौ—जे मरा बेटा जलाल जैसा नफर आवै है—जैसा आपणा वतन मांडे रै मळ आप अवेगा ।

बादसाह आपरो बांको सिणगार हाथी रा अमाड़बर[1] मांही जलाल रै हाथ देय विदा कियौ तिके जलाल मजल दरमजल चाल सिंध समुद्र जाय डेरा दिया ।

बादसाह अबर अजस[2] पाणै छै—अ बूबना जलाल नूं छै, तिसी भरम उपजियौ । तठा पाछै सांझ समै तोरण मारण रै ठाई जलाल सातसौ असवार एक रंग सूं बणाय[3] कर, हाथियां री कोर लगाय नोबत बाजा बजावता सवायफां नचावता चालिया । खलक[4] लोग तमासो देखै । जलाल कहै—घड़ी[5] मता करौ । तमासौ देखणो देखौ । सोने रूपे रा फूल उछळता आवै । खैराती[6] अरज करता आवै सो खैरात पावै छै । इण भांत हाथी रै मेघाडम्बर अबर ढुळ्तां थकां सूरजमुखी लागियां जलाल आइयौ ।

जलाल रै सिर सेहरो बूबना सिर सिन्दूर ।
जाणै सिंध समुद्र में पश्चमगंग रा सूर ॥

इसी भांत तोरण मार मांही नूं गया । चवरी बैठ नका पढ़णे लागिया । सरै काजी कामदार बोलिया—बूबना बादसाह नूं बीबी है । इतरी बात बादसाह अबर सुण काजी कामदार सूं नाराज हुवौ और कही—हम सारीखी जोड़ी देख भेज्या था । तुम लालच पकड़ कर फरासारी[7] कीन्ही है । तद काजी नू खूब पैजारां[8] पिटवायी । काम सूं दूर कियौ । घरबार लुटाय-लुटाय दीन्ही मैं तोखां[9] मांही दीन्ही—

जलाल बाता फेरठां फिरियौ अंबर साह ।
काजी काज चुकावतौ पड़ियौ कड़िया[10] मांह ॥

इतरो कियौ पण फेरासारो नह हुवौ । बूबना नूं पोसाक पहराय खांडा कन्हे आणी[11] और मूमना री चामढाल देख कही—

---

[1]हाथी का छत्र [2]अभी तक [3]साज-शृंगार [4]दुनिया [5]जोरदार [6]खैरात लेने वाला [7]उलट-फेर [8]जूतों से [9]लोहे का भारी डंडा गले में डाल कर लटका दिया [10]झंझट [11]लाए ।

भंवरी बैठी बूबना मळमळ बदन मळाह ।
जलो न्है पतसाह रा भडलो भाय पलाह ।।

इसी कहु नपा पछी मैं जलाल मनभंग[1] थकियो पोढ़णी गयी । बीबी आवै तैसे बूबना री खवास नेमां बांदी तिणनूं जलाल कही—नेमा खवास तुम्हारी बीबी बूबना हमारी आरती मनुहार नहीं कीन्ही । तद नेमां खवास कही—जलाल साहिब बीबी आव । तैसे बूबना अम्मां नूं कही—जलाल साहिब नूं देखणे जावूं । कछु निछरावळ[2] जे करूं ? तद मां हुक्म दियो जणा बूबना आपरी सखी-सहेली नेमां खवास नूं आगे घर, जठे जलाल महल में बैठा था, उठे आई । तीनूं आवती देख जलाल कही—

अटल मोती सिर तिलक बेणी अधिक बणाय ।
जांण'क हंस मळफियो मानसरोवर मांय ।।
कहर किया थे बूबना हंसी हंसणी हाय ।
परिमा तड़फै ताम में न काची करद किया ।।

इतरै बूबना आय खड़ी रही तद जलाल कही—

न जांणूं तैं क्या किया जाद[3] सहेली[4] मुज्झ ।
नैणा नींद न जीव सुख जबे न देखूं तुज्झ ।।

तरै बूबना कहै—

बेटी भंवर साहरी जणखी जणण माय ।
परणी ही पठांण की तन मन दियो तुमाय[5] ।।

जलाल साहिब हमारे आगतमायनी पिसा थान कही । इतरी सलाम कर अन्दर गई । मा सूं बहोत बदिस[6] पछी मिळी ।

कितरा अेक दिन पाछै बादसाह जलाल नूं सीख दीन्ही । दत्त-दायजो दियो बूबना नूं छत्तीस पाण दायजे दीन्हा नेपजायो पडवार[7] साथै जानती नूं दीन्हो तिको जमन रा आंधी पण हिया री इसी समझ जे देखतां नूं खबर नहीं पड़ै । तिका महाडोल मांही बैठांण सखी सहेलियां नाखियां रै घणा आंसू सूं बिदा किया । सो महल छोटी होटी हुवै । कारण साहण-वाहण[8] घणा तिण सूं बीजी महल आय करो हुवौ ।

---

[1]निराश [2]न्यौछावर [3]प्यार [4]पागल [5]तुमको [6]हवाय
[7]अपोड़ीदार [8]घोड़े की सवारी ।

उठे जलाल रो डेरो बूबना रै डेरा री कनात[1] सूं कनात लगाय सूं लगाय मुकाम हुवो। उठे पाछलो पोहर हुवयो जणां मूमना असियार बांदी नू सागे लेय बूबना रै डरे आई। तरै बूबना ऊठ नै मिळी। तरै बूबना मूमना चौपड़ रो खेल मांडियो छ। मोहर पन्द्रह री बाजी लगाई। बूबना नै नेत्रां खवास ग्रेक तरफ नू हुई। ग्रौर मूमना नै असियार बांदी ग्रेक तरफ नूं हुई। ग्रेक रामत[2] री बाजी बूबना जीती। तरै बीजी बाजी मांडी सो मूमना री जीत नजर आई।

इतरै जलाल रै मन मांही बूबना बस रही सो जांणी। डेरा री कनात ग्रेक भाग रही छै, मैं बूबना देखूं इसी विचार नै कटार हाथ लेय ऊठियो। आपरी तरफ सूं बूबना रै डेरा री कनात चरड़[3] देसी फाड़ी ग्रौर मूंडो कनात मांही काढ़ियो। उठै मूमना रो मुहडो साम्ही थो ग्रौर बूबना री पीठ थी। जलाल रो सूरज सो मुहडो मूमना नूं नजर आइयो सो मूमना रै हिया में झाळ ऊठी। तरै पासो न्हाखती हाथ रो झालो[4] परे जांणे नूं कियो। जे कोई नाजर देख लेसी तौ बादसाह नू कह देसी तौ फिसाद होयसी। बादसाहां रा मांणस बेदीन छै इसी साबस कीवी। इतरै नेत्रां खवास रै नजर आयो जद जलाल जमन थकियो मसनद ऊपर जाय बैठयो।

इतरै मूमना बाजी जीत बिसर बेखातिर[5] होय ऊठ आपरणे डरै मांही आई। इतरै रोसणी हुई। दासी सहेलियां आ मुजारनी दीवी। तरै नेत्रां बांदी नू बूबना पूछी कहणे लागी—मूमना जीती बाजी बिसर चविस थकी क्यू उठ गई? तरै नेत्रां खवास कही—बेगम साहिबा रै देखण तांई जलाल साहिब कनात तोड़ी तिण में मुहडो[6] जाम देखता था तुम्हारी पीठ थी मूमना साम्ही थी सो तिणनू देख बखातिर हुई। मूमना नै जलाल साहिब कुछ लेखो नहीं छै। इतरी बात सांम्हळ बूबना नेत्रां बांदी ऊपर रीस कीवी—जे जलाल साहिब पधारै घर सू हमारे तांई सैन[7] में कहै ही नहीं। आप ही रातदिन जलाल करती रहै।

इतरै डेरा उठाय चालिया। तीसरी मजल जाय ठहरिया। उठै ग्रेक आंबा रो बड़ो पेड़ तिणरी डाल सूं बूबना हींडो बधायो ग्रौर चाहियो—क इण हींडै हींडती कनात ऊपर होकर जलाल साहिब नू देखस्यूं।

---

[1]मजबूत पर्दा [2]खेल [3]कपड़े के फटने की आवाज [4]इशारा संकेत
[5]हैरान [6]मुंह [7]बेचैन।

> आंम डाळ में आंबियो पाटै[1] पीठ जिजूह[2]।
> हीरै सा दम हेमिया सैंठा[3] सांम्है मूंह॥

इण भांत किंवरा अक दिन आसतां-जासतां अटेअसर आइया। बादसाह नूं मालूम हुई तरै बादसाह बूबना नूं महल दियो बादसाह सूं मुजरो कियो। पण बारो[4] बरस मांहै अक आवै। बादसाह बरसां पूसलो तिणसूं इयांनें आवती वेय अपोड़ी राख्या।

जलाल बादसाह सूं मिळियो। सारी हकीकत कही। बादसाह सुण राजी हुयो। तरै जलाल नै पहरो चोकी खासी सौंपी।

गढ़ रै पाखती जलाल रो महल छै, उठै बूबना रहै नै जलाल चौकीखानै दोय घड़ी दिन चढ़तां आवै। सो सातसौ खासा आदां सूं भुजाई[5] आरोगै और भगत जन भाट चारण सारा मुहडा आगै बैठ जीमै और रांधियो जोरो अगर बंटै। उण बखत भुजाई में छप्पन भोग छत्तीस व्यंजन सगळी साथ अेक थारीसो भोजन हुवै। जिण नूं कठै ही मिळै नहीं सो उण बखत भुजाई में जलाल री रहवास आवै सो मनमांनिया भोजन जीमै। बड़ो हंगामो[6] लागियो रहै। जीमियां पाछै पान सुपारी सारां नूं देवै। कवीस्वर आसीस जयकार पढ़ै तिण रो हंगामो इसो हुवै जाण सावण भादवै रो आभो गरजै। इण भांत आरोगै जद पाछो चौकीखानै आय बैसै।

बूबना रा महल नीचै अेक बड़ो दरीखानो। मुहडा आगै छप्परखाण तिण नीचै सारा उमराव आय बैसै। मनसबदार बडा-बडा आवै त्यां मांही जलाल पण बैसै। सो बीजा उमराव मनसबदार गल्हां-वातां[8] करै। जलाल तो बूबना रा महल रा झरोखा सांम्हो जोवतो[9] रहै पण बूबना रो दीदार[10] पावै नहीं। जलाल कहै—

> लोयण[11] प्यासे दीद के निरखत नित का नित।
> दरसण ही पावै नहीं मिंत अेक हो चित॥

इमें संध्या गमै रोसनाई हुवै तहां बीजा उमराव तो ऊठ डेरै जावै और जलाल रात घणी दोय जातां ऊठै। बूबना बो खवास अरज कर डेरै लेय जावै।

---

[1]पटड़ी [2]मजबूत [3]प्रिय [4]बारह [5]भोजन [6]चहल-पहल [7]आराम [8]गप्पें-बातचीत [9]देखता [10]दर्शन [11]लोचन।

इण भांत मास दस बीतिया पण दीदार दोनां ही नू नहीं हुवा। इतरै जलाल अेक दिन ऊकतौ कहै—

इत न्यारा बैठ रह्यां साह लोग री काण[1]।
ओळ्यां[2] मैंड़ी सज्जणा आवै जाण न जाण॥

अेक दिन बूबना नैणां खवास नू पूछी—क्यै जलाल साहिब बादसाह रै मुजरै नूं आवै है कि नहीं? नैणां खवास कही—जलाल साहिब तो चौकीखाने महल रै तळै[3] नित बैठा रहै।

आंख्यां आक चराह, पारै वे बन रखिया।
हिवड़ौ तुझ चराह, बेगो ऊखण ना करै॥

लाल सुरंगे कापड़े आवर की ममणाह।
मेघरणी केच दिये ज्यूं पाणी बाणाह॥

तद बूबना कही—वेगी सू मिळनै पूछ। बात कर मरे थांई आय कहीजे।

इतरै जलाल रात घड़ी दोय तीन बीतियां निसासो[4] मेल फूलमदवा खवास सू सांझो महणाव ऊठिया। इतरै में नैणां खवास आय कही—

आवंता[5] हिय न चढी ऊंचा[6] पिछताय।
हूं तुझ पूछूं है जिमा[7] तुझ उर वेदन काय॥

तद जलाल कही—

की मरां[8] की न मरां जीव सुणंता[9] बात।
मनड़ो चाहै रैण दिन सजणां[10] हंदो साथ॥

इतरी कही नै डरै आइयो। नैणां खवास बूबना नू आय कही तद बूबना कहै—

सांई हूंता हाथ ज्यूं नयण भी न ठौर।
कैसी आवूं बालमी हूं साईं बरि चोर॥

आवर पिव रै नाम के लिखे नळ रा मांहि।
करती पाणी ना पिळै, मतोहि पिमोरा[11] चांहि॥

अेक घड़ी आधी घड़ी ताहू आवो आव।
जब ही मिळ कै बैठिये सो ही सुखिया साथ॥

---

[1]मान [2]प्रीति पथ [3]नीचे [4]निश्वास [5]आते [6]ठक्के [7]जीव [8]मरें [9]सुनता है [10]प्रिय [11]मिट जाना।

बूबना जलाल सूं मिळण पावै नहीं इण तरह विरह करै। बीजे दिन मेत्रां खवास नू बादसाह री हजूर मेस अरज कराई—जे हुकम हुवै तो बड़ी बहण रै मिळणै जाऊं। बहोत दिन मिळियां नू हुवा। बादसाह कही—जावो बेगा आइ जाज्यो। तरै मेत्रां खवास बोली—जलाल साहिब बूबना बेगम बड़ी बहण सूं मिलणे जाती है बेगम साहिबा का रथ है। इतरो सुण जलाल सहेलियां मांही पैस रथ भीतर जाय बैठियो। सहेलियां जाणियो नहीं रथ जाड़ो राखियो बूबना उतरी नै सलाम कीन्हीं। तद जलाल कही—

> जास[1] करंता आज सो मिळियो जोग दिखाव।
> हम भूखे तुम्ह नेह कै संबूका[2] न खवाय॥

सुण कर बूबना कही—

> जलाल जहड़ी मा कहो सांची बात सुहाय।
> खेत चरी[3] ना चाखिया पंखी कहां खवाय॥

तद जलाल कही—

> झूठी झूठ न बोलिये सांची बात कहंत।
> चड़ी पड़ी ये खेत में डांगा ढोर चरंत॥

इतरी सुण बूबना लाज कर चुप रही तरै जलाल बांह झाल आलिंगन कर चुंबन कियो। मांहो-मांही येकमेक हुवा। घणा दिन रो विरह दूर भागियो। काम कोट मांही लुट पड़ी। दोनूं खुसहाल हुवा। सीख करी। जलाल बाहर आयो। बूबना भीतर गई, मूमना सूं मिळी। तद इतरी सुराग जलाल री मूमना लगी[4] नै बोली—

> बिखर पड़ी क्या पंथ में मिळियो बीच पठाण।
> इसी तोरा कापड़ा मो पिय हंदी पाण[5]॥

बूबना कही—

> भेदी काठा ना कही समझ रात दूं जाण।
> बोदी बोया कापड़ा कैहड़ा[6] बिनती जाण॥

---

[1]आशा [2]धाम [3]मालिक [4]समझी जाणी [5]सुगन्ध [6]कहां [7]लगी।

मूमल हांसी[1] ना भली बकसा हुवे काम।
ग्रेसा सूका निस का पिहरे भमर साम॥

सोहण सोह न देखिया पंखिये सीमी म्याह।
सुख मया इस पप्पणे मेह सुणंता थाह॥

माध माधे मुहर है सुणो मेम सुनाय।
हेली गरब न कीजिये भंवर छाड़ समाय॥

हेली थारो करहलो[2] मोधी बिलमो बार।
के कांटा री बाड़ कर, के मर बांधी थार[3]॥

मूमना कही—

चंदण नीक मरु[4] चरै, मण नीक सण काम।
मे हर टीलो करहलो जित चरसूं तित जाय॥

तरै सूबना कही—

काची कळी न हेलियो[5] पूगो न रीमझियोह।
हेली थारो करहलो महमाती ममियोह॥

मूमना कही—

चंपो मरवो केवड़ो नीक सीने चोक।
मे हर टीलो करहलो मूकियो नाथे[6] मोक[7]॥

करहो काची ना चरै, पाकी बिसो न जाय।
भवर बिलंबी बेमड़ी तिण मैं मणी मुराय[8]॥

इण भांत सूं वातां कर मूमना आपरै महल आई। इतर सावण रो महीनो आइयो। तरै सीख रे विम नेत्रो खवास नूं कही—आज अमाम साहिब नूं कहि आवज—तमार रहज्यो म्हे नेवरो मूं आवां छां। महल रै तळ बाग है उठै बिराज चे। इतरो कहि नै पाछी आई।

मूमना कहियो तरै घणो राजी हुवो नै सिणगार कियो। पोसाक-बणाव[9] कियो। अपाणी सूं सारो साम सदोरो कर आप सदोरो हुवो। घणा अतर सुगम

[1] हंसी [2] करहा छोटा ऊंट [3] घास [4] कपास का पौधा [5] भारी होना
[6] नहीं पाता [7] बैठने की जगह पर [8] मुरता है, आतुर होता है
[9] शृंगार।

बूबना जलाल सूं मिळणो पावै नहीं इण तरह विरह करै । बीजे दिन नेतां खवास नूं बादसाह री हजूर मेल अरज कराई—जे हुकम हुवै तो बड़ी बहण नै मिळणी जाऊं । बहोत दिन मिळियां नूं हुवा । बादसाह कह्यो—जावो बेगा आइ जाज्यो । तरै नेतां खवास बोली—जलाल साहिब बूबना बेगम बड़ी बहण सूं मिलणे जाती है बेगम साहिबा का रथ है । इतरी सुण जलाल सहेलियां मांही पैस रथ भीतर जाय बैठियौ । सहेलियां लखियौ नहीं रथ जठै राखियौ बूबना उतरी नै सलाम कीन्ही । तब जलाल कह्यो—

आस[1] करंता जाम सो मिळियो जोध दिलाम ।
हम भूले तुम्ह नेह मैं पंखुड़ा[2] ज्यूं जवाम ।।

सुण कर बूबना कह्यो—

जलाल पहली ना कही सांची बात सुहाव ।
खेत धणी[3] ना जाणिया पंछी कहां जवाय ।।

तब जलाल कह्यो—

झूठी झूठ न बोलिये सांची बात कहंत ।
लड़ी पड़ी ज्यें खेत मैं जाण डोर चरंत ।।

इतरी सुण बूबना लाज कर चुप रही तरै जलाल बांह झाल आलिंगन कर चुंबन कियौ । मांहो-मांही एकमेक हुइया । घणा दिन रो बिरह दूर भागियौ । काम कोट मांही लूट पड़ी । दोनूं खुसहाल हुवा । सीख करी । जलाल बाहर आयो । बूबना भीतर गई, मूमना सूं मिळी । तद इतरी खुसबू जलाल री मूमना लखी नै बोली—

विजय पड़ी क्या पंथ मैं मिळियो बीच पठाण ।
हेली तोय सापड़ा मो पिय हंदी बाण[4] ।।

मूमना कह्यो—

ऐसी बातां ना कही समझ राख सूं आण ।
बोबी बोया बापड़ा किंधा[5] बिसमी बाण ।।

---

[1]आसा [2]धाम [3]मालिक [4]समझी जानी [5]सुबन्ध [6]कहां [7]नमी ।

मूमन हांसी[1] ना भली बळता हुवै धाम।
ऐसा सूवा मित्त का पिहुरे भरतार धाम॥

सोहरण सोह न देखिया मंजिये दीनी ब्याह।
दुख भरा इस मग्पऐ मेह सूसेवा साह॥

मासे मासे मूहर है, सूवो मेम तुनाम।
हेली मरव न कीजिये चंवर साह तमाम॥

हेली मारो करहलो[1] मोह्री बिलपो बार।
कै काय री बाड़ कर, कै चर बांधी चार[2]॥

मूमना कही—

चंदण मीक मरण[3] चरै, मरण मीक धरण काम।
थें हर कीलो करहलो किन बरणूं तिन काम॥

तरै मूमना कही—

काची कळी न हेळियो[4] दूरणे न रीझवियोह।
हेमी थारो करहलो महमाती गमियोह॥

मूमना कही—

चंपो मरवो केवड़ो मीक तीने चोक।
थें हर कीलो करहलो मूकियो नावै[5] चोक[6]॥

करहो काची ना चरै, पाकी दिसा न जाय।
अमर बिमांची बेलड़ी तिण नै मरणी भुराय[7]॥

इण भांत सूं बातां कर मूमना आपरै महल आई। इतरै सांवण रो महीनो आइयौ। तरै तीज रै दिन नेत्रां खवास नूं कही—आज अठास साहिब नूं कहि आवज—उपार रहज्यौ म्हे सबरो मूं आवां छां। महल रै तळ बाग है उठै बिराज जे। इतरो कहि नै पाछी आई।

मूमना कहियौ तरै घणो राजी हुवौ नै सिणगार कियौ। पोसाक-अपाव[8] कियौ। अपाणी सू सारो साज सवोरो कर आप सवोरो हुवौ। घणा अतर सुगंध

---

[1]हंसी [2]कपड़ा छोटा ऊंट [3]चरा कपास का पौधा [4]भाती होना [5]नहीं आता [6]बैठने की जगह पर [7]मुरझा है, आतुर होता है [8]शृंगार।

सू फेर गरकाव हुम्रो। मठो तीन दिन पछां भेकसो ही चालियो। तिण वळा पभो मार्ई तनोमनो यार, फूलमवको खवास गहडो डाढ़ी तालियो गेकोत वेसनै यात करणै लागिया—भापां बिनां कदे भकलो नहीं जातो नै भमलांबाक पोसाक कर भाज भेकसो ही मुळकतो पनियो चालियो सो भलो नहीं। कठौड़ां काम छै। भाग वादसाह नू क्यूं भरम छै। भापां बरणा तद पभो कह्यौ—

> कला चेत न वारये बहुड़िये नीचाख[1]।
> मालरंगी हाँड़ि पड़ै जग हंसी नर हास[2]॥

बसाल सुणी भणसुणी कर उतावळा[3] पांवडा देय बाग मांही जाय बैठियौ। भणी चमेली जूही री झाड़ी में छिप बठियौ। तरै माळी पण बात सुणी थी सो माळी जाणी—भाज साह खसाम बूवना रे महल जायसी सो भोळप[4] करै छै। वगो लायसी। तद माळी कह्यौ—

> मास्यां बोल्यौ मोरिया ऊंचो कर की गाड़।
> चेत पावरी भूलड़ा कुमला तै जन जाड़॥

भो दूहो खसाल सुण नै बोलियौ—रै माळी के कहै छै? माळी कह्यौ—महरबान मोर बैठयो झिंगोर[5] करै छै तिण नू कहूं छू। जछाल कह्यौ—कुटुम्ब मैं सब जानता हूं पण फूलां री माळा खूब कर ल्याव। तरै माळी चौसर भेक भवल भांण नजर कियो। खसास हार लय जब मांही सूं पांच मुहर काढ माळी नू दीवी। माळी बहोत राजी हुवो।

भठी बूबना नेत्रां खवास नू कह्यौ—मताव[6] जाय खसाम साहिब नूं लय भाव। तरै नेत्रां दासी पांच सात लेय नीसरी। बीच में कपोळीदार पड़ाई बैठो छै सो पग वाजता सुणि बोल्यौ—नेत्रां खवास तू है? तब नेत्रां हुंकारो दियो। जणा पड़ाइये कहियो—किसे काम गैर बळा जावो छो। तरै नेत्रां कह्यौ—वादसाह साहिब भाज बूबना रे महल पधार सै तिण वास्त सेज बिछावण नू फूल ल्यावण पांच जणी साथै जावू छू। तरै पड़ाइये कह्यौ—म्हारै हाथ ऊपर हाथ मल कर जावो तरै पांचू जणी हाथ ऊपर हाथ मल मुळकती हुई गई। खसास साहिब था बठै गई। मुजरो कियो। मालण फूल सेर पन्द्रह बीण राख्या था तिकै बड़े डासे म फूल बिछाय नै बीच मांही खसास साहिब नू बैठाण कर ऊपर फूल

---

[1]असावध [2]हाँसि [3]तेज [4]पतसी मोलापन [5]मस्ती [6]शीघ्र।

डांक मालण रै माथै बोझो[1] देय ड्योढ़ी लेय कर आई। तरै पहाइये[2] कही—नेत्रां खवास फूल ले आई ? तद नेत्रां खवास कही—बीवेजी ड्योढ़ीदारजी लय आई। तद पहाइये कही—भली करी। पण मरे हाथ पर हाथ मेल कर जावो। तरै नेत्रां और व पांचू जणी हाथ पर हाथ मेल अन्दर आई, मैं मालण आय कही—पहरदारजी हू फूल लेय आई छू। पहाइये कही—हाथ मेल। तद मालण हाथ मेल्यौ। तद पहाइये कही—अरी मालण फूलां रो तौ बोझ नहीं बोझ मांहीं मरद है सो जलाल है—

> पैर अभ्यको घो हिये मापे गर बोझळ।
> धीरी धीरी मालणी तौ सिर साह जलाल॥

तद नेत्रां खवास कही—आग तौ आंख्यां हीज फूटी थी आज तौ थारो हियो ही फूटियौ। इतरी सुण पहाइये कही—जे भीडो मारी जायसी तूं सांच नू झूठ बतावै छै। देखां बोझो उरो लाय[3]। तरै जलाल जांणी-भो तौ पीहर रो छै तींसूं झड़क[4] देसां। बोझा सू निकळ नै बोल्यौ। तद पहाइये कही—

> जमा भखाय[5] म जाइये केही पड़ै कुथाए[6]।
> माथा सूं बिन जाणिये मेहांणी पण जास॥

जलाल कही—

> जाणी मूलां जाइये मजबूत तीजे बीह।
> सिर दीन्ही बूबन सटै केहो[7] राखां बीह[8]॥

इतरी सुण पहाइये कही—हू बूबना रै पीहर रो छू पूरो हमारो विसवास छै सो मोनू ही मरावस्यौ मैं आपने ही जोखिम छै, पण आज तौ जावो। बूबना रो मुलाहिजो टूट नही। यू सुण जलाल भींतर गयौ। जणी ही खुसहाली हुई।

अबै मांहीं रहितां दिन तीन हुइया तद लोगां जांणी—जे जलाल बूबना रा महल मांहीं छै सो लोकां[9] जाय नै बादसाह नू अरज करी—बूबना बगम रै महल मांहीं जलाल छै। तद बादसाह रीस मांन बूबना रै महल आंणे लागियौ। जद नेत्रां खवास बोली—बगम साहिबा बादसाह सलामत आवै छै। बादसाह आय च्यारू तरफ जोवण लाग्यौ सो कै तौ महल मांहीं ढोल्यो छै, कै बूणा म

---

[1]भार बंधा पुलंदा [2]पहरेदार [3]इधर ला [4]डांट देंगे या जाने योग्य नहीं [5]बुरी आदत [6]कैसा [7]डर [8]लोगों ने।

फूलां रो डग दीसै । और क्यूं ही दीस नहीं । पर भमाल डर सू फूलां मांहीं दबियी सांस लेवे तीसूं फूल धीमे धीमे हालै । तद मैना खवास कही—

भंवरा फली लपेटिया कायर काटै काठ ।
कीजियै कुण मांणसां[1] मुवौ ठ मोटैं ग्रब ॥

ओ दूहो सुणि बादसाह कही—रे बांदी या बात किण नू कही ? तरै बूबना सम्हाळ लीन्ही और बोली—जी हजरत इस बाग में अेक कमंल है सो उसमें अेक भवरा दिनछते[2] आ बैठिया था । दिन अस्त होते फूल मुंद गया और वो भवरा भीतर रह गया सो कहुवी है । बादसाह कही—खूब अब उसे छोड़ दो । बादसाह नहीं कुछ दीठो नही तो कही—मेरा पड़ाई बड़ा सच्चा है । इसके पास मरे बर में मोरिया[3] पैसे नही । यू बिचार बादसाह महल पधारिया । जिण चुगली की थी तिण पर बादसाह रीस फुरमाई ।

दिन ऊग्यां जेठो बादसाह रै मुजरै गयौ तद बादसाह फुरमाई—ऐ खलाछ नू किम प्यार हुआ मुजरे नू नहीं आया सो वो कहां गया है ? तद जमो अरज कीवी—जी वे हजरत सलामत जिसके हजरत से मामू[4] आ जवामी मूमना सरीखी औरत पाई तिससे गैर महल मस्त हुवा रहे है । तद बादसाह राजी होय नै सुंबाखाने सूं अतर चोओ तेल कस्तूरी कपूर, केसर बोम साम जमास नू मेल्या सो जम जेठो वैरे आइयो । पण जणो बदिल[5] रहे । तनोमनो यार, गसको ढाढी फसमदवो खवास ताजियो गुलाम मे सारा ही मिळ मजकूर करैं । हुमसां बाट जोवे । इसा छै महीना मांही रह्यौ ।

भवै अकाम बूबना सू सीख कीवी । तरै झरोखा सू रेसम रै लच्छां सू उतरियो । सो सुमे भीनो बकियो अंतर रा झोला पड़ता दोय लाख रो मोतियां रो हार गळ मे पहरियां थकां महल नू आवै छै, सो जेठो व तनोमनो सगळां नू सुवास रो झोलो पवन सू आयो । बारह मोहर तोळा रो इतर जमास मगाती तिण री सुवास रा झोला पड़ण लाग्या । तद सारां ही कही—खुसबू रा झोला आवै छै, सो दलो ठी सही जमास आवे छै । पहलां तो सारा ही जांणता था क वो मारियो गयौ । महीना ६ होवण नू आया पण ओ तो जीवे छै ।

---

[1]आनन्द सेमे [2]दिन रहते [3]मोर (जमास) [4]मामा [5]अनमना

सो सारा ऊन सांम्हा चालिया । इतरै कस्तूरिया म्रग जिसा लाल नेत्र किया घूमती थको आय छ । ये देख नै घणा घणा राजी हुवा । जलाल धन नूं मुजरो कियो । यां सगळा जलाल नूं मुजरो कियो मिळिया । घेमो कही—

जला जेम न आवसी केहर[1] री मोकाण[2] ।
अम्हां समाइ सर्म हणी (नू) मराइसी आपांण ॥

और आग हालियो जद तनोमगो यार कही—

आका बतुण[3] न कीजिये संपां न खावे मांस ।
जला जेम न आवसे बैठां थंद विनास ॥

तरै जलाल कही—

आका बातुण म्हे करां खरपा मीठा मांस ।
जलो बी ठा चालसी बैठां थंद विनास ॥

तद गलड़े डाढी जांणी ये सीस री बात सी बाम भावै नहीं तरै गलड़ कही—

ज्यां देस्यां पोहप पड़ै कलिया रहै सुरंग ।
पे भ्रम[4] जलाल चालिये महपा पाम पिलंग ॥

जल्ली हुंदा चंदड़ा भूखन हुंदा गात ।
जाण कंचन ऊपरा जगा विराजी लाम ॥

भवर भावी बेमड़ी जिण फळ जामै लाम ।
ता बिन किण न चाखिया[5] हा माइली जलाल ॥

जलाल य दोहा सुण बहोत ही राजी हुयो और कही—य गलड़ा तें बहुत भला कही । यूं कहि रीझ कर सगळो गहणो उतार दियो । तद घेमो जांणी—जे महपा ता क्यूं ही लागे नहीं जद कही—

चालियौ जाम जमालिया ढैणां हरि साथ ।
भवर जावे फूलड़ा तो क्यूं आवै हाथ ॥

तद जलाल कही—

ऊभा हूं भीचा हुवे जे करतार करेह ।
चाकर हुवे चम गयु जाये ऊंमारेह ॥

---

[1]सिंह [2]दुःख बैठने की जगह [3]बतुन [4]बराबर [5]चखे ।

इण तरै बात करतां घणां डेरै आया। जलाल बूबना रै महल गयौ तौ बूबना कही—

> घर घर रीझ्या कछुआ चीतरिया चर आव।
> बीजां[1] जेम भमूकड़ां[2] देखां एको डाव॥

तद जलाल कही—

> भूखाळी क्यूं लौ चवै मन में क्यूं चाहे न।
> घेकां फळ चाख हुवै धेकां चाहन फीन॥

इयां गल्हां कर बादसाह रै दरबार आयौ। लग सीष राख मुजरो कियौ। बादसाह जलाल रो रूपरंग पोसाक सुगंध देख प्रसन्न हुयौ। तरै मन में कही—मेरी बेटी यांदा बिचारा मोरिया कूं परणावणे नूं तयार हुई थी पण जलाल जैसा छैल है वैसा दूजा नहीं। तद बादसाह सलामत कही—

> बूबना ईंरा महल में देख खिलाड़ी ख्याल।
> चुग चाहिया वे मोरिया चोला[3] रंग जलाल॥

तद जलाल कही—

> खाधां[4] भूख न भाज ही बोल्यां[5] मरै न प्यास।
> सज्जण रहतां संग में बरस थयां[6] इक मास॥

बादसाह रा मन में वसक[7] छै पण क्यूं देखे तौ कहै। मास छ मांही मिळियौ सो मोतियां री माळा जड़ाव रा फूलां री हार जड़ाऊ सबरी किसगी बगसिया[8]। जलाल डेरै बाहुड्यौ[9]। बादसाह कही—

> जलाल काजां देख कर, सुण इम बातड़ियांह।
> मझ्झी बातां बूझ कर, रमणी पळड़ियांह॥

तद जलाल कही—

> बूबी बपखा ना बिरौ पीडी डाकणियांह।
> सिर ऊपर ऊभा फिरै, वईम डरपै त्यांह॥

इतरी कहि जलाल डेरै आयो। महल मांही रहै।

---

[1] बिजली [2] चमक [3] स्त्री का [4] मुख से [5] बोल से [6] हुआ
[7] वहम [8] बख्शीश किये [9] लौटा।

सूवना सासू रै पगां लागणे आई तद सासू वदन देख कही—

सासू पूछै है बहू तोहि न आवै लाज।
लाल छिपायी कांचळी[1] सा क्यूं फाटयी आज॥

सूवना कही—

धोवा कपड़ा बहुत रंग धोवणहार कुंभ[2]।
धड़हड़ टीका ऊतरै बरा मोवंती[3] अंग॥

सास कही—

उत्तर देवै छोकरी उत्तर कम न आण।
माख्या छै कर खास का दरजी मेख लगाण॥

इसा वचन सुण सूवना खिल्यो हुई महल आई। इम जलाल सूवना महल गयी रहै। खूब काम-कौतूहळ करै। तिण समै सोना बादसाह नू फेर कही—अ जलाल और सूवना अेक रात ही अळगा[4] नहीं रहै।

तद बादसाह सिकार नू तयारी कराई और जलाल नू बुलाइयो। सो बातां करता दोनू साथ साथ जाय छै सो बीस कोस गया। बादसाह तुरकी घोड़े सवार छै। आगे अेक आंबा रो घणो पेड़ देख डेरा दिया। डेरा पेसखानो[5] तो पहुंचियो नहीं अने विसायत पहुंची हुती सो हुई। नैणां तर करणे नू बैठा छै। घोड़ा कायम ही खड़ा छै। पाछलो धाम आवै छै, आंबा पाखती छै त्यां नीचै उतरै छै। तद जलाल बादसाह नूं आरोगण[6] माफ माजूम[7] आयो और अरज करी—आमूजी घोड़ा सू सब हुवो छै माजूम आरोगज्यो तो पेट री रेजसो[8] दूर हावै। बादसाह मोळै मन सो तिका मनमें जाणियो—मेरा बेटा मोरिया हमारे दीन का जतन करता है इसकी चुगली करे सो झूंठा।

देखूं अब कैसे जावेगा यूं जाण माजूम खाई। चांनणी रात खिल रही छै। बादसाह पाछा सदोरो माजम सूं हुवो सो नींद सूं आतुर हुवो। तद मसनद सहारे होय जलाल नू छाती सूं लगाय साथ रह्यो। खिदमतगार दुड़बड़ी[9] देवै छै। इतरै बादसाह नशा री नींद में बेचेत हुवो। या जाण खिदमतगार अळगा जाय सोय रह्या। अब जलाल मन सूं सोया देख ऊठ्यो और बादसाह री सवारी रै घोड़े पर चढ़ कही—

---

[1]कंचुकी [2]धनारी [3]मोहनी है [4]दूर [5]तरतीब से [6]खाने को
[7]भंग मिला कर बनाई हुई मीठी वस्तु [8]बारीसन [9]पैर दबाना है।

पग छोडी पाळी रहूं, दस छोडी असवार।
तौ बांणी के तुम कहां अमी न प्रीत लगार॥
यूं क्यूं मनमें जाणिये घोड़ां की घर दूर।
टूक ऊंचे रासा[1] किये चाले परबत चूर॥

सो रात आधी छळती बूबना रै महल आयौ। बूबना बाट ही जोहती[2] थी सो सुगध रा झकोला सूं जांण तुरत छींको मीमो महाक नै ऊपर लियौ। घड़ी पांच सात मांहीं रहि हस-खेल रजामन्द होय फेर पाछो आय सो रह्यौ।

घड़ी दोय पाछै बादसाह जागियौ सो देखै तौ जलाल छाती आगै सूतो छै। इतरै जलाल आळस मोड़ बैठो हुवौ। जगळ निपटणे गयौ जद बादसाह कह्या—मेरे बेटे लोग मोरियें सूं झूठो ही तूफान लगाते है। इतरै चुगलखोर कही—घोड़ो जाय सभाळो आसूधो छै के दौड़ियो छै। बादसाह घोड़ो देखै तो पसेवां में गरकाब[4] छै। गरब मे गरक होय रह्यो छै, तब भरम उपजियौ। इतरै जलाल आयो जद बादसाह कही—जलाल मेरा घोड़ा दौड़ कर आया हो ऐसा दीठे है। जलाल कही—मेरा घोड़ा देखो खुररे बिगर[5] कियां सब यूं ही है। इन घोड़ां नै इतरी दौड़ किस लोक करी है जिससे जल्दी रखी है। जलाल रो घोड़ो देखै तौ चौकड़ो चढ़ै छै। तंबोळ पड़ै छै। काठा पसेवीजै छै। पाछै बादसाह जांणी—दुनिया झूठी ही लगावै छै। यूं जांण नै पाछा सहर मांहीं आया।

इतरै गिरवरगढ़ रो परगनो तिण री खबर आई। तिण ऊपर बड़ा-बड़ा उमराव पांच-सात मेलिया जिके काइक तौ काम आया केई भाज मुमाय नै आगिया। इण बात रो बादसाह रै मन बड़ो सोच हुवौ। जिण नै कहै सोही हां नहीं करै। तद चुगलखोर कही—जिसको उपठहजारी मनसब आवै छै, लाख रुपिया हर माह पावै छै, तरवारी[6] हुइयो रहै छै, तिण सूं जलाल नूं ही भेस ज। वोही इस काम लायक है। बादसाह कही—खूब बात दिखाई है। अब सो बूबना से किस तरह मिल सकेगा? तद जलाल सूं बुलाय कही—तुम ही जावो। जद जलाल कही—सरजाम पाऊ तो सर कर आंण मुजरो करूं के कागदां में ही लपेटियो आऊं[9]। इसी सुण बादसाह फुरमाई—तुम जे कहो सो सरजाम

---

[1]छलांग [2]देखती [3]झूंठ तराबोर [5]झाड़े बिना [6]तलवार चलाने मे निपुण [7]पूरी व्यवस्था सामान आदि [8]जीत [9]मेरी मृत्यु का समाचार ही कागज मे लिखा हुआ आए।

तयार करार । उठां पर मैं भी तुम जावो कै हम ही जावें । जलाल कही—इमा पाजियां रै ऊपर आपका पधारना ठीक नहीं है । आप मुझको हुकम करो । ११ लाख नकदी खरच और रिसालो पाऊं । तद बादशाह खानखाना नूं फुरमाई—ज खजाने सूं नकदी रिसालो और फौज रै बगसी नूं कही—जे रिसाला तयार कर द्यो । और तोपखाने रै दरोगा नूं फुरमाई—जे हुकम माफक तोपखानो सताब[1] तयार करा कर जलाल रै डेरे दाखल करो । देर ना हो । ढील हुई तो ओळभा[2] तुमको होवगा । फरमां नूं फुरमाइयो—नामा करा जाय भळावणी । बादशाह जलाल नूं कही—तुम्हारी कही माफक सरंजाम तयार हो गया अब तुम आज ही जाय डेरां दाखल हुवो । तद जलाल सिरोपाव पहर उभी ही मायठ डेरां जाय दाखल हुवो ।

बूबना सुणी तद मैना जलाल नूं कही—जलाल साहिब परदेस मुहिम नूं जावै छ । उठै आप आम सबसी नहीं खिणसूं सुखपाळ तयार करावज । आपां आगे मिळस्यां । सो मैना जलाल सारी तयारी कर राखी । आठ पहर डचोढ़ गयां महल सूं उतर महेलियां रै कांनै सुखपाळ बैठ आसी । मैना जलाल आगे आय बधाई दीवी । तद जलाल घणो प्रसन्न होय एक लाख मोतियां री माळा पहरियां बैठा था सो उतार इनाम में दीवी । इतरै बूबना मांही आई गो सांम्हा आय दाय रूप री जवाहरात री गहणा बूबना री निछरावळ[3] कर महेलियां मूं ल्यायो । और जलाल बूबना रा हाथ झाल पिलग पर सेज बैठायो । घणा खुस हुआ । बातां हंसीखुसी री करी । राजीखुसी हुआ । पछ सवारी[4] समाह देय घणी ओळावण दय पाछी महलां नूं सीख मांगी तद उण सूं ऊठतां बूबना कही—

गोरी दीज मरवणा[5] ऊपर मे पाणाह ।
म्हारा[6] जिवड़ा माय नू वारी सह पाणाह ॥

तरै जलाल कहै—

जीव हमारा तें लिया पंजर भी अब लेहु ।
मेरे सिर पर बार क फेर करीता देहु ॥

---

[1]जल्दी [2]उलाहना [3]वार-फेर [4]पास पर [5]मरफी [6]साजन [7]मन ।

मेह ज मिन्दर में नगर, मैं पिलंग पै ठौर।
मन मोती सज्जण बिनां सह काम दुख भीर॥

महलां दीपक जोड़ना[1] बाहर हूं छमि जाय।
जतन करै को हर रहा मो पर आट लगाय॥

बिछड़तां ही सज्जणा कासूं कहणा भेव।
तिण बेळा सर सन्धियौ चांचै सींगी देव॥

मयकी सज्जण वे मिळै क्यांहू न कोई संग।
पी हरणां हरणांख ज्यूं होय रहू मयङ्क न॥

सूतां नींद न जीव सुख जबहि न देखूं तुझ।
मा चासां तें क्या किया प्राण पियारे मुझ॥

चांमणी रात मूं देख मूमना कही—

मेहो उमड़ी रातड़ी बिरह दुसमण री वाळ।
पड़ी जळ में जपन में प्रीतम बिन बेहाल॥

मत बिरह ही मूं सापणी डोली बैरी मेह।
मुड़ै न मूमो नीसरै, बळ धुरंघी देह॥

मम मरांळ चंदवा इतरे सिष पठाय।
नैन जरू उमाह मूं मैं जाणी उर नाम॥

मीत जहां पिगर यहां दिपै द्रुणा-द्रुम।
रे परदेसी बल्लहा बेग बिछुड़ा फूल॥

इण तरह बिलपती[2] देख नेणां खवास कहण लागी—

मूमल मन में माठ कर, पिउ निज प्रीत न पाय।
रजपूतां र सिपाहियां मळमे सदा रहाय॥

इसी भांत मूमना नित बिलखै[3] अेक टक जाणो लावै नैणां खवास बहोत धीरज बधावै बिलमावै[4] पण मांमै नहीं अर धरती पर पड़ी रहै। पान चरोये नहीं सुगंध लगावै नहीं नवोड़ो गहणो कपड़ो-कपड़ो पहरै नहीं। सेरायत-जाणो जोड़ो ठौड़-ठौड़ फकीरां नू कर राखियौ छै, जे मसाल री खातिर दुआ करावै। अठी तौ मूमना री इसी हालत छै।

---

[1]संजोने को [2]विलाप करती हुई [3]बिलखती है [4]जी बहलाती है।

उठी असाण गिरधरगढ़ सं फौज रो जाय डेरो दियो। हजार पचास फौज छै। आगे जोहियां[१] गढ़ में साथ भेळो हुयो सो हजार चाळीस सिपाही छै। गढ़ जबरो सझियो। महर जुध सझियो। च्यारू पासां[२] मोरचाबंदी कर रह्या छै। इसड़ असाण जासूस भेज खबर मंगाई। जासूसां सारी खबर आय[३] मालम कीवी। फौज[४] जोरां पहुंच सके नहीं। साथ सामान भारी। गढ़ भेळण[५] सूं राड़[६] करां तो पण गजे नहीं।

तद आदमी एक ठायो[७] गस गढ़ में पठायो—बादशाह जबरन सूं म्हांनूं भोळाया मजीठ कीन्हा छै, सो साथ लेय भोप-भूड़ कर आठ दिन काढ़ण नूं आया छां। थे थांरो मुलक छ। खाओ-पीवो। जैसी कीम्मत तैसी पाई। परेशान मा तिवो गरज पायो। हमें थे बठा जोसिया[८] करी। थांरी छाया सूं म्हे गुजरान करस्यां। फेर छांने कागज भेजे हमसां आछी वस्तुओ कपड़ो मवो मस्हे-समाचै सो जोहियां नूं वातां सूं चांप लिया। थांरा आदमी पलाण कर्नै आवै सो आछा खाणा खियामता दाबायज। रीझ-मौज दीजे तीसूं सगळा बात ऊपर चीत टेक्यो[९] और जोहियां सूचना री बात सुण पाई तीसूं जाणी। इणनूं भराबणे नूं हीव मल्यो छै, सो जोहियां कहायो—थे सगळा आया सो हमे जांणी पण सूंसां[१०] बैठ्या रहो। थांरी हमारी ससा छै। आदमी ये समाचार आय कहिया तद असाण घोड़ा सिरोपाव जुहार कर दस मल्हिया सो जोहियां उरा लिया पण गढ़ रो साज-सामान ज्यूं रो त्यूं राखियो कढ़ायो नहीं। अर असाण आसोज रै महीनै हालियो थो जिको उपरी भरती में सूधो थको बैठ्यो छै। साथ सगळां नूं बरजिया—थे कोई घास फूस ल्यावो बिना मोल देय ल्यावज्यो किहरी फुरू-फरियाद आई तो खराब होसी।

यूं रहितां आठ काढ़ियो। आसाढ़ लागता ही समापी[११] बरखा हुई। तद जोहियां रै कटक[१२] लटण जोहियो सरदार थो सो कह्यो—खेती करतां थी मसी। कहो तो आप आपरै गांवां माम हळ जुताय आवां। असाण छो दिन काढ़णे नूं बैठ्यो छै। आपां सूं मिळ्यो छै। जद सगळा साथ नूं सीख हुय गई सो सारो साथ बिखरियो। गढ़ मांही ठावा सरदार च्यार सौ रहिया। आदमी हजार दोय

---

[१]मतलब [२]तरफ [३]आकर [४]उससे [५]भीतरी को प्रवेश करना [६]लड़ाई [७]विश्वस्त [८]मौज [९]धैर्य धरा [१०]सीधे [११]अनाप-सनाप [१२]फौज।

खेर-खर रहिया तद जासूस जलाल नूं आय खबर दी। जद जलाल कटक मांहीं बात कीवी।

दरबानो पाछा दुसायण रा बादसाह री आयो तद मागारी फरायी। सवारी बाहिर अमता कीवी। कोस पनरह रा आगे ठहरायो और आप पण तोपखानो नारो साथ लय पटेमलर सांम्ही कूच कियो। कोस दोय गयो तद जोहियां नूं हलकारा[1] आय कही—के जलाल नूं इसी तावीन आई छै सो दर मजल तावीदी सूं आवसी। तरै खटगजोहियो राजी हुवो नाम्नियाना[2] बजाया मोरचा उठाय लीन्हा। इसरै जलाल उमरावां नूं कही—ज पाछो मुंह गव कांम्ही फरो तद सवार हजार वीस पैदल हजार पचवह तोपखाना पाछा फरियो सो पाछली रात रा अचानक जाय कर गढ लागियो नै निमरिमियां कराय रास्ती धा मा पैदल आदमी कोट ऊपर चढ भीतर जाय कूदियो। खरबानियां रो रीठ[3] दियो सो जोहियां रो भागो माय मार उतारियो। खटगजोहियो चार सौ सवारां सूं काम आइयो। केई नूं पकड लीन्हा छै। घडी दोय दिन चढतां ही फत रा नादियाना बजाय दीन्हा। आंपणेण करा घोडा हाथी सबामो हाथ आयो। दुहाई जलाल साहिब री फरी। फर सुरत ही घोड़ा रा झुण्ड कर देमां ऊपर दौड़ाया सो जोहियां रै आदमियां नूं स[4] पकड लिया और मारिया। पाछै घटै भगर बादसाह नूं मुबारखी[5] पत्रै पाई री मन्जी।

ज जोहिया बारे था जिका पसकसी[6] देय टायरां नूं छ डाइया। बादसाह रो अमल करडो कियो। और भी सगळा भोमिया जलाल सूं आय आय मिळिया। पेसकसी गारां री पूरी छै। सगळा जमीदार पायनामी[7] हुआ। रिपिया तीस लाख और हाथी घोड़ा जितरा आया सो सगळा बादसाह रै पास मेलिया। अरजी लिखी सो बादसाह सुण नै घणा ही रजावन्द हुयो। जलाल री सिफत[8] तारीफ बहोत-बहोत करी। बडो खुसी हुओ। सिर-पेच मोतियां री माळा गनिम तरवार हाथी पालकी झालरदार माही नौबत इसरी नियाजम भजी और लिखियो—उमराव थारे आग माठो हुवै नीरी मयर जोनूं छै। थांरी

---

[1] खबर देने वाला [2] बाजा-निनोद [3] मार [4] अधिकार की सूचना की सब [5] सूचना [6] कर मुर्माना [7] अधिकार की रसम [8] प्रशंसा मिफत।

मरजी माफक रीझ-बगसीस गीज्यो सारी कबूल छ। सो जलाल सारां नू रीझ-मौज जसा दीठा जिसी दीवी। सारा रवामन्द[1] हुवा। धरती सारी पर अमन अम्बस तरह रो हुवो। भासियो मोमियो कोई सिर उठावण वाळो गम्यिो नहीं।

अब सांवण री तीज नै भाडा सात दिन बाय रहिया। तद बूबना नेत्रां सवास दास्यां सहेल्यां बांदियां सै नू भय बादसाह री हजूर भाई। नादिर[2] हाथ लवर कराय अन्दर नू भाई। सलाम कीवी तद बादसाह फुरमाई—की तरह भाज भावणो हुवो। तद बूबना कही—

मेरी बहनां मूमना तासु पिया परदेस।
तीनू चैन तनक नहीं निद्रा पड़ै न लेस॥

म्हारी बहण मूमना है उसका खाविन्द जलाल साहिब सड़ाई लड़णे गय है। अब सावण की तीज भावै है। उसको तनक भी चैन नहीं सो भरज करण भाई हू। तद बादसाह सलामत फरमाई—मूमना नू बुलावो उसके सांई पूछें, या तुम ही कह रही हो। सो नादिर नूं भेजियो। उवो[3] मूमना नूं बुलावणे गयो। जद बूबना नेत्रां सवास नूं कही—मूमना कुछ बोल या न बोले पण तू हाथ भ्रास[4] बाहिर लेय भायजे भौर बूबना भाप बादसाह सलामत नू अमल-पांणी कराय हाथ भाप मतायनै बस[5] करिया। इतरै मूमना भाई सो मुस्कराती हुई भाई। बादसाह तीनू फुरमाई—जलाल नूं बुलावणा है क्या? जद मूमना भासरे होकर गद्-गद् कण्ठ कुछ बोली कुछ नहीं बोली। उसमें बादसाह कुछ तो समझे कुछ नहीं समझे। इतरै बूबना भरज करी—हजरत सलामत जलाल रे बिना मूमना बहुत दुखी है। बात तक कहणी नहीं भावै तींसू ही बहन रा दुख री खातिर भरज है। बादसाह सलामत इतरी सुण तुरत फरमाई—जे तुम ही परवाना लिख देवो। हम उस पर दस्तखत मुहर कर देवेंगे। तद बूबना तुरत ही फरमान लिखियो। मुहर दस्तखत कराय कागद ले घर भाई, कासिद[6] बुलाय हुकम दियो—जे तुरत जाय। भौर भाप भापरी तरफ सू कागद जमा पड़ोस मनुहार सू लिखियो। नीचे भेक भो दूहो लिखियो—

कागद थोड़ो हित घणो सो पै लिख्यो न जाय।
सागर मा पाणी घणो सो गागर नाहि समाय॥

---

[1]सुख [2]नायब [3]वह [4]पकड़ कर [5]बंध [6]पत्रवाहक।

कागद कासिद नूं सौंपि रीझ देणी कर ताकीद पोंहचण[1] नूं करी। इतरै नीं सोक री रात मूं भारी थी सो कही—जे मूमना जलाल नूं मुलायो छै। वींरो मन तीं मांही बहोत छै। तद बादसाह रा समुद्र रै टापू मांही तीर सूं कोस अेक ऊपर महल था उठै मूमना नूं परगह[2] सूधां[3] राखी। तीं महल रै दरवाजा तीन था तिण में अेक दरवाजा ऊपर किण ही रीत सूं अजगर राखिया दूसरै दरवाजा ऊपर सिंघ राखिया और तीसरै दरवाजा ऊपर पांचसौ चौकीदार राखिया त्यां चौकीदारां नूं हुकम दियो—जे थांरी नजर चढै तिण नूं ही मार देवो। मार्वै[4] सोही होवै। फिकर नहीं। हमारा हुकम है। अब देखूं लोग कहते हैं—जलाल आवेगा तब पहले मूमना रै पास आवेगा सो अब कैसे आवेगा और जो गया ही तो भाग आवेगा। इसा वचन[5] देख मूमना कही—

> चळ बिच कीन्ही कोटड़ी सरपां किया किंवार।
> जलाल मो बिन ना रहै आवै मरवन मार॥

इतरै कासिद कागद लजाय जलाल नूं दियो सो बांच तयार हुवो। तद अमो जाणी—इतरा दिन तो टळिया अ अब भी टळ तो आछी। अमी जांण लिखी—

> खाया पीया मारिया मन आरज कढ़ियाह।
> थायो बोमे अरमला गैवर[6] सूं टळियाह॥

जद जलाल पाछी लिखी—

> कै हूलां गैवर हुणं, कै फाड़ूं घड़ वार।
> कै वरण मारग[7] मूमना कै छोड़ूं संसार॥

ई तरह मांहि देस गढ़ सहर री ओळखामण देय असवार पांच सौ सूं चढ़ कढ़िया तिको डाक चौकी थापियो। मजल तीन सूं पछै साथ छूट गयो सो असवार अेक मो सूं पटमसर सूं कोस दोय आय डेरो कियो। बादसाह नूं मालम हुई, अ जलाल आयो। दिन घड़ी दो रहितां साथ सूं सहर में दाखिल हुवो। आप अमर्मा सन्तोरो होय बाकरा रा पीढ[8] घोड़े री पताका[9] लगाय फूलमखवा लवास नूं साथ लय मूमना री दिस हालियो। जद जलाल कहै—

---

[1]पहुँचाने [2]नौकर चाकर [3]सहित [4]जैसे हो [5]मन-प्रयत्न [6]हाथी [7]उपभोग करूं [8]बकरे के पैरों का हड्डी सहित मांस [9]घोड़े की जीन पर सामान टांकने का स्थान।

सरणां हुंती चाड़ कर सिहां रो परबंध[1]।
जो जम राणी पोहुक दैखा मिळ्यौ संच॥

इतरै चौकी में गयो सो चोकीदार ग्रोळखियो[2]—जलाल ग्रायो। जलाल चोकीदार, ठाणा ग्रापसां नूं पिछांण ग्रोन्है[3] में जाय बैठ्यो। हकीकत कही। गहणो लाख ग्रक रो थो सो उतार चोकीदारां नूं दियो ग्रौर कही—जे तुम कहो तो ग्रागे जाऊं। म्हारो जीव इण मांहिली[4] सूं लग्यो है। चोकीदार गहणो देख ठंडा पड़ गया। चोकीदार कही—जलाल बादसाह सलामत रो भांणेज छै ग्रौर बूबना इणरी मांमी छै। काल क्यूं रो क्यूं विचारसी। मांमी कन्है जाय छै ग्रौर भुराऊ प्रीत छै ग्रौर फर मा मांग[5] ही जलाल री छै पण बादसाह कूड़[6] कर ने परणी छै ग्रौर बादसाह रै ३७ बगम छै सो इण बूबना नूं कोई वारो ना दीहो छै तो ग्रापां किण वास्ते बरजां। मांग देवो। सो चोकीदारां कही—म्हे तो सीख दीवी पण ग्रागे जतन सूं जायज्यो। तद जलाल कही—

सज्जण मेहे कारणै मैं ग्ररप्यौ[7] तन प्रांण।
जीवां तौ वांसूं मिळां मूवां ग्रमर रहांण॥

यूं कहि फूलमदवा खवास नूं चोडो देय सीख दीन्ही। ग्राप दोनूं चकरां रा पींडा लेय ग्रागे हाल्यौ। इतरै नाहर मूळा स्यांनूं पीडा गरिया मो धाप गया। ग्रागै हालियौ मो ग्रजगर ग्राया पण वे तो इतर री सुसबू सूं मस्त हो सोय गया। उणां नूं सुसबू सूं घणी सीतळता ग्रापरी तिण सूं नींद बस हुवा। ग्रागै दरियाव ग्रायौ सो जलाल बीमें कूद पड़्यो सो धमाकौ सुण बूबना मेत्रां खवास नूं कही—घड़नाव[8] तूं लेजाय। इब जलाल ग्रायो छै सो तकलीफ पावसी। सो मेत्रां खवास घड़नाव लेय हाली ग्रौर तुरत ग्राय जलाल नूं नाव मांहि चढ़ायो। जलाल क्यूं थाकियो हुवौ थो ही सो नाव पर चढ़ कर कही—जब बखत पर प्रांण करके पहुंची—

बूबन रा अब नाम है जलाल कहिया बैन।
ग्रमर[9] पड़ी थो बीच मं ती मैं प्रांण रहै न॥

---

[1]प्रबंध [2]पहिचाना [3]ग्रोट में [4]महल के ग्रन्दर वाली (बूबना) [5]मांग—जिस लड़की की किसी पुरुष के साथ एक बार शादी की बात तय हो जाती है पुरुष उसे ग्रपनी मांग समझता है [6]झूठ [7]ग्रर्पण किया [8]खाली घड़ो को बांध कर बनाई हुई नाव [9]भंवर।

नाथ महल पास पहुची जद जलाल उतर महल माही गयौ। बूबना मुजरो करती साम्ही आई। हाथ पकड़ भीतर लेय गई। पोसाक बदळाय पलंग पर बैठाय निछरावळ कर नैणा जलाल नूं दीन्ही। मांहोमांहि मिळिया। घणा दिन रा वियोग री तपत[1] मिटाई।

सूरत पाक सरीर सब बोलत अमृत बैण[2]।
दोपहरां लग थिर रह्या निरख निरख वे नैण॥

कायळ नेण टंकोळ कर, चसमां नूं मद चाह।
जांणी निकस्यो चांद है, मयंक बादळ मांह॥

कुच भरिया प्रेम मद हाल माहि पयाल।
पावै गोरी बूबना पीवै साह जलाल॥

नैणां सवाय मे दूहा कह्या तौ जलाल खुस होय मोतियां री माळा अेक लाख री उतार बूबना पर वार नैणां नूं दीन्ही। पाछै फेर खूब आनन्द-विनोद सुख साथ कर रात घड़ी दोय रहितां[3] नाथ बैठ तीर आय उतर नाथ पाछी गयी।

आप आपरी महल आय पोढ़ रह्यौ। इणरै बादसाह नूं सोफां कही— जी हो बादसाह सलामत जलाल आपसू आण कर मिळिया कै नहीं? तो बादसाह कही—वो थकिया[4] आया है अभी आराम करता होवेगा। बहुत दिनां सू आया है। बूबना सूं मिळ गा फिर वो हमारे पास आवेगा। तद सोफां बोली—हजूर वो तौ बूबना के महल होवेगा। बूबना नू तो नजर सू भी नहीं देखता है। जद बादसाह नादर नू हुकम फुरमायौ—जाकर देखो जलाल महल में है कि नहीं। तद नादर गयौ। महल आय देखै तौ जलाल साहिब दोलिये पोढ़िया छै। नादर बूबना नू पूछो—क्या जलाल सोय रहे हैं? बूबना कही—

कुण जाणै रहियौ कठै रस-रमती[5] इण रात।
हारयौ थकियौ आइयौ कीन्ही कछ न बात॥

इणरी मांमळ नादर अणबोलियो गयौ। नादर सहदो[6] थो तीसूं दीठी सो कह्यौ सुण्यौ सो नही कह्यौ। बादसाह कही—रांडां जलाल जैसे मेरे भाणेज कं मराणा चाहती हैं।

---

[1]ताप [2]बैन [3]रहते [4]थका हुआ [5]रति-क्रीड़ा करता हुआ [6]परिचित।

सरपां हंदी बाड़ कर, सिहां रो परबंध[1]।
जो जम राणी पोहरू सैणां मिळवी संध ॥

इतरै चौकी में गयौ सो चोकीदार ओळखियो[2]—जलाल आयो। जलाल चोकीदार, ठावा मांणसां नूं पिछांण ओन्है[3] में जाय बैठयो। हकीकत कही। गहणो लाख एक रो थो सो उतार चोकीदारां नूं दियो और कही—जे तुम कहो तो आगै जाऊं। म्हारो जीव इण मोहिली[4] सूं लग्यो है। चोकीदार गहणो देख ठंडा पड़ गया। चोकीदार कही—जलाल बादसाह सलामत रो भांणेज छै और बूबना इणरी मांमी छै। काम क्यूं गे क्यूं विचारसी। मांमी कन्है जाय छै और धुराऊ प्रीत छै और फेर या मांग[5] ही जलाल री छै पण बादसाह झूठ[6] कर ले परणी छै और बादसाह रै ३७ बेगम छै सो इण बूबना नूं कोई बारो ना दीन्हो छै तो आपां किण वास्ते बरजां। आगे देखौ। सो चोकीदारां कही—म्हे तौ सीख दीवी पण आगे जतन सूं जायज्यो। तद जलाल कही—

सज्जण मेहे कारणै मैं अरप्यौ[7] तन प्रांण।
जीवां तौ वासूं मिळां मुवां अमर रहांण ॥

यूं कहि फूलमदखा जलाल नूं घोड़ो देय सीख दीन्ही। आप दोनूं मकरां रा पींडा लेय आगे हालियौ। इतरै माछर मूछा त्यांनूं पीडा गरिया सो धाप गया। आगै हालियौ सो अजगर आया पण वे तो इतर री सुगन्धू सूं मस्त हो सोय गया। उणां नूं सुसबू सूं घणी सीतळता आपरी तिण सूं नींद बस हुआ। आगै दरियाव आयौ सो जलाल बीमें कूद पड़यौ सो धमाकौ सुण बूबना नैत्रां खवास नूं कही—घड़नाव[8] तूं ल्याय। इब जलाल आयौ छै सो तकलीफ पायसी। सो नैत्रां खवास घड़नाव लेय हाली और तुरत जाय जलाल नूं नाव मांहि चढ़ायौ। जलाल क्यूं थाकियो हुतो सो ही सो नाव पर चढ़ कर कही—खूब वखत पर आंण करकै पहुंची—

बूबन रा बड़ भाग है, जलाल कहिया बैन।
भमर[9] पड़ै थो बीच में तौ में प्राण रहै न ॥

---

[1]प्रबंध [2]पहिचाना [3]ओट में [4]महल के अन्दर वाली (बूबना) [5]मांग—जिस लड़की की किसी पुरुष के साथ एक बार शादी की बात तय हो जाती है, पुरुष उसे अपनी मांग समझता है [6]झूठ [7]अर्पण किया [8]खाली घड़ों को बांध कर बनाई हुई नाव [9]भंवर।
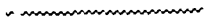
ये दोहा सुण बादसाह सलामत कही—तुम क्यूं अरज करती हो ? तुमको जलाल क्यूं प्यारा लगता है ? तद बूबना कही—जी हजरत सलामत मेरा बहनोई है । बहन को दुख होयगा सो मुझसे क्यों सहा जायगा । बड़ी बहन ने मुझको कहाया है सो जांणी और उसी के दुख सूं अरज करण आई हूं । तद बादसाह सलामत फरमाई—जे जलाल मैं बड़ा खून किया । हमारे ड्योढ़ीदार पठाइय कूं मारिया । तब बूबना कही—हजरत जलाल साहिब आपकी हजूर आता था सो मेरी ड्योढ़ी नजदीक आय निकळिया । इतरै पठाण्या नै गाळ[1] अचानक दीन्ही बजबानी[2] बोली । सुणी जद वो भी हजूर का फरजन्द[3] था फर सिपाही था उसकूं भी रीस आई, तद क्यूं पाछो जवाब कहियो । जद पठाइये छुरी चलाई तो जलाल साहिब खांडो चलाइयो । जलाल साहिब रीस कर पाछा डर गया । मरे ताईं पड़दार रै मरणे री खबर जद आई, मोनूं घणी रीस आई, बहुत गुस्से हुई, पण पाछै म्हारी सहेली नेत्रां खवास सारी हकीकत कही तद म्हारी रीस उतरी छै । पठाइयो बजबांन ज्यादा बोलियो । इतरी सुण हजरत सलामत फरमाई—जावो हमें तकसीर[4] माफ करी खूब काम किया सिपाही इसी नहीं सह सकै । जसा तुम तो डेरे जावो । सब लोग कहण लागिया—

उमरावां रै शहर में अेक बड़ो अन्याव ।
बंको मारड़[5] मारियो पूर्ण नहीं नियाव ।।

इतरी बात जलाल री मां सुणी—क जलाल नूं पड़दार गाळ काढ़ी । जद मां बेटै नूं साथ लेय बादसाह री हजूर आई और अरज कीवी—

साचो काज सुधारणा साचो सूंपी बात ।
साचा रीझै आपसी ऐ क्यूं कटिसी हाथ ।।

इतरी बात सुण बादसाह लाजियो । कछु नै सारै आइयो । पड़दार रै मरियां री लोग कहै—खोटी हुई । तद खास बेळी[6] रा लोग था ज्यांनै बादसाह कहयो—मेरा बेटा जलाल खून रे ऊपर खून करे है । इसकूं मारिया चाहिए । तद चाकर कहै—

माथू बीज बहै मड़ा पूगो रियो पठांण ।
जलालिये सूं अेकलो कूण घलै केवांण[7] ।।

---

[1]गाली [2]अनुचित [3]सन्तान तुल्य [4]गुनाह [5]मनुष्य [6]मंन्मी टोपी [7]तलवार ।

यूं सोच करै छै, इतरै जलाल आयौ। बादसाह सूं मिळियौ। बूबना कह्यौ थौ ज्यूंही अरज कीवी। तद बादसाह कही—खूब किया ऐने। सिपाही की राह यही है। यूं दिलासा कर सीख दीवी सो जलाल बूबना रा महल नीचै आय निकळियौ। तद बूबना झरोखै आई। मांहे-मांहि नैण मिळिया। जद बूबना कही—

> झगमग सेरी सांकड़ी कायरवाळी[1] लोय।
> नैणां मुजरो मानजे म्हांरा मिळसी कोय ॥
> ऊंचा गोखा बैठणी नीचे वहै खलक्क[2]।
> जलाल जेम सजणां मिळै मुज्यौ चाह हलक्क ॥

जलाल इतणी बात सुण ऊ ठांव सूं आगे हालियौ। पावासर रा पाखिया हंस ज्यूं मन में मुळकतौ[3] चकियौ खुसहाल सूं।

जलाल फूलमदवा जवाब यूं कही—

> तीखा नैण बनारसी[4] सायक काजळ सार।
> छाती छेदे बीन की निकस्या परलै पार ॥
> नैण भळक्का नांखिया पंजर पड़ी पहार।
> कै तो बायल जाणसी कै जो बाहणहार ॥
> बायल तन बायल किया महल भपूख पीठ।
> नैन हुआ सूं हे सखा बाण न दीसै पीठ ॥

यूं बातां करतौ हसतौ मुळकतौ डेरे आइयौ। गोठां करै। रीझ-मौज हमेशा करै।

अबै बादसाह चिन्ता करै। जे कोई गुढी उपाय सूं जलाल नूं मारणी। सो उस साइत[5] मजकूर करि कहियौ—बड़ो डेरो हमारे झरोखे साम्हो खड़ो करो और तणाव ढीलो राखौ। जिको आवसी सो डेरे तळाकर[6] आवसी। सो जलाल आवै उस वक्त तणाव छोड़ दीजै ज्यूं जलाल दब जायसी फेर तीनूं पकड़ लीज्यौ। पछै चाहस्यां सो ही करस्यां। सबही नौं आसंग किण ही री न पड़ै। यूं विचार मैं गजर डेरो खड़ो करायो और जलाल नूं बुलायौ। सो जलाल सबास नू साथ लियां डेरा नीचै आइयौ। इतरै तणाव छोडिया सो जलाल डेरो पड़तौ देख कटार हाथ में थी सो ऊभी की तिण सूं डेरो फाट चौड़ो पड़ गयौ। सो डेरो

---

[1]पड़भंभकारी [2]दुनियां [3]बहार [4]मुस्कराता हुआ [5]बनुष [6]शस्त्र [7]नीचे होकर [8]हिम्मत।

पड़तां पड़तां कूव निकळ गयो। खवास दब'र मुवौ। बादसाह झरोखे बैठयो देखै छै। नै जलाल कुसळ रह गयो सो बादसाह फरास सूं रिसायो—कुटण[1] जलाल जैसा फेर कहां मिलता? ऐसा ओछा सणाव क्यूं बांधिया? यूं कहि मिसरावळ मेल हजूर मांही बुलाय मिळ हाथ फेर, कुसळ-समाचार पूछ सीख दीवी। जलाल दोय लाख रिपिया खैरात किया। सूबना मिसरावळ भली। मगर बांटियो[2]। माता मंगर बांटियो। बमो माई सूं मुहिम छै। जलाल कही—

बैकाणा[3] बिण पंखड़ी भण बिन रैण बिहाय।
सो बातां बिण मांणियां यूं ही अकारथ जाय॥
नैण दीठो क्या हुवै जै न हमेलो[4] जाय।
पेट पड़यां ही जाणिये ज्यूं बाब गमाय॥
कै बिणुसत कर नहीं, त क्यूं नेह कराय।
हिरणा हरिया खेत ज्यूं झांकतां चर जाय॥

जलाल यूं कहितो रहै। अक दिन बादसाह कहै—अलाबिय के मारण का इलाज कोई नजर नहीं आवै। तब अक हजूरिये कही—जो हजरत सलामत जे तकसीर[5] माफ हुवै तो अरज करूं देवलदेवी री अरज छै। जद बादसाह फरमाई—माफ करी तब उण कही—

जलाल मरिया जे सुणै बूबन अपणे कान।
जीवित फिर नाही रहै, तुरत छोड़ै प्राण॥

इतरी सुण बादसाह कह्यो—आछी बात।

दूसरे ही दिन बादसाह सिकार नूं हालियो और जलाल नूं आपरै साथ लियो। नरेसां[6] री साथ सिकार करै छै। इतरै जलाल रो अेक चाकर थो सो अवार गैर चाकरी में थो तिणनूं बादसाह खासम दिलाय बखिस पकियो बुरी तरह रोवतो-पीटतो सहर नूं मलियो। तिणनूं सिखाय दियो—जे तूं रोवतो रोवतो जाय गाहणी नूं खबर कर जे आज सिकार में जलाल और सेर रै आपस में कुस्ती हुई सो जलाल तो सेर नूं मारियो और सेर मौखियो[7] तीसूं

---

[1]दुष्ट [2]गरीबों को खाना खिलाया [3]बोड़ों बिमाग [4]गुनाह
[5]व आदमी जो शिकार को घेर कर लाते हैं [6]घीवा।

जमाल मर गयौ। सो आकर जाय इण भांति ही गाहणी नू खबर सुणाई। गाहणी सुण पछाड़ खाय गिरी। छाती कूट बुरी तरै रोवणो-पीटणो लागी। सारै हाहाकार मच गयौ। सुणतां ही मूमना रो जीव हुकारै साटै निसर गयौ। ऊभी थी सो वह पड़ी[1]। मेलां बवास में बीजी सारी सखियां-सहेलियां रोवणो-पीटणो लागी। आकर जाय बादसाह नू खबर सुणाई—क मूमना फौत हुई। जमाल भा बात सुणी सो सुणतां ही प्रांण निसर गया। बादसाह घणो ही प्रसन्न मन हुवौ। जमाल नू उपाड़ जय सहर माहया। अब बादसाह फरमाई—क दोनां में नेह बहुत था सो दोनों को भेक ही कबर में दफनाओ। बादसाह री इजाजत सूषा[2] दोनूं भेक कबर मे दफनाया गया। सब उमोमनो भार कही—

> भाव न दीसै गोठ मैं सज्जण बारो बीह।
> हारी बीसै आंबरी सेरी बंधियो सीह॥
> जमाल टौ बिन कोटड़ी चन्द बिहूणी रैण।
> टौ माया चौगम हुवै दीसै मवास सैंग॥

बादसाह सलामत इम बहुत खुस हुवा। सोकां सारी अपणा अपणो महल मांही घणी घणी खुसी री बधाई बांटी। मूमना दुखी थी।

तीसरै दिन श्री सकर भोळानाथजी पारबती साथै जमाल री कबर कनै भाय निसरिया। टौ मनै की कबर रै ऊपर भंवरा गुंजार कर रहिया सुगध इतर री सारै फैल रही जिणसू सारी बनस्पती सुगन्धित होय रही छै। अब पारबतीजी सदासिवजी नू पूछी—

> ना गुलाब ना केवड़ो संकर यहां दिखाय।
> सुगन्ध सब ठां छै रही फिरै भंवर की साव॥

सुण कर श्री भोळानाथ हसता हुवा पारबती नू कही—

> सुण गिरजा ईं कबर में प्रेमी प्रेम निभाय[3]।
> जला मूमना दो रहे बिना काळ मम बाय॥

तद पारबतीजी हाथ जोड़ विनय करी—महाराज भक बार अबै दोनूं प्रेमी भोनूं दिखाओ। जद श्री सकर भोळनाथ माविया सूं उठर अपणो चीमटै सूं धूळ हटाय जमाल-मूमना समोप भटिया दिखामा सो देख पारबती गद्-गद् होय कही—

---

[1]गिर पड़ी [2]सहित अनुसार [3]उस [4]इस [5]निभा रहे हैं।

जीव दान देवह दुई मरण काम में नांहि।
संकर भोळानाथ मैं कक विनव तुम पांहि॥

पारवती री हठ देख कैळासनाथ आप उण रै छींटा दीन्हा सो दोनूं ही ऊठिया। सामनै ही संकर पारवती नूं देख स्तुति करी। जद महादेव पारवती रजामन्द होय कही—आज सूं तीसरै दिन अगतमायची फौत होयसी। थारै टीको होयसी। इतरी कहि सिव-पारवती अलोप हुवा।

दोनूं ऊठ बाग में आया। माळी नूं मस समेमने मार नूं और गाहणी नूं खबर कराई। सुणतां ही उवी सताव लेय सांम्हां आय निछरावळ करी। जमाल मुजरो कियौ। खैरात करी। गाजे-बाजे सूं सारा तीसरै दिन सहर मांही आया। अगतमायची दोनां नूं आया सुण तुरत मुवौ।

जमाल बादसाह हुवौ। बूबना भूमना नूं साथ लेय सुख सायै राज कियौ। गाहणी नूं सुख दियौ। धरती सारी अमन चैन हुई। जैजैकार हुवौ।

जमाल बडो आसीजो भवर बादसाह थौ।

थई सुखी बिलसे दुईं, जमाल साह री बात।
सुख-संपति संकर दिन्हीं, अमर सुयस है तात॥
उदीमी पिचयांनवै सुभ छिवरात्री जाण।
नारायण परसाद मै लिखी लिखी परमाण॥

जमाल-बूबना री बात समाप्त।

चौरासी सिद्ध निन्याणवे किरोड़ राजा सिद्ध तैंतीस किरोड़ देवता मेळ भरै। इसो भरवद छै। मृत्युलोक मांही छरग छै।

तिण ऊपर अकस बाढ़ाळो तपस्या करै। अक भूडण तिण भरवद ऊपर तपस्या करै। दोनां नू बारह बरस तपस्या करतां नू होयता आया अक दिन आओ छै। सो विधना रै सख सूं भूडण प्रातकाळ भड़ी दोय[1] तड़कै ऊठ सूरजकुंड में स्नान करणे नू गई। बींही समै देवजोग सू बाढ़ाळो बींही सूरज कुंड मांही स्नान करणे आयो सो देखै तो भूडण स्नान कर रही छै। तद सूर पासै[2] आयो। भूडण कही तू कुण ? तो बाढ़ाळो कही—हू अकस बाढ़ाळो छू। सुणि भूडण कही—मोनूं आज बारह बरस तपस्या करतां हुआ आज तक मरद सू समासण नहीं कियौ। म थीं मरद रो मुंह दीठौ। पण सूं मौनूं आज दीठो समासण आय कीही तींसूं बारह बरस री तपस्या गई। हू तौनूं सराप[3] देयस्यूं सो आल[4]। तद बाढ़ाळो सुण कही—मौनूं ही आज बारह बरस तपस्या करतां हुआ छै। पण हू किंही स्त्री रो मुंह नीं दीठो न समासण ही कियो पण आज तूं आगे आई। थारी सिखा रा म्हारै छींटा लागिया तीसूं म्हारी तपस्या में कमी पड़ी। सो हू तौनूं सराप देयस्यूं तूं काल।

यूं लड़ता झगड़ता दोनू नवनाथ चौरासी सिद्धां रै नेड़ै गया। तद उहां[5] इण री बातां सुण इणरै पूरब जनम री बात जांण'र कही—

सफळ तपस्या जाण दोनू थानी नांहि।
विकना री बत धांस सुख मोगो बन मांहि॥

जद उहां अरज करी—जे हुमां घणां बरसां कस्ट उठायो श्री सदासिवजी रो ध्यान कियौ ब्रह्मचार[6] रो पासन कियौ सो इव इसो काम क्यूं कर करां। आयुस[7] रो किही भरोसो नहीं तींसूं कमायोड़ो[8] क्यूं गमावां। म्हानू तो स्वरग रो ही पातक[9] लागसै। और घरवास किमां तो सारी तपस्या हीण होय जासी। आगै तो क्यूंही करम किया ही कर निकळ्ट कुण पाई। इम की होणहार छै?

तद तो नाथ चौरासी सिद्ध कही—जे थे दोनूं ही पूरब जनम में यक्ष था सो कुबेर रै खजानै पर रखवाळा था। सो अक दिन कुबेर रै पाख सिद्ध हुआ

पास [1]भाप पकड़ स्वीकार कर [5]उन्होंने [6]ब्रह्मचर्य [7]आयु [8]कमाया हुआ [9]स्वर्ग [9]पाप।

तींमें वां स्त्री पुरुष दोनूं पहलां भोजन कियो सो कुबेर ससियो अर रीस कर वांनूं कही—थ सूकर री ज्यूं अन्न खावो। जाबो थे सूकर जाय हुवो। आप सुण वां दोनूं ही हाथ जोड़ के अरज करी—के म्हांरै साधारण अपराध बदळै दंड मोटो दियो। यूं कहि दीनता करी। तौ कुबेर क्रपा करि कही—के श्राप तौ मिट नहीं भोगियां हीज सरसी पण थां जाय आबू पर जनम पावो। तपस्या कर महादेव श्री अचळेसरजी रो ध्यान धरो। उठै थे दोनूं भळा रहो। थांरी परवास होयसी। पाछै थांरै पांच पुत्र होयसी। फेर थां साहसी पकिया मड़ कर काम आवस्यो—

इण भांति सारी कथा दीन्ही तिनै बताय।
समझ कर आग्या दई, वर आसहु सब थाय॥

सुण कर डाढ़ाळी सूअर नूं आपरी देह[1] सय आयी। वीं समै सूंडण रितुमती हुई थी सो सूंडण नै आसा[2] रही। महीना पूरा हुआ अर चीस्हर[3] पांच जाया। ज्यां में बड़ा रो इसी पुळ में जनम हुओ ज जरत में आग लागै बनस्पती बळै। बीजै रो इसी पुळ में जनम हुवो के इणां सूं अरबद छूटै। तीजै रो इण नखत जनम हुवो ज आपरो पेट सोहरो[4] भरे। चौथे रो इसी घड़ी में आ जनम हुवो ज धरती रै धणी सूं राड़[5] हुवे। पांचवें रो इसी पुळ मांही जनम हुवो ज बाप भाई काम आवै वां सती हुवै और आप राड़ में घणां नूं मार जीवतो घर में आवै। इसी नखत-पुळ में पूत पैदा हुआ। दिन-दिन मोटा हुवै।

मास दोय रा हुआ और डूंगर में आग लागी। बनस्पती कन्दमूळ घास व फळफूल सह बळिया नीली पाती न रही। सूरजकुंड रै आसपास डूबकी रही वे चीस्हरां नूं चरावै। डाढ़ाळी नै सूंडण बड़ा दिनकष्टासो काढ़ै।

अेक दिन सारो परवार लियां डाढ़ाळी नै सूंडण सोय रह्या छै। इसरै ओझरणै री बखत री ठाडी पवन आई। तीं पवन री साथ हरिया जवां री बोय[6] आई। तद सूंडण उठ बैठी हुई और कही—हरिया जवां री सुगंध आवै छै। हालो जी चरां। जद डाढ़ाळी कही—अ सिरोही रै धणी रा छै। इयां जवां ऊपर कजियो[7] होयसी। चोल्हर नैम्हा छै। मारिया जासी। बीजै लोगां रा

[1]रहने की इच्छा [2]गर्भ [3]बच्चे [4]आसानी से [5]झगड़ा युद्ध [6]गन्ध [7]झगड़ा-फिसाद।

जवां रा खेत परसै पासै छै भौर राजा रा अब उरसी भाखी छै। तींसू इयां जवां पर कभियो भारी होसी। तो भूंडण कहयो मागी—

> डाडाळा भूंडण कहै बपड़ा भूख म मार।
> *सिखिये मरसी धापरै भावै[1] जव ना चार॥*

सद भूंडण रै कहै डाडाळो अरवद सूं उतरियो सो सिरोही भाभो। सिरोही री सबजी[2] बरणी नहीं जाय। सासियात[3] इन्दर लोक समांन सोभा छै। दूसरी भमरावती हीज छै। जव गेहूं चणा री क्यारियां मांही मैं सुसबू जाय रही छै। तिजरो फूल रहयो छै। गुंदगरी रामगरी गुळ्वाड़ री बाडां लाग रही छै। पग-पग नाळा-नीझरणा बह रहया छै। चणा ही आंबा-महुवां रा मोर झुक रहया छै। अठार भार बनस्पती झुक रही छै। भवरा ऊपर गुंजार कर रहिया छै। सारसां बोल रही छै। मयूर झिंगोर करै छै। अनेक भांत रा पसुपक्षी कलोळ[4] करै छै। सो इसी दीसै जांणजे कैळासपुरी[5] कनां[6] अमरावती कनां अळकापुरी अभी सिरोही बिराज रही छै। बी ठांव बडो राव बीसलदे बाजेलो राज करै, जिण रो इसो तेज अमल छै सो आहुर-चाकरी भळा करै। गाय सिंघ अक घाट जळ पीवै सांडियां रा गरग[7] सूना ही चरै, बाजारां री हाट में कोई बोपारी ताळो न मारै। बनी बाकी भोमीचारै री जायगां छै तिणरै चिमोतरी उगूणी बिसा छै। जोधपुर उतराधी छै। ईडर उतराध री सीध में छै। सारा ही मुलकां रै बीच सिरोही छै। साढा तीन हजारी गांवां रो राजा सिरोही रो धणी छै। इवरा परगनां रो अमल गोढवाड़ बांलीवाड़ो सिवाणची कभटगढ़ भौर ही छोटा-मोटा परगना घणा छै।

इसा-इसा भमराव चाकरी करै ज्यांनै परणामजे नै परमोजजे। सो सिरोही चितौड़ जोधपुर अणहल्वाड़ा पाटण जाळोर री भासंग[8] में न आवै सो कागद बाई सुख राखै। रिसाला मेल मगावै।

सो डाडाळो सिरोही आयो। अठै राव गेहूंआं रा खेत भौर सांठां री बाड़ में रहियो। चणा दिनां री भूख चाड़ धाप नै अरवद साम्हो हालियो। तीसरै दिन अरवद जा पहुंचियो। कबीला सूं जाय मिळियो। भूंडण सारा समाचार

---

[1]भलेही [2]सरसब्जपना [3]साक्षात मानो [4]किल्लोल [5]कैलास-पुरी [6]या [7]मुण्ड [8]हिम्मत।

पूछिया—जे डाहाळा सो जायगा[1] किसड़ी'क छै ? थारो किसड़ो'क छै ? तद डाहाळै कह्यो—जायगा कैसीक बताऊं थांने दूसरो सरग हीज छै। मोकळी[2] सावण सूं ओ गहू घणा गुळ्‍याड़ छै। पग-पग ऊपर जळ घणा रूखां री ठाडी छाया। सिरोही चालियां छोरा बेगा ताजा-मोटा होयसी। पग सताब[3] होयसी। सो पहर तीन डाहाळी आवूं ऊपर रहियो। पाछली पहर रात री समै भरखद सूं उतरियो। भूंडण भीलड़ां नूं मियां नळां आडरां रूखां भाखरां री भागी रै मोल्हे चाले। डाहाळो चोड़[4] पाधरी भरती चाले। ताहरां सूं भूंडण कहणे लागी।

थेच बिराणा[5] जब चरै चालिस ऊमै सूर।
डाहाळा भूंडण चरै[6] आभो माथर दूर॥

तद डाहाळो कहण नू लाग्यो—

फूटरिया हिरणी जसे बोह फूरणी चट्ट।
ज्यारो मांही बाजड़ी[7] पांचै रावै चट्ट॥

भूंडण इतरी सुण थांकी भरतो छोड पाधरी धरती मारग आई। आग बाराह छै। पाछै पांच भीलड़ छ। त्यांरै पाछै भूंडण सूं सलाह कर सिरोही आया।

बीसलदे रा बाग में जाय बड़ दीन्ही सो घणा आंबा महुवा भूल रहिया छै। अंगूर जमी सूं लाग रहिया छै। केळां री घड़ां जाय रही छै। जम्भेरी नींबू नारंगी भाय रहिया छै। चमेली मोगरो केवड़ो जूही गुलाब सह महक रहिया छै। नारंगां रा गाळा सिळक[8] रहिया छ। फवरां छूट रही छै। बी ठांव जाय पहुंचा सो सोटिया चकांण मिटाई पाछै तूड सूं जमी मरम कर पह बणाई। इतरै बागवान आयो। पग दीठा[9] जद पगां-पगां गयो। देखै तो बाराह सोटिया छै तिणरी ठोरां छै। आग देखै तो बेड़ा पड़िया छै। अंगूर केळा तूटा पड़िया छै। और जम्भीरा अनार चपकचग्यिा पड़िया छै। तठै आम री छाया मैं चमेली मोगरे नजीक महुर नारंग कन्है भूमर ढार नूं सियां सूती छै। सो देख बागवान हकाणो[10] देय गाळी काडी। तद डाहाळो ऊठ सांम्हो आइयो।

---

[1]जगह [2]बहुत [3]शीघ्र [4]खुले मैदान में [5]पराया [6]गड़ती है [7]काला भूमर [8]चम-चम करते हुए झर रहे हैं [9]पद-चिह्न देखे [10] जोर से आवाज देना।

ज बागवान नू बोलणे सम्भमरण नहीं दियौ। उठाय भूडर सू उमट नाखियौ। पांघां दोनू फाड़ नाखी। ऊठै री पेट फाड़ मार गिरायौ। पहलो मुकाबलो डाढ़ाळ री बागवान सू हुवौ सो भगवान री दया सू डाढ़ाळ री जीत हुई। बागवान मरियौ। मनचिंतिया[1] मनोरथ हुआ। भीलड़ां नेन्हा नू लड़णे री दांव दिखाय सिखायौ।

बागवान री पुकार दरबार पहुंची सो दिन तीन पहलां बड़ो राव बीसलदे जनाने-दाखल-हुवौ[2]। घोड़ां री रातब-दांणो महीनदारां री महीनो मोदीखाने री जिनस[3] और ही सारा लोगां री सरजाम सरतत कर, घोड़ा नू खुद रै खेत भोळाय हाथियां नू गुळवाड़ री बाड़ मोळाय आप गैरमहलां[4] रहियौ। देस रो काम सारो मुत्सद्दियां नू देय आप जनाने मांहीं बस[5] करै। अमलां में सवोरो रहै। ऊगै-आर्थां री खबर नहीं। कारण माट भगत लोग आवै या सिर्का मू भाया पूर बिदा किया। घोड़ां री लोहो कदाय घोड़ा सुद वद किया। घोड़ां रो जावतौ घणो दियौ। राव री रीझ घोड़ां सू घणी। जिण री घोड़ो ताजौ हुवै मैच पकड़ै तिणनू इनाम दीजै।

सो घोड़ां रै जवां नू भिका जावै तिका बोळी चसिया आवै। सो वाराह री पुकार हुई सब सिरकार री लोग सहु चढ़ियौ तिका पता दरकमदाज और घणा लोग समासगीर आदमी तीन सौ चार सौ भळा होय डाढ़ाळा ऊपर हालिया सो उठां रै भाग डाढ़ाळौ थेह में म यौ। भूडग भीलड़ां सू मुकाबलो हुवौ। आदमी दस-पनरह मारिया। आदमी साठ-सत्तर घायल हुआ। घोड़ा बीस तीस घायल हुआ। होंसियो लोग पो छो नाठौ[6] आयौ। सहर मांहीं खबर हुई। ताहरां गाबी डोसी सांम्ही मरही जद पकड़ कर आया। लोग सारो बुरो दीठो। डाढ़ाळ री फतह हुई। घोड़ा पास धिनी रहणे लागिया। ताहरां फौजदार नू बिदा कियौ। सौ असवार पांच सौ नैग्ल स र पहू ऊपर हालिया। नगारो वाजियौ छद भूडग सुण डाढ़ाळै नू कही—भो मासू[*] बोल छै? जद डाढ़ाळौ कही—भो नकारै रो बोल छ। नकारो बाजै छै। भूडग कही—भो किसड़ो बाजै छै? डाढ़ाळी कही—जिको उपर आयसी तिका जीत पायसी इसड़ो बाजै

---

[1]मनचाहा [2]जनाने महलों मे प्रविष्ट हुआ [3]जिन्स [4]जनाने महल एवं [5]आमा चाहेगा।

छै। मफारै वाळा माथ[1] आयसी। इतरी कहि काकाळी बजो[2] करण नू गयी। भूडण बोल्हरां नू लियां बैठी छै। इतरै फौजदार आय येह घेरो। हाथाजोड़ी करनै चौगिरद दोळां फिर गया। गोळी तीर बाहणे लागिया। जद मूंडण पांचू बोल्हर छाती भाग मय इसा दाय सू नीसरी सो का ती यह मांहीं बीठी पी का फौज मांहीं नू रूळती[3] होज दीठी सो पाळां नू पाळ पाथरी। पछै फर असवारां मांही भाई सो असवाण सता कर दिया। पाळा तो कमा जोवणे लागिया तिकां सू तो दाय बोल्हरां कजियो कियो। भूडण और तीन बोल्हर मिळ असवारां सू कजियो कियो। सौ मारिया घायल किया घणा घोड़ा रा पेट फाड़िया घणा घायल किया। असवार घणा ही बरछी मासा वाह्या पण भूडण घवै पड़ियो जिको तो पम रै घर गयी और बोल्हरां रै घकै पड़ियो सो घायल हुवी।

डढ पहर रात हुई जेत हाथ आइयो सही। जीत हुई। सात तासकी साह वानी तोम रो मून मूडण रा डील मांही रहियो। तठा पाछै सारोही साथ भोलम बैठ रहियो।

दिनां मूं घायलां वळां कींहीं नहीं लागे। महीना दोय काकाळी मूडण बोल्हरां सूधां जद गुळआडी[4] करतां नू हुवा सो मोटा-ताजा वळपूर मस्त हुवा। तरह-तरह री बड़ोनूनी बाभी पी ठिणसू अजम सावळ[5] हुआ। घोड़ा जमां थिमर रहिया। हाथी बाढ थिगर रहिया। इसी दहसत[6] पहुची सो कोई भी दरियावां जाय नहीं। दूसरे महीनां मांही राव वीसलदे महलां सूं बाहर आयो। अमरावां हजूरियां कामदारां सागिरद पेसे सगळां आंग मुजरो कियो। घोड़ा हाथी हवासदारां आंग नजर गुदराया। राव वीसलदे बोलियो—ठाकुरां घोड़ा हाथियां जवा रो मै बाढ रो मन दीसै नहीं की बात यूं। तद मुतसदियां माहणियां अरज कीयो—महाराजजी घोड़ा जो कठै चरै, हाथी माड़ पडै चरै? जया मांही नै थाड मांही तो विकी घसाय[7] आय यह दीवी छै सो आदमी मौ-मवागी राव रा काम आया। घोड़ा पचास सिरमद के हुन्या। जमां रै वास्तै माहणी गागिरद पेसे रा लोग पहुगां गया तिका स बहकाम हुइया।

[1]माग [2]पुमा करणा [3]नजीं म प्रविष्ठ होनी हुई [4]कमा [5]परची
[6]वाक [7]जमा।

पछै फौजदार साथ लेय गयौ सो उणसू कजियो कियौ। सो धाप'र फोजदार रा ही न पग छूटिया[1]। घणा आदमी-घोड़ा काम आया। आदमी डेढ़ सौ घायल होळी थाळ ल्याया था सो पाटा-पीपड़ आवण सू सरकार रा कोठार सू पावै छै। हमला थारै ऊमर तीन किया सो थीं तीनूं ही बार फौज मोड़ी। अकल थारी सही जीत रहियो। इम महाराजजी रो हुकम होय तिसी करां। इसरी सुण बडो राव बीसलदे घणूं ही मतराज कियो और कही—मवा राजपूतां म्हारा घोड़ा बिगर जबा रहिया—रोही रा जानवर भागे। सो मोठा आसिया कनै भरली क्यूंकर राख स्यो। तद अमरराव-परकमवान बीजो ही सारो लोग आण भेळो हुवो। उण दिन तौ राव घणौ आतुर रहियौ। रात तौ भीळसी बीती कोनी। भाग-फाटती[2] हुकम हुवो—नकारो करो। नकीब सारै फिर आयतौ करी। सारा सिरदार आय हाजर होवी। सो सूरां-पूरां सोह[4] चढी। कायरां नू कांपणी छूटी। नगारो सुण मूंडण कही—आजरा निसाण कैसा'क बाजै छै। तद डाडाळी कही—

मूंडण मन आसण्ण कर, बाजण दै नीसाण।
जो भीजा बाथां जियां तौ बसियां परवाण॥

जद मूंडण कही—

महरण[5] ठमको म्है सुण्यौ लोही चढे मुहार।
चढ्यै वरस्यै बप्पड़ा तौ कार्यै हथियार॥
वासी फिरै खळाबळी साटां[6] लेवस्यूं हार।
गाथा बैठी बोरड़ी वांटे सिल असवार॥

तद डाडाळी कही—

महरण मांगूं गज गिलूं समूचो को मुहार।
बोडो पाड पाकरण्या[8] सूं बरछी असवार॥
मसाणा रहसी बरणा वासी रहसी रोम।
पोरी मसळै हाथड़ा काम कंप रा जोम॥

फेर मूंडण कही—

ऐक बिराणा[9] जद चढै, दूजो जय न तांहीं।
कदे ऐक वेलावस्यूं भड़ बाहर फळ मांही॥

---

[1] छूटे [2] पौ फटते [3] शूरवीर [4] जोश [5] रण [6] सूअर का पक्षीवार मांस [7] समूचा [8] जीन समेत [9] पराये।

जद डाढ़ाळी कह्यौ—

> मूंडण सेवा कीजता हूं जायूं रण जाट।
> कै रोवाऊं पदमणी (का) मांस बिकाऊं हाट॥
> रावत रायूं खेत में तिण रायूं तिरियांह।
> तौ तूं जाणे कामणी डाढ़ाळी वरियांह॥

इतरी अेक बतळावण डाढ़ाळी अौर भूंडण दोनां रै बीच इण भांत हुई। अेकण नगारे घोड़ां रै खुररा हुआ छै। दूसरै नगारे सांजो-वांजो कर सारा तैयार हुआ। मूंडण कह्यौ—

> कंथ पराये जोर में आवै सोहि गंवार।
> सांकड़ण आवे दूध कुळां मरणो अेकहि बार॥

जद डाढ़ाळी कह्यौ—

> गवरंती[1] पाडा सुरी[2] अेकण मस्त मवीह।
> जिस बन कवळी संचरै, तिस बन फेरै सीह॥

तीजो नगारो हुवौ। सगळा असवार हुवा। तद बडेराव बीसमदे रो साळो ज्यासो ठाकुरसिंह सो हाथ जोड़ अरज कीवी—राज रो जोधपुर ऊपर नगारो कसीजै का चित्तौड़ ऊपर कसीजै का पाटण हिलवाड़ा ऊपर का भुजकच्छ ऊपर, का पटैभखर पर, का जाळोर ऊपर नगारो कसीजै। इण भांति जंगळ रा जिनावर ऊपर नगारो कसियां भाई-सगो हसी जो करसे। गिलो[3] करसे। रावजी जिण उमराव नूं हुकम देसी तिकोही हरामखोर मूं आय मार गिरासी। इतरा दिन तौ कोई राजपूत भड़पो न हुतौ न कोई इसो खयाल ही कियो। सरकार रो लोग साथ लेमी सो तमासगीर गयो हुतो सो खांत राख[4] कमियो न कियो अौर फौजदार पण मोळप सूं चढ़ियौ। साथ सामान जपूं विसेस न ले गयौ तींसूं कमियो विगड़ियौ। हमें जो रावजी रै ख्यात लागी तौ इण पसू रो कासूं। जो तौ आपणो खाज[5] हीज छै। तद रावजी पांन रो बीड़ो ज्यासा ठाकुर सिंह नूं देय फुरमायो—जे जावौ हरामखोर नूं परवार समेत मार ल्यावौ जे गोठ करां। ताहरां ठाकुरसिंह आपरो सारो साथ धजियौ अौर श्री रावजी

---

[1]सूअर [2]सूअर [3]मजाक [4]पूरा ध्यान रख कर [5]खाने की वस्तु।

री फौज पण सय जाडाळै ऊपर हालियौ। तिण दिन इण रो भाग जाडाळौ तौ मेह में सूतौ पड़ियौ छै और भूरण भीरहरां मू सय सिरोही सू कोस दस ऊपर गुळवाड़ छै उठ भेजो करणे नू गई छै। इतरै फौज रा आदमियां री नजर में भूरण आई।

ताहरां सारा गोळ कर प्यादा मुंह आगे सम असवार केहेक दावा नेहेक भीवणा सय कही—ज भासा ठाकुरसिंह खबरदार रहिजो जो नीसर आयसी तौ लोहरा लुगा[1] नजीक छै। जिणां में बड़ आसी सो भूरा पड़सी। तिणसू थे ठोस पगां रह्यो। इतरे में बदूकां रै पलीता[2] लगाइया। कामठां सू तीर छूटिया मंह आगे आप-आप पड़ण लागिया। तद भूरण घाघरो[3] ऊपर उठायनै सांम्हो दीठौ। जद फौज चौगिरद[4] निजर आई, सो भूरण भीरहरा पांचूं खाती रै आग सेय फौज रै सांम्हा चलाया। सो अठै ठाकुरसिंह भासो फिरणिया[5] दियां ससकार करै छै। लड़ो छै। तिण फौज भळा किया। जे भूरण रे धकै चढै सो जमपुरी जावै नै भीरहरां रे धकै चढै जिका जखमी अधमुवा[6] हुई जावै। पहर अढाई कजियो रहियो सो सगळा थाप रहिया आपो आप पाछो आय ऊभा रहिया। खेत में आदमी काम आया तथा कई घायल मांणस न घोड़ा पड़िया। सो फौज री आसग उठावणे री नहीं। परली तरफ भूरण भीरहरा सय जाय खड़ी हुई और सरीर मू धकधकी दीवी घो तीर भाला बरछी बुहारी रा तिणकां ज्यूं बिखर गया। इसो पराक्रम देख सारा थक रहिया तद कहै।

भूरण बाघी धकधकी गिरिया भाला तीर।
देख पराक्रम भंपिया चकित रह्या छै वीर॥

भाखो पूर्छ ठाकुरां पड़ियो की कज[7] आय।
कासू दिखावां मूहडो राव कहै इम जाय॥

पांच कोस पर गज बणी हंसली सह सिरदार।
मोटी हंसली मेह में कैसी की करतार॥

इण भांत भासो ठाकुर सिंह ऊभो-ऊभो विसूरणा करै छै। हाथ मसळ छै। *बोड़मो आपरी असवारी रो सुन्दमी सासत सूं खेत मांही पड़ियो छै। सो साम*

---

[1] बाड़ दे [2] आग [3] मुंह [4] चारों ओर [5] घूमता [6] अध मरे [7] पस।

तक सम्भाळणे री प्रासग नहीं और लोह मण सवा दोय पक्के तोल रो भूखण रै सरीर मांही रहियो। तोन रौळा[1] भूंखण फीसी ऊमी रही। पछै झाडाळै सांम्ही मुळकती थकी जावै छै। होळै-होळै आय छै। सगळा ठाकुर सिह भ्रात रा साथ रा मुवां भर घायल हुवां नूं सम्भाळ छै। मुवा त्यांनूं उठाय दाग[2] दीन्हो और घायलां नू झोळी घाल घर आया। घोडा मर गया था सो तो काम आया और घायल था तिका प्रसग टाळिया छै। तिण में घणा घायल घोडा रै बचण री प्रासग नहीं दीठी जिणारै गळै छ री फिराई, सो इसा घोड़ा सात बीसी था। इण भांत कजियो हार झालो ठाकुर सिह पाछो गयो। राजपूत दिलासा[3] करता पस्तावता नीठ-नीठ जे आवै छै। ठाकुर सिह भाग-मन[4] उदास थकयो निसास गरतो आवे छै। रात घड़ी च्यार रै गयां पाधरो आपरै डेरे आयो—

> चढ़िया पाळ्ळ दीहड़ा आया पड़िया रात।
> पूर्छ बामण वाणिया कासूं हुसी बात॥

सो साथ रो मांणस कोई बोलै नही। अबोल-आबोल ही बहै। सहर रो लोग अठै-उठै मसक्करो अधिक बोलो हुवै तिण मे मोतो सिरोही रो लोग सदा सूं अधिक बोलो सो घायलां री झोळी बहती देख पूछण लागिया—

> माथो ऊपर मुळकता मे चढिया घायल्ल।
> म्हे थांने पूछां अकरा सूमर कै घायल्ल॥

सो सरदार रै रसाल रो लोग साथे थो जिको रावजी रै पास गयो। जाय नै हूपीपत थी सो सगळी मालूम कीवी—ज महाराज यो तो सूमर नहीं काई बडी आफत छै, म्हे साग जाय दोळा फिरिया सो तिण मे सूअरां इसी उठावणी[5] कर आय भिळिया सो मदूग तीर सिही रो बहणे नहीं दियो। आप भिळही जे गया। सो सगळो साथ छीट-छीट कण-कण[6] कर दियो। ओसांण[7] गना हुई गया। थोड़ो मांणस ज थके घडियों साही गुड भळो हुवो। इगी इसी बातां कही सो रावजी सुणकर बहुत नाराज हुवा। रात तो फिकर करतां भांज-घड[8] करतां करतां व्यतीत कीवी। परभात पोह फाटी रो मनारो हुवो। नगार री गाज धयाम सुणकर भूखण अगन लागी आज रा निमांण कैसा हुक बाज छ ?

---

[1]झगड़े युद्ध [2]दाह क्रिया [3]ढाढस [4]टूटे दिल से [5]जोश में तेजी के साथ मरना [6]कतरा-कतरा [7]अवसर [8]विचार।

तद डाडाळी कही—फरी उसां री पैसां मांजे कै उसां रो मोडी नहीं का पैसां री माडी नहीं।

इतरै में मात हुआं बार[1] लाग बडो राव बीसलदे हुयदल पैदल सेय असवार पांच हजार, पैदल सात हजार धनुषधारी सह म्हौंका भाग दिया। मूसा हीज हासिया। ऊगतै सूरज दोळा भाय फिरिया। डाडाळी पह रै मांहि सूती छै। मूंडण नै बील्हरा बैठा छै। इतरै फौज दिसाळी[2] दी। तद मूंडण कहण लागी—

सूमर सूतो नीव भर, मूंडण पोहरा देह।
ऊठो नांहि निवाळ्यां बर कधी मोकेह॥

तद डाडाळी मूंडण री कही सुण म्हौंको उठाय फौज साम्हो देख सूतो ही कहै—

कामण सूं मिहर्ब पछ, मन मरना हो मंय।
घोड़े का असवार सूं करि हु कसूंबल रंग॥

इतरी बात सुण मूंडण कहणे लागी—जे फौज देखो काम चाळी हीज छै कै दूसरी हीज आई छै। यूं जाणनै सूं ऊठी। राव तीज बीतियोड़ी थी बींसूं बील्हरा पांचू भाती भागे वेम हासी—फौज रै सांम्ही।

फौज रो लोग भागेरो भागियोड़ी थो मारेस[3] यो थो उठ बोलियौ—महाराजजी साहिव मेकस माइयौ। रावजी कही—इहां रै मांही मकस किसी छै? तद लोग कहयौ—लागिया पांच सौ बील्हरा छै नै छठौ मकस छै रावजी कही—गंवारां मकस रै वाग[4] होसी इण रै तो वाग नहीं दीसै। काल्ह थे इणसूं ही मजियो कर भागिया? रावजी माराज होय कही—फिट[5] रे रजपूती रोज भागे भला भागिया। साथ नूं रावजी हुकारो दियो—कोई भागणे पावै नहीं अपणा घोड़ां री वाग उपाड़ी मूंडण बील्हरां समत फौज सूं जा भिळी। फौज चोळी चौगिरद फिरी। सवा दो पहर फौज सूं राड़ हुई। पछै मूंडण रा पग छूटिया सो वा बील्हरां नूं सय पह मांही आई। डाडाली समाचार पूछिया मूंडण! दळ[6] किसड़ा मन छै? तो मूंडण कही—माज फौज करारी पण कजियो भाओ किमो छै भीर करारो हीम सयमायस[7] छ तिणसूं विरोध मड़ राखी

---

[1] समय [2] दिखाई मायगा मंबे वांत [5] धिक्कार [6] फौज
[7] जम्मी हुया हुया।

नहीं । फेराफेरे री फुरती माफक रही । पण इतरो तो कमाल भाई छ ।—

पद—पाखरियां बळ भाया बीली सूरज चंद्र ठियां सिर साखी ।
एक बार री बेह मैं राखी बह दूजू बार बरा मे साखी ॥

तीन बार रोळा मह कीन्हा चोथी बार पग पाछा दीन्हा ।
तू घर बैठ रह्यो मळसाम भागो भालर पूरो काम ॥

दोहा—देस बिगाड़यो रावरो फेर विनासी[1] फौज ।
डर बैठा कासू हुवे राजा माल्या खोज ॥

तद डाढाळो ऊठ पाळस मोड भूखण नूं कहण लागियो—

पाळो करसूं राव सूं सूरज करसूं साख[2] ।
फौज बिरोळ[3] एकली मथळा बैण न भाख ॥

ठाकुरां भूखण कही—आज रो पे साथ करारो नजर आवे छै । भूखण रा बीस माही सोहो सवातीन मण पक्के तोल रो हुवो । रावजी फौज ऊपर हुंस घणो कियो । चोखा घाटा[4] रा लोगां नू मारिया घायल किया । मोटा मोटा राजपूतां रा मोडा घायल किया । सिरदार घायल किया । सो अपरा घाव सम्माळे छै । उठी भूखण बहूवी पकी मांस सटकियां पर्छ डाढाळै कन्हे कान सटकायां ऊभी छै । सो भूखण री इसी वसा देख डाढळ कही—

भूखण भामण डूमणी[5] की करकावै कान ।
की करड़ा की कमखा देख मजीठा बाण ॥

यूं कहि डाढाळी घह सूं बाहर आवयो । भूंखण घह मांही दाखिल हुई । बील्हरा पांचूं ही छाती मां सीकरे[6] छै । फूस रह्या छै । बेपरवाह पड़िया लेस रह्या छै ।

डाढाळी उठा सूं हाम दह[7] आयो । सपाड़ा कियो । पछै ऊंची बरछी[8] ऊपर नै आय ऊभो रहियो । ऊभो रहि नै श्री सूरजनारायण नूं अरघ देण लागियो । इतरै मांही रावजी रा निजर उठी आय पडी तद रावजी बोलिया—हे ! ठाकुरां हे ! अमरावां रे ! राजपूतां जिण रो नाम सगळा डाढाळो एमस बराह कहोज बोचो तिको हमें आवे छै । सावधान हुवो । डाढाळै मूं लोह-करो[9] जिको

---

[1]बिगाड़ दी [2]साथी [3]वहम-वहम कर [4]घाटी [5]धनवनी
जिस जिस [6]भूख रहे हैं [7]पानी का गड्ढा [8]टेकरी [9]प्रहार करो ।

समझ कर, सावधान होय ने करजो। इण म्हारे धणी बिसाहणो बिखेरियो छै। म्हारो बडो दुसमण छै। जिण रै भाग हो काकाळी निसरसी छिण नूं म्हारी सिरोही मांही वो पग जमीन मह छै। सर भाटो पण नहीं छै। काकाळी रावरा इसरा वचन सुण ने मन म बिचार कियो—न करै परमेसर जे कोई सिपाही रो सेर भाटो हूं गमाऊं, किणरे माथ गूंन्दा विराऊ, किण रो कुरसीस[1] लेऊं।

काकाळ चौगिरद देस मैं फौज नजर मांही काढी। सो बडो राव बीसलदे घोड़ ऊपर सवार छ। फिरंगियो भाटो छै। चवर ढुळ छै। आदमी वीसेक रावजी रै घोड़ा रै आसपास ऊभा छै। बीजी फौज आळा बरकमदाज सारा हरोळाई[2] में खड़ा छै। सो काकाळी नजर राव ऊपर राखी। श्री परमस्वरजी रो नांम लय राव ऊपर उठावणो कीवी। सो का तो उठा सूं हुसमती दीटो का रावसूं मिळतो नीठो वाह[3] करतो दीठो। रावरा घोड़ा रै तम री ठौड़ लाग[4] समायी सो घाडो ग्यारह पगां उपड गयो। रावरी जाघ तो बच गई पण घोड़े रो काळजो गुरदा आंतड़ा ओझरा फाट काढ जावती निकसियो। घोड़े रो डाबर[5] जाम धरती पटकियो ग्यारह पग अहस हुवा। राव बीसलदे रै घोडो बीजो कोतल हाजर थो सो आंण हाजर कियो। राव नूं चाढियो। लोग साथ रा साराही भेळा हुआ। लोग सगळा घूमरो[6] कियां ऊभा रावरो बील सम्भाळै छै और काकाळी निमोह थकियो परसे पासे आय ऊभी सेक करे छै। घटा धूणे छै सख सूं खम मगाय फौज साम्हो जोवै छै। जे राव रै कन्है घणो लोग चढियो पाळ रो घुमरो दीठो। सो त्यूं उठायने फौज में पाछा नांखिया ज्यूं अघूळिये[7] आयां सुगड़ा पांम भास रा तिणका उड़जावै त्यूं सारो लोग बिसर गयो। मुंह सूं आयो कहितां ही जाणिया आमिया परा आय छै, ज्यूं सहार घण मारवे मुंह सूं जिको जबाब निसरै सो ही जबाब घणी ताळ लग चलियो जावै। त्यूं रावरी फौज असी बिचळवाई गई सो आगे-आगे लोग आघ कोसताई गयो उठा ताई मुंह सू वही जबाब आय आगे रो रहियो और थोक घुमरे में बीस पचीस जोधा घायल असमायल[8] कर पाळा जे पचास हेक धके चढिया त्यांनूं तूक सूं उछाळती धूड़ सूं भळा करतो पाथरो ही राव रै घोड़ा कन्है गयी। सो तीनू तूक सू उलाट दीन्ही सो उवो राव समत परे पड़ियो। राव रै सापळ रै

---

[1]कुरनीस [2]अगाड़ी प्रहार चोट [3]पीठ [4]घेरा
[5]चाव-चक हक्की-बक्की (जैसे बिजली गिरने से हतप्रभ) [6]पक्की।

पदरी जबक भाई भौर डाढ़ाळी निसर गयौ । कह्योता भजरायलां[1] रावतां हाथ री सूटी बरछी वाही । थोड़ो तौ कोई सषाय सकियौ नहीं ऊमां ही उलाळ विछूटी बरछी वाही केही सीर बाझा सो डाढ़ाळ रा कीस में लागिया पण परस पासे जाय लागी बरछी ऊपर भाय खड़ो रहियौ । घुगघुगी बम भाला सीर उछाळ दिया । केही भेक मुह सू पकड़ काढ़ नांखिया । ऊभौ-ऊभो सस सू खड़ लगावे छै । धरती खोद रहियौ छै भौर उठी नू रावजी रै घोरे सारो लोग भाय भेळो हुवौ छै । राव नू सम्भाळ छै सो पग असमाइस हुई गयौ सींसूं ऊभो नहीं हुवौ जावे । कटारी निसर परै जाय पड़ी सो सम्भाळ कर लीवी । तरवार मांणसां रै नीचै दबी वीरो म्यान किरची-किरची[2] हो गयौ सो वा तरवार सम्भाळ कर लीवी । सवारी रै पर्गां हाथी मगायौ जिको भाण हाजिर हुवौ । हाथी मूं बैठायौ छै । राव भादमी पांच-सात मिळ सम्भाळ होवे[3] मांही बैठाएे भौर राव ई वेळा मुंह सू भाहिज कही छै—जे वड़ा सरदारां सूभरड़ै रो जावसो राबजी मुहो भ्रामियां रहो लोग सभीड़ो वेस फेर भाण पड़सी । सो सारां नू इसो भय लागियौ प सगळा ऊभा-ऊभा सूभर रै सांम्हा जोवै छै । भेक बीजे नू भाड़ा दय ऊभा छै । तद रावजी कही—भला भला तीरमदाज[4] हाथियां ऊपर चढ़ लेवौ । सो तीस पतीस हाथी फौज साथ था खासा खासा हाथी साथ में लिया था बीजा हाथी सारा पाछ राव भाया था सो इव सारा हाथी याद भाएे लागिया ।

मैजूर हाथियां ऊपर सब भादमी भला भला तीरमदाज धणी[5] जलम्बरो पांमण[6] रा कामठा सुही रा तीर तिण र सवा-सवा पाव रा भाला तीन-तीन भांगळ चौड़ा बिलांत-बिलांत भर लांबा लियां इसा इसा जवान हाथियां चढ़ सांम्हा हुवा । इतरे मांही डाढ़ाळी नजर ऊंची नू करी फौज नजर मां भर काढ़ी सो इतरा हाथिया पूठे रावरो हाथी नजर में कियौ ठावो कियौ । फेर उठा मूं उठावणो कीवी सो सारा भायो भायो करै छै । इतरै तो भाग भेळिया सो लोम सारो छोट-छीट[7] हुई गयौ । हाथियां भाय वागो सो ऊपरा सू तीरा रो मारको[8] होएण लागियौ सो फितरा ही तीर कोस मे गरक हुआ छ । सो इतरी

[1]बांके बहादुर [2]टुकड़े-टुकड़े [3]अंबारी [4]तीरंदाज [5]प्रत्यंचा
[6]लचकीले सिंग [7]अलग-अलग [8]भिड़ा [9]मार।

मार न्हाखतो हाथी मोप[1] चाभरो राव रै हाथी कन्है आयो सो रावरा हाथी रै पाखरां पग इसो न्हाग लगायो सो हाथ जाय रड़क्यो । हाथी नू जदामाइस कर परस पासै निसरियो । हाथी र पूठै सवार लड़ा था तिका नू पूछ सूं मांखतो थको धामस करतो थको परसै पासै पार हुवो । उठै जाय भड़भड़ी जाय तीर सारा नासिया । केई मांही गरक था सो मोहड़े सूं काढ परा किया । उठे खोळ कन्है सादरियो पगां सूं रोक कियो । जम सत सूं भगावणो लागियो । सारा ठाकुर सूभर ऊपर आ धिरिया । इतरै सूभर बळ फौज सूं मिळियो सो सारी फौज फरोळ्यो[2] कचळ्यो[3] फिरै छै । इसी तरह घणो कजियो कर पार हुवो । सूभर घणा तीर बरछियां सू पूर हुवो । बरछियां रा फळ[4] मांहे टूट रहिया । तीरां री साठी टूटी भाला री मांस[6] मांही रही सो लोहा सूं पूर हुवो थको पार होय आ वरजी ऊपर लड़ो रहियो । असा रावतां ठाकुरां मांही हा-हू हलचल हुई रही छै । झाड़ाळो सूभर राव सूं बिकराळ होय लड़ियो असा भरोसाबंध रजपूतां रा घोड़ा खळ रहिया छै । तीन पहर राड़ हुई । साढे सात सौ साहधानी पक्के खेत रो लोह झाड़ाळ रै सीस मांही रहियो । महाभारत जीत सूभर खड़ो रहियो ।

रजपूतां-सिरदारां बड़े राव विसनदे सूं अरज कीवी—थांरा हाथ वाखांणे प्रवाड़े-वाद-कीजै[7] लोग किलरामक तो थरां री बाट जोवी । रावजी सू ठाकुर लोग अरज करी—महाराजजी जंगळ रै पसू सूं राज किसी परा आवो । तमासो करणे आया था सो कजियो कियो । इमे परा जावो । सो राज भ्रामणधुमण घमूमियो ही ऊभो छै । जोसे क्यू ही नहीं छै । ठाकुर लोग कहै छै—किंही सिरीखे आगे सुकिया रो मोंहड़ो होवै छै । रोही रा जानवरां सू बाद किसो । जो आपणो किसो सारीखो थो इतरो बिसाहणो तो चितौड़ कनां जोधपुर सू लाग जाता तब थो । फतह कर ऊभा रहिता सो तो कदेक किंही री आसंग कोई हुई नहीं । हमें खमा कीजै ।

झाड़ाळो राव रा फौज रो मुंह तोड़ बण प्रवाड़े-पूरियो[8] आपरी जेह आइयो

---

[1]टाल कर [2]उथल-पुथल करता हुआ [3]रौंदता हुआ [4]बरछी के भाले का हिस्सा [5]तीर की डंडी में जहाँ तीर लगा रहता है [6]भाले की नोक [7]युद्धार्थ तैयार हो [8]मन में घुटा हुआ [9]बहादुरी से लड़ा ।

मूठण नूं डाडाळी कहियौ—अरजद सूं मन हुवै तौ वासो पड़ जावां। पण मूठण दारू रै मतवाळे ज्यूं हरकरी हुई। सोहियां सूं पूर हुओड़ा डाडाळी अर मूठण दोनूं अरजद नूं हालिया।

पाव कोसे'क गया जद डाडाळी बोलियौ—मूठण महा सूरवीर रो खत रिण[1] रो छोडियो आछो नहीं। आवां बडो धरम छै और म्हारो सरीर सूं समार छै। काल्ह पगपसार थ-म्हे मरीस[2] तौ अगत[3] आयसै मौनूं अगत होयसी थांनूं बड़ो महणो होसी। राव बड़ो रजपूत छै, सूरवीर छै। पाछौ जाय काम आयसूं[4] तौ गत होयसी। रावरो चित्त सान्त होवै। मोनूं फेर इसो सापुरुष[5] कोई मारणे हारो नहीं मिळसी तींसूं राजी होय मोनूं सीख देवौ जे काम आवूं। तद मूठण कही—आपनूं काम आयां पाछै जे म्हारो पाछौ[6] करै तौ कीसूं करां? तौ डाडाळी कह्यो मैं राव नूं इसा हाथ दिखाया नहीं जो थांरो पाछौ करै। मै अभी ज्यांन दीवी छै और कदाचित पाछौ करै, जदे चौल्हर रै माथै तिणी मेल्ह जायजे फेर फौज पड़ै तौ बीजे रै माथै तिणी मल्ह आगे जायजे। पाछै भी आय पड़ै तौ तीजे रै माथे तिणी मल्ह जायजे फेर भी जे आय लागै तौ चौथ रै माथै तिणी मेल्ह जायजे और पाछै भी जे लारा पड़'र पाछौ ही करै तौ पांचवें रै माथै तिणी मेल्ह तू अरजद री देह जाय सीजे। इतरी कहि डाडाळी सीख कर पाछो घर आयौ—लोहां[7] री छकियौ[8]।

पणघट ऊपर आयौ। इतरै मांही पणिहारी देख नै बोली—हे बाई! गाव रा ठाकर नूं कठां जे लोड़ी सूअर आवे छै। जे इणनूं मारसी तौ साटा लायस्यां। इतरी सुण डाडाळी कही—

हे पणिहारी मत कहो लोड़ो सूअर आय।
जब[9] रै घर खुटसी कोई, नाहक मरसी आय।।

इतरै डाडाळा नूं चेत हुवौ। उठासूं हास बेह आयौ। सावधान होय मारवरी मू हालियौ। भाखरी ऊपर आय चढियौ। देखै तौ काम आमाडां नू दाग दिरीजै छै। पायस सम्भाळ सहीर[10] क्रिया था जं हुमीजै छै। सो कोई तौ भागियोडा सहर गया था तिका आय कजिय री कही। तींसू सूअर बीसलदे रा सवार

---

[1] रणक्षेत्र [2] मरेंगे [3] गति नहीं होगी [4] काम आऊंगा [5] सत्पुरुष [6] पीछा [7] भालों [8] छिदा हुआ [9] यमि [10] रवाना।

हजार दोय सूं पड़िया। इतरै बीच में पायलां री छोळी मिळी तिकांनूं पूछतां पलक लागी। इतरै में सूमर फौज री खबर पड़ियो। तद राव बोलियौ—बाढ़ाळी आयौ सावधान हुवौ। इतरी सुण कायर था तिकां रा होठ सूक गया छाती बैस गई। तद राव धीरज दे छै—राजपूतां री वेळा छै, सावधान हुवौ। राव कह्यौ—रण रहियां अमर होय भागियां रजपूती जाय।

रण चढ़ रजपूती करै, सोही अमर कहाय।
कायर रोवै बीच में सो फिर आप नसाय॥

इतरा मांही धारां री नजर काळ-रूप दीठी। देखतां तमाम कायरां रा प्राण छूटणे लागिया। महलतर नाडी सूं प्राण नीसरिया। राव कह्यौ—साबास भला राजपूत हुआ। इतरी कहि आपरी सवारी रै हाथी नूं आगै चलायौ। बीजा हाथी राव रा हाथी री बरोबर ज्यूं[1] पाछा चलाया सो धणी भाला हाथ सम्भाळिया छै। राव रै हाथ लाहोरी कमाण री छै। बड़ी सपरियां रा तीर च्यार तौ मूठ में छै और तरकस दोय होदा में छै। राव राजपूतां नूं बिरदावै छै, ललकारै[2] छै, सो घोड़ां रा सवार हाथी सूं पांवड़ा[3] बीस तीस अगल बगल ऊभा छै। बरछियां हाथां मांही ले खड़ा छै। इतरै में सूमर बरछी सूं होळै-होळै उतरियौ सो पग सूं सुहावतौ उतरणे लागियौ छै। तद राव उतावळ सी राजपूतां नूं कहणे लागियौ छै—भलो हुवौ सूमर जे आडो हुवौ आवै छै। थाक रहियौ छै। अबार मार लेवा छां। तद इतरो वचन राव रो सुण सूमर कहणे लागियौ—

थोड़ो थोड़ो मत कहौ थोड़ो बड़ो सवाळ[4]।
रैस[5] लड़ाई रावनूं, रहियौ थाणां माल॥
हाथी पाखर हींसता घोड़ा पाखरियांह[6]।
तौ भालोतै पातां भूंरण रा जणियांह॥
फौज न फेरी रावरी हूं आयौ कर रोस।
भाग्यां मड़ न कहावस्यौ[7] हूं अजावस्यौ मोस॥
पाधो रावत बीरणो मांही मारै जाय।
करस्यूं छाकी[8] मेळसी पड़ूं कठि में नाव॥

---

[1] हुए [2] जोश दिलाता है [3] कदम [4] पूछी बात [5] हार
[6] कवच लगे [7] कहलाओगे [8] पीठ दिखाओ [9] महत्वपूर्ण युद्ध।

इतरी बात सुणतां ही ठाकुर घोडां सूं चिमक लागी सो खिजिया। घड़ा घा स्यूं गांठ कर ललकारता भर्या सूमर रै सामहा हुआ। इतरा में रावजी रा हाथ सूं भालो छूटियो सो जाय सूमर रै निलाड़ लागियो सो आधो तीर गरक हुवो। तीर लागियां सूं इसो कालो[1] हुवो सो राव रै हाथी रै आगलै पग रै मुरधै री भोम में लग री दीवी सो मुरधै रो चालणो मांत हाड जाय रड़कियो। तीसूं हाथी भचको खाधो। भुकियो तद सूमर री खबर पड़ी। ज हाथी नूं घायल कर पगां में आय भिळियो। सो हां-हां हुई रही छै। पण बरछी तीर रो काम किहीं रो सारी नहीं और सूमर हाथियां रै पगां में भड़ियो[2] सो सारा हाथी घायल किया। पग फाड़ ग्रहृत किया। सारा हाथी आपोआप मुंहं नै भागिया। महावत घणा ही थांभ रहिया पर रहिया पण थमै ही नहीं। राव रिसाय रहियो पण महावत रो वस नहीं। हाथी तो आपा-आप ही खिड़[3] दूर जाय ऊभा रहिया।

हाथी सै घायल किया फेर चख्या रै पीठ।
बीजळवे री फौज में भमा बजायो धींठ ॥

काछाळी येकल रणखेत रै मांही लड़ी छै। ज्याऊ विमां नै मिहारै छै। तद सारा ठाकुर बोलिया—

येरो येरी सह बड़ै, मुंहड़ै चड़ै न कोय।
काछाळी री मार[5] में सारा रहिया जोय ॥

तद काछाळी फौज सांम्है वस कही—

छोरी छाड़ी पागड़ा सांम्हैं मारी चड़ै[6]।
काछाळी कह रावतां थे मार्थे परहट्ट ॥

इतरी काछाळी कही नै सारा ठाकुर पागड़ा छोड़ परगह सारी आगै कर और बरछियां री कोर कर फळसा सां होयर चौगिरद सूं आया। इसा हीज आया सो बीटां ही बण आवै। कही नहीं आवै। काछाळी जिण पासै मुहडो कियां खड़ी थो त्यूंही सांम्हो धमियो सो आय भिळियो। सारा ठाकुर ऊपर आय भुकिया। इसो रीठ बाजियो जिसो न भूतो न भविष्यत। घणी बरछियां रा वार[7] हुवै। केई आगै मोमरै छै। तरवारियां री भणाभण लाग रही छै।

---

[1]घायल [2]घुमा [3]बिखर कर [4]पखों री आवाज भरी
[5]मार, प्रहार [6]समूह [7]दुबई।

हथियार दोय सूं पड़िया। इतरै बीच में भायलां री टोळी मिळी तिकांनूं पूछतां पलक लागी। इतरै में सूमर फौज री नजर पड़ियौ। तद राव बोलियौ— काळाळी आयौ सावधान हुवौ। इतरी सुण कायर था तिकां रा होठ सूख गया छाती बैस गई। तद राव धीरज दै छै—राजपूतां री बेळी छै, सावधान हुवौ। राव कही—रण रहियां अमर होय भागियां रजपूती जाय।

रण मर रजपूती करै, सोही अमर कहाय।
कायर रोवै जीव नूं सो फिर आप मराय॥

इतरा मांही सारां री नजर काळ-रूप दीठौ। देखतां समान कायरां रा प्राण छूटणे लागिया। बहुतर मांही सूं प्राण नीसरिया। राव कही—साबास भला राजपूत हुआ। इतरी कहि आपरी सवारी रै हाथी नूं आगै चलायौ। बीजा हाथी राव रा हाथी री बरोबर ज्यूं[1] पाछा चलाया सो धणी सासा हाथ सम्भाळिया छै। राव रै हाथ साहोरी कबांण री छै। बड़ी सपरियां रा तीर च्यार तौ मूठ में छै और तरकस दोय हाथां में छै। राव राजपूतां नूं बिरदावै छै, ललकारै[2] छै, सो घोड़ां रा सवार हाथी सूं पांवडा[3] बीस तीस अगल बगल ऊभा छै। बरछियां हाथां मांही ले खड़ा छै। इतरै में सूमर बरछी सूं होळै-होळै उतरियौ सो पग सूं झुकावतो उतरण लागियौ छै। तद राव उतावळ सी राजपूतां नूं कहण लागियौ छै—भलो हुवौ सूमर जे खोड़ो हुवौ आवै छै। थाक रहियौ छै। भवार मार लेवां छां। तद इतरो वचन राव रो सुण सूमर कहण लागियौ—

खोड़ो खोड़ो मत कहौ खोड़ो बड़ो रसाळ[4]।
रेस[5] लगाई रावनूं रहियौ थाको आम॥
हाथी पाडूं हीकता घोड़ा पाखरियाह[6]।
ती बांणीयै रावतां मूंडण रा बणियाह॥
फौज न फेरी रावरी हूं आयौ कर रोस।
माम्यां भड़ न ब्रह्मावस्यी[7] हूं लजास्यौ भोम॥
रावां रावत चीरसी[8] गाही आवै लाग।
करस्यूं साकौ[9] ठेकसी रावूं कळि में नाम॥

---

[1] झुंड [2] जोश दिलाता है [3] कदम [4] गुस्से वाला [5] हार
[6] कवच पहने [7] कहलाऊंगा [8] धैर्य छोड़ जाओ [9] महत्वपूर्ण युद्ध।

दुसमण सबळा रोळबे[1] कूब भमा दूं दूव।
वौ समाळा बाकड़ा कुइ यूं मरस्यूं वद॥

मूंडण पूरा मोहा छिक रही छै। बड़ो रेड़ो पाछो फिरियो। भक घड़ी ताई सारी फौज यांभ रासी। फौज रो मारको रेड़ा ऊपर पड़े छै। रेड़ो उणरै दूव री देवै छै सो घोड़ो नै सवार गुड़ मेळा हुवे छै। भेक घड़ी तक सारी फौज सू लड़ियो। भठै रावतां तरवारियां सू वाढ़ कर खतम कियौ।

तद फर भागे कढ़िया[2]। फेर ही पहुच पळ बीज रेड़े घेरियो। उण फौज रोकी। तीन रेड़ा चौथी मूंडण भागे चाली। भक घड़ी बीजो रेड़ो फौज सू लड़ियो। फौज वाळा इणनू वाढ़ भाग हालिया। तद तीसरो रेड़ो ऊभो रहियौ। घड़ी भेक फौज सारी थांभी। इणनूं मार फौज भागे हाली। चौथो रेड़ो फिरियौ सो इसो मादरी भाय फौज सू भिळियौ सो लागी[3] कूंमर कन्हां गयी। घोड़ो सवारी मे छै तिण रै दूव री दीधी सो उमट कर सवार घोड़े समेत गिरियौ। घोड़े री पांन गई तद मूंडण कही—

कूंमर थाही रंतळी[4] थाम रहवी हुद्द।
माई हुवे सो बाहुड़ै[5] यये विड़ाणी छद्द॥

भ्यार घड़ी तलक भ्यारू रेड़ा घणा सखरा लड़िया। भाखमी घणी घायल हुवौ। सारा घाप रहिया मर मानू रा विचर पण मूंडण व रेड़ा री नचर भाया। तद सारो साथ उठै ऊभो रहियौ। कूंमर नू समाळ घोड़ै सवार कियौ छै। इतरै मूंडण रेड़ो विचर था मिळिया। तद साथ सारी भायसां मू रेड़ा नू समाळ पाछा भाया। भाय रावजी सू मुजरो कियौ। रावजी रेड़ा भ्यारू देख घड़ा राजी हुवा। कंमर नू घणी साबासी-दाद दीवी। निवाजस कीवी। कूंमर री साथ भौर लोग रजपूत थो तिणनूं भलग-भलग दिलासा दीवी। निवाजस-इनाम रो हुकम हुवो। राव रो मन बहोत राजी हुवो छै। बहोत खुसी हो कही—

रण जीतण तोरण बंधण पुत्र वधाई चाव।
मे तीनूं दिन त्याग रा कहा रंक कहा राव॥

गोठ री तयारी कीवी। भमलां री रह-छह[6] मची छै। भूरो मनतो काळो

---

[1] नष्ट करते [2] निकले [3] उसी [4] पीठ [5] लौटे [6] महफिल।

घणी तरवारियां रा बाढ़[1] उछळ रहिया छै। घणी तरवारियां रा बाढ़ भग्‍ना छै। हा-हू होय रही छै। बाढाळी घणां नू सूंड सू उछाळ-उछाळ न्हांकिया छै। कइयां नू घायल किया छै। कई रा पेट फाड़िया छै। आंतड़ा पड़ रहिया छै। घड़ी च्यार तांई सारै साथ सू लड़ाई करी। आदमी साठ सत्तर फेर मारिया। घणा घायल किया। सो बाढ़ पुरजो-पुरजो कर न्हांखियो छै—बाणज रगरेज री गांठ खुली। लोही सूअर रो हुवो सो तिकका सू उपड़ियो। अेक-अेक सूअ सगळां रै मावै आई। राव प्रवाड़ो[2] जीत खुसहाल हुवो। पछ दोनूं सेवां में रावरणे रो हुकम हुवो। सब दोनूं सोने सूं मंढाय नै पाग मांही रावरणे रो हुकम हुवो। फतह कीधी ताहरां मन घणो आयो।

जिण जे धरियच हूंतै वण बंधी परणोह।
तिण दिन आपस पै घणी हमिरा मगरी होह॥

रावजी बोलिया—इण महा सूरवीर रै मुंह चढ़ काम आया सो बैकूंठ री वाट गुहा[3] जिणां रो सोक न करणो। काम आया जिका राजपूत अेक ही चिता मांही दिया जिणां रे दाह पड़े छै।

इतरा मांही कुंअर हजार दोय असवारां सूं आंण मुजरो कियो। तद रावजी फुरमायो—आज अठै गोठ हुवै सो सगळां रो सोक जावै। आदमी जिनस रै पगां[4] सझर मेलिया। आटो चावळ बेसण खांड मिरत दारू रा घट बाकरा बीजी ही सारी वस्तु बासण देगचा चरवा सगळा ही मगाया। तद कुंअर अरज करी—खास बरण रेढ़ा[5] आवै छै, हुकम जे हुवै रेढ़ा मार ल्यावां। गोठ रो सवाद[6] तो रेढ़ा ही छै। तद रावजी फुरमायो—दुरस्त बात छै, पण आवतो घणो कर आयज्यो। आगे ही लोक घणो काम आयो छै। तद कुंअर मुजरो कर नै पाग उठाई सो हजार दोय घोड़ां री वाग उपड़ी। जिण में रूड़ा राजपूत तिके स्वर्ग रा उतावळा बैकुंठां सोधारू, अवधा बिरदां रा वहणहार[7] तिणां री वाग उपड़ी। कोस दोय-तीन ऊपर जावतां वे मूंडण रेढ़ां नूं पाड़ लिया। इतरै मूंडण वडा रेढ़ा रै मांथे में तिणो मेल्हियो और कही—

मूंडण मूंडी नह चले मा पिह भोपै रेह।
तिण सू पहला ऊपर दूं दंद[8] मचावै सोह॥

---

[1]तेज धार [2]युद्ध [3]गए [4]लिए [5]सूअर का बच्चा [6]स्वाद
[7]युद्ध और कीर्ति की राह पर चलने वाले [8]द्वन्द्व।

कही—रावजी भूखण भाई। रावजी कही—सावधान रह्यो देखां भूखण कासू करै। तुरत भाव मतां घासी। इतरै में भूंखण चाली सो ऊठै झाझाळा नूं दाग दियौ तीं ठाव भाई। पारवती सूरजकुंड भाई, स्नान कियौ सूरजनारायण नू प्रणाम करि, भाय उण चिता दोळी च्यार प्रदक्षिणा कर सूरजजी नू मुख ऊंचौ कर भर्व वेय कही—बार-वार झाझाळौ नवि पाऊ। इतरी कहि चिता मांही गरक[1] हुई। रावजी देख नै घणी प्रसंसा करण लागिया।

इतरा में अलकापुरी सू विमांण बैठ यक्ष आइया। वै पण लागी देह भर अगरो सू निसरिया सो विमांण मांही जाय बैठिया। सगळो साथ देखै छै। अपणो इचरज मान छै। सब बडाई करै छै। इतरै यक्ष सरीर सू झाझाळौ कहै—सगळा साथ सूं म्हारो रामराम छै। साबास मोटा राव थारै बिना मोनू सराप सू मोख[2] कुण देवै। श्री परमेसर थारी जै करै। थारो घणौ प्रताप हुवौ। थांरा राज में विघन[3] उपद्रव कदे मत हुवौ। रजपूत जिको इण तरह काम आसी आपरै धरम में रहसी सो इण भांत विमांण बैठ सरग सुख पायसी। सूरजमंडळ भेदसी। देह में नेह कदे नह राखै या अमर नहीं छै तिणसूं ई देही सूं जसो होयज-करज। जस सदा अमिट रहै छै तिणसूं माया मोह छोड जस प्राप्त करणौ व धरम रो संग्रह करणौ परोपकार करणौ।

इतरी कहितां विमांण लोप हुवौ। पछै रावजी गोठ जीम सारा ठाकुरां रो लोक भजाय सुख बखत होय बैठिया। जिका सरदार लोग काम आया था तिकां रा भाई-बेटां नूं घोड़ा सिरोपाव तरवार, मोतियां री माळा देय मांन कियौ। घोड़ा तीन सौ बकसिया घायलां नूं तरवार-सिरोपाव दिया सो सातसौ तरवार बगसी। रुपिया प्रह हजार पटावभाई[4] खरची रा दिया। उम्मीदवार काम आया त्यांनू पट्टो जागीर दीवी। खास चौकी मांही राखिया। बडी महरबानी कायदो कुरब मुसाहिबो दियौ। पछै सादियाणा बडा राव बीसलदे घरां पधारिया। कवीस्वरां गुणिजनां मगतां नू दान दिया। ब्राह्मण जिमाया। आसीस लीवी—

> सुर नर नाग न घटियां छेक छिहरियाह।
> जसपुरिया परवांणा ज्यूं गह्यो ऊबरियाह॥

अेकल बाराह झाझाळ री बात समाप्त।

---

[1] समाविष्ट [2] मोक्ष [3] विघ्न [4] जख्मों के इलाज के लिए।

किसनागर, भागराई, मरोडी मुहरलोलो लाभ तिण भांत रो कसरियौ[1] पोतां ओळियौ मनुहारां हुवै छै।

ममभी सवाय उगावण रै पगां भावजी रो नीपनो तिजारो ओटियां मांही नै खोपरा-चळ[2] रो इगतीस वाजीरो तिण पियां पाछै महीनां रो ओही टाह रहै। मापूंमाथ कालपी[3] मिसरी मिळायोड़ो कोरी गागरां मांहीं भाभियां भर्या रामेस्वरा रै मुंहड़ै आगै मनुहारां सूं पामजे छै। ममभां री बरसां री मनुहारां होय छै।

उठी भाबूजी री सळहटी जाय नै भूखण विचार कियो—आमा पूत मरिया छै। डाढाळा सरीखो साथिव मर गयौ। इण सीसूं जीवणो छै। तद पावबें रेढा नूं कहण लागी—तूं सापुरुष छै। सुघण वीर सूं उपजियौ छै, तींसूं थारा बाप सरीखो होय और राव सूं बेटो[4] कर। इणहीज भांति इणहीज धरती मांहि आगेहू बाड़ करे। बळ रा काम करे। विमरजे मतां। भूखण कहै छै—

सो सपूत जे पीछो राखै सुरजन हीण करै ना साखै।
बैरा तिणा बिचारै बेहा सो आमा ही मरणआमा बेहा[5] ॥

रेढो कहै छै—

तूं माता निस्चित रह मन मांह मत कर सोच।
राव निजिती ना करू करे न छाडूं मोच॥

जो मगु थारा भूमिया थवां भंजूं मोख।
तोनै भली कहाडस्यूं डाढाळा री भोग॥

इमा वचन सुण तन री प्रफुल्लतता देख भूखण कही—

समर अमर थिर थीवणो रहज्यो विजदेवीग।
मेम कहै मति हरख[6] मो देख बड़ी भासीग॥

इण तरह कहि भूखण परवत सूं उतरी और विचारी—अ मोनूं तो डाढाळ रो माप मार मार मिळ मही तींसूं इण ही हाल बीरो माप करणो छै।

आती वेळा तो च्यार घड़ी लागी थी पण इण सतवकी अब ही भड़ी मांही माम पडु थी। उठ गारा माप रा रामजी रै पाति[7] बैठा छै। सब रजपूतां

[1] अफीम [2] खोपरे के रस जैसा [3] एक प्रकार की बढ़िया मिश्री [4] पुत्र जैसा [6] हर्ष [7] भोजन की पंक्ति में।

परगना नागरा रै गिरद रा दिया। वतन में नागोर।

तद मुत्सद्दियां अरज कीवी—अेक वार नागोर पधार मुलक मे लोगां नूं पटो देय फेर हजूर पधारज्यो। तद कही—थे जावो गांवां रो उतारो कर ततास मलज्यो तिण माफिक लोगां नू पटो मेल देस्यां सो सारो बरतव[1] कर दियो। आछी जमीरत कीवी। लोग सारा आप आपरी जायगां बांधी। लोग सबळ हुवो। इसरै में चांपावत बलू गोपाळदासोत अर नारसिंह जोधपुर छांडि सुरताण जावण री सूरत कीवी। तिण पर अमरसिंहजी रा मुत्सद्दियां जाय वात कर अमरसिंहजी नू लिखियो। उठा सूं पटो हजार तीस रो बलू नू हजार पनरह रो नारसिंह नूं आयो। अे नागोर आया। कूंपावत ऊदावत करमस्योत रतनोत जोधा सारा ही आया सो नागोर मे अमरसिंहजी थाम लिया[2]। आछी तरह खातिर सूं राखै सो लोग सागे राजी। तिण में अेक दिन अमरसिंहजी रै खमण री बकरी जायस खासे मांही मेली थी सो कछवाहां रा कोई मांग'र ल गया। दरबार नागोर में हुवो छै। मुत्सद्दी से बैठा छै। बलू पण दरबार में छै। उण वखत आय कूक चाली । तिण वळा मुत्सद्दियां कही—सारा चढो। हाकम चढियो बलूजी आप असवार हुवो तद बलू कही—धणी ही बकरी-टाटी जासे जिण पूठे कासूं चढां? खोटी आसामी बाळा चाढ देवो म आसी टाटी धणी ही छै। टाटी रो कासूं। तब मुत्सद्दी रग फोड[4] कही—ठाकुरां पटायत चाकर[5] दरबार रा थो आ कासूं कही। अठै तो बकरी म्हांरै भावें हाथी छै। ठाकुरां किसे दिन हाथियां रा भरा मांडस्यो। इतरी सुणत मुवां बलू उठियो अर कही—जिण दिन हाथियां रा घेरा आयसी उण दिन हीज आस्यां। ऊभो पटो छोड बाहिर हुवो। पूठ[6] माणस गया अणोही कहियो पण रहियो नहीं।

आगरे बादसाह कन्है गयो। उठै नव सदी रो मुनसब हुवो। चाकरी अव्वल तरह करी। आछी तरह रहै। कनै का लोग नूं अणीपाणी[7] सूं आछी तरह राखै। अमरसिंहजी वार दोय चार कहायो पण आयो कोई नहीं। इण करतां बरस दोय-तीन मूं बादसाह रो कूच लाहोर नूं हुवो। सो लाहोर आयो काबल ऊपर मुहीम[8] करी। तिण पर नवाब मोहबतखान नूं विदा कियो। डीला

---

[1] इन्तजाम [2] रोक लिए [3] फरियाद की [4] गुस्से मे आकर
[5] जागीर वाले नौकर [6] पीछे [7] इज्जत [8] सेना का पड़ाव।

मनसबदार साथ जमा किया तिण में केसरीसिंह जोधो हजारी रो मनसबदार थो सो उहां सूं पण तैनात कियौ। सो नकीब[1] कहि गयौ—तुम नबाब रै काबुल कूं तइनात हो सो तैयारी करौ। तद केसरीसिंह नकीब नूं तौ क्यूंही कही नहीं अर परभात नूं बक्सी सलाबतखां कन्है गयौ अर कही—मूजी आयगां मसौ तैयार छां। काबल री माफ करौ। तौ सलाबत खां कही—जो बादसाह रा हुकम ई तरह का ही जो है तौ और कैसी बणां मेमें। तुम बादसाही नोकर हो खाविंद फुरमावे वहां नौकरी करणो। फर केसरीसिंह कही—नौकरी तौ नामुकर नहीं पठै फरमाई जाय उठ जावां काबुल माफ करौ। तौ बक्सी कही—काबुल क्या है जो तुम कबूल न करो। इण कही—म्हांकी अटक[2] यहै छै सो हिन्दू नूं मना छै, तिण वास्ते अरज छै। तौ बक्सी कही—हिन्दू तो इण साथ में बहुत हैं उनने तो किसी नै नाहीं नहीं करी तुम कुछ उनसे अलग हो क्या? तौ फर कही—थांरै मन में गिलानी नहीं मेरे मन में है इणसूं माफी करौ। बक्सी कही—तुम जैसे नौकर हजरत के बहोत हैं मैं किस-किस कूं माफी करूंगा। तुम तौ तैयारी करौ। इण कही—अटक तौ उतरणी आवै नहीं और जिस तरफ चाहो हाजर हैं। तौ बक्सी कही—ज तुम नहीं उतरोगे तौ मुनसब उतरेगा। इण कही—मुनसब खाविंद के हाथ है, चाहे सो करौ। म्हांरो धरम म्हांरै हाथ में है सो राखसां खोवां नहीं। यूं जवाब-सवाल बहोत हुवा। तीं पर केसरीसिंह मुनसब छोड डेरे ऊठ आयौ। तिण पर चारण कही—

कळाहरो[3] बगसी कन्है जीपण[4] बंध भाराथ।
केहरी[5] अटक न ऊतरै साहजहां रै साथ॥

सो नबाब चढ गयौ। केसरीसिंह बैठ रहियौ। मुनसबत तागीर[6] हुवो। जद अमरसिंह नूं खबर हुई जो केसरीसिंह नबाब रै साथ[7] कियौ थो सो गयौ नहीं तिण सूं मुनसब तागीर हुवौ। तौ अमरसिंहजी केसरीसिंहजी रै डेरै गया। अठै च्यार गांव थांहरै म्होंडा आगै छै, थे उठै नागोर पधारो। सो बड़ा ही गाढ सूं केसरीसिंहजी नै नागोर भभिया[8]। हजार तीस रो पटो गांवां मोहीट बगहरा

---

[1]जाति विशेष का व्यक्ति जिसका काम बादशाह की सवारी के आगे आवाज देते हुए चलना होता था [2]अटक नदी [3]कला रायमलजन का [4]बंधन जीतने वाला [5]केसरीसिंह [6]जब्त [7]तावेदारी में [8]भेजे।

लिख दिया अर रिपिया दस पाळी रा कर दिया और लिख दियो—थाहे अठै हवेली नागोर में सरकार सूं करा दीज्यौ। नागोर रो बापरो आपरै हाथ छै। सो केसरीसिंह नागोर आयो। गीनाणी ऊपर हवेली कराई, अठै रहै। गांवां भोग रहै। असवार पचास कन्है रहै सो रिपियो आधो घोड़े री लारे पावै।

उण दिनां में कछवाहा अर माडखामी नागोर मूं उधाड़ करै। तद केसरीसिंह मागव लाडखामियां नूं राजजी कन्है मसिया—थे थे मोटा सगा छो ठाकर सो उधाड़ माफ करो। जे कोई भूखो छै तो अठै आवो। अठै पांच सेर जवार छै सो बांट खास्यां पण उधाड़ मत करो। तिण पर मास अेक तो कोई दौड़िया नहीं। पछै एक दिन बोधी सिवदड़े रा मांगर भेळा होय दौड़िया[1] सो एक गांव रा अे सौ बळध लेय गया तेरी कूण आई। तद केसरीसिंह रसोवड़ो करायौ जीमियो। इतरै में सहर रो लोग लोबणी करखे आम्यो। लोग बजार में आयो थो सो सुण गयो तिकां आण कही। आप सुण चुप रहियो पछै चढियो सो आपरै पटे रै गांवां मांही करतो[2] निसरियो। लोकां नूं कही—सताब भेळा होय आयज्यो हूं आगै जाऊं छूं। यां गांव सूं आध कोस ऊपर जाय डटज्यो। आदमी अेक मेरे कन्है मेलज्यो।

सो आप सारा असवारां सागै सिवदड़े गांव आया। कोटड़ी जाय राम-राम किन्यो। कही—स्याबास[3] मोटा सगा भली किरपा करता हूं तो थांहरे आसग आयो थो तीसूं इतरी अरज लिखी थी सो भली पीठ[4] राखी। इब थांहरै घरणी छै। म्हारी आयेरी राखी[5] सो निराठ[6] नरमी[7] दीवी। तद कुम्हार रै डेरो दिरायो।

पूठै कछवाहा मसकरी करणै लागिया—जे इण रै भरोसे इतरा दिन निकमा रह्या। तो अेक मडरो थो उण कही—मोटो सरदार छै, जे इतरी नरमी देवै छै तो मारा[8] परा देवो। गोठ करो। तद केई कहणे लागिया—जे थांसमा[9] दिन बैठा रहिया तिण रा धोका[10] आवे छै। इण बांमण रो मुसाहियो किन्यो। अठै तो इण राजा ही गरीबां रो पाळ[11] छै। अक कही—राजा में तो माग रो

---

[1] लूटने को रवाना हुए [2] हाजर [3] शाबाश [4] मदद रखी [5] इज्जत रखी [6] बहुत [7] विनयता [8] बैर [9] विपदे [10] पश्चाताप [11] वामन बाना

लायजे छै। इणनू पटो दियौ जितो आपांनू देवै तौ खबर पड़ै। कोई सींव मांही कर तो नीसरै। सो कछोटियो लोग लोछा आपका बोल बोलै ठठोळियां[1] करै।

इतरा में सम्या पड़तां अेक आदमी आय कही—आप सारो टीका पूठै चढ़ी छै। तद केसरीसिंह मांणस नूं पाछो मेल आप कमर बांध आदमी पचास सू कोटड़ी आयौ। सारा सरदार आंण भेळा हुवा। तौ केसरीसिंह कहण लागियौ—थे मोटा ठाकुर छो डांगरां[2] रो बाप क्यूंही नहीं छै, आपां भाट ममत नूं ही उठाय देवां छां। थां सीनूं बकसावो[3] आगी मतां बांधो[4]। हूं तौ सगा आंण बाहिरै आसंग ऊपर पहर तीन परणो दियौ। हम आवां छां। तौ कछवाहा मजाक करणौ लागिया—थे ठाकुर टीको खीचड़ो करावो छां थां आवो मतां। परभात बातां करस्यां। कोई करां भूखा था जे त्यारा सो केई अेक तौ राज सू विराज्यां बाकी तौ लोग भूखो थो सो ले गयौ। इम करतां गांव में लोग बोलियौ—कुण थो जो साथ केरो? इसो रोळो कोटड़ी सुणियो। लोग देखणे नूं ऊठ्या। इतरै में केसरीसिंह चढ़ पड़ियौ[5] सो सरदार बीस-पच्चीस बैठा था सो तौ कूट नाखिया। अहदो हुवौ ज्यो पहलां ही उठाय आया सो आदमी न्हासता-भागता मारिया। गांव का लुगाई टाबर सारा भेळा कर कोटड़ी में पड़सालां भूंसड़ा था तिकां में दिया। गांव सारो लूट लियौ। सारो धन सूं पूर हुवौ। आदमी हजार तीन दिन ऊमटा आंण भेळो हुवौ केहर पाडियौ। परभात चढ़िया सो गांव हुवौ बळ जाय मारियौ। पछै बीजा गांवां नू पासरणा छूटा सो वित्त[6] सारो घर ले आया। गांव दोय री सो जमा ऊठण दीधी। इसी तरह केसरीसिंह कछवाहां लाडखानियां ऊपर बाह वाही। नागोर आया सारा सुपारस कीवी टका दिया जवान दिया—उजाड़-बिगाड़ रा।

अमरसिंहजी कन्है कासिद[7] गया सो सारा समाचार मालूम हुवा। उठा सूं हाथी घोड़ा सिरोपाव मेल्या बड़ी निवाजस आई। राजा राजी हुवो। अमरसिंह रो आपस मांहे रस नहीं। बकसी रै जसवन्तसिंहजी सूं इखळास सो अमरसिंहजी सूं बात-बात में गिलो करै। बात अमरसिंहजी ही सुण पावै तिण सूं आपस में खिप लाग रही।

---

[1] हंसी मजाक [2] गाय-भैंस आदि का [3] बख्शिश करो [4] मुहावरा—बात को आगे मत बढ़ाओ [5] निकल पड़ा [6] गाय-भैंस आदि पशु-धन [7] पत्र-वाहक।

इसरै में नागोर और बीकानेर आपस में कजियो हुवो—गांव जखाणियां बावत सो नागोर री फौज भागी। बीकानेर री फतह हुई। केसरीसिंह जोधो काम आयो। करण भापतो चांपावत काम आयो। गोयंददास जगरूपसिंह मेड़तिया बिहारीदास गोकुलदास उदावत हरीसिंह माहेसिंह मोपतसिंह करमोत केतसी रायसिंह भखेराज करमस्योत सेखो पाताबत जसो चारहट इतरा तौ नामी चीजो ही घणो लोग काम आयो। साथ बुरी तरह भागियो। तद चारण दोहा कहै—

सिहमल सिमकिया[1] करसट कूंचिया
कटणा हुई न हालोहाल।
सेजा पुत्रनखाल धमोसरण[2]
रोपी पग विकारण[3] माल।

सो आ खबर अमरसिंहजी नूं गई सो सुणत सु आ काळी मरट[4] हुय गयी। हाथ पटकै दांतां सूं हथेळी नूं बटका भरै, कटारी सूं धमियो फाड़ नांखियो। जे म्हांरी घणा दिना री सधी[5] आजम बीकानेर रा खाली कर दीवी। मैं तौ इहां नूं जोधपुर रै पगां[6] सचिया था सो इमैं जोधपुर री भाख[7] तौ चूकी दीसे छै। मुत्सद्दी अमराव हजूर री मीरख जमावै परचावै पण अमरसिंह तौ नावळै री सी बात करै। आठ पहर तौ मामारम्भ[8] बाळी न बैठो। पछै सारा हठ कर नीठ बाळी पर बैठायो। असर छूट गयो। सारा नूं कहै—नवाब कन्है जावो विदा करावो के हूं बिना विदा चढ़ जायस्यूं। वकील सू छाकीदी करै—के मोनूं हर भांत कर विदा करावो। लोग कूक करै—आज तौ नवाब मिळिया नहीं आज मोसर[9] सामो नहीं।

सो इस रात इण तरह नीसरी। मुजरै नूं जावै नहीं। लोग अरज करी—मुजरै नू पधारो। दिन घणा हुवा सो माके सू मुजरै नू लय गया। उण दिन सलाबतखान बकसी नहीं आयो दीवाण आयो थो उण सू कही—रावजी विदा री अरज करै छै। जणा दीवाण कही—बकसी नूं आणे देवो। उनसे कहके अरज करावग। अमरसिंह कही—उबो तो वकील छै, काहेरो बकसी छै। उणनूं सोंक[1] चाहिजै सो म्हारै पास नहीं। तद दीवाण कही—बादसाह का म बकसी

---

[1]बिखर गये [2]लड़का [3]नाश करने को [4]गुस्से से काला जमाई हुई [5]लिए [6]भाषा [7]महत्त्व [8]अवसर रिश्वत।

है तुम मोटे सिरदार हो तुमकू यह न कहणी चाहिजे। या बात सलाबतखांन सुण पाई।

अेक दिन बक्सी बादसाह सू अरज करी—अ अमरसिंह बार-बार विदा की अरज करवाता है सो हजरत की कैसी मरजी है ? जद बादसाह सलामत फरमाई—हम तो इनकू आगे एक-दोय बार कही—के तुम देस जावो सो अब तो कबूल ही नहीं करी इब क्यू अरज कराता है। तद सलाबतखांन अरज करी—अे फिसादी है। बीकानेर रा गांव था सो दाबता था। उण दाबणै नहीं दिया तीं पर फौज कर उन पर गया। इनकी फौज सिकस्त खा गई। हजरत की किरपा से बीकानेर वाळ की सही जीत रही। तींसू विदा मांगता है अ उहां पर जाय फिसाद करसी। इनकू विदा होगी उस वक्त बीकानेर का राव बिना ही सीख चढ आवेगा। उनका वकील हमसा मेरे पास में आता है सो इस तरह अरज करता है के अमरसिंह कू सीख देवो तो हमारे तांई[1] ही सीख देवो। पीछे बिगड़ेगी सो आप मालूम होवेगी। सो इस तरह फिसाद है। अब फिसाद की मरजी हो तो सीख दीजिये नहीं तो मना करिये। तो बादसाह फरमाई—मना कर देवो। अभी काहे को सीख देणी है।

बादसाह री रुख देख सलाबतखांन आपरै डेरै आ गयो। दूजे दिन वकील नू साथ ले'र अमरसिंह रा मुत्सद्दी सलाबतखांन रै डेरै गया। कही—अरज कर विदा करावो। तद नबाब कही—इस तरह कैसे विदा होगी। बादसाह सलामत के नौकर हो सो मनसब जागीर पाते हो। मुलक निकम्मी और सीख कीवी सो तो चाकिर-चाकर का इरादा नहीं। रावजी की क्या तरह है। तुम सब उनके घर के मुत्सद्दी हो बुजुर्ग हो क्या इसी तरह सीख होती है ? ता' इहां आय अमरसिंहजी नू कही नबाब कहै छै—मुस्ताय आवो मैं बादसाह सलामत री मरजी देख अरज करसू तुम काहिल[2] मता करो। तद अमरसिंहजी नाराज हो इहां नू आवळ-सावळ वचन कहिया। बक्सी नू पण आवळ-सावळ बोलिया। कही—का तो बा परभात सीख करावो छो नातर[3] हू बादसाह सू रूबरू अरज करसू। विदा तो होयसी। तद फेर मुत्सद्दियां अरज कीवी—जे आप अरज न करो परभात में नबाब नू कराय फेर अरज करस्यां। राव नू ठंडो पाय पै

---

[1]लिए [2]ढंग [3]नहीं तो।

सगळा व्यास गिरधरदास रै डेरै भाइया कही—व्यासजी महाराज रावजी तौ बिना म्हेई ग्रौर बकसी सीख देवै नहीं। अरज करां जद क्यारी-क्या[1] कही छै सो आप महाराज सूं अरज करो ज धीरज भरै। आपरै अरज करणै सूं ही धीरज होयसी। तद व्यासजी कही—ज तौ परभात नवाब री तरफ जायस्यां हूं अवसर पाय अरज करस्यूं। सो परभात व्यासजी रावजी नूं सेवा करावणै पधारिया। मुत्सद्दी वकील सारा नवाब रै डेरै नूं हालिया। व्यासजी सेवा में बैठा रावजी नूं कही—सारा मुत्सद्दी नवाब रै जावै छै सो आप इतरी काहिल न करै। बकसी री रुख तौ आपनूं मालूम छै, अवसर सूं सीख होयसी। अबार तौ बकसी सीख रो उत्तर ही दियौ छै। आप बार-बार मांणस मेलो छौ सो आछो नहीं लागै छै। अमरसिंहजी इतरी सुण'र कही—व्यासजी बात भाडा दिन जावै छै। व्यासजी कही—दिन कोई नहीं जावै। माम्हाँ आपां पांच मांणस आपरा करस्यां क्यूं बादसाह कन्है मदत लेस्यां। तद व्यासजी री अरज सुण मुत्सद्दियां नूं पाछा बुलाया अपघीच सूं।

पण अमरसिंह रै पेट में बात मावै नहीं सो महिना ग्यारह तौ निसरिया[2]। सलाबतखांन अरज करी—जे राव फीळ[3] करावणी न देवै ग्रौर पण लाजमे रा जबाब-सवाल न करै। तौ बादसाह फरमाई—फीळभराई लेवौ। तद गुरज बरदार मेलियौ सो आय कही सो अमरसिंह रा मुत्सद्दियां सुण गुरजबरदार नूं सीख दीवी। पाछलै पहर अमरसिंहजी जागिया जद अरज कीवी—जे टका फीळ-भराई रा मांगण नूं गुरजबरदार आयौ सो मो सुणतां ही आग लग गई। कही—मिथ्र रे सिर पगी वहै छै। टाळो तौ घणौ ही कीजै छै पण नेट सिर मसियां रहसी। इतरी कह सवारी री तयारी कर बादसाह री हजूर पधारिया। रात रो वखत थो गोळखाने में जाय मुजरो कियौ। आबमो तेरह माथ छूट था सो पहली कपोती छोड दूसरी कपोती बैठा छै। अमरसिंहजी भीतर जाय खड़ा छै। सलाबतखांन साम्हे खड़ो छै ग्रौर पण लोग खड़ो छै। इतरै में अमरसिंहजी नूं देख खांन कही—रावजी फीळभराई रा सरंजाम करो। अमरसिंहजी कही—फीळभराई री तौ दीसलै पण थांनूं इतरा दिन कहतां हुआ ज अरज कर सीख दिरावौ सो थांसूं इतरो ही काम निसरियौ नहीं सो

—

[1] कुछ भी कुछ [2] निकले [3] हाथी [4] जाएगी।

म्हे तोनूं जांण रहिया । हमें तोनूं नहीं करस्यां । आके[1] अरज करस्यां । इतरी सुण सलावतखां नाक चाढ़ बोलियो—रे गवार किस तरह बोलता है ? इतरी कहतां जांण नै अमरसिंहजी ऊभा था तिकी जगां सूं सनक जाय खान सूं भेळा हुई गया । कटारी दीन्ही सो मोटे पेट में हाथ तक गरक हो गयी । और कह्यो—पाजी मुह सूं सांभळ बोल ! यूं कहि फेर दूजी दी सो मियो तौ हक होय[2] गयौ । जाव साहजादो वाग सूकर दोनूं ऊठ ऊभा चढ़िया । लोक सड़ा था सो राव री सुसामदी कर डपोड़ी मूं चलायो । साहजादे ऊपर सूं कहियौ—हरामखोर जाणे नहीं पावे । तद गौड़ अरजनदास विठलदास री सली थो सो अरज कीवी—जामी हाथ छै । तद साहजादे ऊपर सूं तरवार झसाई[3] सो लेय गौड़ आय पहुचौ कहियौ—रग छै[4] राठोड़ थां विना हिन्दुवां री मरजाद[5] सरम कुण राखे । यूं कहि जाय पोंहच्यो सो डपोड़ी मांहे निसरतै नै वाही सो लवे आय लागी । पड़तां कटारी वाही सो अरजन रा कान रै लागी ।

अमरसिंह गजसिंह के करी अचळ राठौड़ ।
कान वाड़ लूको कियो दुनैमार पै गौड़ ॥

इतरे बीजी तरवार वाही सो वाड़ नासियौ । उठै सूं झोळी में जास बाहर भांणस था उहांरे म्होंडा आगे आण नांखियौ । खिड़की जड़ लीवी । साथ रा मांणसां देख कही—ओहो आज तो म्हारो खावंद[6] वारह हजारी हो आयो सो बाहर एकठ लागिया । तद कहणै लागिया—मसाम उरी ल्यावौ देखां सभाळां । तद सारो लोग ऊपर भेळो होय गयौ—दरबार में बैठो थो सो । फेर इहां गांठ में पाछी तरह सूं वांध बाहर ला मांणसां नूं झलायो और तेरह जणा था सो फिर पड़िया सो इसो रीठ डपोड़ी मांही बजायी सो दीठां ही बण आवै । मियां सलरा सलरा[7] मुनसबदार तीस जणां था तिकां नूं मार तरह मे ही काम आया । तिण तेरह रा नाम—गोरधनदास इन्द्रसिंह चांपावत मानजसी मनोहरदास ऊनावत स्यामसिंह, रामसिंह कम्हीरामोत मेड़तिया केसरीसिंह, भवरधनोत दलिदास भगवानदासोत कूंपावत जोधो जगनाथ सादूळसिंह महेसदास मेतस्योत अवावत । पांच भाटी—हरनाथ जगन्नाथोत वसू कसोनागोत अमरसिंह भवरसिंहोत

---

[1] अपने आप [2] मर गया [3] चलाई [4] शाबाश है [5] मर्यादा
[6] मालिक [7] अच्छे-अच्छे ।

अमराज सुन्दरदासोत रामचन्द्र, जसवंतोत चौहान गोयददास जोगीदास रामसिंहोत ये तेरह जणां वासां मांहे काम आया। पातसाह सलामत सुण फरमाई—ये हिन्दू बड़ी बलाय थे जिनने इतना जुल्म किया। तद भाट कहै—

साह नूं सलाम करि मरियो है सलावत खां।
नेक न सांमरथो जोध कीनो थीर ठावरो॥
कैतो अमराव मारे गिनती न आवै जाकी।
खेलत सिकार जैसे मृगन में बाघरो॥
कहै मनीराम गजसिंह जू के अमरसिंह।
राखी रजपूती मजबूती सब गावरो॥
पाव घर लोह दे हुवाई सारी पतसाही।
होती समसेर[1] तो कियामतेत आवरो॥

फेर चारण कही—

(गीत साणोर)

बडी ठौड़ राठौड़ अखियात[2] राखण बड़ी।
जोरवर चौथमा जाड़ अमरा[3]॥
दिलीपत सलावत मारियो देखतां—
आयो तिण बार रो रूप अमरा[4]॥
खंडण[5] रा केहरी गमो मूंभर पुर।
मांण तज जपत सोह हुकम मानै॥
पाड़ियो तिको पतसाह री पारखती[6]।
जाम सुरतांण दीवांणवाने॥
हाकवे दिली दरियाव हीलोळती।
कूकवे साह अमराव डाई॥
आमरे लहर इतमाम पड़िया अमर।
मारवा राव दरियाव मांहे॥
हाथ पाट पीहरे दटै हाथ हुय ही दिया।
लोह बहै सोह असमाण[7] लागै॥

---

[1]तलवार [2]अमर [3]अमकी [4]अमरसिंह [5]नष्ट करने वाला
[6]पाग [7]आसमान।

मती हुई तिणनू दाग दियो। इसरै वादसाह सू मालूम हुई—जे गौड़ अरजन री हवेली ऊपर राठौड़ चढ़िया था सो अरजन हाथ न आयौ। राठौड़ बिगड़िया[1] बैठा छै। असू भावसिंह उहां सूं पण आय सामल हुवा छै। कजिये ऊपर बैठा छै। इसरै में सभुमाळ हाडे कन मोमगरो भोजराज जगनाथो और राठौड़ था सो आय मळा हुवा। मड़तियो एक गौड़ कन्ने थौ भोजराज सो पण इहां सामळ हुवौ। पातसाह सू मालूम हुई। तद वलू गोपालदासोत भावसिंह कन्होत नूं कहायौ—जे थे बादसाही चाकर छौ सो थे हरामखोर सूं क्यू सामळ हुवा? तद इहां कहाई—जे हरामखोर हजरत का भी न है पाजी मुह से हजूर में गैरजवान बोलै सो कैसे सहै? यह भी राठौड़ था और हमारा तो खाविन्द था सो हम कैसे पाला खावें। अव्वल में पहलां इण बधारे[2] तद पीछे हजरत ही बधारे।

तद बादसाह सम्मदखान नूं विदा कियौ सो सारो फौज ले तोपखाने लेय हाल्यिौ। इहां नूं खबर आई जे फौज विदा हुई। तद व्यास गिरधरदास मुहता संगारमल प्रयागदास आपस मे बात कर सारा सरदारां नू कही—जे बादसाह सू जग छै तिण में जीवण री जीयम[3] री आस नही। सो आपां तो खाविंद रे पूठे साको करणे ऊपर हुवा। अर सेठ पूठसा इणरी ही जे चाकरी करसी रिजक लेयसी तौ बिना मांणसां कुण चाकरी करसी? किसी तरह रिजक मिळसी? आगै ही बळ फेर वतन बांधजे सो लेखो आंण बणियी छै तिणसू बासलो[4] ही वतन बिचारज अर साको पण करजे। तद सगळा मिळ कही—थां नै प्रयागदास नीसरौ सो सारो सरतत कर लेयस्यो। तद व्यासजी कही—मौनूं तौ खाविंद इण तरह नहीं राख्यौ जे भीमक। अो तौ थे चार सरदार कजियो हाथ समाळ बड़ा रह्यो छौ तिणसू थां सांमळ ऊभौ रहस्यूं नही तौ पण मोसू इण खाविन्द रो सागो[5] छूटै। तद मारा ही कही—जे व्यासजी अो खाविन्द सारां ही नूं वे इसो प्यारो छै। पैसां रा चाकर था सो ऊभी रजक[6] छोड़-छोड़ हीज आया। जे खाविन्द गिराठ आवक सूं राखिया पेट काठा बणाया मारवाड़ री स्हाड़ मिट गई तिणसू इण मांहेलो कांई रहै नही। व्यास

---

[1] पूरे गुस्से में [2] बढ़ाए [3] जीत पीछे [4] पिछला [5] साथ [6] रिजक।

फेर कही—यूं भरज नहीं करू छूं म थां सागी न रह्यो पण कुंवर छै, सखरा परवासुध रजपूत छै, तिकां नूं कुंवरजी मोळावण दे काढ्ज आपां पांच मांणस रहिस्यां सो साको करस्यां।

तद सारां बात मानी। सो आदमी तीन हजार था त्यांमें जीरो किहीं रा घटो थो सो काढ़ियो। मांणस पांच सौ रहिया सो केसरिया करिया। तिण वखत ब्यास नूं फर सिरदारां कवायो—जे थां रह्यो जे मारां री खातरजमा[1] रहसी। तद ब्यासजी कही—म्हारी खातरजमा छै। भाटियार मोसूं चवता छै। थाहरी चाकरी अब्बल तरह सूं करसे। फेर क्यूं कहण-कवावण लाग्या। यूं कहि ब्यासजी मोड बांध ऊभा रहिया तद सारा चुप रहिया। इतर में फौज आई हीज।

सैयद हाथी ऊपर चढ़ियो ललकारा करे छै। इतरे में ब्यासजी कह्यो—हवेली नूं तोपखाने सूं खिड़ाम[2] देयसे पछै लोग जखमी होयसे तो बतरह काम आस्यां तिणसूं किंवाड़[3] खोल[4] नीसरौ। तरवार मेळौ। म तौ आपणे जीव राखणो न कोई उपराळी तिणसूं आपां हवेली मांही खड़ा। तद सभू कही—ब्यासजी सांची कहै छै। आपां इसा नीसरौ सो सागी हाथी आवां। ताहरां सवार मोहेर[5] हुवा पाळा पूठे किया त्यांनूं कही—थ पाधरा तोपखाने ऊपर पड़ज्यो। सो किंवाड़ इसाही जे निसरिया जे मियां री फौज चमक खड़ी रही। चकाचौंधी सी लाग गई। सो सामी हाथी आय लागिया होदे री पेटी रा रस्सा वाढ़ नाखिया अर इसा ही जे फौज में फिरिया फौज सारी गहू[6] लीधी। पाळा तोपखाना साम्हां गया च पलीतो[7] लागे जमां ही नीचा बैठ जावे छूटियां पछै आगे बढ़े सो जाय कर मिळ गया। लोग घणो मार तोपखानो छुड़ाय लीन्हो। सैय्यदखान जहां रो हौदो पड़ियो खान जहां ऊठत रै बरछी दीवी सो संधो[8] फोड़ नीसरी। तद खानजहां होदे नीचे बड़ गयो। सारी फौज रा लोग जखमी हुवो। फौज रो लोग बखतरिये थो अर रावजी रो साथ तौ साके ऊपर थो तिणसूं मागां रै केसरिया बागा था सो घड़ी च्यार लग घणो सी रीठ बाजियो। घणो लोह उडियो राठौड़ मीठ पड़िया[9]। तिण समय

---

[1]विस्वास [2]बिखेर [3]कपाट [4]खाल कर [5]अगाड़ी [6]घेर [7]तोप दागने की आग [8]कंधा [9]पुलिस से मारे गये।

पजाबी नगरवाळो रामदास इणरा ही नामी था। अमू रै साथ रा अर रावजी रै और ही घणा लोग काम आया। वीजा लोग सो मारवाड़ में घणी ही ऊजळी कीवी। सारा ही हिन्दुवां राजा घणी स्याबास दाद दीवी। और ही सिपाही नवाबां रा सारा मुघारस-क्षिपत कीवी। सारो हथियारवध सिपाही हथियार बधती अमरसिंह रो नाम लेय बोषण लागी। बादसाह हिन्दुवां री तारीफ कीवी। सभा पाछी बादसाह हिन्दुवां नूं चाकर राखण री चुप कीवी। अमू मायसिंह बड़ी अखियात कीवी। पछे चारण अमू में कहै—

सिर बांधे मौड़ करे केसरिया[1]
चांपा इम चल रीत चमू।
अेकल्ल अमल रोव बड़ अराधर,
बिहु ठौड़ां परणीज चमू॥—१

पोढी गाळ पुणीअम पावै
लसकर अमर बांखिया भार।
मोहण हरो विचंती भिळियो
साम्हे ले बीड़ा चण सार[2]॥—२

पग तणी तोरण पाबीजे
बड़ बेहड़ा[3] पट टोप विभाळ[4]।
चाला तीर चारती असमर,
बामे अंग चाल बरमाळ[5]॥—३

बड़ा नारद करै बेदोमत[6]
चंवरी होम चटक चढ़ियो।
पिरियो नहीं उधर भत फाटे
फेरा अमल इमा फिरियो॥—४

भाटी छाळ पाढियो भांगे
फाटी रावी सेज फकर।
मामे स्याम करे रार मारू
सूर तणी रथ बैठी सूर॥—५

---

[1]केसरिया बाना पहन कर [2]लोह तलवार [3]कौन बांध में
[4]वरमाला [5]बरोम्बारला [6]वीर [7]भूप।

ठंपो पुर मनपै रही चंपो नावे चीत।
मत कब ही चंपा करे, राठौड़ां री रीत॥

साहजहां पतसाह रै चंपो महा न चाय।
मति बमुचो गोपाळ री ऊठे छाबा माय॥

सो वसु इसा-इसा काम किया सो सारे मसहूर हुवो। पछै राव रासे नूं पातसाह री हजूर ले गया। नागोर चाकरी करी ज मोटियारां रिमझम लियो। बड़ो समरथार हुवो। राव रास भलो राज कियो।

राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री बात समाप्त।

चण्डसा रै राजा द्वारकादासजी रा दोहिता। तीजा कुंवर पदमसिंहजी बूंदी रा हाडां रा दोहिता। चौथा कुंवर मोहनसिंहजी श्रीनगर रा पवार जसवंतसिंहजी रा भाणेज मलससोत रा दोहिता। पांचवां सवामबाळ अनमासी वास हुवौ सो पण बडौ बलाय[1] हुवा। बादसाह औरंगजेब सनाखत हुवौ। महाराजा अनूपसिंहजी बीकानेर रा राजा हुवा बडा परतापी बुद्धिमान था। वांरी बांधी मरजाद सरतत देस-देस दूसरा राजावां राज बांधियौ। इसा बुद्धिमान हुवा सो औरंगजेब सरीसा बादसाह कन्है आपरी साबत राजस सियां रहिया। साढा तीन हजार री मुनसब तौ सासतीक[2] पांच सौ बख्सी[3] सो इतरा परगना सासतीक रहिया—सरसो भटनेर वाहणीवास पूनिय सिवराण धोसाम फतियाबाद अहिसो रतियो अे सारा गांव ठाकुर लोगां नूं पट्टै में दिया था। करणपुरो औरंगाबाद कनला[4] परगना तीन दूजा दिखण[5] में था। सो बडा परतापीक राजा हुवा। बुद्धि रै प्रमाण सूं बडा राह-वेधी[6] राजा हुवा जीरो गीत यूं कहियौ छै—

करे परवाह सुरताण असुरांण सोह करेवा
तेग आगें न कोइ और तोलै।

मांझ दखिण रांण खूमांण जबी पहाड़े
आज हिंदुवाण बीकाण[7] आलै[8]।।—१

देख[9] उतराध दिखणाध पूरब पछम
दुज मन धरम साठी बथ की।

अवढ बोम राह री साह री माने संक,
ताहरी करन छत ओट ताकी।।—२

दूरमो बादवां आछा कमधजा
चलावे चिहु धुज जिकै बाकी।

मान हिंदू धरम तिण साटी मिळै
अनी राव कन्है वास आवी।।—३

---

[1]सूबार [2]हमेशा [3]कच्छवेचीय [4]पास के [5]दक्षिण [6]बड़ा वीर
[7]राव बीकाजी [8]वाले [9]देख कर।

दूहा

डेरा माया खळ सबळ रख पाजर पख कम।
मुरड़े खान असेन सूं उरड़े नहीं अनूप॥

खळभळी दुरती[1] नबाबा वाखिया
धाण कई परमात गहरी सुर गाखिया।
देखत रही नबाब जबाब न दीखिया
राजा आरेभ राम रही क्यूं राखिया॥

दूहा

खान बधारे बीकपुर, मारे खान खुमाण।
राजा सभे पधारियौ राठौड़ा री आण॥

बड़े बड़े नरनाह से न बण संभळी
आलेब हुवौ उछाह नमूझी ऊपणी।
कीरत कीरत[2] बात पिरथि सिर आपरी
मानी औरंगजेब फतह कर आपरी॥

सो नबाब बादसाह सूं हुक्क मिळी। म्हारा वकील पण गया सो मालूम करी। तब जबाब-सवाल सुण बादसाह नबाब सूं रीस फरमाई और महाराज नूं दीवाण जुल्फकार खां रै तैनात किया। सो जुल्फकारखां बड़े मुरतब सूं मुसाहिबे रै साथ महाराज नूं कन्है राखिया। सलाह पूछतौ जिण माफक काम करतौ। सो महाराज तौ इसा हुवा।

बाकी तीनूं ही भाई मुनसबदार हुवा। कोई किही भाई रो चाकर आसकारियो[3] नहीं हुवो। आप नामी हुवा दातार, जूंझार[4] नमकहलाल हुवा। सोळहो गायो यो सो सांचो कियो।

छतर अतास (धजा) करण रा, दातारे दातार।
वीर वीर बळ वाकुरा जूंझार जूंझार॥

जोधा नगर जोधाण रा बीका पूर बबेर।
धारी बादसाही दिये बड हूम बीकानेर॥

[1] जिसने गमन [2] कीर्ति [3] आना एतन वामा [4] जूझने वाला।

बिन ऊगे माथां बिये करहा के कैवांण।
प्रमो विजाई रामसिंह, बांधे कवि बाखांण॥

रतन कुंवर सिर राखियां प्रमो रान मौसार[1]।
कोड़ी मक्खिम करोड़ जुग कर कायम करतार॥

फेर केसरीसिंहजी बादसाह रै साहजादा ही चाकिया। अठाई हजार रो पक्को मुनसब। सो बादसाह साहजहां नूं दारा सुकर कैद कर आप तखत बैठो। तद जयसिंहजी नूं कागदां सूं औरंगजेब दक्खिण दौलताबाद रै सूबे सूं उठाव कियौ। मुरादसाह गुजरात रै सूबे थो तिण नूं औरंगजेब बुलायौ। थे सताब आवौ बादसाही थांरी दारे सूं दूर करस्यां। इण हकरत सूं बेअदबी कीवी। तेरे पगां आया दिल्ली आयस्यां। हूं तौ फकीर छूं सो थांनूं तखत पर बठाण मक्के जायस्यूं। तद मुरादसाह सूंस कोस कर दिल्ली आया कुरान उठायौ आप सांमळ हुवा। तिण वखत में केसरीसिंहजी औरंगजेब रै ताबीन रह्या। ड्योढ़ी कोसियो दिसियो[2] रह्यौ। रातरा सरदारी चौकी फिरता। हमेस मुजरो कर डेरे आवता। तिमो स्याम आवता जद मुजरो करता खड़ा रहता। बादसाह मेहरबानी कर बतळावता। केसरिया कंवर कहिता।

उजीण में जसवन्तसिंहजी बाईसी[3] स देहली सूं साम्हा आया। औरंगजेब सूं लड़िया सो मजकूर रतनसिंह महेसदासोत री वचनिका[4] में छै। तिण वखत केसरीसिंहजी घणा आछा हुवा। घोड़ा फेर दोय तीन मेलिया बादसाह नजरां दीठा। पछै बादसाह जसावत नूं मेल्ह पगे पकड़ाई। आपरै मुख सूं स्याबासी आफरीवाद[5] फरमाय असवारी रा हाथी रै आगे खड़ा किया। जद सूं सदा हाथी रै आगे रहिता। फेर धोलपुर में हाडे मन्न मास रै भाग बाईसी दे दिल्ली सूं मेलिया। कजियो धौलपुर हुवौ तिण में केसरीसिंहजी रै हाथ सूं दोय उमराव काम आया सो औरंगजेब दीठो। घणी दाद फरमाई। आप हाथ सूं कमर री तरवार उण वखत दीवी। फतह कर डेरां पधारिया जिण वखत में साथ डोल दीठो। तीस रै जामा[6] री कमां आपरै हाथूहाथ समाळी। पर दिल्ली दाखिल

---

[1]पखवार [2]निरंतर [3]फौज [4]'जग्गो खिड़ियो' द्वारा रचित डॉ एल पी टैसीटरी द्वारा सम्पादित (Asiatic Society of Bengal) [5]शाबाश [6]पोशाक विशेष।

हाथ मुरादसाह नूं पकड़ तखत बठाण पछै गमेह करायौ। कुरान रो सूंस उतारियौ। इतरै में जसवन्तसिहजी रो उठाणियौ साह सूजो पूरब में ऊठियो। बादसाह रो कूच सूजे साम्हो हुवौ। बड़ी फौज। सगळा राजा लार। सो पूरब में। खजवे गांव राड़ मांडी। सूजे रो वजीर हजार बारह घोड़ां सूं वाग उठाई सो जसवन्तसिहजी कह्यायौ—ये वाग उठाय आवो। फौज में भगी हू घाल दयस्यूं सो उवो आइयौ। ज्यूं जसवन्तसिहजी भागिया सो जसवन्तसिहजी कन्है आपरी चाळीस हजार फौज थी सो सारी भागी। हुरमां[1] हाथियां चढ़ी पछाड़ी नूं चढ़ी थी सो लूट लीवी अर चलता रहिया। चाळीस हजार भाजै जणां हूआ कुण पग मांडै सो सगळा ही भाग गया। सिरफ हजार तीनेक खड़ा रहिया। ओझो बादसाह रै हाथी ऊपर पूठै बैठो थो सो अरज मालूम कीवी—हजरत फौज कैसी किस्त खाई? बादसाह री नजर कुरान में थी सो उणी देखै तो फौज सारी चलती रही। तद बादसाह मुठांगारा[2] तीर काढ़ हौदे में बिगसी किया। हाथी रै पग बेड़ी घलाई। आप गोडी मार कमाण पकड़ी। इतरा में नवाब औरंगजेब औरंगजब कहिजौ आयौ। सो केसरीसिहजी नवाब रै साम्हो वाग उठाई। बादसाह देखै छै। इतरा में नवाब बाहो सो केसरीसिहजी रै आगे राजपूत थो सो टाळ दीवी। फेर केसरीसिहजी दीवी सो दो बटका हुया। पाछो खांच लियौ। इतरै सूजे री फौज भागी। बादसाह रै सादियाना बाज्या। सुजो ती उण दिन रो भागियौ फर जाहिर नही हुवौ। तद चारण कह्यो—

> केहरिया करनसका[3] सुजो भागो पार।
> केहुमी सपने देखसी गयौ समुदां पार॥
> पिड सूजो पाधोरियो औरंग लियो जवार।
> पतसाही रखी पर्में[4] केहर राजकुमार॥

सो इण दोहे री बिही बादसाह नूं खुसी कीवी—ये केसरीसिह कुंवर चारण पास किस तरह कहायसा है? तद बादसाह चारण नूं बुलाय फुरमायो—थैंने केसरिया कवर कू किस तरह कहा? तद चार चारे क ती नटियो पण बादसाह फर गाढ़ कर पूछी पद चारण दोण चाऊ दूहो कहियो सो बादसाह सुण घणो माणगा रै गुणगां परमाई—ज उस रोज तो केसरिया मगा हीन हुवा।

---

[1]बेगम [2]विमेण तरह के तीर [3]करनसिह का पुत्र [4] रखी।

तौ सगळा देखता ही जे रहि गया। मुगलखोरां रो मुह फीको पड़ गयो। फेर एक दिन बक्शी रै नायब बादसाह सूं मालूम कीवी¹—जे केसरिया कुंवर गैर हाजर। तौ बादसाह सुण फरमाई—केसरिया हाजर था। उस रोज तुम न थ। तद नायब फीकौ मुह कर खड़ो रहियौ। एक दिन ग्यारस रै दिन केसरीसिंहजी बादसाह री हजूर मुजरै आवता था। बीच में ढेड-कसाई था सो किसब करै था। केसरीसिंहजी मना किया। वां मानी नहीं। तद कही—आज यांहरै करच होवै सो मेरै कन्है सू लेवौ। ओ काम थे मत करौ। तौ ही नहीं मानी। तद कही—म्हांसूं आगै जावण देवौ पछै थांहरी दाय पड़ै² ज्यूं करज्यो। और गाय थां पकड़ी छै सो उरी देवौ रिपिया बीस थांनूं देस्यां। पण कसाई री बीच जात फर ओरंगजेबी बादसाही सो आंधा हुवा थका। सो मुह सू गैर लवज³ बोलिया और गायनूं पछाड़ी। तद केसरीसिंहजी लोगां नू समझारिया सो आदमी बत्तीस तो जीव सूं मारिया बाकी घायल हुया। इहां नूं मार केसरीसिंहजी हजूर गया। उण दिन कमर बाहर खोल फेर भीतर गया। बादसाह आम खास बठा छा। लोग सारो खड़ो छै। इतरा में कसाई मुरदा मांचां में घास विराको कर आय कूकिया सो बादसाह देख सुण घणी ही जे काळौ-पीळौ हुवौ। आग जद पूछी—कुण खुसम कियो? तौ मालूम हुई केसरियो कुंवर। सो नांम सुणतां ही बादसाह रो चेहरो सफद होय गयौ। सांम्हे देख पूछी—क्यों केसरिया कुंवर किस तरह? तद केसरीसिंहजी सारी वारदात जाहिर करी। तौ बादसाह सलामत रीस कर कोटवाळ नूं हुकम फुरमायौ—अ इन सब कसाइयों को यहां से हटा कर पुरानी दिल्ली में जाय बसावौ। मुरदां मू दफनावौ। सीघो हुकम होतां सांतर कसायां नू हटाय पुराणी दिल्ली में बसाया। केसरीसिंह बादसाह रै इतरा साख्या था सो खून माफ कियौ। सुबा रो काम पेस पड़ियौ⁴ जद सू तीन गुन्हा हमेस रा माफी में था।

फर महाराजा जसवन्तसिंहजी रै साथू कूमो मासायत धारण आयौ सो घणा दिन रहियौ। महाराज घोड़ो फड़ा मोती-सिरोपाव देय रहिया तद सिरायत सू पयो। महाराज जाणियो⁵—हाथी रो देवाळ करणसिंहजी रा कवरां विना कोई नहीं। तौ आन्मी मन् वरजाया⁶। कमो म्हांसूं सिरायते

¹ मन में आए ² मजा ³ पार उतरा ⁴ जाना ⁵ मना किया।

आयो छै, सो हमार तो म ही मयू मता दीज्यो—पदमसिंहजी मोहनसिंहजी जो करे था सो उहां सू तो मांणस मिळ कही। तद दहां कही—महाराज मोटा छै। चारण भाट सू कैसी रीस वाद आपां रै ही सारै पै सिरजिया[1]। मन्नी बात महराज फुरमाई त्यूंही पै करस्यां। और केसरीसिंहजी बादसाह री हजूर था सो मांणस डेरै कहि गयो सो मांणस उठै डेरां पाछले पहर गयो तब कही—जसवन्तसिंहजी इण तरह कहायो छै, सो सुण आप हसिया। बादसाह ऊहीं दिन रूपहरी होदे सू हाथी केसरीसिंहजी नू दियो थो तिण पर सवार हुवा डेरै नू आवता था। इतरै कूभो भोड़े चढ़ियो बजार में साम्हो मिळियो मुजराज कर कही—

केहर राजा करण के मिरजन किया निहाल।
दे छोगला सायरा[2] वे पोढ़ो सुखपाल॥
केहरिया करलेसका तो हुवां बळ बाथ।
जिन्हां वेळ न संपजै[3] तिन्हां दीन्हां नाथ॥
केहर मोर्छे बक्कलां का बावळ सुकाय।
था लंका हाकर हुवै (तो) पथ में देय सुदाय॥

सो केसरीसिंहजी हाथी सू उतर, कूंभे सू बात कर, हाथ अंकुस हाथी ऊपर चढ़ाय आप डेरै पधारिया। दूजै दिन जसवन्तसिंहजी सुणी तद कहायो—थांनू म्हां मने कराया था सो हमार भलो दियो। तो केसरीसिंहजी कही—थे म्हांनू तो गम नहीं कही तो इम मगाय सकू। तद कहियो—मगायो सो जाणियो। तिण पर कूभो कहै—

जरां करां अस छरां छत्र धरां ढिरां,
मनगरां ढळां मांझ मुरां।
भेज बगस केहरी दिया है
देखी मोमरां विखरां सभर, गैण मुरां॥

पेखि मदमर[4] सुभर भयंकर पहुर हर,
कर रज गगण असमांण कर दे।
रूप टगी लखी डरि बन-अपी ठीठरा
ठहक ठठ ठोकरां गया ठरे॥

---

[1]रथ नवै [2]बिछौना [3]मिले [4]हाथी।

करां हर हुरद[1] चीभा धु र्ते करन रा
सोस मद रद हुवा फरद सारा ।

मिलक कमधां तणा धड़ छमर डाहरा
संमरा बीसिया गई[2] मारां[3] ॥

पपम कमास तणी इंद धड़ पांमसे
मजब पाई संकर तुभा[4] नाभी ।

पृथ्वी का नरां की मुरां कहियो परां
जगने सिन्धुरां जमा जांमी ॥

सो केसरीसिहजी पण इसा नातार मानगरा हुवा । बड़ा-बड़ा पवाड़ा[5] दखिण में किया । बादसाह सू अेकरस[6] रहिया । अेक बार बादसाह बीकानेर री फरमाई जद केसरीसिहजी अरज कीवी—बीकानेर म्हांरै ही जे घर में छै । ठीक लायक अनूपसिहजी ही छै । हू तो हजरत रै ही जे कन्मां रहस्यू । सो रोकड़ पण चाकै मुनसब सू पावता । इसी महरबानी बादसाह सलामत री थी । जे जागीर थी सो तो थी ही पण रीझ-मौज अलग पावता ।

मोहनसिहजी अढ़हजारी मुनसबदार था । हजार अेक री और अरज होय रही थी । चाकरी में चुस्त रहता । बादसाह सलामत री बड़ी महरबानगी थी और साहजाद रै साथ[7] था । और पदमसिहजी अढ़ाई हजार पक्की रा मुनसबदार था सो साहजाद रै साथ में ही रहै छै । अेक दिन मोहनसिहजी रै हिरण थो सो छूटो जीनू कोटवाळ पकड़ लियो । तद मोहनसिहजी मांणस[8] भेज कहायो— ज हिरण म्हांरो थांरै आयो छै सो दिरावो । कोटवाळ नट गयो । तद दूजा आदमी कर फेर कहायो । कोटवाळ कयूं'क बाद कर फेर नट गयो सो समाचार सुण मोहनसिहजी गुस्से में होय गया । दूजे दिन साहजाद रै मुजरै पधारिया । दरबारी कचैरी महि जाय खड़ा । इतरै में पदमसिहजी पण पधारिया सोही जाय कचैरी खड़ा रहिया । साहजादो भीतर थो दरबार रो लोग सारो कचैरी में खड़ो छो । तखत बिछ रहियो छो । तद पदमसिहजी बाहर कचेड़ी आय बैठिया । हवासदार कन्है हुक्को मंगायो सो बैठिया आरोगै छै । हाथ में मोटा-मोटा मिणियां री सुमिरणी[9] थी सो काढ़ पाग में घाली । इतरै में कोटवाळ आय

---

[1]हाथी [2]चलने है [3]पीछे [4]लक्षा [5]महत्वपूर्ण युद्ध [6]मिलकर [7]नौकरी में [8]आदमी [9]माला ।

मीतर नूं बढ़ियौ। तद पदमसिंहजी होळ सी साहबावे रै दरबारी नूं कही—जे मोहनसिंहजी रो हिरण इण पकड़ियौ। ईं बखळ दोय-तीन बार मांयस मेल हिरण मांग्यौ सो दियौ नहीं और खोटा-मोटा जुवाब पण कहिया। मोहनसिंह पण बाळक छै। उवै भीतर मूं ख और कोटवाळ पण मीतर नूं गयौ छो थां भीतर जाय मोहनसिंह मूं या कोटवाळ मूं सेय भायौ। दोनू मेळा[1] रहिया आछा नहीं। तद दरबारी भीतर मूं ऊठियौ। तींमूं किहीं पूखे भरख रै पगां खड़ो राखियौ सो उणसूं बात करण लागियौ। पदमसिंहजी फेर कही—जे थां भीतर नूं जावौ। उणनू घड़ी भेक बतळावतां सागी और मोहनसिंहजी अमलां-म्याक[2] था सो कोटवाळ मूं देखता ही बोलिया ही—सेखजी म्हांरो हिरण थांरै भायौ छै सो दिरावौ। कोटवाळ कह्यो—हमारे तौ नहीं आया। तौ मोहनसिंहजी कह्यो—नटो मतां म्हांरो आदमी देख आयौ छै। हिरण खाने रै पूठ्ये[3] छपरे में अेकलो बधियौ खड़ो छै। तौ कोटवाळ कही—झूठा है झक मारता है। मोहनसिंहजी इसो जवाब सुण लाल होय कही—झूठ बोलै सो झक मारै। हिरण तौ मै छोडरणे का नहीं। तद कोटवाळ फेर रगफोड़[4] मैं कही—किसका मुंह है सो मुझसे लगा तुमसे छोकरे बहोत देखे हैं। इतरै में मोहनसिंहजी मूंछ पर हाथ देय आगै मूं साम्हां होय तरवार वाहण नूं ऊंची कीवी। इतरै में कोटवाळ वाही सो साम्हैं मुंह ऊपर झबकी लागी। मोहनसिंहजी वाही सो कोटवाळ तरवार झाली दीवी सो तरवार वाढ़ी टाळ दी। इतरै कोटवाळ रै साळ वाशिमा वाही सो मगर सारा खुल गया तींसूं वह पड़िया। मांहीं नूं महदो हुवौ त्यूंहीं दरबारी दौड़ पड़ियौ और पदमसिंहजी पूठे लागिया। मीतर वड़िया सो कोटवाळ रो मतीजो साम्हों ही वे आयौ। पदमसिंहजी कचहरी रै पावड़सालां चढ त्यांमूं इण जाजम ऊपर मसो थो वाही सो गोडे री ढकणी रै ठाढ ऊपर लागौ तींसूं गोडो निक गयौ दांत रीसा हो गया ऊठिया चढण लागिया। इतरै वागो जो भीजो सो पगां माडो आय गयौ। इतरा में उण तरवार वाही सो माथै ऊपर पड़ी। पाघ र पेच वद सुमरणी जे वाढ़ी। इतरै म आप औभड़ वाही सो उणारा दोय बटका हुवा और आप वागे री दावण सीच पाड़ नाखी। कोटवाळ रिमरणी लागी तद कही—साधु पण मारा हमें

---

[1] शामिल [2] अमल के नशे में [3] पिछले [4] गुस्से में आकर।

जायसे। कोटवाळ तखत रै बरोबर आवत रै बीमी सो दो झटका हुवा। आप पाछो आवतौ मोहनसिंहजी कही—मामाजी हम मारो जाब सो पहोंच साळे रै दीवी सो दोय झटका[1] हुवा अर तरवार मांही नीसर थांभे में लागी सो पत्थर री टुकड़ो दूर जाय पड़ियौ तद चारण कही—

मोहन संभळ मारियौ बीड़ न ग्यो बरियाह।
पौंहचे हम कहियौ पदम सींधू बाप सबाह॥

सो पदमसिंहजी मोहनसिंह ऊपर आय खड़ा रहिया देख'र कहणे लागिया—इसरो मांटीपण[2] थळ रासतौ सो कासूं हुवौ। इसे चोट्र लोह सूं कट पड़ियो आपो नांख दियौ ऊठ खड़ो रहि। मोहनसिंहजी कही—म्हारौ काम तौ निमड़[3] गयौ। आप वैर सब लेसो लियो हमें पधारौ बैरियां पूळो मतां देवो। पदमसिंहजी कह्या—थोनूं छोड कठे जावां? यूं कहि हाथ झाल उठायौ सो ऊठै नहीं। तद नीचा होय थाप घाली एक हाथ सूं सो हाथ घाव मांहि उतर गयौ। तद जांणी जे घाव जबरौ नहीं तौ मोहनसिंह इसा लोहा नूं कासू खातिर में ल्यांणै। तद मोहनसिंह नूं छोड़ नईक तखत री पूठ कान्हीं खड़ा था त्यां साम्हो रोड़क कीनहीं[4]। सो उवे भाग केई भीतरली खिड़की में बड़ भाग ताण दिया। केई पूठ दीवाळ थी सो चढ़ कूद गया। तद चारण कही—

माहर पदम मिकार मर, गय ग्रौरंग वे भीच।
मब सोवळ वोर्ड रवद पड़े हुबंधो बीच॥

पछै आप आय मोहनसिंहजी नूं संभाळ चढ़ियां चाढ़ लिया कचोड़ी रै बाहिर लेय आया। सो लोग सारे इसी नजर दीठा सो सारा पासो खाय गया। आपरा मांणस था त्यांनूं सांपिया[5]। सो गोपाळ मुसाणी चाट साहरण मोहनसिंहजी रो हजूरी थो उण दौड़ अठ संभाळ लिया। पालखी साथै थी तिण में चाय पोढ़ाया। आदमी वीसेक तरवारां काढ़ सी अर पालखी रै चौगिरद लाग गया। पदमसिंहजी सगळा रै पूठे लाग गया। सो डेरां नूं ले बाहिर हुवा। इसरै में गौड़ अरजन रो बेटो असवारी कियां साम्हो आयो। आय पदमसिंहजी सूं मुजरो कियो अर कही—हूं तौ रावरो रजपूत छूं हुकम हुवै तौ साथै बदगी मांहै होऊं। तौ पदमसिंहजी फरमायो—थां सबा से हांडी-चटा छो

---

[1]टुकड़े [2]मर्दानगी हिम्मत [3]निपट [4]सपके [5]सुपुर्द किया।

पाछली काली हांडी चाटी छै। तद गौड कही—हांडी घर रै धणी किन्ही चटाई छै हमें किन्हीं रा होय हांडी चाटी। आप खातिर सुखाळी सूं पधारो काम करिमे याद करस्यो तो चाकरी में हाजिर छां। सो गौड इसो रंग दीठो तीसूं पाछो सा पूठो परो गयो। तिण वेळा री नीसाणी चारण गोरधन मकनीवासोत यूं कही—

> झळ साका अचरेग तखत इम हुआ उचारे
> विसा चढ़ु रह चढ़ विसी मुशिया पहसारे।
> हिरण हिरण होत बहु वा पर नैक विचारे,
> मेल्ह अनीस मंगाविया कोटवाळ नकारे।
> पाजी सम घर सावधे[1] पंत पुजा तारे,
> मोहन कुस्से बीखिया मने परचाया प्यारे।
> बाबी टळे न हाळिया घणा मही माचारे,
> मुवे करण हरखिया[3] तिखिया सधियारे।
> तद न हुवे करनेस का मुजरे नुं पधारे,
> बंध कतीसे बाजबी मीर रहत महंकारे।
> भाग दुनी साहिब इसा मयमसा चारि,
> बेठा चचरी चारिया हुम मिचरां च्यारे।
> तामें चटके मामले द्रुं सभा संमारे,
> कुबधी क्या बाने किया मिया मन हारे।
> के गुनियार गुमेस कहि बकवाद बसारे[4]
> तामें कयेठी कड़किया झळ चोठी धारे।
> कहि कुल बांसे बार बार, कहि बारोबारे,
> सुन सांम्हे बाये मोहन सर सोह सकारे।
> पेल इसो अवसर, पदमसिंह कर साचारे,
> इसा सवेगा[5] ऊठिया मेरु मदमाण समारे।
> मेर[6] सतो मढोम मन कहि मघन मचारे,
> सो बहि बाहि संबाही साह मचसाण बिचारे

---

[1]धन विशेष [2]कहते [3]हर्षित हुए [4]बढ़ाते हैं [5]शीघ्रता से
[6]सुमेरु पर्वत।

मेक हुआ मोमण हणे जम बीज विहारे,
कीधा तन तरवार विशुध कर सुत उवारे।
मुख बाणी पढ़िया मुमल पसह हसी उचारे,
बपनीय पूरे पूठ्यी भर पड़ लोह मपारे।
वामा कट तन बंकिया मन[1] देख विचारे।
राजा पण साचा रहे हरि है रावण हारे।
भरि पाड़े बढ़िया हसा बहु विसा विहारे,
तब सब भाये भाप भाप मह ताप सचारे।
गोसल जाने के मया पुरुता के बीमारे,
धड़धड़ बरसाया किता हड़बड़ हाकारे।
किता कटक्का[2] कढ़िया चड़ चड़ चमकारे,
सड़ा बड़ा पड़िया किता ढ़ माथे धपणारे।
हुवो जम पोयम[3] इसो पमा जम भी हारे,
पायां तळ दिया पिसख[4] कुण सके बकारे।
कर जोगी सब बाढ़िया भाम बास मंभारे,
धूरज रता पदम साह राह चरिणारे।
सम किया नरसिंह का हिरणाकुस मारे॥

सो इण तरह सू कटियो कर डेरां मू पधारिया। मोहनसिंहजी तो डेरां भावतां भावतां परलोक सिधारिया सो दाम विराय सोग नू विसासा कर, भाप पुरे मू चढ़िया। बादसाह नू सारा समाचार मालम हुवा। बादसाह सुण उणरै बेटा सू तागीर कीवी। साहजादे नू बादसाह भाप मिसी—यहकी गफलत रखते हो किस तरह बादसाही कुमावामे? यह राठौड़ है जबरदस्त मौकर है इनका मुसाहिबा हमेसा रखणा। पदमसिहजी रै वकील नूं बुलाय'र दिलासा फरमाई। कही—कोटवाळ भी मारा गया मोहनसिंह भी मारा गया। मोहनसिंह के कोई लड़का होय तो हजूर मामी उनका मुनसब बाल रखें। वकील भरज कीवी—लड़का कोई है नही सुणाई कु भासा[5] है। तद पचसदी मुनसब राखियो जागीर बताय दीवी। पछै मोहनसिंहजी रै बेटी भेक हुई सो

[1]दूसरे मन्य [2]कटकाठ [3]अपना युद्ध [4]दुश्मन [5]गर्भ।

छाजा किसोरसिंहजी कोटे रै धणी नूं थी महाराजा अनूपसिंहजी परणाई। पछै पदमसिंहजी वकील नूं लिखी—जे साहजादे री ताबीन सूं पासे करी अर नवाब रै ताब करावौ। तींसूं वकील अरजी कीवी अब सूं नवाब रै साबे हुवा।

अेक दिन सवारी वहतां गनीम आय पड़ियौ। महाराजा अनोपसिंहजी जगाय था सो गनीम हजार पनरह घोड़ां सूं आय पड़ियौ। राड़[1] निराठ[2] भारी पड़ी। लोग सारो मेळो होय गयौ। गनीम छाव घणौ दियौ। तद भीम सलमपोत सवणीरोत महाराज रै मुह आगे खड़ो छै। लोगां नूं छवी ललकारै छै। प्रतापसिंह भीमोत आय कही—ढर्यां मागरी में घर कीवी। हमें मरण बिगड़ै छै। ठाकुर घोड़ा मेळौ[3] क्यूं काम आवां। साथ आपरो नवाब दूर रहियौ। उतराळी कोई दीसै नहीं छै। पदमसिंहजी हराळ था नवाब रै, सो उहांनूं खबर हुई—जे महाराजा पास गनीम आय लागियौ दबाय लिया। तद पदमसिंहजी आय पाछा घेरिया सो पूठ आण दाबी निराठ दबाय लियौ अब गनीम रो लोग भागियौ। गनीम पूछी—कुण छै? तद लोगां कह्यो—पदमसिंहजी आय पड़िया। अणां नाम सुण गनीम पासो आय निसरियौ और कहणै लागियौ—आ बुरी बलाय पड़ी इणां सूं मासिक बचावै। छो सगळा पदमसिंहजी री मरदमी-सिपाहीगिरी जाणै था तींसूं गनीम रौ नीसर पगो हालियौ। तद पदमसिंहजी गनीम नूं मांज पाछा ही जे घिर गया। महाराज नूं उरळाई हुई। तद हलकारा नूं पूछी—गनीम सहतो थको पासो आय क्यूं गयौ कींरा[4] ताब सूं। तौ हलकारा तुरत खबर लेय आय मालम कीवी। गनीम रै पूठै सूं पदमसिंहजी आण पड़िया सो मार विचळाय[5] दियौ। तींसूं ही गनीम भाज गयौ। तद महाराज बहोत राजी हुवा। काम बरां वाखल हुवा। दूजे बार ठाया मांयस मस्ह कहायौ—भाई अकरसी मिळौ। म्हांनूं थांसूं मिलणी रो कोड[6] छै। पण पदमसिंहजी कहाई—थणा ही मिळस्यां हुमार तो माफ करौ। तद थावमियां दबाय अरज कीवी तौ पदमसिंहजी कही—थांनूं गम नहीं छै। मामोजी जाणै छै। तौ इहां पाछा आय अरज कीवी—जे यो जवाब बोल्यो छै। तीं पर महाराज फरमाई—सोच

---

[1]युद्ध [2]बहुत [3]युद्ध में पिल पड़ो [4]किसके [5]पराजित कर दिया
[6]तीव्र इच्छा।

कहै छै। आ कहि आप निसांसो[1] नाखियो। गोगा धणी ही पूछी पण कही काई ही नहीं उणरो चेहरो उतर गयो[2]।

पाछै पदमसिहजी दूसरे नवाब रै साथै हुवा सो अेक दिन गनीम सूं राड़ हुई सो इसी ही अे हुई सो दीठी छो वण आवै। सो पदमसिहजी हरवळ[3] था सो इहां सूं ही जे रीठ वाजियो। आ फेरा पांच ही आपरै डील घोड़ो फरियो। तरवारियां लड़ाखड़ बाज रही छै। नवाब पण लड़ो-खड़ी देख रह्यो छै। पदमसिहजी रै सिर दक्षिणी आय जूमिया छै। पाग ऊपर चोकड़ी तरवारियां री पड़ रही छै। पण अेक भतीत रो दियोड़ी यन्त्र पाग में रहतो और महाराजा करणसिहजी री दीन्ही स्यालियासींगी[4] सदा पाघ रै मांही रहती तिणसूं सरीर री रक्षा रहती। पण पाग वढ़ गई। इसर में आपरो भोग पण आण होय पहुंचियो। सम्वत् साळ रतन महेसदासोत भी सामळ रहिता। बडो हुल्लास[5] थो सा पण आ पहोंचिया। इणरै में रामोजी धोंगसो फौज रो मुदी थो तीनूं पदमसिहजी मार लीन्हो। उद लोग सारो भाग गयो सो फतह कर डेरां पधारिया। नवाब डेरै आयो। वाप माल मिळियो। हाथी अर घोड़ा दोय दिया रिपिया सौ निछरावळ किया डील सारो समाळियो अर पाग दीठी सो बटकी-पटको नहीं हुई छै सो देख चारण कही—

> पग लागा आम आम सिर आयो
> मुगिणी गइ आगी संसार।
> मोटी पाग ऊपरै पदमसिंह
> टूटी घणा बहणी तरवार।
> चांरो भुपत अमर करणावत
> चातुर बहु दिन हुआ अधीन।
> बाजा[6] इसी पापड़ी विहूंडै
> बहराड़िबो नहीं बट चीत।
> मामें आणि उरड़ियो[7] मामों
> फौजां मिरख न कियो फेर।

---

[1] निश्वास [2] मुंह उतर गया [3] फौज के आगे [4] कल्पित पदार्थ जिससे सिद्धि प्राप्त होती है [5] प्रेम [6] चमत्कारों से [7] आग के साथ लपटा।

ते मन्त किमी रै करणावत
मरां बिया सिर बीकानेर।
भली भली सारो जग भाखै
कही न मागी बात कही।
ममत बराबर न मोटा
मोटी पाब संसार मही।

तद नवाब करै आय बादसाह नूं सारी हकीकत लिखी। पदमसिंहजी री घणी तारीफ लिखी। बादसाह राजी हुवो। अेक तरवार अर रिपिया बीस हजार हाथखरच नूं मेल्हिया। फरमान दिलासा रो आयो। आप रिपिया लिया तिण में पांच हजार सब खास रतनोत रै डेरै मेलिया। उवां हां-ना कीवी तद आप डेरै आय दे आया। सो पदमसिंहजी रो सब साथजी सूं बडो इकळास। दोनूं जणा एक जीव दो देह। सो आगे सूं दस्तूर इसो ही छै के जसो माणस हुवै जसी ही सोभत[1] राखै तिणां सूं ही इकळास प्यार राखै। कजिये रो सरदार होसी सो कजिये रो माणस कन्है राखसे। रिजाळा मखण होसी सो रिजाळा मर्दां नूं कन्है राखसी बधारसी[2]। चुगली री चुप होसी सो नामरद बेहिम्मत होसी सो चाडीचुगल राखसी। ग्यानी सरदार होसी सो पिम्बर-ग्यानी माणस परमात्मा कन्है राखसी। सो जगत-सोभत देख सरदार रा लखण सुभाव जाणजे तिणसूं सब साथजी मोटीपणे रो आंक तींसूं पदमसिंहजी बडो इकळास राखै। चढ़ियां-उतरियां डेरां सामल रहै।

बादसाह सलामत पदमसिंहजी रै मोटीपणे रो आंक देख पराक्रम सूं राजी होय सलेसा ठहराया। दखेस खां पठाण पांच हजार असवारां सूं सलेसो। उणनूं अेक दिन पूरे सूं सिकार पधारिया था सो घोड़ां री झळ[3] थी तींमें सूअर जोवण नै लोग सारो खिंड गयो। जोवतो फिरै छै। इतरै में आपरै मुंह आगे अेक सिंह नजर आयो। सो आप लोक नूं तो किणहीं नूं न बुलायो अर घोड़े सूं उतर, ढाल हाथ मय सिंह नूं बुलायो। सिंह आय हाथळ री ढाल ऊपर दीवी। ढाल रा फूल ज्याक सोने रा था सो उड़ गया। ढाल परे जाय पड़ी। फेर आप सिंह रे तरवार री दीन्ही सो दोय बटका होय पड़ियो। इतरै में लोक आण

---

[1]सोहबत [2]बढ़ायेगा [3]झंगी।

मेळो हुवयो छै। सारो लोक कहणी लागियौ—जे आ तौ श्री लखमीनारायणजी सहाय करी छै, पण महाराज नूं आ नहीं चाहिजे। जे यूं अेकला कजियो कियौ तौ पछै म्हें लोग किसै कारण था। सो महाराज पदमसिंहजी छाती रा इसा जबर था।

अकर सूं कुंवर पदम महाराजा करणसिंहजी कन्हे था। बादसाह करणसिंहजी सूं दगो कराइयौ। सो पठाण दलेल खां नूं कह्यायौ—जे तूं किणीं तरह करण नै पकड़। दलेलखां भलो अमगरो[1] सिपाही थौ महा बळवान थौ। सो महाराज नूं अेक दिन सिकार री कही लेय चढियौ। मन रै मांही दगो थौ जे होदे सूं होदो भेळ'र पकड़ म्हारै होदे भळ लेयस्यूं। यूं विचार हाथी नेड़ै ल्यावतो आवै। इतरै में हाडे भावसिंह नूं खबर ठाथी आई[2]। तद पदमसिंहजी डेरे में था त्यांनूं कहाई—जे मिये रै मन महाराज सूं दगो छै। थां सताब चढ आवौ। महाराज नूं लेय आवौ अर कजियो हुवै तौ खबर करज्यौ। जीण सारा कर राखा छा। सो पदमसिंहजी बिना पलाणे घोडे चढिया सवार च्यार सौ रै सग सूं हालिया। नवाब अर महाराज रै हाथी में थोड़ी सी बीच आय रही छै। इतरै में पदमसिंहजी आय पहुंच्या। महाराज सूं मुजरो कर कही—मियां[3] रै मन दगो छै, हुकम हुवै तो मार लीजे। इसी बात सुणतां ही नवाब तौ पासो आय[4] टळ गयौ। दलेल खां घणी बडो मरद थौ पण पदमसिंहजी री इसी नजर देख पासो आय परो गयौ। अर कही—जे इसी बलाय सूं खुदा ही बचाया। बड़ी भाग्य रै धक्के चढिया था। राजा का साई भला करे जो मन्हे पर लेय गया। पछै महाराज नूं पण चौकस खबर पड़ गई—जे नवाब रै मन इसो दगो छो।

कहा करै बैरी प्रबळ जे सुहृद रघुनाथ।
करणसिंह नूं पदमसिंह, राम लियौ हो साथ॥

पदमसिंहजी सूं बादसाह घणी ही महरबान रहतौ। चाकरी रै घणा करड़ो सो काम सौंपतौ सो आप भली तरह सिर चाढ़ता। अेक दिन दखणी गाजदीखां सूं पहुंचावणो थौ सो मारग में मनीम रो डर थौ। नित ऊभा रहै सो लोमरणो री[5] आसंग किही री नहीं। तद काम चौकी रा सवार रागै[6] देय

---

[1]पागचाल वाला [2]खबर भली [3]मियां [4]अेर कर, मान कर
[5]मिरतने री [6]साथ।

नवाब कोस बीस थी उणनूं पछ आयौ सो रात री रात पैली घोड़ां ऊपर चढ़ पहुंच आई। पदमसिंहजी उण नवाब कन्है था। तद नवाब पदमसिंहजी नूं बुलाय कही—रावजी खजाना आया सो पहुंचावणा। वहां कही—हाजिर हूं। तौ नवाब कही—तुम बिना तौ मक्का में भी नहीं रहूं। सारी ही फौज ले चलौ। महाराज कही—दुरस्त छै, पधारजे। तद कूच कियौ। सो पदमसिंहजी सनुसाल रतनोत हरवळ किया। चदोस जगाल घमाल मुकाम मैं कूच कियो सो गनीम आय हरवळ सूं राड़ जे लाबी। तद गनीम नूं चलायौ। वीं पूछी—कुण लड़ै छै? सो हलकारा आय खबर दीन्ही—पदमसिंहजी करमोत है। तद पाछो जाय गयौ। आवमी गनीम रा मुवा सो दूज दिन चदोस ऊपर पड़िया सो फौज मार गया। फेर तीजे दिन ही चदोस सूं लड़िया सो साथ मांज नवाब सूं मिळ गया। तद नवाब महाराज नूं बुलाय कही—चदोली तुम समाळौ। तद मेक चदोल हुवा। सो नवाब गे तौ कूच हुवौ। महाराज सेवा करे था इतरै मांही जादवराय दस हजार असवार सूं आय पड़ियौ सो राड़ मांडी[1]। आप सेवा सूं ऊठ पोसाक कीवी। सो आगे तो सदामद सेवा सूं ऊठ पाग[2] रा पेच चौकड़ी च्यार खास चोटी-मेंटा दोनूं माथोमाथ कर पाघ रै पड़-पेचा मांही काढ ऊपर गांठ देय पछै च्यार मेळपेच देय पेच लता। तींसूं केजिये मांही पाघ मजबूत रहती खिसती नहीं। पण उण दिन उतावळ हुई। गनीम सूं राड़ लाग गई सो पाघ तुरत देय कमर हो जे बांधी जतन न कर सकिया तुरत असवार हुवा। कमामी भाएद रै थाम था सो आभा[3] था फूहा दीसता पहुंस बैठो बहतौ सो उण दिन कमर बांध नगारे चढ़ियौ। इतरै आप देख फुरमाई—भाएद थ मनूं चढ़िया आज आया छौ। तद भाएद अरज कीवी—जे आज हूं नगारे पर महाराज सूं आयो कोई रहूं नहीं। तद आप कही—आज कामू छै? भाएद कही—आज बैरीसाल हाथां मैं आसे छै।

इतर में पाछै सूं फौज रो जुर आयो हीज। पीळी-तीर बहि रहिया[4] छ। जादवराय पगेल रो छोटो भाई सायतराय तीन सौ पाळा मुह आग न्यां आप घाट सवार ललकारतौ पग्यो आवे छै। तद पदमसिंहजी बोलिया—भाई सब माळजो दिगणी भेळसो पाळा नूं छाती चढ़िया सझायं छै, सो इणनूं बरछी लगाऊं छूं। तद सनुसाळ कही—महाराज माफ करो मोनूं हुकम दीजे।

[1]युद्ध प्रारंभ किया [2]पगड़ी [3]कांधे तक [4]बच रहे।

इतरी सुणता सुवां आप बाग उठाई सो घेराणी समसेर नाम घोड़ो सवारी में थी काछी थी निपट आसाक थी बडी रेस रो घटो घोड़ो थी। सो आदमियां मोहांकर सावतराय[1] बरछी री बीबी सु पेट फाड़ पलांणी[1] मांज घोड़ा रा मौर मांज काछ में आवती मुड़ हाथ नीसरी सो उपरे रो ऊपर सीम्ह गयौ। भाई आदवराय री हुयणी कन्है आय खिर पड़ियौ। सो घोड़ो सो असवार, घाड़े नै जाणै मेख मारी। आदवराय नै भाई पड़ियो दीसियौ सो छाती में आग सी लाग गई। इतरे में असवारी रै घोड़ा रै सिलाड में तीर री लागी सो घोड़ो ऊभ कर गयौ[२]। मेट ताभा दीसू आप भमी ऊपर आय गयौ सो फटकारै में पाथ उतर पड़ गई सो घणी जोई पण लाभी नहीं। तद कमरखम्य रो सलो थौ सो सोस[३] मांथे वांधियौ। इतरै में अक पुरबियै नू आप मोड़ो अमसियौ थो सो धांण हाजर कियौ अर असवारी वाळो घोड़ो फौज सांमे हालियौ। आप कुंवर गोयन्द कन्है खड़ौ सो गोयन्द भूम गयौ। तद आप गोयन्द मूळांणी नू कही—गोयन्द आज रो लोह विगड़ियौ तिणसूं तूं इण मनी रै डाहे चढ़ देखवो कर, गिणती कर, म्हारी किसरी हाथ वाह हुव। तद गोयन्द कही—वाह-वाह मोनू इण वेळा भली चाकरी फरमाई। तद आप कही—म्हांनै थारो इतबार[४] छै। थारै विन बूझे किण री छाती ज लोहो गिरणै दीसूं तू जाय गिण। सोंस दिराय गोयन्द नू चाढ़ियौ सो गोयन्द डाहे पर जा खड़ो रहियौ। इतरै सत्रुसाळ जो कही—महाराज आ डूंगरी पूठ थकी थसाय छै। ज आ सबा तद पूठ पाछै आपरी रहै। मुह आगे निसक सू राड़ करां नहीं तो दिगणी आय दोळा[५] फिर जासी। तद आप कहा—भाई सत्रुसालजी जे फोळे में कुण का छै? तो कहा—डूंगरी सार नहीं जो कुण का घूंटा छूटे। तो कही—डूंगरी मू रहै मही तिणसू हमें पाछा पग देवां नहीं। तद आप अटारै बार घोड़ो मळ में तरवार वाही सो जिणरै दवै तिण रा दो बटका[६] हुव। अकण पूरे पहरियै रै दोबो टोप ऊपर पड़ो सो टोप वाढ़ पाछा आवती तरवार रही सो तरवार तूट गई। इतरै उमहीम पूरबिय तरवार अक आप बरनी थी मो आण दीवी। इतरै घोनो पड़ गयौ। तद चारण गोरधन रै भाई मू घोड़ो बकसियो थो बी

---

[१]जीन का भाग-विशेष [२]पिछले पैरों पर खड़ा हो गया [३]कमरबंद का कपड़ा [४]ऐतबार [५]चारों ओर [६]टुकड़े।

कहिती इम आव भये कछवाहा
सूरां[1] मरणो छही संसार।
दुर्मगळ[2] हुवा अमंगळ बेरी
नाम कुमळ मत देवे मार॥
मम दिसगत पामे मरम
मुवर वंदो प्रसा मुव।
समानि कोकि पिमे न जिनता
पासां पामें हुवे पुप॥
चारण कंवार मछोमर,
परणी सूं कालसी[3] प्रकार।
मायो काम सुमी सुचम्म आये
चित्र विपी मम करै विचार॥
पदम मुर्धस मवगाण छांप मै
हींभियो[4] सामां सहम हुप।
मलन घरम कम जिका मर्दनो
दीप जिसा ही मन भी कम॥
नित महिमा मुज बात निवाहे[5]
मोह चो[6] पम पणी नियो।
गाधा बंध कामण सांमठियो
रठ मुरां जिम बाग लियो॥

पछे भगवन्तराय पूरबियो हजारी थो। भगो छांपो सिपाही थो अर भी बरकन्दाज रो जमादार थो सो लोग तो मारा बजिय में बट गयो थो। आप असवार दस सूं महाराज रै साथ गढ़ो थो। इतरा में साथ सवार मौजम पाळा पचास क डांव पासे दिग्गी आ लागिया। तद महाराज सूं मुजरो कर उठे साम्हा लागिया[7] सो गिडाय दिया। पांवड़ा मोमक ऊपर जाय काम आयो। बीजा लोग घणो काम आयो। इतरै में मागार ऊपर निसाणी आ पड़िया। महाराज पाछो उठाय भळियो आ मर हुवो। लोग तो साथ हा सूर था पण गाहग

[1]शूरों [2]दुर्ग [3]कहता [4]दुःख न जानना [5]वचन निर्वाह करने वाला
[6]वश करने के [7]साथ।

सो गोयंद सोहां पड़ियौ आणन्द नगारची काम आयौ ।

कहर काट उकट कटक भव चढ़िया
कळह चाळिया करमा चाय काचा ।

धमांमी वार धुप नगारे ऊपरे,
दमामी बजावा सार दाका ॥

चांण सर सोक सहनाइयां वरधुवां[1]
सार चट टीस गोमत सचाई ।

वाळां[2] वळी सिर चोर मावण वणे
घुरई मचट झट वीचड़ चाई ॥

आणन्द धुन वीस राजा पदम आयनी
राहति रोख रस भरस नामै ।

निसाणी दरवाणियां तणै मार्थे निहस
वेग वह भ्याई वम्म वाजै ॥

दमामी राड़[3] भव भड़ भभका दिया
चोड़ कम्मध जय चाड़ चारां ।

वेल चोटा विहुट वाग वाज्या वग
वाच छिला सम्मी वाच वारां ॥

सो मोग किवरोंक तो काम आयौ । कई धाव खाय रण में पड़िया । कईक हासता रहिया । रणखेत्र में वहदा मिटियौ । सो जावराव रो भाई पदमसिंहजी बरछी सूं मारियौ । आप देखता सो विसणी रा पेट में झळ लाम रही । जणा चण बखत निम छळाई में हूंपणी सू उतर पदमसिंहजी ऊपर चलाय गयौ । पदमसिंहजी रणखेत में बैठा छै । इतरै में जादूराय आय माथे रै मांही तरवार री दीवी सो माथो फाड़ त्रिकुटी आण बैठी । इतरै में महाराज बैठा ही झप झड़प मारी सो चागे रा दोर हाथ में आया सो खांच लियौ । दोंसूं मुहडे आडे आण पड़ियौ । जद आप भेक-चोय कटार मारी सो काम सारो सीझ गयौ । आप पण उणरै ऊपर वह पड़िया । विसणी दोड़िया सो जादूराय नूं खींच काढ़ हाथी रै होदे मांही नूं घाल परा लय गया ।

---

[1] एक फूंक बाद्य [2] नगारों [3] युद्ध ।

पंडुधि सात महाभव है सिधि[1]
मोरण को सिधु नमो नव मूम्फयो ।
थोम नृत नी छो भत थई,
भव मुण्ड की मारग पंथ प्रमुम्फयो ॥
लावै है भयभीत राजही जम
यों भयमा भिज मोल है भूम्फयो ।
त्यूं कर वीरि कहि इन रण में
पदमे संग महीपति जूंम्फयो ॥

फेर जादूराय नूं इण तरह लियो तिण पर गोरधन गाडण रो कहियो गीत यूं छै—

नडिया पावै लियो परि पाइ
सिर गोयावै तिणी पर ।

सो इण तरह काम आया । कुपड़िये लोग आय दाग दियो । आयमां नूं संभाळ लय गया । उठा सूं पुरे मूं कासिद मेलियो सो आय खबर दीवी । महल सत कर जका बादसाह रो डर, तीसूं वकील कनै मांजस[2] मेलियो । वकील मालूम कीयो । बादसाह सुण अोसा[3] कर कही—हिन्दू असा सिपाही होणा नहीं । भला सोभा निमकहलासी था । आवो इन हिन्दुओं के होता हो सो करो । तद डांझरके[4] खबर आई सो खबर आतां ही महा सतियां जे तयार हुई । ढोल नगारे बाजणे लागियो ।

अेक नवाब तीम हजारी । उणरै महाराज सूं बड़ो इखळास[5] । महाराज डेरै आवता जणां आप साम्हे आय हाथ झाल ढोलिये बैठावतो । आप जमी ऊपर बैठतो । तवाइफां[6] गावै थी । हवासदार दोनां नूं दारू पावै थी । आप हमीखुशी करता । और नवाब जद महाराज रै डेरे में आवै थो तो महाराज भी यूंही जे करै था । रागरंग हुवै था । अेक बार दोनूं सरदार बैठा था जणां नवाब

[1]पृथ्वी [2]आदमी [3]अफसोस [4]प्रभात के समय [5]मेल [6]गाने नाचने का पेशा करने वाली औरतें ।

कही—भाईजी जो तुम्हारे में कुछ से कुछ होवे तो मैं क्या करू और ज मेरा कुछ का कुछ होवे तो आप क्या करोंग ? जद महाराज फरमाई—ऐ इण वखत इसी बात कुछ नहीं। दोनू ही ज खुसहाल छां। इसी बातां मती करो। खुसवखती री बातां करो। असी[1] बातां नूं आवण देवौ। तौ नवाब कही—आ बात तौ थणी बणाई चढ़ी छै। जद महाराज कही—थणसी जिण दिन दीसी जासी। अबार तौ कोई खुसहाली री बातां होवण देवौ। नवाब साहिब महाराज नू कही—भाई मैं तौ कुछ बद खबर[2] सुणूंगा तब फकीर बण चलता रहूंगा। तौ महाराज कही—भाई म्हारे सू फकीरी नहीं बण आवै। मैं तौ जे कुछ बद खबर सुणूंगा उस दिन कोई गनीम होसी तौ उणसू कजियो कर काम आऊला। जे गनीम नहीं होसी तौ लस्कर में ही हर किसी सूं कजियो कर'र काम आऊला। पण या जिन्दगी नहीं राखूंला।

नवाब मुहीम सर कर पदमपुरे सूं पाव कोसे'क गांव थौ उणमें आ उतरियौ थौ। इतरे उण वखत रा ढोल नगारा वाजिया जिका सुण'र पूछी—आज भाई के पुरे में ढोल नगारे जो बाजे हैं सो किसी की सादी है या कोई कुंवर पैदा हुवा है या किही ऊपर फतह हासिल की है ? सो जाय सताब खबर लेय आवौ। जणां आदमी खबर नूं गयौ। आदमी तुरत आय सारी खबर सुणाई। सो सुणतां ही नवाब अपणो डेरा आगै थकी आमसी थी उणरै नीचे आय बैठियौ। आपरा मुत्सद्दियां नूं बुलाय कही—ज अभी सब सिपाहियों का हिसाब चुकावौ। जणां सगळा अरज करी—सरकार, हम तौ कदीमी[3] नौकर हैं ऐसा आज क्या हुवा ? घर पधारिये। बहुत दिन से फबीसा आया है। सादी करिये हिसाब फिर हुवा करेगा। नवाब कही—इसी से कहता हू ज मैं अन्दर जाऊगा बहुत दिन लगेंगे सो सबको परेसानी होवेगी। इससे सबका हिसाब आज करना। पछै सबरो सलो करातो गयौ टका देतो गयौ फारगती[4] लिखायतो गयौ। सिपाहियां रो हिसाब कर नागिरद पेसा रो हिसाब करा टका देय फारगती लिखाई। पछै दीवाण बकसियां रो हिसाब कर टका देय उणसूं फारगती लिखाई। दिन दोय पहर आय गयौ। जद कही—सबका हिसाब हुया और कौन रहा ? तरै सारां अरज करी—सबका हुवा। कोई बाकी नहीं रहा। तद नवाब हुकम

[1] ऐसी [2] बुरी खबर [3] पुराने [4] चुकते हिसाब की रसीद

दियो—जावो तोसाखाने[1] से अेक गाभा लावो। सो मगाय चादर उठै ही ज बैठा सिवाई। सारा देखणै लागिया गम किणी री नहीं सो पूछै। चादर तैयार हुई सो बीच सूं फाड़ गळे मांही घाली। सारो लोग हाहाकार हुय गयो अौर रोवण-पीटण लागियो। आप तो सारां सूं मोह खेंच लियो। माणसां नूं कही—हमारा तुम्हारा इतना ही सीर था। अब चीजवस्त है सो मां कूं व लड़का कूं देणी। दोय चाकर खिदमतगार था सो साथ में फकीर हुवा। पच्छिम कान्हीं बहिर हुवा।

आदमी वस्तु मार सारो घरां जाय सोंपियो परठ कह दीवी। सब मां पासली पड़ जाय पहुची। घणी मीठ[2] घरां लेय आई। आप बाग में ठहरियो। लगाइयां दोय थी सो आय रोई घर ख्वाहिस करणे लागी। पण आपरै कुछ खातिर में नहीं। पछै कही—मां के घरे जावो काहे कूं ख्वाहिस करो। फेर बादसाह नूं खबर हुई जद अेक मांणस भेज कहायो—थे फकीरी लेणी आछी नहीं। उनसे तुम्हारा घणा इखलास था सो वो बात तुमने भेळ[3] बैठ कर घरी उसका तरक करो। गम सुणी हो तो राग छोड़ो। सराब पी हो तो सराब छोड़ो। वो काम सारो कियो सो छोड़ो पण रियासत संभाळो। घणी ही परचाइयो[4] पण मजाज तो मन मिपट ही काठो कियो। महिने दोय तो बाग में बैठियो सो मां घर सूं खाणो आछो करने भेलही। दूजे तीजे दिन लुगाइयां आय बैठे। ससरी सी विलायत बोल्या आवे। अेक दिन रात रा सब छोड़ बहिर हुवो सो पदमपुरा रै परसे पासे अेक जायगा थी उठै जाय बैठियो। परभात समै घर माळा जोवै तो नहीं दीसियो[5]। दिन बीसेक पछै ठावो पड़ियो[6]। जणां मां फेर गई जाय मनुहार की तो कही—नहीं आऊं। थे अेक टक फकत सूखो टुकड़ो मलही अर लुगाई छोकरी नहीं आवै तो फेर आऊं। जणां मां कबूल कर फेर लय आई। जुमेरात री जुमेरात पुरे में आवती ड्योढी आय सलाम कहावती। अेक दो वार भीतर सूं कुछ कपड़ो-लतो भेलियो[7] सो नहीं लियो। आप कहाई—मुझको थारो देवो तो कांई वस्तु मत देवो। मेरा जीव पास आये बिना नहीं रहै।

---

[1] कीमती वस्तुएं रखने का कोठार [2] बड़ी मुश्किल से [3] शामिल
[4] समझाया-बुझाया [5] दिखाई दिया [6] समाचार लगा [7] भेजा।

कराइयो। राजा खुस होय देवसरमा रा रोजगार अर पेटिया राज कर दीन्हा। राजा उण पंडित देवसरमा री रणवास[1] में घणी खरी तारीफ कीवी। जे पंडित अेक ब्राह्मण घणो भलो छै थां उण सूं कथा सुणो। जद्यां महलां खवासां सगळां अरज कराई—जे घणा दिनां सूं सबरी इच्छा थी पण सकतां अरज न कीवी थी। जद राजा फरमाई—म्हें थांनूं आप ही आग्या देवां छां।

परभात सवारे[2] महूरत देख महलां में देवसरमा नूं बुलाइयो अर उणसूं थीं हरिवंसपुराण कथा आरम्भ कराई। पहले ही दिन बीस हजार री प्राप्ति हुई। कथा घणी आछी बांची। देवसरमा च्यार बरस तलक कथा सुणाई। उणनूं अेक लाख-सवा लाख रिपियां री प्राप्ति हुई। जद उण राजा सूं अरज कीवी छै—ज म्हांरी आसा पूरण हुई, मोनूं प्राप्ति घणी आछी हुई। देवसरमा कही—जे मोनूं आग्या होवै तो जनम भूमि मां जाय अवसर करूं अर अपणा कुटम[3] परवार सूं मिळूं। राजा कही—हे देवता कुटम परवार नैं उरो बुलाय से। थरां जाय के करसे। देवसरमा अरज कीवी—

जननीसुर अर जान्हवी जन्म भूमि अर नाम।
जाति बीच भोजन करै, दुरलभ पांच बखाण॥

हे महाराज जनम की भूमि देखस्यूं कबीले सूं मिळस्यूं[4] अर आपरो जस बधाय लिछमी[5] रो लाभ उठायस्यूं। ताहरां राजा बिदा की आग्या देय घणी द्रव्य दीन्ही अर खुसी सूं कही—सताब आवजे। यूं कह महलां छै री सीख दीवी।

देवसरमा हुण्डी कराय पल्ले बांध अर उठासूं धांहिर[6] हुवो छै, सो देवसरमा हासती-हासतो[7] उज्जीण सूं कोस च्यार आय नाखियो। उण ठौड़ देवसरमा देखी जे बन में अग्नि लाग रही छै। उण रै बीच में नागवत्र अेक देखियो। उणनैं देख दया कर देवसरमा बांस री डांग[8] सूं उणनै उठासूं काढ़ परो अेक पीपळ री छाया में लाय बैठाय आप ऊभो रह गयो। सरप सीतळ छांयां मांय मरजीवत[9] थो हुवो। जीव ठिकाणै आइयो। इब फण उठाय देवसरमा सूं कही—हूं तोनूं खायस्यूं। देवसरमा कही—हूं थारी चाकरी करी पण तूं मोनूं खायसे आ भलाई रै बदळै बुराई करसे सो क्यों? सरप कहणै लागियो—रे बावळा! हूं भिसटती-भिसटतो ही दुखी थो तूं मोनूं क्यूं

---

[1] रनिवास [2] प्रभात [3] कुटुम्ब [4] मिलूंगा [5] लक्ष्मी [6] रवाना
[7] चलता-चलता [8] लकड़ी [9] सजीव।

काढ़ियौ ? हूं तौ उण ठांव[1] राजी सूं पळ अपणौ सरीर छोड देती । अब सू ही थोनूं काढ़ियौ हूं थारो ही अहार करस्यूं । इतरी सुण देवसरमा कही—

बरस च्यार परदेस में रह्यौ कबीलो छोड़ ।
उण सूं मिळ नै आयस्यूं सात दिनां री होड ॥

आ बात सुण सरप कही—

मरस्ये खातिर फेर इक पावै मह पै कौन ।
अपण करी जो हेत सों तौ चाहे कर गौन[2] ॥

देवसरमा कही—

सूरज साखी कर कही मानह सांचो कौल ।
दिवस सातवें आय नै करस्यूं पूरो बोल ॥

इतरी बात सुण सरप देवता विदा की । देवसरमा विदा पाय उठा सूं हालने आपरै घरनूं आवियौ । आगे घणौ हरख हुवौ बड़ो उत्साह कर भाई सगा परिवार कुटुम्ब का लोग सगळा मिलण आया । पण देवसरमा किहीं सूं कुछ बात ही बोलै तक नहीं छै । यो तौ खरो उदास हुवौ बैठ्यौ छै । आपरी स्त्री तण सूं नहीं बोलियौ । तौ ब्राह्मणी कही—असी कांई बात छै, असी तरह कमाई कर आया छौ फेर भाई बन्धु कुटम कबीला सूं बोल्या क्यूं नहीं ? जद ब्राह्मण सारी बात ब्राह्मणी नूं कह समझाई । इतरी बात जद ब्राह्मणी सुणी तौ कही—इण बात रो कांई डर करो छौ 'सांई री पलक में अलक[3] बदळै' छै । अब हाल बोहरा कौल में सात दिन बाकी छै । ब्राह्मण कही—सांई री पलक में अलक क्यूंकर बदळै सो कह । ब्राह्मणी यूं कहण लागी—अेक बार अेक विलायत रो बादसाह कंधार रे बादसाह ऊपर चढ़ाई करी । तद उणमें विलायत रो बादसाह तौ फतह पाई अर कंधार रो बादसाह हार पाई । सो कन्धार रे बादसाह नूं पकड़ कैद कर कंधार रे थाणे में बैसाणियौ[4] । कैदी कियौ । पाछै विलायत रो बादसाह सहर में दाखिल हुवौ । फेर उण कंधार रै बादसाह नूं अेक सउ पीढ़िया चाकर मिस्ती रै हवाले कियौ अर खाणे खुराक रै वास्ते उणरो १२ रिपिया नित री बरखी कर दीन्ही । सो उवौ उणमें सूं रिपिया ३१ या १७ खाणे-पहरणे में खरच करै नै बाकी कनै[5] राखै ।

---

[1]जगह [2]गमन [3]संहार [4]बैठाया [5]पास।

यूं करतां बारह बरस व्यतीत हुवा। अेक फकीर आय रोजीना अवाज करै थो। उ गाई रो पसम में लसक करै छ। सो अेक दिन कंधार रो बादसाह थो सो इण फकीर री बात सुण मन में विचारी अर भिस्ती सूं कही—उ थारै बादसाह नूं जाय अरज कर—हमको बरस बारह व्यतीत हुवे अब क्या हुकम है? इण भांति भिस्ती नूं कई वार कही पण भिस्ती कहै—ओसर[1] नहीं। और अरज करणी आप चाहै नहीं।

अेक दिन भिस्ती रै तो कांई काम थो अर भिस्ती री लुगाई बादसाह वास्ते खाणो लेय आई। सो बादसाह खाणो नहीं खावै। तदरां भिस्तिन कही—आज खाणा खावो क्यों नहीं? तो बादसाह सारी बात नहीं खाणे री थी सो समझाई। फेर भिस्तिन सौगन सौंस[2] कर खाणो तो खिलायो। बादसाह कन्है सूं भिस्तिन घर गई और घर जाय भिस्ती सूं कही—आज बादसाह खाणा नहीं खाते था। पण हूं सौगन सौंस घणी तरह सूं कर खिला आई हूं। बार-बार बादसाह तुम से अरज करण कहता है सो तुम्हारा अरज करणे में क्या बिगड़ता है? तो भिस्ती कही—बात तो दुरस्त कही पण बादसाह बादसाह की मरजी सो जाणे क्या फुरमावै। थांरो कांई बिगड़ै बैठा खावै छै। और अब तुम्हारे कहणे से फजर[3] में अरज करूंगा।

सो भिस्ती हजूर में गयो तद अरज कीवी—हजरत कंधार के बादसाह ने अरज कराई है—मुझको बरस बारह हो गए, अब क्या हुकम है? तद बादसाह ने कोटवाळ कूं पास बुलाया सो आया। उसकूं बादसाह नै फरमाई—आज रात कूं घड़ी च्यार के झांझरके तुम कंधार के बादसाह कूं चौरंगा[4] कर देणा। इतरी बात सुण कर भिस्ती पछतावो कर आयो। भिस्तिन सूं कही—तै तूं अर कंधार रो बादसाह बार-बार कहता था। हूं आज जाय हजरत सूं अरज की तो कोटवाळ नूं चौरंगा करणे रो हुकम दियो। यूं कह भिस्ती कंधार के बादसाह नूं खाणो सुवाण गयो अर कही—सो थे बैठा ठण्डो पांणी पीता था पण सबर नहीं की बार-बार म्हाने बादसाह सलामत से अरज करण की तागीदी करता था। कंधार रै बादसाह कही—क्या हुवा? भिस्ती कही—घड़ी च्यार भड़ी झांझरके रात में थांनूं चौरंगा करणे रो कोटवाळ नूं हुकम दियो है। इतरी सुण कंधार

---

[1]अवसर [2]सौगन्ध [3]प्रभात [4]हाथ-पैर काट देना।

रै बादसाह भिस्ती सूं हंस'र कह्यो—कुछ चिन्ता नहीं अभी तौ च्यार पहर बाकी है। म्हे तौ सुणी है—

साँई केरा पलक में बसता बलक जहान।
फिकर करे जो काम का वो है मुरख अजाण॥

इण भांत मीर ही जे सुणी छ—

क्या करंता क्या करै हुस्ती मार गरब[1] में घरै।
मुफ[2] जाके सपने नहीं ता मवना[3] छिर छत्र धरै॥

यूं कह कथार रो बादसाह कही—तुम तौ खाणा ले आवौ। भिस्ती तुरत खाणौ ले आयौ। बादसाह आराम से खा-पीकर सो रह्यौ। उठी विलायत रो बादसाह ही सो गयौ।

आकास सूं एक जानवर आयौ सो उण विलायत रै बादसाह नूं लय उड़ गयौ। हुरम[3] यह बात देख रही थी। उसने विचारी—परमात बादसाह रै बिना बादसाही में ससस पड़सी। साहुरां नावर कूं बुलाय कर कही—सताब थाय दीवाण अर बकसी कूं लावो। सो दीवाण अर बकसी आ हाजर हुवा। तौ उण सू बेगम कही—अभी तुम्हारे बादसाह कूं आकासी पक्षी लय उड़ गया। इसका कोई जतन[4] करणा चाहिये। बादसाह बिना सरसी नहीं[5]। प्रमात हुवां लोगां में ससस पड़सी। तौ दीवाण बकसी अरज कीवी—म्हां सू तौ कारज सरे नहीं[6] वजीर नू बुलावो। वजीर आया अर समाचार सुण कही—म्हां सू पेकर्नां सू कारज नहीं बणए उमराव लोगां नू बुलावो। उमराव लोगां नू बुलवाइया। वजीर, दीवाण बकसी अर सारा उमराव भळा थाय हुवा। जणां बेगम पूछी—तुम सगळा बतावो क्या जतन करणा चाहिये। सगळा ही जणां कुछ जतन कह नहीं किया। ताहरां बेगम कही—हूं जतन बताऊं। सगळा अरज कीवी—आप हुकम फरमावो हम उमी की तामील करस्यां। बेगम कह्यो—और तौ कोई दीसता ही नहीं अक कथार का बादसाह क्‍ ‍मांहीं है सो कुछ खोटा नहीं। सगळा अरज कीवी—जी हुजूर कुछ खोटा नहीं नेक है। समझदार अर बड़ा स बड़ा होसियार है। तौ बेगम साहिबा कही—उसकूं लावो।

---

[1] धूम [2] गरीब [3] बेगम [4] यत्न [5] काम नहीं चलेगा [6] कार्य नहीं होगा।

तुरत आदमी पांच-सात गया। उस दिन भिस्ती अर भिस्तण में कुछ खट पट हो गई सा दरवाजे रा किंवाड़ था सो भिड़िया नहीं खुला ही था। अै आदमी आइया जिका भीतर गया सो देखै तो कहार रा बादसाह आराम सूं सोवै छै। आदमी जाणी जे जगायस्यां तो सोर करसे तीसूं मांचा-सुदा[1] ही उठाय लीन्हा अर लय कर हालिया। बादसाह नूं चेत हुवौ तांहरां विचार कियौ—अै अेक पहर मांझरके आवता सो आधी का ही क्यूं आय लागिया। यूं मन ही मन विचार कियौ पण बोलै कुछ नहीं। इतरा में महल में आय तखत रै पास मांचो उतारियौ। लोगां उठाय तखत ऊपर बैसाणिया। बेगम कही—इणरै पाग[2] बांधौ। लोगां अरज कीवी—आप ही बांधौ। जद बेगम आपरै हाथ उणरै पाग बांधी अर सगळा लोगां नजर निछरावळ[3] करी। फेर अरज करी—यह बादसाही आपकूं ईस्वर दीन्ही छै, सो सब पर दया करज्यौ। यूं कहि सगळा आपरै घर गया। बादसाह महल में ही रहिया।

दिन ऊगियौ। भिस्ती आय देखै तो उठै बादसाह नहीं। कोटवाळ पूछी—बादसाह बताओ। भिस्ती—हमकूं खबर नहीं। दोनूं झगड़ा करता बादसाह रै पास गया। कोटवाळ अरज करी—हजूर भिस्ती कहार रै बादसाह नूं छिपा दियौ। भिस्ती अरज करी—हजूर मुझकू तो खबर ही नहीं। बादसाह हंस कर कोटवाळ नूं तो घर भेजियौ अर भिस्ती नूं आपरै नेड़ै[4] बुलायौ सो देख घणी सिवाबस कर घर भाइयौ।

इतरी बात कह ब्राह्मणी कही—इण भांत थांई री पलक में बलक वसै छै तो थांहरै कोल में हाल पांच दिन बीच में छै, चिन्ता क्यूं करौ।

देवसरमा प्रसन्न होय चिन्ता छोड़ी। आराम सूं रहणौ लागियौ। सगा सम्बन्धी बाळक-बूढ़ा अर भाई-बन्धु सगळां[5] सूं राजी होय मिळियौ। ब्राह्मणी नूं सगळी बातां कही। धन सारौ सो दीन्हौ। खूब दान-पुन्य-धरम जो करणो थो सो कियौ। यूं करतां दिन च्यार व्यतीत हुवा। पांचवें दिन देवसरमा हलणे[6] री तैयारी कीवी। तद ब्राह्मणी कही—थां तो घर ही रहौ मोनूं जावणे देवौ। देवसरमा कही—अै सरीर तो म्हारो ही अेक दिन नास होयसी। पण

---

[1]खाट सहित [2]राजा का सेहरा [3]वार-फेर [4]पास [5]सभी
[6]चलने

गेरज[1] सो भसम होय जास। इतरी सुण ब्राह्मणी मूठी खोल धूळ सी। फेर सरप सूं कही—मोसूं थांही बुरी नजर जोवो छो सो भसम हो जावो। यूं कह धक धुड़की धूळ सरप ऊपर नांखी[2] सो ऊ उण ठांय ही भसम होय गयो।

श्री नरसिंह सहाय सूं बीसूं सामा गेह।
सांई मेरा पलक में बसक बसे कर नेह॥

पलक में पलक री बात समाप्त

[1] गिरना [2] डाली।

प्रणाम-दण्डोत कर भरज करी—ज इतरा थोक तो आप रै प्रताप सू घणा ही है। जे आप कृपा कीवी छै तो आप पलक दरियाव रो तमासो दिखावो। तद फेर आवाज हुई—सौ देस। इतरो हुकम हुवौ तिसे देवीदास डण्डोत करि नीचे नमियौ[1] अर जीव नीसर[2] गयो। असी माया ईस्वर री हुई। जीव नीसर नै बम्भुगढ़ रै राजा कनकरथ री पटरांणी रै गरभ रह्यौ। आगै राजा रै सन्तान न हुती अपुत्र थी सो आधान रह्यौ। वधाई हुई। सात में महिने में आघरणी हुई। नव महिना पूरा हुवा कुंवर आयो[3] वधाई बटी गुळ धांटियौ नारेळ बांटिया वडा उत्सव हुवा दसोटण हुवौ ब्राह्मण वेद-पाठ करि कवर रो नाम विचित्र राखियो।

कुवर मोटो हुवौ ताहरां सेरपुर रै राजा वीरभद्र री बेटी रो नारेळ आयो[4]। घोड़ा सौ हाथी च्यार, कपड़ो लाख श्रेक रो जवाहर गहणौ श्रेक लाख रो नाळ र सोने-रूपे रो लाया। पुरोहित आदमी च्यार सौ सू डेरो कियौ। राजा कनकरथ खबर मंगाई—औ डेरो केरो छै, क्यों आया छै? कठै जासी कुण छै? ताहरां पुरोहित रै डरै छड़ीदार नै मेलियो। उण आय नै पूछियौ—औ रो डेरो छै, कठे जासी कुण छौ? ताहरां पुरोहित छड़ीदार नै मांहे बुलायो। कह्यौ— महाराज नै आसीरवाद मालुम करजो अर अरज करजौ—सेरपुर रो राजा वीरभद्र तिक री बेटी इन्द्रकवरी री सगाई, महाराज रो कुवर विचित्र नामै छै तिणनू कीवी चावै छै। साम्हां नै माळ र देख थां पासे मलिया छे। इसरो कहि रिपिया पांच छड़ीदार नै इनाम रा देय विदा किन्यौ। छड़ीदार जाय महाराज सू अरज मालुम की—सेरपुरा रो राजा वीरभद्र रो पुरोहित विक्रमादित्य छै। पंडित-ब्राह्मण तरक-परचा करै छै। इतरै पुरोहित विक्रमादित्य आयो। राजा ऊठ आदर दियो। बांह पकड़ कर कन्है म बैठा। राजा रै मुलक री बात पूछी। इतरै कुंवर विचित्र नूं बुलायो सो कुंवर पोसाक भलो भांति सू करि,

---

[1] झुका [2] निकल [3] जन्मा [4] सगाई करने की एक प्रथा जिसमें लड़की के घर वाले ब्राह्मण के हाथ उचित वर के पास सम्बन्ध की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए नारियल आदि भेजते हैं। नारियल को स्वीकार करने का अर्थ सम्बन्ध को स्वीकार करना माना जाता है।

देवीदास कह्यौ—अब तो दरसण कर नै जीमसूं । साह कह्यौ—थारै गुल्हमापै भळी आवज्यौ पण आज तो जरूरी काम छै । तद देवीदास ऊठ ऊभो हुवौ । तद साह कह्यौ—थांहरो मन है तो जा पण दरसण करि सताब आवज्यौ । इसरै दिन पोहर डोढ चढ गयौ । आगे श्री ठाकुरजी रै भोग री आरती करि देवल नामै ब्राह्मण पाछो आपरै घरे गयौ । कपाट जड़िया छै । ताहरां किंवाड़ री सेरी मां हाथ घात कैवण लागौ—महाराज पइसो लीजो म्हांमें तकसीर[1] पड़ी मोड़ो आयौ । गुन्हो माफ कीजै । हूं रावळो चाकर, यूं चूक पड़ि तकसीर माफ करणी । यूं करतां घड़ी एक हुई । रुदन करण लागौ । देही परसीज[2] गई । बिलहल होय गयौ ज्यों प्राण छूटै । ताहरां लक्ष्मीजी श्री भगवान सूं अरज करी—जे साहूकार घणो दीन छै, बिलहल हुवौ छै, इणरा प्राण छूटै छै इणरो पइसो लीजै । ताहरां श्री भगवान फुरमायौ—औ हाथ अपावन[3] छै । म्हे किणही अन्हे हाथ मांड्यौ नहीं थारां ही नै देऊं छूं जेणनै हाथ आगो न करूं । इसरी सुण लक्ष्मीजी अरज करी—हाथ न मांडो तो मुंहड सूं फुरमावो । तद देहरे में आवाज हुई—उरही[4] ला । ताहरां इमै पइसो चींपटी मांसूं अलाय दियौ सो देहरै मांही जाय पड़ियौ । देवीदास नमस्कार करि प्रदक्षिणा देण लागौ । ताहरां श्री लक्ष्मीजी भगवान सूं अरज कीवी—देवीदास थांहरो मिज भगत है इणनूं कुहीक[5] दीजै । ताहरां श्री पूरणब्रह्म फुरमायौ—म्हे तो इयै नै घणो ही दियौ छै । ताहरां श्री लक्ष्मीजी फेर अरज कीवी—इयै रै मन में काईक कामना छै तिका फेर देवौ । ताहरां देवीदास प्रदक्षिणा दे सनमुख आयौ । नमस्कार कियौ । इसरै में फेर देहरै मांही आवाज हुई—देवीदास मांग । मांगसी सोई पाईस[6] । ताहरां देवीदास जाणियौ श्री भगवान प्रसन्न हुवा आवाज देवै छै, सो देवीदास हाथ जोड़ि अरज कीवी—जो आप महरबान हुवा हो मांगूं सो पाऊं । फेर हुकम हुवौ—जो तूं मांगीस[7] सोई हूं देईस । ताहरां देवीदास अरज कीवी—जो आप पसप दरियाव नहायो छो तो मन्हे पसक दरियाव रो तमासो दिखावो । श्री भगवान फरमायौ—इयै बात रो कासूं देखसी ? क्यूं दूजो मांग । राज मांगसी पातसाही मांगसी और कोई सतरी पसत देखे सो मांग । तद देवीदास

---

[1]चूक [2]करुणा और सन्ताप से आकुल [3]जो मांगते नहीं [4]इधर
[5]कुछ न कुछ [6]पायेगा [7]मांगेगा ।

भगती श्रीमण रै पगां बोलावो आयो। साथ सारो तयार हुवो। सतरी ऊमदा पोसाक करी। विचित्रकुमार नै साथी राजा रै दरबार आया। मजलस हुई। साथ में अमल-पाणी री मनवार हुवै छै। विचित्रकुमार री नजर मोळगुवा मांहीं छै। मोळगुवा पण हुल नै गावै छै। रबाब-सारंगी ढोल-मजीरी बाजे छै। इसो ही कंठ रो गावणो छ। इसो ही कन्है पुराणो गुण छै। सारी ही बात रो मेळ मिळियो छै। इसे में पातिया मांडिया। मुजाई आय सारो साथ बैठो छै। विचित्र कुंवर फुरमायो—मोळगू पण ऊपरि आय मुजाई बसै[1]। ताहरां वीरभद्र छड़ी दारां नै फुरमायो—सतावी गोगदान हरदान सिवदास छुमदान इयां च्यार ही नै ऊपरि बुलावो। महाराज याद किया तद मोळगू ऊपर आय महाराज सूं कुंवर विचित्र सूं मुजरो कियो। विचित्र कुंवर रो नगारची आजवार बैठा टाबका उबारा गुण सुण मजाय बैठा। भली भांति मुजाई जीमिया। ऊपर पांन रा बीड़ा दिया भतर सु भेरी मनवार हुई। डेरै नूं सीख दीवी। ताहरां राजा वीरभांण जंवाई नै लमा-लमा कह्यो हाथ भ्रलसिया[2] छाती सूं लगाय कह्यो—बाबा थासूं कारज छै। जे वछळ महाराज हुवा अनै हाथ जोड़िया सो कह्यो—ओ राज हाथी घोड़ा सरब भडार थांहरा छै, चाहै सो करो। ताहरां विचित्र कुंवर कह्यो—हरदान मळगूम नै बगसज। राजा वीरभद्र कह्यो—भली बात छै। आपरै दीवाण न बुलाय नै कह्यो—लाख एक रो पसाव घोड़ा च्यार सिर पाव मगावो। आण हाजर किया। ताहरां हरदास मोळगू नै बुलाय बगसिया। आपरै पहरण री पोसाक और सरब गहणां था सो हरदास नै बगसिया। तीमें कंठी मेक मोतियां री हुती—लाल भीर पनो निपट बेस थो। सवा लाख कंठी री कीमत हुती तिकी पण पोसाक साथे बगसी और फुरमायो—कुंवरजी री चाकरी आछी तरह करजो। मोळगू मुजरो करनै बिदा हुवो नै छोरो सो टरो मही[3] कन्है लड़ो करार दियो। बड़ी रीझ-मौज देनै भीतर पधारिया।

ताहरां झरोखे नीचै चार पहर गावै। नित निवाजस हुवै। दोपहरै रा कंवरजी पौढ़ै ताहरां रामदास बाजम रै छड़ बैठो चमामचो[4] बजावै। घड़ी रीझ-मौजां सिरपाव पावै। कंवर री बड़ो महरवानी बडो कारण राखै। दिन २१ वीरभद्र जान राखी। बड़ा हीड़ा[5] किया। नवी-नवी भगती कीवी। सारी बात

[1]बैठे [2]भरम [3]एक धार बाथ [4]वाद्य-गीत गानिर।

मापरा हजूरियां[1] मै साथै ले मायो। दरबार सारो ही ऊठ ऊभो हुवो। पुरोहित सूं कुंवर मिळियो। कुंवर राजा रै मूंहडै आगै बैठो छै। मुहरत ठीक छै। तद राजा कनकरथ रो जोसी विस्वेसर बोलियो—पुरोहित ऊठौ महाराज कंवर रै तिलक करौ माळ र बंदावो। तद हाथी घोड़ा कपड़ा सब नजर किया। पुरोहित डरै गयो। दूसरे दिन पुरोहित नू बुलाय घोड़ो-सिरोपाव मन्ना-मोती बगसिया। सारो साथ जिसै साजमा सामल हुता तिकां नूं तिसी हीज वस्तु दे बगसीस करी। सरब नै राजी करि विदा किया। साहे[2] री ताकीदी कीवी। ताहरां पुरोहित अरज कीवी—मास अक पछै सिहसत लागसी सो महिना तरह रहसी तौ पछै साहो बरस्यां। यूं कहि पुरोहित बाहिर हुवो। कुंवर रै तावै राजा सरब मुसद्दी दिया। कुंवर पण राजा रो सरब काम समाळियो। सारो सवाल जवाब पूछै। बहोत सपूत दातार पिता री आज्ञा में रहै। बडो सुख देवै। यूं करतां सिहसत उतरियो तद जांन[3] री त्यारी करी। परणीजणि चढ़ियो। घणो आडम्बर सूं जाय परणीज्यो। बडा रगरळी हुवा। घणो धन बरखियो। कुंवरजी रै झरोखै नीचै ओळगु रात रा घणा सवार उतरिया बड़ी निवाजस करी आवपसाव कियो। ओळगु हजूर राखिया। ताहरां ओळगुवां अरज कीवी—म्हांनै बरस अक हुसी महाराज वीरभद्र री चाकरी करतां नै। जो हुकम हुवै तौ मुजरो करनै फेर राति आय आपरो मुजरो करां। ताहरां कंवर पूछियो—कठै रा छो? तद ओळगुवा बोलिया—मुजलमर रो राजा रावळ जालम यही पातसाह तिण राणी रा चाकर छां। वरी तौ काई कमांण न छै, पण वातारां नै देसण मे मुलकगिरी[4] करता फिरां छां। सो बरस अेक हुवो महाराज विसमाय राखिया। ताहरां कुंवर विधिक कह्यौ—अ बरस अक म्हारै कन्है रह्यौ। ताहरां ओळगुवां कह्यौ—राजा भीम साक छै। राजाजो विदा वेसी तांहरै महाराज कुंवर कन्है आवसां। ताहरां विचित्र कुंवर कह्यौ—असी बात छै। थे मुजरै आवौ। आछा गावजौ। जिसरै भगती जीमण[5] म्हे पण आवां छां। आ बात कहि सीख दीवी। कुंवर डरै आयौ घोड़ा दौड़ाया हवफरी चौड कीवी। पाछलो पहर हुवो ताहरां राजा वीरभद्र रो कुंवर सवार हजार अेक सूं

---

[1] नौकर चाकर [2] शादी का महुरत [3] बरात [4] भ्रमण [5] सम्मानार्थ दिया गया भोजन।

भगती चीमण रै पगां घोसाबो प्रायो। साथ सारो तयार हुवौ। सतरो उमंग पोसाक करी। विचित्रकुमार नै साथी राजा रै दरबार आया। मजलस हुई। साथ में अमल-पाणी री मनवार हुय छै। विचित्रकुमार री नजर भोळगुवा मांही छै। भोळगुवा पण हुस नै गावै छ। रबाब-सारंगी ढोल-मजरी बाजै छ। इसो ही कठ रो गावणी छ। इसो ही कहै पुराणो गुण छै। सारी ही बात रो मळ मिळियो छ। इसे में पातिया मांडिया। मुजाई आय सारो साथ बैठो छै। विचित्र कुंवर फुरमायो—भोळगू पण ऊपरि आय मुजाई करै'। ताहरां बीरभद्र छड़ी दारां नै फुरमायो—सतावी गोगदास हरदास सिवदान हमदास इयां च्यार ही नै ऊपरि बुलावो। महाराज याद किया तद भोळगू ऊपर जाय महाराज सूं कुंवर विचित्र सूं मुजरो कियो। विचित्र कुंवर रो मगारची बामदार बठा टावका उतारा धुण सुण सजाय बैठा। असी भांति मुजाई कीमिया। ऊपर पांन रा बीड़ा दिया पतर सु घरी मनवार हुई। दनै मू मीरा दीवी। ताहरां राजा बीरभाण अवाई में गमा-गमा करयौ हाथ म्हालिया' छाती सूं लगाय कह्यौ— बाबा पासूं कारज छ। ज पदळ महाराज हुवा मन हाथ जाविया मो कह्यौ— भो राज हाथी घोड़ा सरब भडार पांहरा छै, चाहै सो करो। ताहरां विचित्र कुंवर कह्यौ—हरदान भळगूम नै बगसजे। राजा बीरभद्र कह्यौ—असी बात छै। आपरै दीवाण न बुलाय नै कह्यौ—लाग एक रो पसाव घोड़ा च्यार गिर पाव मगावो। आण हाजर किया। ताहरां हरदान भोळगू नै बुलाय बगसिया। आपरा पहरण री पोसाक और सरब गहणां था सो हरदास नै बगसिया। सोमि कटी पर मोतियां री हुती—लाख और पनो सिपट बेग थी। सवा लाख कठी रो कीमत हुती तिसी पण पोसाक साथ बगसी और फुरमायो—कुंवरजी री चाकरी माफी तरह करजो। भोळगू मुजरो करनै बिदा हुयो नै छोरो मा टरो मही' वन्है गाढो कराय दियो। पछै रीझ-मोज दनै भींतर पधारिया।

ताहरां मगाण मोपै चार पहर गायै। निस निवायम हुवै। दातर रा बंबरजो पोडै ताहरो गमभान जानम नै पट बैठो समायपा बजाव। पछै रीझ-मौजां मिलाप पाव। नजर री बड़ी महरबानी बडो मारग गाग। निस इ बीरभद्र जान गायो। बडा हारा' किया। नरी-नरा सभी बीबा। गारी बात

13 बरदे 'बड़ा ... '

जांन रै साथ घणो सयोलो रासियो । कुंवरजी विदा होवण री अरज कीवी । ताहरां राजा वीरमद्र कामदार परधान न बुलायनै फुरमायो—दायजो तैयार कियो छै सो सब ले आव । बीस हाथी पचीस घोड़ा लाख दोय रो गहणो, मुहार लाख ग्रेक रो इतरो ही कपड़ो दियो । बांदी छोकरी बड़ारण ग्रेकसौ दीवी । ग्रीर भी ग्रनेक वसतां दीवी । सो राजा रै घर रा किसा बखांण घणी-घणी मनुहारां कीवी विदा किया । राजा वीरमद्र रो कुंवर हरिमद्र बहिन नै पहुंचावा सारू साथ हुवौ । मजलां दोय आयां पूठै चित्रिम कुंवर हरिमद्र नै पूठा[1] विदा कियौ । साथ कटारी ग्रेक घोड़ा पचास माळा ग्रेक मोतियांरी बलगी ग्रेक बडावरी इतरा थोक दिया । साथ सगळा नै सिरपाव दे छोटा-मोटा सहनै माव करि विदा किया । घणो रस रह्यौ ।

कुंवर चित्रिम परणीज घरां आइयौ । गाजे-बाजे सायवान सजावलां बधाय[2] भीतर लियौ । घणौ हरख राजा रै पचास बरस सू हुवौ । सो ग्रेका-ग्रेक बटो फेर कुंवर सरब राज रो भार सभाळ लियौ । तैयी[3] राजा नै घणौ बसम । लोक पण सगळा ही सराह करै । राजा रै मुलक रो काम सगळोई[4] राजा रै कुंवर रै हाथ ।

यू करतां बरस च्यार व्यतीत हुवा । कुंवर रै कुंवर हुवौ । घणो हरख हुवौ । नानांणो सहर बधाई गई । तब राजा हरखवन्त[5] होय घोड़ो ग्रेक सिरपाव कड़ा-मोती रिपिया हजार दोय देनै विदा किया । दसोठण[6] रो कपड़ो गहणो देय नै मुत्सद्दी नूं मसियौ । सबब गढ़ आइयौ डरो कियौ । आवतो घणौ हुवौ । सहर में घर-घर बधाई बाजै छै । हरख होय रह्यौ छै । दसोठण हुवौ । मुलक सरब जीमियो । वीरमद्र रो मुहतौ कपड़ो-गहणो लायो थौ सो राजा कनक रथ रै नजर गुदराइयौ । राजा मुहतै नै घोड़ो सिरपाव दुगदुगी बगसी । विदा कियौ । कुंवर चित्रिम रै मुजरो आइयौ ताहरां कुंवर सिरपाव बगसियौ । वडी-वडी मनुहारां करि विदा कियौ ।

रावी महल पोढ़ण गयौ । ग्रोळ पुर्या नै हुकम हुवौ । चारि पहर रात झरोखे उसंगिया । परमात भाख ग्रेक रो इनाम हुवौ । बड़े सासमे कारण ग्रेक दिन

---

[1]वापिस [2]स्वागत की रस्म पूरी कर [3]जिससे [4]सम्पूर्ण [5]हर्षित [6]पुत्र जन्म की खुशी में किया जाने वाला उत्सव ।

हरदान बोलियौ—भाई गोगदान दूजी वसतां छै जिके तौ भाव धु रावसां पण
आ मोतियां री कंठी छै जिकी आपां सूं नहीं रहै। तैसूं आ कंठी आपां कुंवरजी
नै सौंपां। अक दिन हरदान कुंवरजी सूं अरज कीवी—आ वसत राखौ। ताहरां
विचित्र कुंवर कह्यौ—आ वसत म्हां लायक नहीं। हूं लेवाळ नहीं देवाळ छूं।
अर ये कंठी वेच सो तौ दादा रै नाम री भिल्ली खबर पड़सी। ताहरां हरदान
फर अरज कीवी—थौ म्हारी पकी कोठार में राखजौ। म्हे कूच करां कहरिदै[1]
म्हे मांस पी नै खोय रहसां पमाय देवां। तूठे तौ पण छाती रहै अर
धुरी[2] रासां री गळी जावै। तैसूं आप हस्तै कोठार में रखावौ। ताहरां कुंवर
कह्यौ—किही साहूकार रै राखौ। ताहरां फर हरदान कह्यौ—साहूकार नै सूंपां
कोई मोती मगाय ल तौ भगड़ो करता भूंडा लागां। फर म्हारी कूची[3] थाव
आवै तसूं कोठार में रखावौ। ताहरां कुंवर कंठी लीवी। सेमै भीतर महल
पधारिया नै वसत रूप री डबी पास डोलिये रै पगांतियै माळो थौ तैं मांही
कळ थी तिकै कळ मांही राखी। सो कंवर विचित्र जाण्यौ क दूजा नै खबर
नहीं है।

हिव सुख सूं राज करै। रैत[4] सगळा राजी रहै। राजा रो काम सगळो
विचित्र कुंवर करै। राजा धनपरथ महल में बैठो औसां[5] कर। पोतरै सूं
घणो प्यार सो पोतरै नै रातदिन हजूर में राखै सकावै। नाम कुंवर रो देपाळ
द दियो छै। आ देपाळ वरस दोय रो हुवो। राजा धनपरथ री हजूर में रहै।

यूं करतां विणजारो अबासणी आयौ। हरै सवालख पाळर हजार दोय
वगरूमदाज बड़ो डरो असवार पांच सौ। नगारो बाजतौ पांच रथ दोय
सुखपाळ हाथी दोयसै साजमें[6] सूं नायक अबासणी आयौ। विणजारे रै बेटा
बेटो निणरो नाम सुजाण सो घणो चतुर। सग्ब दर रो नायक सुजाणे रै हाथ।
नायक रै साथ हाथी एक दरियायी गोमुख। ठेठी कुंवर नै खबर हुई—क बड़ो
हाथी छै। पटपता री ओगाड़ रो छै। ताहरां विचित्र कंवर कह्यौ—क
विणजारो महाराज रै आवणी माल्गी पुठमां। दूज दिन नयासणी नायक साथ
सुजाण पातनी भेंट नै राजा धनपरथ रै मुजरै आइयो। सिम्भूरी रा पूग रोर

[1]कबी न कबी [2]धूप में दिल दर [3]पुरालव—जिला मिर बैर री
बार [4]प्रजा [5]आनन्द [6]सजावना।

मेक केसर री गांठो मेक वावने चन्दण रो मरण मेक मूंगियांरो तरवार मेक भमल इतरी वसतां घनोसी घर दूजो मवो कपड़ो मांन मांत रो नजर करने बैठो। वतळावण करी पान रो बीड़ो देनै विदा किवी। कुवर बिचित्र सूं मुजरो करण गिया। कुवर घणो मादर दियो। कुवर री नजर मेवो-कपड़ो कियो। ताहरां कुंवर रै मन में हाथी री बात थी सो कुवरजी फुरमायौ—म्र मेवा कपड़ा-वसत म्हांरै पण घणा ही है। वे तौ परदे रा परसण[1] फिरणवार[2] छौ। कोई मपूरब[3] वसत लावणी थी। तांहरै नायक सवासखी बटो साम्हे मायौ। सुजांण ऊठ डेरै जाय इरड़ो मेक सवासेर री समरणो १ मकमुखो रुद्राक्ष री मांग भेंट कीवी। कुवर बहोत राजी हुवो। पांनां रा बीड़ा बगसिया विदा कीवी। नायक सवासखी सुजांण डेरै माइयो। कुवरजी वसतां महल मैं माळं कळदार में राखी। परभात सुवारै ही पूजा करनै पाळ मारोम्यो। खास कर महाराज रै मुजरै गयौ। काम-काज री सारी मरज-विनती कीवी। फेर राजा फुरमायौ सु बीच मे भारियौ। कुवरजी ऊठ हाथ जोडि नै मरज कीवी— महाराज नायक रै हाथी मक चौमुखो दरियाई छे। बहोत चावो छै। जो हुकम हुवे तौ मोल लीजौ। ताहरां राजा हुकम कियौ—के मत्ती बात छे। ज थांहरै खुसी छै तौ सताबी लीजौ। इतरो कहिनै कुवर मुजरो करनै डेरै माइयौ। छड़ीदार मेक चन्दण नामै मेहरवानगी छै, सो बहोत समझणो छे तनूं फुरमायो— जाय नै सुजांण नायक नूं बुलाय लाव। चन्दण छड़ीदार दौड़तो ही गयो। जाय सुजांण नायक नै कह्यौ—कुंवर बुलावै छै। सुजांण सताब कुवर रे हजूर मायौ। बातां करी। कुवर फुरमायौ—हाथी मेक दरियाई छै सो म्हांनै मोल देवो। तब सुजांण नायक मरज कीवी—हाथी सवासखी नायक नै पातसाह फुरमायौ है तौ ल्यायो छे, तेसूं कुवरजी रै चूप छै तौ माप राखो। माप उठै पधारजो। नायक नै देसाय नै सेवा। बात कुंवरजी मानी। मिठाई मगाई, मत्तर मंगायौ सुजांण री मनवार करी। पांन बगसिया। कंमर मक बहोत बेस बिचित्र कुवर सुजांण नायक नै बगसिया। डेरै नै सीख कीवी। दूसरे दिन सेवा-पूजा कर पाळ मारोग राजा रो मुजरो करि, मसवारी करि नायक सवासखी रै डेरै पधारिया। नायक नै बटो दोनूं साम्हा मायां पांवां लागा। डेरै भींतर

---

[1] मन्य पृथ्वी खण्ड [2] फिरने वाले [3] मपूर्व बाह पसन्द।

बिराजिया[1]। मिजमानी रो नायक आवतो करायौ। कुंवर विचित्र देस मुलकां री वार्तां कीवी। इतरै में नायक सुजांण कह्यौ—आपवो महाराज कु वार हाथी दीसा फुरमावै छै। ताहरां हाथी मगाय नजर कियौ। ताहरां कवरजी कह्यौ—हाथी रो मोल फुरमावो। नायक कह्यौ—कोई लेवा नहीं। यू घणो मात्र[2] हुवौ। पछ रिपिया घट ४० हजार लागा था जिके लिया। कवरजी री वलिंग भेक नजर कीवी। हुमाऊजी नाव रै परां री प्रावत्तान मरमयोसरो संख वदाम वरतन परो मारक पाती री मळो रो जैसी अघ-अघ हाथ चौगिरद सवमाई पड़ै। इण भांत रो भारी वसत नजर करी। भाईपो हुवौ। माल भार राख्या। जगत री पोठ चूकी। नायक रै भाग्ण री वधारो हुई। ताहरां सुजांण कु वरजी रै मजरै प्रायौ। वात करी। इवी भेक जुहार लाख भवरा री सांपी। कु वरजी वसत भक राखो सरोजीनो भार सवहूणो तैसूं म्राप कन्है राखो। ताहरां कु वर फरमायौ—मांही रो कहीं खरच पड़ जावै तयो कही साहूकार रै राखो। जद सुजांण नायक मरज कीवी—प खरच पड़सी तो भर छै। पण साहूकार सू मन परचै[3] नहीं। ताहरां कु वर कह्यौ—इवी कीमत कराम सूपो। ताहरां इवी खोली। जुहार मुलाय कीमत कराई। रिपिया लाख चार री इवी हुई। लिका इवी कलदार उवे माळ मांही राखी।

दूजे दिन नायक बिदा हुवण नै दरबार प्रायौ। राजा कनकरथ रो मुजरो करायौ। कु वर महाराज सू भरज कीवी—नायक प्राछी आगात मरी भलो भांति वसतां नजर कोवी हुकम हुवै तो सिरपाव दीजै। राजा फुरमायौ—प्राछी वात छै। ताहरां दोनां ही नायकां नै सिरपाव मोती कड़ा वगसिया। बड़ी दिलासा कीवी। भार म सताय भाव जाजो थां। बड़ी वातां कीवी। राजा रो मुजरो कराय कु वर भापरै डेरे म गयौ। सिरपाव ल्याय सिरपेच सुजांण नायक नै दियौ। बड़ी प्रीत वधाई। ताहरां नायक हाथ जोड़ भरज कीवी—कांई वसत फुरमावो परदेस सूं म प्रावां। ताहरां कु वर फुरमायौ—घोड़ो भक धराको[4] लता आजो। नायक सवासती डेरे नू गयो। सुजांण नायक कु वर बिचित्र कुमार रै जनानी ड्योढी गयौ। पवारण[5] सू मुजरो मालम करायौ। भरज

---

[1] बैठे [2] मिर [3] विश्वास नहीं होता [4] विशेष नस्ल का घोड़ा
[5] दासी।

कराई—वसत विसा वांहरै चूप हुवै सो फुरमावौ। ताहरां भींतर सूं जवाब मळियौ सु स मुजाप करै आइयौ। कूच करि बहिर हुवा।

उठा सूं कुंवर मुलकगिरी नै असवार हुवा। मुलक भूमिया सारा रस किया। मुलक दोय-तीन पूजा मया वसाया। बरस दोय सू कुंवर फतह कर पाछा घरै पधारिया। दीवाण सुन्दरदास ऊपरि काम रो मुहो छै। साह सुन्दरदास रो बटो साह बेणीदास तिको कुंवर रै हजूर रहै। बडो धामधरमी वडो बुद्ध[1] राखण हार[2] छै। बड़ा मुत्सद्दी छोटा-मोटा कामदारां सूं सुख राखै छै। आपो आपरै हवाल में सब खबरदार रहै। राजा रो राज विचित्र कुंवर मारी घातियो वडी दौलत वधारी। लोक बहोत सुख कियौ। नवा परगनां मुलक वासिया।

अेक दिन तळाव पधारिया गोठ कराई। सारो साथ आरै छै। हजूरी सारा ही साथै छै। आप आपरा ही साथिया खड़ा छै। अमल-पांणी कीजै छै। मिठाई रो आवलो सरब बेणीदास करावै छै। मिठाई बांटीजै छै। कुंवर हजूरियां साथै तळाव में झीलै[3] छै। बड़ा तळाव रो पांणी छै। कुंवर तळाव मांहि चुभो मारै[4] छ सो पूठो[5] नीसरियो नहीं ताहरां हजूरी कहण लागा—

> आगे अंसर[6] झीलतां पैठो कुंवर विचित्र।
> अबहू न आयो आपरो मन भागीरो मित्र॥
> आय आय ऊंडा गयो बार मांहि बडवीर।
> कहिसा बाधूं पाव मैं सोधो कुंवर सरीर॥

ताहरां सरब हजूरी पासवान खवास तैरू[7] हुता तिके सरब तळाव ढूंढियौ। घणो ही जोयौ पण हाथ न आयौ। इतरै में कुंवर री अलक देही ऊपर तिर आई। तरै सरब लोग देखण लागा। देखै तौ देही निरजीव देखी। तद हाहाकार सबद हुवौ। साथ सारो ही रोवण-झूरण लागौ। राजा नै आय खबर हुई सो सुण नै मुरछागति हो गई, विवहल होय गयौ। कुंवर सुन्दरदास दीठी नै कुंवर री आ गति हुई अर राजा री देह छूटै तौ राजा जाय छै। ताहरां कुंवर दैपाळदे नै उठाय छाती सूं समायो। नीर सींच सावचेत कियो। राजा

---

[1] बुद्धि [2] रखने वाला [3] स्नान करता [4] पानी के अन्दर बैठा [5] वापिस [6] मुख्य [7] तैराक।

सावचेत हुवी। फेर कूकण-पुकारण लागा। तद महतै अरज कीवी—जे कुंवरजी री आ दसा हुई। देपाळ निराठ दिलगीर हुवौ। कूकारोळ[1] सूं कुळराजा गयौ कह्यौ—महाराजा दिलासा करौ। इण ऊपर जीव टेकौ अर परमेस्वरजी भाईज की सौ किण रो ही दोष नहीं। यूं कहि दूहो कह्यौ—

मुख में दुख संचारवो दुखियां मुख दयाम।
देवण वठी वाणवे हरि रह्यां वेम्रान॥

यूं कहि राजा नूं समझायौ। सावचेत[2] कियौ अर कह्यौ—महाराज थांहरै[3] मारी दौलत छै, कुटम्ब छै। इण तरह राजा नूं धीरज बधाय जनानी ड्योढ़ी गयौ। जनाने सारे ही में धीरज दीवी। कुंवर री मां अर महळ[3] दोनूं ही हठ झालियौ—कुंवर रो मुहडौ देखां। ताहरां कंवर री मां नै तौ कह्यौ—थ तौ मुम्यांनी छौ। इणरा सास्तर[4] सुणिया छै। कथा सुणी तैमें इसरी ही हठ सुणियौ छै? यूं कहि राणी रो हठ छुडायौ। फेर कुंवर री रांणी नै फुरमायौ—थ राज रो काम कुण चलावसी राजा तौ विरघ[5] हुवा। कुंवरजी री यूं हुई। देपाळदे बाळक छै। राज राखणो छै तौ आपने विरामणो छै। परमेस्वरजी निमित्त धरम-पुन करौ। घणौ सोच करणो तौ असमझ रो काम छै। हठ छोड़ अर सारै रहि नै राज करौ। कुंवर देपाळदे नै पाळ मोटो करौ। राजा रो काम सुधारौ। इतरी बात कहि कुंवर री रांणी रो हठ छुडायौ। सारा साक-सगराव भेळा होय जाय उण देह रो कारज कियौ। दाग दे स्नान करि पाछा ठिकाणे आइया। तीजै दिन तइयो[6] करि, फूल गुसांई गमाजी में बहिर किया। किरिया कराई। द्वादस रै दिन ब्राह्मण-भोजन करायौ। कुंवर देपाळदे नै राजा गोद में बैठाय राजा री पाघ बधाई। तिलक कर सगळा लोकां रो मुहार करायौ। सारा भाई मुहता अमराव मुत्सद्दियां कन्है निजराणो करायौ। कुंवर देपाळदे री हजूरी पासे मुहतौ वेणीदास चन्दन छड़ीदार सारां ही नै राजा कलकरण ज्यूं था त्यूंही राख्या। खिजमत सारां ही नै दीवी। सिरपाव दे कुंवर री सारां ही नै मर्यादा दीवी। मोळ गू दिन बारह ताई मसांण में रसगिया। तेरवें दिन राजा तखत बैठो। ताहरां हरदान गोगदान सिवदान सिर म राख पाती। मठीत होय चालता रह्या। हरदान

---

[1] रोना-पीटना [2] सचेत [3] स्त्री [4] शास्त्र [5] वृद्ध [6] मृत्यु के तीसरे दिन पर की जाने वाली कर्म-विधि [7] रुपया या मूल्यवान वस्तु भेंट करना।

गोगदास नै कुकता रोवतां नै घोंस नै नोठ हजूर लाया। फर सारा मोकराम में नवो राम हुवो। सुन्दरदास मुहत सारां ही मैं तीरथ वधाई। मोवतसामो सक करायौ।

कुंवर रो जीव नीसरियौ सो देईदास रो खोळ[1] मी ठाकुरां रै खोळ में पड़ी थी तार्म्हें जाय पड़ियौ। तद ऊठ ऊभो रहियौ। देवीदास श्री ठाकुरां नै परणाम कियौ। तद भीतर सूं मवाज हुई—पसक दरियाव तमासो दीठौ? कुंवर कह्यौ—आपरी किरपा सूं। फर मवाज हुई—थे म्रा मगवान री वात किणी नै कही तौ थिग-सायत[2] थांहरी देह छूटसी तैसूं खबरदार रहै। इतरो सुण देवीदास दोपहरां रा घरै आइयौ। आगै देवीदास री मा जीमण लियां बैठी थी कह्यौ—जीमण ठंडौ होय गयौ। साहरां देवीदास कह्यौ—ताळ[3] सौ कांईं भागो नहीं। जावण-आवण हीज कियौ। सिड़को[4] टाळि पांणी पी गगाजळी चाकर रै हाथ देनै हाट गयौ। आगै साह अखैपाळ कह्यौ—सावास बेटा भलो वेगो आइयौ। आज हाटे काम थौ। साहरां देवीदास कह्यौ—बावजी ताळ तौ कोई लागी कोयनी। जावण-आवण हीज कियौ। इतरौ कहि देवीदास काम लाग गयौ। नामो-ठामो मांड छै। बजार रो नामो-लेखो लेण-देण देवीदास रै हाथ छै।

भोळ गूहरदान रामदान दोनूं भतीज होय गया था। तीरथां नै रवाना होय गया था सो आगै केदारनाथजी परस बदरीनाथ परस विस्वधार परस भूठसि मांहीं कर नैपाळ परस मुकक्षत्र परस अयोध्या कासी परस पराग[5] जी जाय मकर रो माहण करि फेर पाछा जाय कुंवर रा पिंड भरायां पछै वैजनाथजी जगन्नाथजी परस मारकण्डेय कुण्ड तरपण किया। फेर कुंवर रा कुरापिंड भराया। रांहणो कुण्ड तरपण किया। महोदधि स्नान करि, दखिण रा तीरथ गया। विस्ण कान्ची सिव कान्ची परस सेतुबन्ध रामस्वर परस श्री लछमणजी रा दरसण करि, पछ तीरथ परस श्री द्वारकाजी परसी। तठै मतीजां बसा रो सांगो हुवो। ताहरां कह्यौ—आपां गिरनारजी रो तमासो देख पछै घट्ट आसां। आगै श्री हिंगळाजजी परससां।

साहरां गिरनार जाय गिरनार सूं आवतां विचै पाटण सहर जाय डेरो कियौ। परभात री बजार री मीख मैं आया। फिरतां-फिरतां अखैपाळ री हाट

---

[1]शरीर [2]निमिशमात्र [3]देर [4]भूख [5]प्रयाग।

साम्हो दीठो । ताहरां हरदान बोलियो—रामदान समासो देखाळ । देख सागी कुंवर ओठां हुवां । रामदास देखि कह्यो सागी छै । ताहरां हरदान बोलियो—ऊमारो[1] शरीर तो आपां हाथां फूंकियो पण प्राण हारो[2] तो सागी[3] छै । घड़ी दोय रह्या । खूब जोयो । आपा-पाछा होय रह्या । इतरै देवीदास बोलियो—भतीजा क्यों खड़ा छो ? कासू देखो ओळखो नै मारग लागो । ताहरां हरदान कह्यो—रामदान ओ तो सागी कुंवरजी छै । सागै बोली छै । फेर कन्है खिसक नजदीक आया । ताहरां देवीदास कह्यो—भतीजा कासू देखो क्यां चाहिज सो कहो । ताहरां फेर रामदान कह्यो—भाई, सागी कुंवर छै । मुजरो करो । ताहरां निराठ कन्है आय ऊभा रह्या । देखै तो सागी छ । गुमास्ता आम्ही सारा दूर हुया । ताहरां रामदान कह्यो—हूं तो पलळाइस[4] । बिना बोलियो काई रहूं कोयनी । तिवरै देवीदास वही नीचै मेली नै आडो ओसण नै ऊठियो । ताहरां कह्यो—भाई दूहो कहसूं । साम्हो आय पूछियो तो हरदान दूहो कह्यो—

बिछिया कुंवर बखाणिये च्यारि बरज[5] लिखि च्यार ।
सूरज दूजो कनक मुख[6] दीपै जम दातार ॥

यो दूहो हरदान कह्यो । ताहरां देवीदास सांभळ नै पूछियो—स्वामीजी यो दूहो कहड़ो[7] कह्यो । यो कठा सूं सीखिया । ताहरां हरदान कह्यो—कुंवरजी महाराज म्हारो कह्यो छै । इतरो कहतां सुरत दोनूं भाई गदगद कंठ होय सिलाम करण लागा फिर पड़िया[8] । देवीदास पण ऊभो-ऊभो देखी घर ऊळसिया[9] । देहरो बिदेह होय गयो पण नाक री टोमी सूं ओळख लियो । ताहरां देवीदास कह्यो—थांम्यां आगळ[1] देह री बिदेह होय गयो । ओळखणो आये नहीं ताहरां आस्यां सूं ही सलाम कीवी । अरज कीवी— महाराज कदार जिकांग धणी छोड़ि आवै निवांग म ही हुवास छै । ताहरां दूहो कह्यो—

धणियां बिन धमा धणी दीसै मेली देह ।
चाकर भमळ मात पित चित बिसरी छारो देह ॥

आपरा विछोह सूं यो ईज हवास सगळां रो छै । इतरो सुण रिपियो भेंट गूंथ[1] मोहि सूं काढि हरदान रै हाथ ल्यो । जीमण री पाछा आवजो[12] । याता

---

[1]म्हारो [2]पात्र [3]यही बात बणेगा [4]बणे [5]कमरख का पुष्प [7]ऐसा [8]अर्पित हो गये [9]पहिचाना [10]आये [11]जेब [12]आना ।

करसो। खामा रहिज्यो सुमराज मतां करज्यौ। राम राम करजो ज्यूं रूजे कोई नहीं। इतरी कहि सीख दीवी। आप फेर हाट रो काज करण आया। साम होई ताहरां थहियां नै समाई। कोथळो गुमास्ता रै हाथ दियो। हाट रै ताळा सचवाय नै घर रै वास्तै रवाना हुवा। इसर वखत हरदान आय ऊभौ थी राम कह्यौ। आप राम-राम कह साथ से बहिर हुआ। अतीत घर रै बारणो बैठा। आप ही भींतर जाय जीमने बाहिर आयो। साह अजैपाळ नै कह्यो—म्हारे डीम में थाळस छ। नोहरै जाय ठेस मसळाऊ। इतरो कह नोहरै गयो। गाय भैंस बैंसियां रो चावसो करि, चाकरां नै कह्यौ—ढोलियो पटसाळ ऊपर ढाळौ। ताहरां ढोलियो पटसाळ ऊपर बिछाय दियो। ऊपर देवीदास बैठो नीचे हरदान रामदान मुजरो करि बैठा। सारी बातां पूछ सी सारी बातां कही सो हकीकत कही। देवीदास सुण कर राजी हुवो। कह्यौ— रे म्हां बिन सारा ही दिलगीर हुय गया छै? हां कंवरजी सारा ही घणा दिल्गीर हुय गया छै। फर कुंवरजी कह्यौ— थांहरी मठी सवो जाय। ढवी सुहार री सुबांण नायक री छै सो थ उठै से आय सवी। नायक री ढवी नायक नै देवो। हरखे १। सेर, समरणी प्रेकमुखी ख्वास रो छै सो हरखे तो कारखाने रखायजो समरणी दिपाळ नै देजो। म्हारै महल में ढोलिये रै पगांथिये[1] चाळो छै, तिण मांहे छै सो आय लेवो। म्हारो नांव मत लेवजो। ताहरां नै कही महाराज कुंवर रै नाम विगर वखत चाकर[2] मांगीजे? ताहरां देवीदास कह्यौ—थे यूं कहज्यो—महयारिये गया हुता उठ मिळिया था। ताहरां म बसतां वसाई यो थांरां सोमळे ज्यां वसतो लाभै। ताहरां हरदान रामदान कहण लागा—इसी बात म्हांसूं कही न जावै। म्हां तौ परतख्य[3] दरसण किया सो इसी बातां फोकर नहीं। भली तौ आ छै आप उठै पधारो। राज सारो दुखी छै। अठै थांणिये रै घरे थांसूं करसो। अठै तौ अब घर में उजाळ छ, उठै सारै देस मुलक में उजाळो हुय। हजार कोस में सारो लोक दुखी छ। म्हांनै तौ ढोढियां मै वरस छः हुया छ पण चाळीस दिन आपणी सीम[4] में हुआ सारो लोक रोवै था। माथो टेकियां बिसुरण मरै था। मर बारह दिन सहर में रह्या था सो गमळ सहर में लोगां रै मळा अन्न दांतां भसी नहीं[5] सो उठै सारा आधार थो। आप पधारा थी सूरज ऊगो। आमियां आप दया किया था सो आप

---

[1]पैरों की तरफ [2]पैसे [3]प्रत्यक्ष [4]सीमा [5]खाना नहीं बना।

आणी हीज छी। सो तौ राजा ने धरती ने दुख होसी। इसी भणी ही वार्ता कही भणी ही परधायौ पण देवीदास तौ आ हीज कही—थे आवौ पण म्हारो नांम मत लेवजौ अर आ बात यूं हीज होणहार थी सो हुई। तद हुरदान कह्यौ—बात तौ म्हैं दीठी छै तिकी कहसां, दूजी म्हांसूं कही न जावै। यूं कहि ऊठ मुजरो कियौ। बीस रिपिया खरची रा दिया। फर देवीदास कह्यौ—माळ री कूंची अमरदार मोहण कन्है छै सो मांग लीजौ। मोहण इतबारी[1] छै। इण भांति कही।

देवीदास आय सोय रह्यौ। इणां तौ उहीज वेळा वम्बूगढ़ रो मारग लियौ सो रात-दिन कासीद खेय हाले ज्यूं चालिया सो दिन ३१ मांहे वम्बूगढ़ आय पूगा। परभात पोहर छै। राजा कनकरथ दरबार में बैठा छै। कुंवर दैपाळदे झोळ में बैठो छै। उवै समै सवा लखी विणजारो सुजांण नायक पण उवै पांण[2] उठै आय बैठो छै। खबर तौ सहर में बड़ते हीज हुई थी। डेरा कर सुरत सुजांण दरबार गयौ। सुजांण वहोत मरोह कियौ। डोढ़ी आय सुजांण मुजरो गुदराइयौ। भीतर कुंवर री रांणी सुजांण रो नांम सांमळ नै फिस पड़ी। अचेत होय पड़ी। नीठ-नीठ सचेत कीवी। इसी ही दसा सुजांण नायक री हुई सो सुजांण नायक नै पण चाकरां सावचेत कियौ। ऊठि डेरै गयौ। दूजे दिन थाल १ घोड़ो १ कुंवरजी मगायो थौ—जाति रो अराकी साथ ले दरबार गयौ। जाय पाय दैपाळ नै बधाई। घोड़ो टीकै रो दियौ। मोती नरमादि आणी थौ सो राजा रै नजर किया। कपड़ो रांणी मगायो थौ सो रांणी री नजर मलियौ। ताहरां रांणी कहै—

> मूळ फूल मूठी समन आन पान सब जार।
> पति बिन नायक नारि को यह सिंगार अंगार॥

नायक सुजांण थौ कपड़ो म्हारै कांही काम नाहीं। ताहरां नायक सुजांण अरज कीवी—कुंवर दैपाळदे परणास्यौ ताहरां काम आवसी। चूड़ो अेक दखणरो वहोत वेस[3] मलीन ल्यायो थौ रो नजर गुदराइयौ। सारी वसतां रो लेखो करि सुजांण नायक नै नांणो दिरायौ। मोती-नरमादि किनां रा रिपिया हजार ४ भेट लागा था तिकै लिया बधता नायक पाछा दिया। यूं चटपटी करि नायक

---

[1] विस्वास-पात्र [2] समय [3] स्त्री के पूरे कपड़े [4] रुपया।

विदा मांगी । नायक तब बहिर हुवौ ।

पछै दूसरे दिन हरदान दरबार आय मुजरो कियौ अर कह्यौ—महाराज बधाई दीज कुवरजी आया छै। तांहरे राजाजी कह्यौ—ऐ कुण छै, पूछौ। तब दरबारी पूछियौ—अठीतां ये कुण छौ ? ताहरां इणां मह्यौ—हरदान रामदान कह्यौ श्रोळगू छां कुवरजी सूं मिळिया छां। ताहरां राजा गदगद कठ होय कहै—

गयौ न जोवन बावडै[1] मुवा न जीवै कोय।
अणहूणी[2] हूणी नहीं हूणी होय सो होय ॥

राजा कह्यौ—सुन्दरदास ऐ बिचारा गहला[3] होय गया छै। उवे री मेहरबानगी रा चाकर था। पेटियौ दिरावौ दिमासा करौ। ताहरां हरदान कह्यौ—महाराज म्हे गहला कोय नहीं बात चौकस[4] कहां छां। म्हे कुवरजी सू मिळ वातां करि, ठावा समाचार आया छां सहनांण लाया छां। ताहरां सुन्दरदास अरज कीवी—महाराज ऐ बोलै सौ सावचेत छै। ऊंडा बोलाय[5] पूछीजे। दिमासा कीजे। ताहरां कह्यौ—ऐं जांणौ। तद ऊंडा बुलाय पूछियौ। ताहरां हरदान कह्यौ—पाटण सहर मांही धर्मपाळ रै घरै छै। हाठ में बैठा मांबो मांडे था तठै दीठा। पछै आप ही म्हांने बतळाया। रिपियो श्रेक म्हांनै श्रीमण नै दीनौ अर कह्यौ—रात रा छांमेसे[6] आवजौ। ताहरां श्रीमण करि तुरत गया। घरै जाय श्रेकान्त बैठि सारी वातां पूछी। फुरमायौ छै—अबी श्रेक सुजांण नायक री हरडै श्रेक सबासेर री समरणी श्रेकमुखी रुद्राक्ष री कठी श्रेक मांहरी इणरी बसतां म्हांरै महल में छोसिमि रै पगांतिये श्राळ में कळ छै, उण में सरब बसतां छै। घर श्राळ री कूंची मोहण सेजवारदार कन्है छै। ताहरां मोहण पण हजूर खड़ो थौ तिण कह्यौ—महाराज चौगस कूंची तौ म्हारै कन्है छै। ताहरां राजा कह्यौ—भो तौ महल उवे दिन बड़ियौ थौ सो खोलियो कोई नहीं सो साथ आवौ महल खोलौ श्राळो सभाळौ। ताहरां मोहण सेजवारदार कुवर वैपाळदे नै साथ ल महल में गयौ। श्राळो खोलियो कळि किया। बसतां च्यार नीसरी सो राजा रै हजूर ले श्राया। राजा बसतां देखी खूब खुस्याळ हुवौ। राजा हरदान नै बसतां रो पूछियौ—बिणजारे री अबी तौ बिणजारे नै दीजौ। मांहरी कठी में लीजौ

---

[1]लौटे [2]होनी [3]पागल [4]होशियारी से [5]बुला कर [6]छुपके से [7]सौभा।

हरखै कारखाने राखज्यो । सुमरणां वपाळव नै दीज्यो । ताहरां कठी हरदान नै दीवी । विणजारे नै रुपी देणी । असवार दोय चढ़िया । कोस बीस सुजांण नायक नै आय पहोंच्या[1] । कह्यौ—सुजांण नायक थांनै राजाजी साहिब सताब पूठा बोलावै छै । जरूरी काम छै । ताहरां सुजांण चढ़ि साथ हुवौ । तद राजा हरदान री खिदमत कराई । सिरपाव दियौ । करै म सीख दीवी । तद जोड़ी बुलाय पूछियौ । हरदान सारी बात मालम कीवी । ताहरां रामलोक अरज कीवी—गुड़ बटायजे नौवतखानो सरू कीज । इणनै सिरपाव बधाई दिराजै । ताहरां सुन्दरदास हाथ जोड़ अरज कीवी—औ आ वात कासूं छै ? कारज[2] तो आपां आपरो हाथ सूं कियो छै । फर मै सागी देखि आया तिका पण वात चौकस । सहिनांण[3] सब मिळिया पण कूवी बात छै । चार ही ठावा मांणस मेलह सांची खबर मगावौ चौकस करि आवै । राजा कह्यौ—अबस छै । ताहरां हरदान डेरै गयौ । दूसरे दिन फेर राजा दरबार में आय बैठो । साह सुन्दरदास सारा अमराव मुत्सद्दी आय बैठा । हरदान रामदान नै दरबार में बुलाया । भींतर रामलोक अर कुंवर विचित्र री माता ताकीदी करै छै । मसलत करि रह्या छै । आदमी मसण वाळां री गिणती करि रह्या छै । इसरै नायक सुजांण पण आयौ । पागड़ा छोड़ि राजा नै मुजरो कियौ । राजा हरदान री कही बात सुजांण नायक आगै कही । रुपी अपाय हाथ दीवी । ताहरां रुपी देखि सुजांण कह्यौ—बात सांची । रुपी री मुंद कुंवरजी बिना दूजै नै पण कोयनी । फेर सुजांण डोढ़ी गयौ । ताहरां भींतर सूं कहायौ—कंवर नै ले आवणो छै तो आप पधारौ नहीं तो कोई आवै नहीं । पं साहूकार नै आदमी आया री खबर हुई तो कहीं परदेस मत देसी । पछै क्योंही बटसी नहीं[4] । ताहरां बात सुणि नायक दरबार आयौ । ताहरां राजा साहब साह सुन्दरदास नै फुरमायौ—आदमी तैयार करौ । खरची दे विदा करौ । तद राजा सुजांण नायक नै कह्यौ—इसी तजबीज करो छौ पछै बाहरै कासूं सनाह आवै ? ताहरां सुजांण कहै—बात तो मैं ही हरदान नै भांत भांत[5] करि नै पूछी सो बात तो सगळी ही सांची छ । झूठ तो मतां जाणौ और डोढ़ी अन्है बतायी थी सो आ फुरमायी छै—झूठ तो मतां जाणौ पण दूजा रो काम नहीं यूं अरज करूं छूं । ताहरां सुन्दरदास कह्यौ—स्यावास नै तो महाराज

---

[1]पहुंचे [2]किया कर्म [3]चिन्ह [4]कुछ भी हाथ नहीं लगेगा
[5]तरह-तरह से ।

पधारसी पण मांणस भ्यार ठावा जाय सांची खबर ल्यावै । बात चौकस है महाराज पधारसी । कूड़ी बात छै, कदाचित झूठी होय जावै तो पाछलो रा रोरी तथा गोई ऐसी बात जाण कोई हसली । और कवरजी री देह सी मांपणे हाथ सूं फूली छै । सारीसे मरए हारे सारो मुलक भरियो छै । ताहरां नायक कहै छै—

> कोई मुड़वा पायी किणी परमेसर री पार ।
> जीवां मार जिवाड़ही जिवंत हुवा मार ॥

साह सुन्दरदास परमस्वर री गति अपार छै । पण आपसूं म्हारी अेक अरज छ—महाराज तैयारी करो । श्री द्वारकाजी री यात्रा रो मजकूर करि, पाटण जाय उतरस्यां । जे मन परचसी[1] तो कुंवरजी नै ले आवसां नहीं तो आपां जाय तीरथ परस आसां । बात पराई[2] जाहिर मतां करौ । ताहरां सुन्दरदास कह्यो—आ महोत आछी कही । यद महाराज सूं पण अरज कर, तैयारी कराय राजलोक पण अरज कराई । ताहरां महाराज पण कही—कुंवर री मा अर कुंवर रा महल दोनां नै ही तैयार किया । सुन्दरदास नै मुलक रो सरब काम सौंपियो । ताहरां साह अरज कीवी—कुंवर देपाळदे नै घठै राखो ज्यूं मुलक रो आपतो[3] हुवै । ताहरां राजा कह्यो—देपाळदे बिना म्हारे घड़ी अेक सरै नहीं । थारसी मरम सारी बात री थांहरै हाथ-हवाले छै ।

राजा तैयार हुवो । मगसर १० सूं बहिर हुवो । साथे कांमदार काम रै वास्ते घणीमाछ नै लियो । पन्न चोपदार मोहण रोजवदार और श्री कुंवर रा सारा हजूरियां नै साथे लिया । मोळ गू हरनाम गोगदास रामदास गिरधान प्यारां नै साथे लिया । राजा सुजाण नायक नै कह्यो—थे पण साथे हालो[4] । सुजाण कह्यो—महोत भली बात छै । सुजाण रै साथे सांम्भी था तिणां नै कह्यो—थ सारा ही जाय पाळन भला हुवो । मनाराज नायक सूं सुजरो कह्यो—म्हांरो महाराज सा थाम मनियो छै जो साग मर लागसी । थे थिरा मता करज्यो । पगन दांगो गाथपांनी सूं मपग्यो । द्वार मनि माशगियां नै सीख दीवी ।

सांम्भी दग कै रागिया । परण ग्रयानां गाल ने राजा बगारप कूच कियो सा मजिले दर ग पाटण पूगी । गार रै नैराडै[1] धरा नछांत एलो ।

कोल ४(। बार भी प्रबंध बना लिखने के ताने पर

ऊपरि बड़ो बाग थो तैं बाग में डेरो करि हुरदान रामदान नै बोलायो। आयो खबर म आयो। तद हुरदान राजा सूं अरज कीवी और बोल्यो—आदमी दोय कोई मानवर[1] बुला साथे देवो। ताहरां राजा चन्दण चोपदार और वेणीदास नै बुलाय साथे दियो और फुरमायो—कमरां खोस नै साथे जावो। कुंवर नै देख चोकस बात कर आवो। ताहरां वेणीदास चन्दण चोपदार, हुरदान रामदान मोळखवाने साथे ल बजार गयो। आय हाट रै बारणै आया थका थका रहि देखा किया। देखत-पांण[2] वेणीदास कह्यौ—अरे, छै तो साम ही। जितरै मै हाट नजीक जाय उभा रह्या। तद देवीदास इणांरे साम्हौ दीठौ। देखतां ही सारा ही मुजरो कियो। ताहरां साह अजपाळ बोलियो—थ कुण छो? देवीदास कह्यौ—कासूं लेस्यौ? वेणीदास कह्यौ—थां कपड़ो थां दांत लेस्यां। ताहरां वेणीदास कह्यौ—आपजी पेहली हाट म दांत कपड़ो छ तिको देखाळ [3]। ताहरां अजेपाळ साह कह्यौ—आवो बसत देखाळी। साह रै हुरदत्त रै हुण्डी रा रिपिया पड़े छै, तिके पण लेता आवो। मू कहि देवीदास ऊठियो। मै पण चारों साथि हुवा। दूसरी हाट में जाय ऊभा। देवीदास सामने जोय मुळकियो[4] कह्यौ—वेणीदास नू क्यों आयौ? ताहरां वेणीदास जमी में हाथ लगाय सलाम करतो पगां में सिर दियो। आप ऊंचो उठाय छाती सू भीड़े मिळियो। चन्दण चोपदार तसलीम करतै-करत जाय पगां में माथो दियो। आप पूठमी थाप ऊचो लियो। मोळ गुवां मुजरो कियो। ताहरां कुंवर कह्यौ—हुरदान थनै इतरो बरजियो थो पण कह्यौ न लागो। तद अरज कीवी—महाराज इसी वात दीठां पछै क्यों कर रह्यौ जाव। अर फेर हो म्हे तो थांरा ही चाकर छां। थां बिनां म्हारी आ दसा हुई सो आप दीठी हीज हुती। सु म्हारी कासू, राज सारै ही इसी दसा थी। अद म्हां जाय कह्यौ तद कांई न दसा सुधरी छै। हमें सारा दरसण करसी ताहरां सगळां रो रंग फिरसी[5]। इतरी वतळावण करी। पछै वेणीदास नै वतळायो—थ वेणीदास आया रह्यौ न गयो। वेणीदास हाथ जोड़ अरज कीवी—जी महाराज इसी दुस्याळी दुनिया पछै क्यों कर रह्यौ जावै। आप मोटा छो विचार करि दखो। इतरी मुण फेर पूछियो छै—तो सारा साथ

---

[1] मान और गंभीरता वाले [2] देखते ही [3] दिखाइये [4] मुस्कराया
[5] सब में परिवर्तन आयेगा।

नै कुसळखेम[1] छै, ताजा छ ? ताहरां अरज कीवी—आपरा आज दरसण हुवां सारा कुसळखेम ताजा। फेर फुरमायौ—महाराज राजलोक साह सुन्दरदास और ही सारा चाकर सुस्याळ होसी। ताहरां वेणीदास कह्यौ—आज आपने मिळण सूं सारा ही चाकर सुस्याळ होसी। कुंवर फुरमायौ—आज क्योंकर मिळीजसी[2]। महाराज तौ जन्मूगढ़ बिराजिया अर हूं अठै बैठो। ताहरां चन्दण चोपदार अरज कीवी—इसी बात सुण महाराज किंयां बैसि[3] रहै। महाराज आजी साहिब नेपाळदे बहूजी साहिब हजूरी खवास नायक सुजांण सब ही आया छै। और आपरा नौकर असा कुण कमनसीब छै जो असी बात सुणनै पाछा रहै। ताहरां कुंवर कह्यौ—महाराज भी पधारिया ? वणीदास कह्यौ—आमा छै। आप कह्यौ—म्हांरी नहीं बिचारी बेबिचार कियौ। कठै उतरिया छै ? ताहरां अरज कीवी—सहर रै कन्है तळाव छै, तै पर बाग छै, तेथी आय सड़ा था। डेरा री तजवीज करै था। म्हांनै तौ फुरमायौ—थे हरदान साग जाय देखि चौकस करि आवौ। ताहरां कुंवर हसियौ—थांनै हरदान रो अपरचो पड़ियौ। जो हम छै, जिण जाय हुजी बात कही हुसी सो हरदान हूंज बोलै। नहीं हरदान रै सरीसो सांच रो बोलण वाळो मैं दूजो कठेई[4] नहीं देखूं छू। पण ये हमें सताब आवजो महाराज सूं मुजरो अरज करिजो अर डेरै बैठा बिराजज्यौ। हमें कोई नै उसे पासे[5] मतां आवण देज्यौ। घड़ी दोय रात गयां हूं हाटे ही आऊं छू। थे काहूलाई मतां करज्यौ। इतरी कहि सीख दीवी। आप पाछा हाटे[6] आयौ। अजैपाळ साह पूछियौ—कपड़ा थांव रो सोदो बणियौ ? इण कह्यौ—अपूठेक नौ काम बण गयौ छै। इतरी कहि घरां नै ऊठियौ।

वेणीदास चन्दण चोपदार हरदान रामदान म्हारों ही महाराज कन्है गया। मुजरो करि बधाई दीवी। राजा महोत हरखवन्त हुवौ। रांणी अर कुंवर री रांणी दोनूं कनात[7] रै कन्है आय बैठी। सुजांण नायक आयौ। राजा कलकरण सारी हकीकत पूछी। वेणीदास चन्दण हरदान सारो मजकूर हुवौ सो मालम कियौ अर अरज कीवी—हमार कोई आदमी कन्है आवण मतां दीजौ। घड़ी दोय गयां

[1]कुशल-क्षेम [2]मिला जायगा [3]बैठे [4]कहीं पर [5]इधर-उधर
[6]हाट पर [7]पर्दा।

हू मेकलो आऊ छू । बात सुण राज अर रावलोक सारा ही राजी हुवा । हमें घड़ी च्यार दिन बासलो[1] सो सो च्यार बरस बराबर हुवौ । खाणे-दाण रो सगळो आवतो साथे वेणादास कियौ । लोक सारो सुस्याळ हुवौ फिरे छै । साह अजैपाळ देवीदास पण घरे आय जीमण जीमिया । देवीदास सूने मोहरे जाय मन में चिन्ता करे छ । श्री परमेस्वर रो ध्यान सुमरण करण लागो । बहोत दीनता करि नै श्री भगवान नै अरज करण लागो ।

कहि अब हू कैसे करूं दीनानाथ दयाळ[2] ।
लाज हमारी राखि प्रभु, बहुत दुखी है बाळ ॥

श्री नारायणजी प्रतिज्ञा राखी । हमें कासूं होसी ? आपकी राखी प्रतिज्ञा रहसी । बहोत अजीज करुणा कीवी । इण तरह साँम हुई ।

ताहरां मोहरे में सूं ऊठि घरे आयौ । महल में जाय स्त्री नै कह्यौ—परभात रो हाट रो काम रह्यौ अर लोकां सूं लेणो छै । वेळा नहीं सो दिन पांच अथवा सात रात री किसत करणी सबो पूरो करणी छै । ताहरां बहू कह्यौ—भली बात । देवीदास कह्यौ—ऊपरसें आळ में लाल गत्ते री बही पड़ी छै सो उतार देवो । बहू उतार दीवी । बही ले बहू न कह्यौ—आवतो रातजो । इतरो कहि आप खिड़की रै मारग हुवौ बजार मांही करि नै नीकाळ सहर सूं होई तळाव रो मारग लियौ । आगे राजा रो आय पण मारग साम्हो जोय रह्यौ थो जितरै आवतो[3] नजर पड़ियौ । महाराज सूं चन्दण मालम कीवी—पधारे छै । सारो लोक दरवाजे कन्है आय ऊभो रह्यौ । वेणीदास चन्दण दोनूं साम्हा आय मुजरो कियो । रमा-रमा होय रही छै । जितरै सुजांण नायक दीपाळदे नै स्याय पगां लगायौ । सुजांण सूं बाबो पासि मिळियौ । बड़ी बतळावण[4] कीवी । भीतर पधारिया जठै सूं महाराज नजर पड़िया । तठै सूं दूबर तसलीम करतौ करतौ आगम रै छेहड़े गयौ । ताहरां राजा साम्है आयौ । दूबर जाय पांवां में सिर दियौ । राजा हाथ सू उठाय छाती सू लगाय लियौ पण दूबर गदगद कर होय गयौ । बोल सी दोनां म किही नै आयो नहीं पण छाती भरीज गई[5] । राजा हाथ पकड़ गादी कन्है बैसाणियौ । मुहडे ऊपर रूमाल फेरियौ । [illegible] सू

[1]पिछला [2]दयालु [3]आता हुआ [4]बातचीत [5]छाती में करुणा उमड़ पड़ी ।

मांक्यां पूछी साथ हेठै बैसाणियौ। पछै वेणीदास नै कह्यौ—मुहरां ल्यावौ। तद वेणीदास सताब सूं मुहरां हाजर कीवी। राजा रूमाल सें कुंवर ऊपर निछरावळ कीवी। सुजांण नायक सिरपेच कुंवरजी रै सिर पर बांधियौ। मुहरां भेक सौ निछरावळ[1] कीवी। पछै सारो लोक निछरावळ कीवी। निछरावळ रो बडो ढिग मुहरां रिपियां रो हुवौ। ताहरां कुंवरजी कह्यौ—वेणीदास भै ऊभी रखावी। ताहरां फेर फुरमायौ—निछरावळ छै सो हरखान रामदान नै दिरावौ। ताहरां हरखान मुजरो करि कही—

> बातां पव बाहार सूं बाबाणो[2] कवियात।
> भीरख तांहरो कनक सुत छळ[3] मांहि प्रखियात[4]॥

इसो कहि झोळो मांडि सरब भळी करि गांठ बांधी। यूं बात करतां नाजर हरिराम आयौ। कंवरजी सूं मुजरो कियौ। कदीमी नाजर बूढो थौ सो कुंवरजी ऊठि मिळिया बडो अदब कियौ तद हरिराम कह्यौ—लोक सरब उभा ऊठो। तद लोक सरब ऊठि ऊभा हुवा। मसालची पीळ चौसा लै गया। इतरै कुंवर री मां आई। कंवर ऊठि सलाम करतौ-करतौ मां रै पगां लागो। मां ऊंचो उठायौ कुंवर रो माथो छाती सूं भीड़ियौ मुंहडे ऊपर हाथ फेरियौ। मां बेटो गदगद कंठ हुवा। इसा मगन थावै जाणै काठ री पुतळी पड़ी छै बड़ा हीज रह्या। ताहरां राजा ऊठि हाथ झालि उरो लेचि मायो कन्है थांण बसाणियौ[5]। कंवर री मांजी रांणी लुही मुंहडे ऊपरि हाथ फेरै छै। वडारण सांम्ही जोयौ। ताहरां वडारण मोहरां री थळी हाथ में दीवी। कुंवर रै ऊपरि निछरावळ करि नाजर हरिराम रै हाथ में दीवो। बात करि रांणी जी थाम सांम्ही दीठी। सगळां रा सरीर हरख री बिरखा सूं भींज गया।

पछै पतन सूं कुंवर नै घर माय भांत भांत रा भोजन कराया। पछै कियौ पांन अरोगियौ अतर लगायौ। जितरै नाजर हरिराम आयौ। मुजरो कियौ कह्यौ—कुंवरजी भीतर मांजी बुलावै छै। कुंवर ऊठि मां कन्है गयौ। मां उवारणा[6] लिया। धाय वडारण सहेली उवारणा लिया। मां कह्यौ—बेटा महाराज उतावळ करै छै। रातवौ करि घरै हालो। ताहरां कुंवर कह्यौ—मांजी वैगा ही हालस्यां। थांडो ऊभी बातां करि ऊठियौ। थापरै जनाने गयौ।

---

[1]न्यौछावर [2]बखाना [3]दुनियां [4]प्रसिद्ध [5]बैठाया [6]बलैय्यां ली।

मोळ मुर्जा माथि मुजरो कियो। राग-रंग हुवा हसिया खेलिया पौढ़िया। हरमाळा सरब तमासो देखियो। भांभरके कुंवर ऊठियो। तिसे हरमाळा पण बड़ सूं उतर घरै आई। कुंवर पण दरवाजे सूं निकळ घरै आयो। घरै आय दिसा नै गयो।

हरमाळा सरब हकीकत बहू नै कही। बहू कह्यौ—बातां मानूं नहीं। लुगाई तौ बीजी हुवै पण मां-बाप बीजा कठासूं हुवै। कदेई आगै पण सुणिया था? आ बात मानूं नहीं। फर हरमाळा नै सराय[1] ठीक पूछियो। ताहरां हरमाळा कह्यौ—न मानो तौ थे आवो चौकस देखौ। उतरादे पासे अेक मोटो बड़ छै सो थे बड़ ऊपर चढ़ज्यो। डाळो अेक बाग में झुकियोड़ो सो उवै[2] डाळै आगे चढ़ज्यो सरब दीस सी। ताहरां बहू कह्यौ—हे हरमाळा अबार तू जाय देख औ केरो छै कै कोई छळ-छिद्र छै। ताहरां हरमाळा कळस[3] ले तळाव गई। जाय नै सरब तजवीज दीठी। देख नै पाछी आई, कह्यौ—बाईजी छै तौ मानवी बडो डरो। घोड़ा छै, रथ पालकी छै। कठाही[4] रो राजा छै। सोने-रूपे[5] रा छड़ीदार छै। इसी बातां सुण देवीदास री बहू मन मां राखी। विचारियो आंख्यां देखी पछै कहोस[6]। नेट गोसी री बात छ। मानणी[7] न आवै।

देवीदास पण सांझ रो घरै आय जीमण जीम महल गयो। घड़ी-पलक घमळावण करी। वही ने बहिर[8] हुवौ। पासे बहू पण गहणो-कपड़ो उतार, सादो पहराव पहर बहिर हुई। कंवर नै तौ सदामद[9] ओम साम्हा आय मुजरो कर ले आवता त्यों ले गया। बहू पण बड़ ऊपर चढ़ि डाळ ऊपर जा बैठी। सारी बातां सुणी तमासो दीठो। ताहरां कंवर आपरी डोढ़ी भीतर गयो। रांणी साम्ही आय मुजरो कियो। मु पर्के[10] दिन रांणी सजाई कीधी थी। अेमो ही पास चौसरो चन्दण रो छौ सो अेक ज्योति होय गई। कुंवर रांणी रै हाथ ऊपरि हाथ दे भीतर पधारियो। सो आ बड़ रै डाळै ऊपर बैठी थी ज्यो सरब देखी त्यों ही बिरहण होय गई। कन्वर तौ पोढ़ि रह्यौ आ बड़ सूं उतरि घरै गई। पिड़नी पोन महल में आय सूती सो नींद तौ कोई पड़ै नहीं।

---

[1]ताड़ कर [2]उस [3]कलश [4]कहीं का [5]चांदी (के) [6]कहूंगी [7]मानने में [8]एकदम [9]हमेशा की तरह [10]उस।

झांझरको हुवां साह रै बेटे री बहू काम-काज करण लागी। जितरै देवीदास पण घर में काम-काज करै छै। मही-पाना जोवै छै। ताहरां देवीदास री बहू सासू कन्है आय सरब हकीकत कही। इसो तो एक उपदरो[1] तूफान छै। दीठी थी तिकी सरब बात कही। तद साह री बहू साह नै कही—दिन नव[2] हुवा आवतां। साह पखम्मे में हुवौ सुण करिनै। फेर खराय न पूछियौ। ताहरां देवीदास री बहू कही—बात चौकस[3] छै। थांसूं जतन हुवै सो सताब करौ। थांहरो बेटो थांहरै कन्है नहीं रहै। तद साह साहणी नै कह्यौ—क बेटे री बहू नै कही कै आ बात कठै ही बाहिर मतां करै। आप हूं जाय देखि ठीक करि आऊं जितरै सताब[4] मतां करौ। यूं कहि साह पछैपाळ दिसा नै गयौ। देवीदास पण दातण-सपाड़ो करि ठाकुरद्वारै गयौ। दरसण करि भेंट कीवी पर अरज करण लागी—खानेजाद री प्रतग्या आप राखी रहसी। इसी भांति सूं बहोत अजीज कीवी—

> हो तुम दीनानाथ हो अनाथ अब को रहूं।
> पहिली मेरो हाथ झाली नाथ हाथ यूं॥

इसी करुणा करि गद्-गद कंठ हुवौ घर परो आयौ। रोटी जीम बजार गयौ। बजार रो काम-काज करण लागौ। बाप पण निगवारी[5] राखण लागौ। देखां कोई हमार ही आवै। फिरियौ पण बजार में तौ नजर आयौ नहीं। सिझ्या[6] पड़ी जीमिया घर आयनै। रात घड़ी दोय गई। महल में गया और घड़ी-पलक आता कर, मही लेनै बाहिर हुवौ सो भाग गयौ। साह पण पूठे लाग गयौ। कुंवर नै तौ सदामद आप भीतर से आवता ज्यूं न गया। साह पड़ ऊपर चढि उण झाळ बैठ तमासो देखै छै। कुंवर राजा रै मुजरै गयौ आगै जाय बैठो। इतरै सारा ही हवाळी-मुवाळी मुजरो कर बैसे छै। सारा नै ही आप आप रै हवाळ रो जवाब पूछै छै। अरथ रो मारग पूछै छै। जितरै सुजांण नायक आयौ। मुजरो कियौ। कुंवर हाथां आदम आपरै कन्है बसाणियौ। जितरै सुजांण नायक अरज कीवी—कुंवरजी महाराज थनै ताकीद करै छै। घरे पधारो सारै काम बिगड़ै छै। इतरै राजा फुरमायौ—अठै कासूं काम छै? और

---

[1]उत्पात [2]नौ [3]पक्की [4]मालूम होने का भेद [5]निगाह
[6]संध्या [7]बैठाया।

उठै थारै अेक पिंड ऊपर हू तौ रिसाणी होय अठै आय बैठी। सारै कूड़ साच करी। हमें तयारी करी। अोक सरय उतावळ[1] करै छै। नायक री थाळद पण पड़ी छै। सरव भामै छ सेट तो व्यापारी छै। माल खराब होवै छै। बाळ रो कांम तो वेटा पहो पाणो छो। अेक सुजांण रै पिंड ऊपर छते सू नायक रो जीव छै सो तो म्हे साथ ले आया छां तयारी करावौ। परभात अोमण अांमने चढ़ां। ताहरां कुंवर कह्यो—हां महाराज हालसू[2]। इतरै थाळ आयौ अरोगियो पळ् कियो[3] सखवू सगाई। कुंवर नै मां रो बुलावो आयो उठै गयौ। ताहरां मां पण आ होज कही—हालण रै वासतै सारो लोक आतुर छै। महाराज निपट काहल करै छै। थारो मुसाहिबो करि दयाय मैं कहै न छै। तैसू संवारै[4] तो हालियां सरसी। उठै कंवर आ होज कही के हालसां। इतरी कहि ऊठियो आपरी डोढ़ी गयौ। हमामद भावतां साम्हा सहल-सहेली त्यूं हीज मुजरो कियो। भीतर स गया। उठै पण इणहीज भांति मजकूर हुवौ सो साह मजेपाळ आपरै कन्है सुणियो। सो साह आ मन में विचारै छै—जे आज परभात घटो कुसळे आवै तो फर निकळण कोयनी देऊ। फेर मन में आ विचारै छै—कै हमार[5] धव सू नीचै उतर नै हाथ पकड़ घरै ले जाऊ। फेर साह विचारी—जै कदाचित हू हाथ पकड़ियो तो हू तो अेकलो छू, अर ये घणा छै। मनै मारि इयेनै परही ले जासी। तो माणिया बुधि करनै हिणा[6] तो चुप रहू जावणो। परभात कुसळ घर आवै। यू विचार आपरा देव-दुरग अरज मनाया। इच्छा कोबी—परमस्वरजी बेट नै कुसळ ले आवौ। यू कहि घड़ सू उतर घरां मैं वहिर हुवौ। पण साह रा पग घरां मैं वहै नहीं। साह रा सब नोळा[7] होय गया। घरै आय सूतो पण नींद नहीं आवै। चरपटी लागी।

> पोधी बळ मैं माछळी तड़फड़ पेम हुवंत।
> निसा गमाई नीर बो करणा दुख करन्त॥

यू करतां दुख सू दिन ऊगो। साहरा देवीदास ही मोटी भलाई। तद साह पण कह्यो—हू पण मायै जासू छू। माम करणो छै। दोनू निगा गया। पाछा घरै आया। दांतण कर सांपाड़ो कर साह ठाकुरद्वारे जाय माथे दरसण किया

[1]जल्दी [2]चलूंगा [3]मुंह धोया [4]इस [5]अभी [6]इस समय [7]स्नान और भजनीय करना [8]घबराई।

भेंट कीधी परदखणा दीधी। देवीदास सहस्रनाम रो पाठ कियो। महोत करमा कीधी। गरीब प्रमांण दखबत करि, घर नै बहिर हुवा। घरां रोटी जीम बजार आयो। देवीदास नै भीतर बैसाणियो। साह हाट रै बारणे[1] बैठो नामो मांडे छै।

उठै बाग में बैठे राजा कह्यो—नेर कुंवर आपां कन्है आवै छै। आपां कहां सु इण बात सूं हाल नहीं। आपां हालो[2] ज्यां आय नै ले आवां। ताहरां राजा कनकरथ घोडै असवार हुवो। आदमी बीस आगे ले वेणीदास अस्वण चोपदार साथे ले आया। साह रै हाटे आय खड़ा रह्या। राजा कंवर साम्ही दीठी। मुजरो कियो। तद राजा कुंवर नै कह्यो—बेटा घरै हालो। साथ सारो तैयार हुवो छै। कूच री तयारी कराय आया छां। जिणरै साह अजैपाळ बोलियो—र सूं आप केरो[3] ? कुणने बटो कह्यो छै ? इसो जोजो करै छै। तद राजा कह्यो—साहजी पारका बटा थांरै कन्है रह सके न नहीं। च्यार दिन रिसाय[4] नै म्हांसूं थांहरै आय बैठो तो कोई गुनहो करियो नहीं। थे भला मांणस छो तो च्यारि दिन थांहरै घर आय रहियो। थ राखियो तो सखरी[5] कीधी। हमैं सागोई मारित पहौंता क्योंकर छोडसी। थे घणी करसो तो थांहरी लाभ[6] लेसी पण बेटो तो आवै नहीं। ताहरां साह कह्यो—घरै जायोड़ो छै। इण री दाई मौजूद छै। आय छै। म्हारै कबीला रा सारा जाणै छै। सगाई कर परणायां छै सो संसार जाणै छै। छोटे सूं मोटो कियो छै, सो सारो लोक जांणै छै। ताहरां राजा पण कह्यो—इतरा लोक म्हारै पण हुवा छै, तिका सरब लोक पण जाणै छै। म्हारै पण इणरी आय बजारण रमावणवाळी छोकरी चाकर सरब मौजूद छै। साहजी घ जोर मत करो। पारका बटो बटो क्यूंकर रहसी। ताहरां साह ऊन्हूकियो उतावळो बोलियो—रै लोकां देखो सांगी बकी लोसै[7] छ। देखो रै राज राम छै, म्हारै घर रो धणी हुवो छै। ताहरां बजार रा लोक सरब भेळा हुवा। कोतवाळ आय ऊभो रह्यो। पौर पण राज रा मांणस बजार में फिरै था सो सरब आय भळा हुवा। बातां सांभळी[8]। सु साह रो बटो तो सारां ही दीठो। नानै[9] सूं मोटो हुवो। राजा नै कह्यो—ठाकुरां इये नै तो म्हे भली

[1] दरवाजे पर [2] चलो [3] किसका [4] नाराज होकर [5] अच्छी [6] पाने-पीने का खर्चा [7] जन्मा हुआ [8] पराया [9] दीखता है [10] सुनी [11] छोटे।

मांत आंमा छां। म्हारै हाथां में मोटो हुवो छूं। ताहरां राजा कह्यौ—य क्यां न जाणो थांहरो सहर छै पण म्हारै सहर हासी छतीसों मोळखे[1] कै नहीं। म्हारै पण हाथां में नानै सूं मोटो हुवो छ। फर इण कुंवर नै हीज पूछो आपे ठीक पड़सी[2]। ताहरां कोटवाळ पूछियो—क्योंकर मोटियार कासूं कहै छै? ताहरां कुंवर कह्यौ—बेटो तो इयां रो ही छू। जितरै साह कह्यौ—रे कपूत कासूं कहै छै, केरो बेटो छै? ताहरां फेर कह्यौ—थांहरो बेटो छू। ताहरां कोटवाळ कह्यौ—रे मोटियार, थूं किसकिसरी कपूं बोलै छ। भांग पीयो छै, किना बावळो[3] हुवो छै? ताहरां देवीदास कह्यौ—न तो मैं बावळो हुवो छू, अर न भांग पीयो छै। ताहरां कह्यौ—तू सांची कह। तद देवीदास कह्यौ—बात ज्यों छै त्यों छ। थांहनै इण बात री माहित नहीं। म्हारा दोनूं ही बाप छै। ताहरां कोटवाळ पण हसिया—औ बडो तमासो। कह्यौ—ओ औ लपावस म्हांसूं नहीं होवै राजाजी करसी। ताहरां कह्यौ—थे सगळा आंणो छौ फर झगड़ो माथो मोल[4]। ताहरां कह्यौ—बेटो थांहरो छ। ताहरां राजा कह्यौ—बेटो साह रो छै, थे इयांन नहीं छौ। हे पर्चों थे पण कहावो छौ लोकायक में पण पच परमस्वर कहिजै छै। तैसूं थे इसी बात क्यूं कहो छौ। बटो म्हारो छै। बाणियो भसवेस कर छै। ताहरां साह धर्मपाळ कह्यौ—तो चाल राजाजी पास। ताहरां राजा कह्यौ—हासी प्रथ्वी रा राजा छै, परमस्वर रो अस छै। देस-तपावस[5] करसी। ताहरां दोनूं ही कवर नै ल राजा जी रै हालिया। सहर रो लोग घणो साथे हुवो छ। तमासगिरी कोटवाळ तो इतरी कही—राजा रे पहिलां ही हजूर जाय राजा सूं मालम किनी। इये तरह रो बजार में कजियो छै। ताहरां राजा कह्यौ—कुण कूड़ो कुण सांचो छ। तद कोटवाळ कह्यौ—बगे साह रा छै। म्हां मारी ही बट नै पूछियो ताहरै उवो कह्यौ—दोनूं ही म्हारा बाप छ। तिण सूं गम नहीं करो बटो छै। हू तो इतरी छाणि हजूर आयो। भेट हजूर ही आवसी। जितरै आवतां नजरै पड़िया। राजा नै चिन्ता ऊपजी। जितरै राजा कोटवाळ न पूछियो—रजपूत कुण छै, कठै रो छै, कुण जात रो छै, कासूं नांम छै? ताहरां कोटवाळ कह्यौ—यू तो मैं पूछियो कोयनी पन छै तो अमराफ।

पहिचाने [2]अपनेआप सच्चाई का पता लग जायगा [3]बावला
झगड़ा मोल लेने हो [5]पता लगाना/निर्णय।

तरै तौ राजा रासी दीवै छै। पछै फेर महाराज देखिस्यौ हीज। तिणरै डोढी आया हीज। दरबारी भीतर मालम कीवी—साह अजैपाळ अर रजपूत अक भगड़ता डोढी ऊपर आया छै। राजा कह्यौ—भीतर आवण द्यौ। पण रजपूत नै पूछ्यौ—कुण छै, कठै रहै छै, कासूं बात छ? तद राजा कनकरथ नै दरबारी कह्यौ—ठाकुर, थे कठै रहौ छौ कासूं नाम छै? ताहरां कनकरथ कह्यौ—कासूं पूछ करौ? रजपूत छू परदेसी छू। ताहरां दरबारी कह्यौ—थे भगड़ू छौ तौ तपावस[1] तौ होसी हीज पण हूं हवालदार छू थांहरै गांम नांम जाती रो कहि मालम करू? ताहरां राजा कह्यौ—जाती रो रजपूत छू नांम म्हारो कनकरथ छै, अम्बुगढ़ रहू छू। ताहरां अम्बुगढ़ रहै छै चोपदार कह्यौ जिनां कहीं दूजै गांम रह्यौ छौ। तद दरबारी कह्यौ—कनकरथ तौ अम्बुगढ़ रो राजा छ। थांहरै मुल्क में राजा रो नांम उमराव रो ही नांम हुवै छै। ताहरां राजा कह्यौ—रे दरबारी राजा तौ राजा री जायगां छै। हूं तौ भगड़ू छू। इतरै अम्बण चोपदार कह्यौ—दरबारजी तुम तौ दरबार रे चाकर छौ बडा राजसेवक हो इतरी ही गम नहीं राखो? औ राजा कनकरथ अम्बुगढ़ रो धणी छै। दरबारी तसलीम करि डोढी गयौ। महाराज अम्बुगढ़ रो राजा कनकरथ छै। इतरी सुणि पाटण रो राजा ब्रहृदभाण सोलंकी ऊठि साम्हौ आयौ। राजा कनकरथ पण घोड़े सूं उतर मिळियौ। भीतर पधारिया। गादी ऊपर बांह भाल बैसाणवा[2] लागा। ताहरां राजा कनकरथ कह्यौ—आप तखत बिराजौ हूं तौ भगड़ू छू। म्हारो भगड़ो चूकसी[3] तठा पछै बैसस्यां[4]। राजा ब्रहृदभाण घणी मनवार कीवी पण राजा कनकरथ तौ साह रै कन्है ऊभौ रहियौ। राजा दोनां री हकीकत पूछी सो आगै भगड़िया तिको हीज भगड़ो। ठीक काई पड़ नहीं। तद राजा ब्रहृदभाण कनकरथ नै कह्यौ—राजकुंवर बांणियो न हुवै इतरी तौ म्हे ही जाणां छां। पण आ बात क्योंकर हुवै? कनकरथ कह्यौ—कुंवर नै पूछौ। ताहरां ब्रहृदभाण कंवर नै पूछियौ—तू किण रो बेटो छै। ताहरां कुंवर कहै—

ऐ दोनूं ही मांहरै[5] पिता दीसै बाप।
कहौ राज क्यों करि हुवै इणरो बाप उबाप॥

देवीदास कहै—ऐ दोनूं ही म्हारा बाप छै। इण में झूठ नहीं। ताहरां राजा

---

[1]पूछताछ [2]बैठाने को [3]झगड़ा मिटेगा [4]बैठेंगे [5]मेरे।

ब्रह्मभांण सुण नै विचार में लागो। के कासूं कीजे। साह रो तौ बटो चौकस पण राजा भी झूठो नहीं। बाणिये रै बेटे नै बटो कहै नहीं। धोखो करै तौ चाकर कहै का कोई बीजो ठहरावै। पण कोईक तौ कारण छै। इसो विचार राजा कनकरथ नै अेकान्त में ले पूछियौ—महाराज सांच कहौ सेठ तौ सांच कह्यां सपावस होसी। न्हारनी सरब बात कहो। राजा कनकरथ कहै—महाराज म्हारै घरै जायौ[1] मोटो कियौ राज-काज सरब समाळियौ। राजा वीरभद्र सहरपुर रो तठै परणायौ सो उण मुलक रा सरब जांणे छै। कुंवर रै बटो जायौ सांह पाछे म्हारै घमाग धार करणे गोठ तळाव गयौ थी। तळाव मांहे डूब गयौ थी। बाहर निसरियो कोई नहीं। पछै म्हारा घोळ गुवां सूं छतो हुयौ[2]। सारला सरब सहिनांण[3] राजा माग कह्या। तैसूं महाराज छै तौ सागे ही। इसो सुणि राजा इचरजवन्त[4] हुवो। कांई परमेस्वर री गति छै। राजा फेर साह नै कह्यौ—थारै किसी तरह्यां सांच कही। ताहरां साह कह्यौ—महाराज हूं कासूं कहू। इमे मै तौ सारो सहर जांणै छै। दाई धाय भणावण वाळा[5] गुरु बीजा साराई अठै हीज छै। पूछ देखो कदेई कोस बाहर पण निकाळियौ कोयनी। कदे इणे पण म्हारो कथन न लोपियौ। अेक पलक म्हांसूं आघौ न रह्यौ। अक दिन घड़ी दोय म्हारो कथन लोप ठाकुरद्वारै गयौ। घड़ी दोय उठै सामी इतरै आघी रह्यौ थी। दूजो कदेई पण आघौ रह्यौ कोयनी। न कदेई अकह्यो[6] कियौ। तद राजा कह्यौ—रे मोटियार थै कासूं छै ? ताहरां देवीदास कह्यौ—महाराज अे दोनूं पण सांचा छै। बात ज्यों छै त्यों छै। राजा ब्रह्मभांण ऊंचा-नीचा सारा ही मैं ले रह्यौ पण बात अक हीज कहै—

ताहरां राजा ब्रह्मभांण कह्यौ—देवीदास था तपावस म्हासूं ना होवै। था थांसूं हीज होसी। थांनै इण बात री मालिम छै। ज्यां तूं जांण छै, त्यों सरब कह। थांन थारे कुळ री आंण[7] छै। श्री लखमीनारायणजी री आंण छै। ताहरां देवीदास कह्यौ—महाराज मनै ठाकुरां री दुहाई मतां देवौ। हूं कांई कहूं नहीं। राजा कह्यौ—तूं क्यों नहीं कहै। ताहरां देवीदास कह्यौ—महाराज आ बात मैं कही तौ इण घड़ी म्हारी देह छूट जासी। राजा अर साह दोनूं दुखी होसी।

---

[1] जन्मा [2] प्रकट हुआ [3] चिह्न [4] आश्चर्यचकित [5] पढ़ाने वाले
[6] बिना कहा [7] सौगन्ध।

ताहरां राजा कह्यौ—थांहरी देह छूटसी तौ थांहरै वासै हूं देह छोडीस । इतरो कहि ब्रह्मबांण म्हारो सेन संकळप घातियो[1] । यूं करतां राजा गिरदा[2] ठाकुरद्वार जिमता आदमियां पांच सौ रो मरण रो संकळप हुवौ । नेम धातियौ । ताहरां देवीदास कह्यौ—तौ महाराज गंगागोरज माता मैं ऊभ बहिर हुवौ ।

राजा आरती भावना करि नै बहिर हुवौ । धाय पहुंता । समळा सिनान सपाड़ो करे छ । इतरै श्री भगवन्तजी श्री सिद्धजीजी नै फुरमायौ—सिद्धजीजी देखौ पलक दरियाव रो तमासौ नीबड़ै[3] छै । ताहरां श्री सिद्धजीजी अरज कीवी—ओ सरब तमासो थांहरो हीज छै । पण अब बड़ो अचरज छै—थे तौ भेख पीढ़ी रा हव्य दान लेवौ छौ । थे तौ पांच सौ आदमी थां निमित्त तय्यार हुवा छै । संकळप भरता यूं कहै छै—म्हा देही श्री ठाकुरजी निमित्त छै । और इणां सारै आदमी सौ च्यार बीसा ही मरसी । ब्राह्मण मळवा रो संकळप भरियौ सो पण कोई देवै नहीं । तैरो पण प्रायचित[4] थांनै ही लागसी । आगे तौ इसो परिग्रह कदेई लगायो न थौ । अबकै तौ टळती दीसै न छै । अर तेरी साह नहीं करसौ तौ भगतवछळ[5] विरुद्ध छै सो लजावसी । अर थे यूं फुरमावौ छौ—जे म्हांनै सांच प्यारो छ तौ थे दोनूं ही छांना भगाड़ै छै । आंच ऊपर दोनूं ही मरसी । ताहरां सांच प्यारो कठासूं रहसी । इसी तरह सिद्धजीजी भांति भांति करि अरज श्री भगवान नै कीवी—अठै राजा ब्रह्मबांण हजार बीस ब्राह्मण नै भोजन भायां हजार दोय हाथी घोड़ा रो संकळप भरियौ । राजा कनकरथ पण ब्राह्मण हजार बीस गाय हजार च्यार, धरती बड़ा हाथी अर आपरी देह रो संकळप भरियौ ।

इतरै मे देवीदास आपरै देह रो संकळप भरण लागौ । ताहरां राजा ब्रह्मबांण कह्यौ—तू ही काईक[6] पुण्य कर । तद देवीदास कह्यौ—कै घर रो पुण्य करूं ? राजा रै घर रो पुण्य करूं तौ साह बेराजी[7] हुवै । झूठो हुवौ तैसूं कैरे पुण्य कुण करावै । भगवान निमित्त पुण्य भगवान ही करावै । उणांरी हजार तौ आईन इच्छा छै । इतरो विग्रह करावसी । इसा करुणा रा वचन कहि घणी दीनता करी । श्री ठाकुरजी रै उतारू चन्दण लगायो । तुळछीदळ माथे मेलियौ । चरणामृत लियौ अर इमे बात पलक दरियाव री कही । ज्यूं वासै हुई तिका

---

[1]संकल्प लिया [2]पास वासे [3]निपटता [4]प्रायश्चित [5]भक्तवत्सल
[6]कुछ न कुछ [7]नाराज

सरब कही। मर कह्यो—हुमें श्री भगवान कर सो होई। इतरो कह भवोसो[1] रह्यो। जितरै ऊपरां सूं श्री ठाकुरजी री भवाब हुई मर देमोदास ऊपर सुदरसण चक्र पड़ियो सो दोय पिंड होय गया। दोनूं मेक सरीसा-दोसै छै। साहरां ब्रह्मभांण इसो तमासो देखि नै श्री भगवान निमित नमस्कार करि नै कहै—

दोहा

तूं भगवन्त भनन्त मति मिसतारण[2] नित भेव।
सम्पति मति सुभ सुख सुमति दायक मायक देव॥

सोरठा

भगवंत तारी भीड़ करणा करि कीधी कृपा।
तन माया को तीर, तिरिया तिकै संसार तट॥

राजा इसी मसतुती करी छै। भक रा दोय सरीर हुवा था तिका में मेक राजा कनकरथ रै हाथ सौंपियौ मेक साहु मजपाळ रै हाथ सौंपियो। बड़ो हरख बड़ी खुस्याळी हुई।

राजा कनकरथ नै राजा ब्रह्मभांण कह्यो—कुंवर नै म्हारी कुंवरी म्हां दीवी। विवाह करनै पछै थांनै सीख देवां। मुरमहियां नै कहि करै रो साबतो करायो। साहु मजीपाळ घरे भाय घणो खरियम कीवी। बधाई बांटी। दांन पुन्न भोजन ब्राह्मणां नै कराया। राजा कनकरथ पण सारा सहर रा ब्राह्मण जीमाया। गौ-दान री दखणा दीवी। राजा ब्रह्मभांण पण सुभ लगन जोवाय बड़ हरख सूं आपरी कुंवरी परणाई। भगतां पांच तथा सात भसी तरह सूं करी। घणा चारण भाट मगत जणां नै राजी किया। घणी रंग रळियायत[3] हुई। राजा ब्रह्मभांण घणो भाडंबर सूं सीख दीवी। राजा कनकरथ कूच करि, पहुंच करै सू बधाईदार भपमड़ नै मलिया। फर ही बठा डेरां सूं बागीर मनाया। यूं करतां पण राजा कनकरथ जाय पहुंता। बधुणड़ बधाई वागी। नगर सारो हरखवन्त[4] हुवो। राजा बग्घुणड़ सो बाग ब्गार बाग मांहे उतारिया। त बाग मारा साहूकार भमराव सांम्हा भाया। निछरावळ हुई। बड़ो हरख हुवो। वंदानो[5] बाजतां राजा सहर भीतर भाया। मागे सहर रा घर

[1]पुत्र [2]निस्तार करने वाला [3]हंसी-खुशी [4]पहुंच [5]हर्षित [6]वाद्य।

हाट, बजार-हाट भली प्रकार सिणगारिया[1]। गुवाड़-गुवाड़ घर-घर ऊपर सुगायां बधाई रा बधावा मांगळीक गावै छै। हाथियां ऊपर रिपिया-मुहरां री थैली सूं मूठी भरि भरि उछाळै छै। घणै हरख सूं महलां दाखिल हुवा। परभात सूं साह सुन्दरदास न फुरमायौ—जितरा ब्राह्मण सहर देस में तिकां नै भोजन दिखणा[2] देवौ। साहूकार सुन्दरदास सरब ब्राह्मण न्याय जिमावै। ब्राह्मण जीमै छै। गऊआं दे सरब ब्राह्मण संतोखिया। हिवै राजा कनकरथ विचित्र कुंवर सुख सूं रहै। जम्बुगढ़ रो राज करै। इसी तरह सूं राजा कनकरथ रै साह धर्मपाळ रै कुंवर विचित्र अनै देवीदास रै श्री भगवान सहाय हुवा सुख-कल्याण हुवा ती सरब भगवन्त रै सरब लोक-संसार में कल्याण करै।

श्री भगवान भासा पनक दरियाव छै।

पनक दरियाव री बात समाप्त।

---

[1]सजाये [2]दक्षिणा।

ध्यारू तरफां रो मास भावै सो खाय घूमटा कीज घोघूळा[1] बहै। साढ़ा तीन सौ राजपूत तिका बाप-दादा रा सास्ता बन्है रहै। दोय सौ घोड़ा पायगां मांहीं रहै भर भाखो ही बारगीर[2] दोय सौ से कम नहीं। सौ ऊठ बड़ा जमायत का तबल में रहै। सो इण बार तो ठाकुराई दमारी गहराई पकड़ी। सखरो राजपूत सखरो घोड़ो सो हर भांति कर बीजे। सखरो हथियार बीजे बकसीसां राजपूतां नू कीज पोसाखां दीजे। बरस दिन में दोय साखा सारे ही लोग नू दरबार सू बीजे। भेक तो दसराहे ऊपर भासोज में भर दूजो होळी री परभात फागण में। सो पोसाक इसी हुबै जिकी में सरदार रजपूत री भवांण नै गम नहीं पड़े। सो इण भांत सू साहिबी करै—

सूरो बीको बीर भति सोमाळी[3] दातार।
हीमत भारी ममगरी हुआ न होणेहार॥

पूठो मारी रावजी भी बीकोजी रो। ननिहाळ मोहिलां रै सो मारी तिण सूं भासम पण किहीं री नहीं पड़ै। पाधर रा बादसाह वड़ा भोकाई सो भेक बरस इहां गांवां में खड़ दो खड़ सो हुवौ।

भर राजूलां कोकर डीगसर रहै मोही पण मोहिलां रो दोहितौ। सगो ही मौसीहाई[4] भाई लागै। उण री पण बडी ही साहिबी[5]। ऊ पण वडो राजपूत घणां भादमां रो भाई बडो सिरदार मो उण सू मिळण री इच्छा करी। उठै थाप पण घणी तिण सू उठै री सूरत कर हासिया सो उठै जाय पहुचिया। कोटडी भागै जाय पायड़ा छोडिया। भीतर नू खबर हुई। राजूलां दरबार मांहीं बैठो थौ सो सुणतां ही वहोत राजी हुवौ। इतरा में भे सरदार भीतर मू गया। राजूलां ऊठ साम्हो भाय नै मिल्यौ। हाथ झाल बिछायत ऊपर जाय बैठो। सूरे नूं हाथ झाल गादी ऊपर बैठायो। जीब सू घणी मनुहार कीवी पण उवौ गादी ऊपर नहीं बैठ्यौ। गादी सू ही लगतो म्हौंडा भागे बैठ्यौ। राजूलां मनुहारां घणी करणी लागियौ। भायां वड़ी बात कीवी मिळिया मन में मिळण री घणी चाह थी। दिन पांच सात रह्यो बातां करस्यां। भादमियां नूं कहणो लागियौ—घोड़ा बाहरली कोटड़ी मग जावौ। घास-पांणी भांपा-मलां रो जापतो करौ। सो भादमी घोड़ां नू लेय कर दरवाजा सू बाहर नीसरिया।

मस्त [1]पीठियार [2]मौसी का बेटा [3]कृपण।

राजूसा इहां सरदारां सूं बातां करै छा। सींबे री कमर मांहीं सवरा चवदै तीर सो केसरिया कमरबध सूं बंधा छै। तिकारी भाभोड़[1] भागले पासे सूं बाहर दीसै छै भळमळाट करती। इयां नू सींबो सातवें दिन रे सातवें दिन भोपणी सूं भोपणावै छै तींसूं भळका मारै छै। राजूसा रे एक भतीजो आठ या दस बरसां रो छै। मूहड़ लाड[2] लगायोड़ी बडो लाड कुमायो। उणरो बाप कजिये में काम आयो थो। तींसूं उबो टाबर रात-दिन राजूसा कन्है रहै भेळो जीम्हैं दरबार में खोळे मांही सूतो रहै। किहीं रै कांधे चढ़ किही रा हाथ खेंचे चपळता आसगगिरी करवो करै। सो लोग राजूसा री खुसामद रा पणां सहबो करै। टाबर नै किहीं कहै-सुणै नहीं। सगळा छायां ऊपर विनोद करायो करै। टाबर लाडसू घणो अनीतो[3]। उबो राजूसा रै खोळ में सूतो थो। ज्यूं ही सोवे रा भाभका री चमक दीठी त्यूं ही तुरत ऊठ उठै आय अचांणचकरो[4] होळ सी अेक तीर पकड़ खच्यो। सो तीर खेंचतां भासे सूं कमरबन्धो बढ़ गयो सो सारा तीर बळक में पासती पड़िया। इतरै में सींबे रै हाथ में कामठी[5] थी सो अपूठे हाथ सूं बाही सो टाबर कुकियो। सो लोग दरबारी सारा हां-हां करि ऊठिया। टाबर नू सभाळ लियो। सींबो तीर सभाळ ऊभो हुवो। ताहरां सारा कर ऊभा हुइया। राजूसा सूरे रो हाथ भाल कहण लागियो—टाबर भोळो थो भलां ही और पांच-सात लगावो पण रीस मतां करो। पण सींबो तो ऊठते ही च बहिर हुवो सो आगे नाळ पैनक पूंछ दबिया फणकारा मारै त्यूं ऊभी-ऊभी सूंनाका मारै छै, होठ भखै[6] छै। सूरो घणो सयाणो[7] ठाकुर थो सो राजूसा नै कहण लागियो छै—

> सींबो रिसयारो[8] घणो हूं समझाऊं जाय।
> फिकर करो ना ठाकुरां मन मंझ धीरज लाय॥

सो सूरो सोवे कन्है आय कहणे लागियो—

> ना रिप करणी है भलो धीर धारिये चित।
> भोळो टाबर बेसमझ, ग्यांन न धीरे चित॥

तींसूं हमें केरै हाल्यो। सींबो कही—

[1] तीर के माथे का हिस्सा [2] प्यार [3] बदमाश [4] अचानक ही बेत [5] काटता है [6] सयाना [7] गुस्से वाला।

माझी रे दरबार में रहणो वाजिब-नाहि।
पांखी तक ईं ठांव पर, मैं पौढूं इब नाहि ॥

अठै रह कासूं वफादारी लयस्यां। हाली घरां हालां। सो सूरो इसड़ो रग जीवे रो दीसो जे सगा सूं विकार पैदा हो बिगाड़ हुवै। जद सूरो हाथ जोड़ जय बाहिर हुवो सो दरवाजे आतां राजूसा रा आदमी मुत्सद्दी-परधान आय पहुंचिया। रावळ जी कांधळजी री आंण[1] दियां खड़ा रहिया। पूठै सूं राजूसा आइयो हाथ जोड़ कही—अेक दोय दिन रह पछै चाहे जाज्यो नहीं तो आज रात रह परभात रा चढ जाज्यो। मिजमानी जीम जायज। इण तरह मती जावो। तद सूरो तो मनो ही जाणी के राजूसा सरीखो सरदार इतरी आजोजी-मोहरा करै छै सो टिकणो वाजिब छै पण जीवो अड़ायस[2] पूरी सो रहै नहीं। तद राजूसा कही—इब नाराज होय म्हारी किसी खोड़ियां काढस्यो। सूरो आछी बातां थात आफ्स टाळी। पण दरवाजे मांहीं जाब करतां अेक घड़ी लागी। सो दरवाजे रै अेक गढ में राजूसा री सवारी री घोड़ी खड़ी सो थवर ढाळ ऊभी छै। पगां मांहीं सवा मण लोह री गटी[3] छै। चाकर रा मांचा दोनूं पासे छै। सो घोड़ी नूं जीवो स्यात कर दीठी—इसी दूसरी घोड़ी मुलक में नहीं। जैसो ही डील जैसो ही रूप जैसो ही पोत सही जैसो ही बळ जैसो ही कुम्मैत रंग काळी गांठां सो पिरथवी रूप कच्छ री नीपनी दीणोद रै मठरा जोगी रै घर री। सो ककड़ियाळा रै ठाम जोगी नूं घोड़ी दीवी थी। तेरै पेट री उठै घोड़ी सूवर[5] आई थी सो जोगियां कन्हैं राजूसा रा आदमी मोल लाया था। रिपिया हजार ठेट देय लाया था। घोड़ी इसी नीवड़ी सो मांणस कासूं तारीफ करै घोड़ी री तारीफ सूरज करै। इसी घोड़ी सो तींमू जीवो स्यात कर दीठी। जीवे री नजर घोड़ी मांहीं गड गई।

अे सरदार राम राम कर घरै आया। राजूसा दरबार जाय कर बैठिया। भतीजे रै तावे लोग था तिकां ऊपर रीस करण लागियो जे इसा बेवकूफ टाबर नूं दरबार मांही ल्यायो जे सो नीमड़ी[6] पण इब फेर दरबार में मतां लायज्यो।

सूरा टीमो घर आय पहुंचिया जद जीवो कही—भाभाजी एक घोड़ी मिये रे

---

[1]सौगन्ध [2]पड़ने वाला [3]मिजाजोगे पुराणोये [4]स्याही लिये लाल रंग [5]गर्भ सहित [6]मिटटी।

दरवाजे मांही जबी थी सो भाप दीठी के नहीं ? सूरे कही—दीठी तौ सही पण विसेस ध्यान नहीं दीवी। तीजो कही—घोड़ो मैं नीको दीठो। ये तौ बातां रै घमक्षोळ मांहीं था पण हू दीठी थी। घोड़ी पिरथी रो रूप छै। इसी घोड़ी मारू मांहीं नहीं। सो आ घोड़ी तो हूर मांत कर ही मगवाणो। इसो ही कोई भापणी परचे रै मांहीं छै ज इण घोड़ी नै लेय भावै। तद भूधर नाम भेक मीणो थो सो उण कही—ठाकुरां जे घोड़ी मय भाऊ तौ कासूं इनाम पाऊ ? तौ सूरो कही—तू कहसी सो देस्यां। भूधर कही—खरची दिरावौ। ताहरां साठ रिपिया दिराया सो पल्ले बांध भतीत रो भग[1] कर बहिर हुवौ सो डीगभर आय पहुंचियौ। तळाव ऊपर भाय बैठियौ पगां र पट्टा बांधिया मोकळी[2] हळद लगाय नीम रा पता लय बैठो। बोसूं पग बांधिया दिन भेक तौ बैठो रहियौ। बीजे दिन राजूका री पायगां रा घोड़ा पांणी पीवण नूं भाया। चाकर बहिया छै सो घोड़ां नूं पांणी पाय संपड़ाय[3] इण कन्है भाय'र बैठिया हुक्को पीयो। कहण लागिया— स्वामी थारे पगां रे कासूं हुवौ ? तद उण कही—बाबाजी वाळिया छै, महिना दोय मरतां नूं हुवा। तद इहां चाकरां कही—थूं गांव मांहीं हाल तौनूं ठठे रासस्यां खाण नूं देस्यां पाटा बांधस्यां थारो जापतो भे करस्यां। सुण कर भूधर कही—गांव मांहीं तौ हूं कोई भाऊं नहीं। म्हारे म्हाड़े री मुसकिल बीजो तळाव पर पांणी रो निवास छै, कोई नीम उतार दे कोई हळद तेल भाण देवै पाळ रै नीचै हूं भ्याड़ फिर भाऊं। सो भठे ही भक झोंपड़ो बांध देवौ तौ पड़ियौ रहूं थांनूं भसीस देऊं। तद बीजे दिन चाकरां घोड़ां रा चारा रा पूळा केही लूंटा लगाय दिया। झूंपड़ो बांध दियौ। रोटी टुकड़ो भाण नै देवै सो ऊंचो रासे मस्है। रात रा भापरो नाणा मांस भाणे सो सकर भांण चूरमो कर सावै नर वाकी रो परभात रै पगां ऊपो मेल्ह कर रासे। तम्बाखू मोकळी जावी भरी रहै। चाकर घोड़ां नूं पांणी पाय न्हवाय भाय बैठा-बैठा तम्बाखूजा पीवै गल्हां करवो करै भमल-तम्बाखू खाणे नूं मोकळो भांण देवै सो महिना भढाई उठै इण तरै रहियौ। भेक दिन पाछला पहर रा चाकर चवर डास रो गट्टो खोल बायज कर, भ्यार थामा कर भसवार होय तळाव संपड़ावण नूं स्यायौ। सो घोड़ी उछळती साहा भरती भावै छै सो जांण भाकास नूं ही ठोकरां मारती भावै छै। सो चाकर भाय इणरी झोंपड़ी कन्है होवारी[4] दियौ। भ्यांक पग

[1] वेश [2] काफी [3] स्नान करा कर [4] पड़ाव।

-च्यार दिन चढ़तां परसनेत आयौ। बीवें सूं आय मुजरो कियो। बहोत राजी होय बींवो ऊठ बाथां भर कर मिळियौ। सूरे कन्है सेय गया सो सूरो पण घणौ राजी हुवौ। इनाम मांही गांव दियौ आई कहण लागिया। बीवा आपरा पोसाक कढ़ा मोती उतार कर राजी होय इनाम में दिया। बींवो आप घोड़ी ऊपर चढ़ कर फेरी सो जांणौ हवै[1] हाल ठांण पर खोलो छै। साहां च्यार पांच भर हाथ पचास रै परै जाय ऊभी रही। सूरेजी अेक सौ रिपिया घोड़ी ऊपर निछरावळ कर गरीब फकीरां नूं बांटिया। घोड़ी नूं पायगां में बधाई। सवा सेर घिरत दोय सेर पीणी खांड च्यार सेर गहूं रो आटो परभात रा आंयण री दस सेर बाजरां री खीचड़ी अेक सेर घिरत इतरी मोताद नित की करदी। मसालो बत्तीसो कराय भखो भर राखियो सो परभात दिन ऊगियां पहलां ही दीजै। इण भांत घोड़ी रो जायतो कर दियौ। राजूलां रातों-रात दोय-दोय मांणस दिसां दिसी मेलिया। अजमेर कान्ही गया तिका तौ चौरासी सूं लय मेवाड़ सारी रो आहो बून्दी माळवो सारो जोयौ। अेक जोड़ी ढूंढाड़ मथराजी आगरो पूरब दिसली गंगा पार तांई जोइयो। अेकण जोड़ी मारवाड़ सूं लगाय गुजरात कच्छ तक आखा मळळ तांई फिरिया। जोड़ी अेक पस्चिम दिसा जयसलमर भटो मुलतांन सूं लाहोर मांहीं कर आया पण घोड़ी री कठै ही सुध नहीं हुई। महिना सात आठ में सारै फिर आया। रिपिया सात आठ सौ खरच रा लाय पाछा आय खान नूं कह्यौ—अे घोड़ी कठै पाई नहीं। सोच पण नहीं हुई। खान इसो खबर सुण बहोत बदिलगीर हुवौ। आज तक तौ पिंड[2] में जोस थौ। अठै कठै खरी होसी उठै सहरां बाळी जायगां तौ लड़स्यां-भिड़स्यां। बीजी ही जायगां छै तौ चोर लगायस्यां सो आज सारो गरव गळियो[3]। आकास म तो कोई चढ़ ही नहीं गई। छै तौ जमी रै ही ऊपर पण असळ-बाणोंवांणी। सांई री इसी ही रजा छै। इण नहिं बटो बरस बीस रो कन्है बैठो थौ तिणरा सिर ऊपर आपरा सिर ऊपर सूं पाघ उधार मल्ह दीवी। कन्हे दुपट्टो थौ तीनूं फाड़ गळ में घाल फकीरी लाबी। सगळा नौकर, कांमदार अरज करी—फर परमने ठामा मांणस मस कर पतो लगास्यां। हर भांत खबर लय आवसी। खान साहिब खमा करो इसी क्यूंकर विचारो। श्रौर ज घोड़ी मर गई छै तौ ठावी

[1] अभी [2] शरीर [3] गर्व समाप्त हुआ।

ठीक कर उणसूं खटो[1] करस्यां मौर घोड़ी फर मोल मगायस्यां। तद खान कही—थे आ बात तौ दुरस्त कही पण इसी घोड़ी फर होणी न मिळसी। इणरी मा दरियाव कन्है चरै थी सो दरियायी घोड़ा री मौळाद थी। आ घोड़ी बीजा घोड़ा री मौळाद नहीं थी। इयेरी[2] मळ पराक्रम मांटीपणो जमीं रै घोड़ा रो नहीं थो। फेर लोगां में नामोसी दिखाई। आज पहला मेरी कठै हा नामोसी न हुई। इब भाई पड़ोसी हस सी कहसी—अ सवारी री घोड़ी ही नहीं रह सकी। घोड़ी री तौ समम्भी पण म्हारी या तपस्या क्यूं खीण हुई। तींसूं कै तौ किन्हीं सूं कजियो हो तौ राड़ कर काम आऊं नहीं तौ फकीरी लेय उठ जावस्यूं। रग इसो नजर आयी जे मैं रहू छू तौ बैठियां म्हारो बिगाड़ हुवै छै। तपस्या कम पडी तींसूं मोनूं मत बरजौ। हू देस रो लोक रो बुरो म्हारी ही आंख सूं कासूं देखूं कान सूं कासूं सुणूं मोनूं आ बरस आई छै। तींसूं थे सगळा भला मांणस छौ पक्का[3] पूरा छौ कुरसीबध छौ सामधरमी छौ सहके रै मुंह आगै चाकरी अच्छल तरह करज्यौ। घरतीधर रो आपतो राखज्यौ। पालती रा भोमियां आसियां सूं देखो जिसो ही रग बरतज्यौ। अर बेटा नूं कही—या मांणसां रो जसो हू मान करतौ तींसूं सवायौ काण-कुरब राखज्यौ। औं कन्है आछा मांणस आसौ सो घोड़ा छै सो ही ठाकुर छै—

> कर घोड़ा रजपूत कर, देस भरोसा दोस।
> भावै जे नूं रेत कर, भावै थे नूं कोस॥

इण भांत सारा नूं सीख सलाह दे बहिर हुवौ सो पहलां तौ अजमेर गयौ सो पहलां तौ खाजजी री जारत[4] कीवी देग कबूल कीवी। फेर बीटली चढ मीरांजी री जारत कीवी। उठै कबूल सीरणी कर तळहटी गयौ। दिन पांच सात उठै रह कूंची गयौ। उठै पैमम्मन पैंसतन पीरां री जारत कीवी। उहां पैसां री कबूलायत कर पाछौ हांसी रा पीरां रो जारत करणे नूं आयौ। उठै जारत कीवी कबूलायत कीवी। सो बरस तीन तांई इण भांति फिर पछै नग्रहा चब दीवांण रो जारत कीवी। फेर मुलतान रा पीरां री जारत ऊपर मनसा[5] कीवी सो मारग चलियो आवै सो परगनेउ आयौ। पाछला पहर छै, पाधरो कोटड़ी आयौ। आगै सरदार दरबार बैठा छ, सारा ठाकुर दरबार बैठा छै, कामां रा

फडा बड़िया छै, गल्हाँ वार्ता होय रही छ। इतरा में फकीर आण ढुवा करो। सारा ऊं राम राम करो। ओळखियौ[1] तो केही नहीं पण फकीर जाजळमान सो तपस्या वाळो मांणस छानो न रहै। तीसू मारा बडी अदब कियौ सो फकीर बैठ गयौ। सरदार आभरी-परगह[2] सूं वार्ता कर छै। इतरै फकीर पाखती घोड़ा बंधिया छ जिकारै साम्हो जोवणै लागियौ। सो पायगा मांहीं न्हे भी चवरखास नजर चढ़ी। ग्रेक सूरेजी री सवारी री घोडी नवर आरबी बड़ी ही कीमत री। चवरखासती घोड़े सू ब्याही छै सो ग्रेक तौ बछरो वरस अढाई रो हुवौ। अक बछरी महिनां नौ री हुई सो दोनूं पाखती वंधिया खड़ा छै। बीच में घोड़ी खड़ी छै। सो खान घोडी नू देख कहणै लागियौ—ग्र हू तौ सारी जमीन गहतो[3] फिरियौ पर घोडी म्हारी दल्ढ़टी में रही।

इतरा में खवास आण अरज कीवी—ग्रे कसूमो[4] तैयार छै। तद सरदार लोगां कही—ले आवौ। सो कळस ज्यार भरिया आजम रै पाखती धरिया। लोटा भला भर कचोळा हाथां में आया। तद सूरेजी कह्यौ—पहलां फकीर साहिब नूं देवौ। तौ खवास पाछौ फिर आ कही—ग्रे फकीर साहिब अवौ। दूधाळो कसूमो छै, आरोगो। सो फकीर कही—ल्यावौ बावा। उण कसूंबो पीवां सुगन मांठ बांधियौ—ग्रे घोड़ी तौ हूं लेअ जावस्यूं। इतरै में सारां कसूंबो पीयौ। कुरळा कर बैठिया गल्हां करै छै। फकीर री नजर तौ घोड़ी मांहीं और ले आवण रा तरह-तरह रा मनसूबा करै छै। तरह-तरह री बात मन में उठावै छै, मांजे छै। इतरै दिन घड़ी दोय पाछलो आय ठहर रह्यौ। इतरा में खवास आण अरज कीवी—सुआई तयार छै, पागोता विछाया छै। तद सरदार सारा ऊठिया। उण्डां कही—फकीर साहिब पधारौ। तौ फकीर कही—बाबा हमारे तो इहां ही भेज देवौ। हम तौ अन्दर नहीं आवे। तद कही—भली बात विराजियै। आप भीतर गया जाय पातियां बैठिया। तद सूरेजी कही—ग्रक वार तौ टुकड़ियौ जाय फकीर साहिब नू दय आवौ। खवास जाय फकीर नूं दियौ। फकीर रै मन में तौ वात तींसू जीमण नै बैठ गयौ सो मजाबो[5] सूं जीम लियौ। और भींतर तौ पक्सगारी हुवे। होळै-होळै बात सू जीमै। चाकर सांना रा

---

[1]पहिचाना [2]ग्रामस्वामान [3]राज-मंडल [4]नूरना [5]मगरीम
[6]दीम।

कटोरा भरणे नूं हुकम हुवौ। सो चाकर लोग सारा ही कटोरा लेय भींतर मूं गया। उठै आयगां सारी खाली रही।

ताहरां खान जाय घोडी समाळी। घोड़ो रा पगां मांहीं सवा मण लोह री गट्टी सो दीठी। ताहरां खान मन में कहणै लागियौ—अ श्रेम दोय बार ब्याही छै पण गट्टी नूं तो छोड़ मोकसी। यू जाण घोड़ो नूं कायबो देय गट्टी सुद्दां बाहर काढी। लांच भर धूळ कोट रो बुरज पी हाथ वसेंक ऊंची उण ऊपर काढी। फराकी[1] मार ऊपर चढियौ। चढनै हाकळ कीवी—अे सरदारां हूं राजूखां खोखर छूं घोडी म्हारी लियां जाऊं छूं। असी करो तो बछेरा बछेरी मत दीज्यौ नहीं तो थे ही भाई छो रासिया[2]। पण घोड़ी रो पाछो मतो करज्यौ। इसरो सुणी और मांहींलो लोग हां-हां करि दौड़ियौ। कहणै लागिया—जांणै न पावै। इतरा में राजूखां घोडी ऊपरां सूं दाबी सो जमी आय खड़ी हुई। गट्टी रा टुकड़ा होय गया अर घोड़ी मूं आधी काढी सो चालती हुई। पूठै सूं अे दोनूं भाई चढ छूटिया सो रात च्यार पहर पूरी वहिया[3]। और राजूखां दिन ऊगत आपरै गांव आ वढियौ।

अे दिन पहर अेक चढतां बींगसर रै गोखे में सांढियां रा गला साम्हा आया सो घेर ले भेरिया। सो रैबारियां झुक जाय गांव में जासी जो सिरदार रा मरण लिया। सुणता ही सारो साथ चढियौ। वां दिनां रा खोखर सो कहणी में नहीं आवै। इण भांति मीसरियां[4] जिणां नूं सूरज रथ भाल देखण लागो। सो वहितां-वहितां दिन घड़ी च्यार रहिते पाछला सूरो सीयो गांव लाडणूं री बरोबर आया। ताहरां सीबो कही—भाभाजी थ परगल हासो हूं पाय पाच आऊं छूं। आज मैं पाप धोयी नहीं। तद सूरेजी कही—आज न धोयी तो मुआर दाय फेरां[5] बांधजे। आज रहणे रो समय नहीं छ। गोगर दमा मदी छै गो बैठ रहणी। सीसूं रहणी पाछो नहीं। तर सीबो कही—आप पधारो हूं तुरत पाय पहोंचस्यूं। तद सूरेजी कही—वरग तो मम हाथो समचार पचारोंस गाड़ा रहो। म्हे चलाय आय पहोंचस्यां। पण सूरोजी गाड़ा रहिया कहियो—गगावी करो पाप धयी धोयी। थारो भाव री पाप घणा दिन याद करसी। अेक वाणी जगी न पायस्यो गो पाप रो गपाद पडग तर गमर पड़गो। तर सीबो

छलांग [2]रसना [3]निकसे [4]निकल [5]बार।

पाम हाथ मेय पेच दिया। इतरै ओसर भाय पहु चिया। सूरोजी बोलियो—
सींबा ओसर प्राया छै, कहियो मही मानियो। ओसर भाय पहु चिया। तद
सींबो ऊठ घोड़ सवार हुवो। सूरेजी नू कहियौ—थे काढो साथ माफक छै, हु
इहां नु बिसमायस्यू। तद सूरेजी कही—हमें कादियां किसी गत[1] छै। हालणे
री वेळा तो तू हालियो नहीं। हमें भो परमस्वरजी रो नाम लेवौ।

तरै उठाय घोड़ा साम्हा नांखिया सो परलै पार हुवा। सीधा मुहड़ां भाय
लागिया। सो इसा ही जे लागिया सो देखी ही चाहिजे। तरवारियां रो रीठ
लागियो। माथे चौकड़ी पड़ रही छै। हाक ऊपर हाक हुय रही छै। बीर नाच
रहिया छै। जोगण डाक बजावै छै, खप्पर भरै छै। अप्सरा वरण काज मंगळ
गाय रही छै। इसो समयो बण रहियो छै। इणगी[2] मे पचास उणगी[3] पांच सौ
सो इसा हीज लागिया सो दीठां ही बण भावै। रात घड़ी च्यार गयां दोनू भाई
सूरो सींबो काम भाइया[4]। भादमी पचास था तिकां मांहीं भेक ही नहीं
नीसरियौ। पुरजो-पुरजो होय गया। घोड़ा सारां रा कट गया। साबतो भेक
नहीं रहियौ। सरदारां री सवारी रा घोड़ा बटको-बटको होय गया। सरदार
दोनू ही पुरजो-पुरजो होय पडिया। भादमी पचासां नाम भाय गया। भादमी
डेढ़ सौ ओसर काम भाया। बाकी सगळा ही घोड़ा-धणां घायल हुवा।
निसोही[5] तो कोई क नहीं रहियौ। इहां नूं मार, सौधां सभाळ घायल भेम
ओसर विदा हुवा पाछा घर भाया। भाय रावजी नूं मालम कीवी। कही—
म्हां भाज पहलां इसो कजियो कियौ न सुणियौ। सारा भेक तरह मनगरा था।
सो जितरो भाय हुतो तितरो जे हुवै भौर उणसू कजियो करां जणां तो खबर
पड़ जाय। इसी बलाय था। पण माग[6] साबळ[7] था तीसू पचास सवार
रहिया। बाकी रा भगल-बगल भामे गया। सींबो पाथ बाथणे रुकियौ भो तीसूं
खान री फतह हुई छै। प्रवाड़ो हाथ भायौ। खान सुण राजी हुवो घायलां
नूं पाटा बधवाया। माथा साक नै लोहियां साक[8] इनाम दिराई। काम भाया
जिणां रै खरच साक चाळीसा[9] साक दिरावा। उणां रै बेग सू सिरोपाव

---

[1] गति [2] इस भोर [3] उस भोर [4] मारे गये [5] घाव रहित [6] भाग्य
[7] ठीक [8] युद्ध [9] लिए [9] मुसलमानों की प्रथा के अनुसार चालीस
दिनों के पश्चात मृतक के पीछे की जाने वाली रस्म।

कुण-कुण कांम आयो। कासूं रंग-विचार छै सो सारी खबर लेय आवौ। सो मांणस उठै जाय खबर रंग वेल पाछो आयो। तिण कह्यो—राखूंखां रा बेटा दोय कांम आया। अक तौ बडो तिणनूं पाय आप रौ भाई थी अर बीजो छोटो उणांरी पूठ रो। सगा भाई दोय आपसूं छोटा अर नजीक रा। कबीले रा आदमी चाळीस कांम आया। बीजा असा भला रजपूत घड़ां[1] रा धणी। केई खोलर जागीरदार आदमी डेढ़ सौ सूं ऊपर कांम आया अर आदमी च्यार सौ घायल छै, सो जान करो उदास छै, जाजम खाली हुइ गई। लोग प्रसंगी सारा हाथ खोळावण नूं आवै छै। चाळीसां ऊपर मारा नूं चिट्ठी फाटी छै सो आयसी। और केई हिन्दू रजपूत कांम आया था त्यांरा प्रसगी भाई आदमी हजारें'क बाहरसा आया था त्यानूं तौ पण जान उठै ही जे टिकाया था। दरबार सूं जाणे नूं पावै। चाळीसे री सरवरा होय रही छै। इसा समाचार सुण अैही चित्त सान्त हुवा। मामा रा भाई बेटा कांम आया सुण अैही ठंडा पड़िया।

वरस दोय-तीन विदीत[2] हुया और जांग बेरसी मोंठा हुवा। आपरै मतै घोड़ा चढ़णे लागिया। मागण बार में सिकार खेलै। रीझ बकसीस करै। रजपूत ठाकुर लोगां नूं आप आपरी जायगां राजी राखै। सारां ही रो प्रेम जीव राखै। यूं करतां मडते ऊदैजी रै कही सो सब मडो सूं समाचार पण इहां नूं थो। तीसूं असवार दोय सौ ऊठ सवा सौ पाळा आदमी दोय सौ सूं मेड़ते गया। उठै ऊदैजी सूं मिळिया। बड़ा दिलासा दीवी। रिपिया दोय सौ मिठाई मण च्यार डेरै मस्ही। पछै रिपिया डेढ़ सौ रोज खरच रो रुक्का मेलियो सा मांगारो मेल्हियो कह्यो—म्हे तौ रोजीनदार[3] नहीं म्हे तौ कजिय रा धणी छां बावेजी रा दरसण करणां नूं ही आया छां। तद ऊदैजी घणा राजी हुवा कह्यो—छै तौ बाळक महरदार। रहणहारी ज्यांरो कासूं मुवी पाछे पण इणा बेग धणी दाद दावी।

अक दिन ऊदोजी मळाव ऊपर ऊपर पधारिया छै। भंवर बघरो चवर दाम बछरो और बेरसी जंग चाकरो नूं। मा जिमा ही थे दोनूं मरदार बैसा ही सवारी रा घोटा-घोड़ी। मो मारो गाम दसै नारोप घणो करै। इतरै में इहां घाटा-घाटी दौड़ाया सो मारा लोग देगण नूं पाळ ऊपर ऊभा हुवा नारीफ

---

[1]घुड़स्वां [2]व्यतीत [3]मजदूर, नौकर।

करणे लागिया । सू ऊदैजी पूछण लागिया—कुण छै ? तद कही—बेरसी पंम घोड़ा दौड़ावै छै । सो जसा दोनूं सवार छ, जैसा ही घोड़ा-घोड़ी छै । इतरै ऊदैजी कही—राजपूत नै घोड़ा घणा ही आछा छै पण बाप रो बैर खोसर मैं रहियौ तींरी सुध नहीं कीवी तद किसा मसांण । इतरै इहां माण मुजरो कियौ। घड़ी दोय बैठ ऊदैजी घरां पधारिया । म्हे डरे आया सो बात छानी नहीं रही । कई मांणसां आय कहो सो सुण बेरसी अंग पाघां उतार माथै सेल्हा बांधिया छै । तीन दिन टिक पाछी विदा मांगी । जद ऊदैजी खासा घोड़ा च्यार और पांच हजार रिपिया डरे मल्ह[1] दीन्हा । सो कामदार परधानां सभाळ लिया । जद बहिर हुवा सो गांम आया । आय सारां सूं बात कीवी—ऐ अो काम करणौ । ढोलिया कोटड़ी मगाय नाखिया । तद परधान अरज कीवी—जे उतावळ न करो । राजूजी सूं कजियो[2] छै । उसी-वैसी बात न छै । म्हांरो कियौ देखौ जी ठाकुरजी आछी करसी ।

उण दिन सूं आदमी दोय छिपाय डींगमर मेल्हिया छो बखत-बखत री खबर आंण देवै । इब करतां राजूजी रो बेटो परणीजण नूं चढियो सो काळ डेरे गयौ । आदमी ठावा-ठावा अेकठा कर बड़ी आंन[3] बणाय गयौ । तद इणरा आदमी आय खबर कीवी । सो सुण आदमी अेक हजार समचे सूं अेकठा किया । राजे कांधळोत कन्है आदमी मेल्हियौ सो आदमी तीन सौ उणरा आय सामिल हुवा । बाघा कान्धळोत कन्है आदमी गयौ थौ सो उणरो बेटो दोय सौ मांणस साथ लेय आंण मिळियौ । इसमो कर आदमी हजार डेढ सूं अचाणचक[4] गया सो गांव सूं अेक कोस उरै आय नौबत बजाई । तींनूं सुण राजूजी घबराय कही—रै जाय खबर करो नगारो किणरो हुवौ । तद असवार दोय हलकारा जद सामा आय बात कीवी—कींरो[5] साथ छै हो ठाकुरां ? तद इहां कही—जिगरी थे उडीक[6] राखै था उणरो ही ज साथ छै, बेरसी भौरै अंग छै । असवार पाछा आंण खबर करी—जे फलाणे रो साथ आयो छै, सो इब सावधान हुवौ ढील मत राखौ । सो इणांरै नगारो बाजियो सो गांव रो आदमी सगळो थो सो बाहर हुवौ । कैरो[7] री मींगो गांव दोळो घणी थी तिकोरो

---

[1]भेंट [2]युद्ध [3]शामिल बरात [4]अचानक [5]किसका [6]इन्तजार [7]एक कंटीली झाड़ी ।

मोरचो लियौ । राजूलां कमर बांध कमाण लियौ । कोटड़ी में चौक ऊपर बैठी साम सारो आपसो करै छै । पीठ राखै छै । इतरै में दिन ऊगणै नू आयौ सो मुकावलो हुवौ तीर गोळी चालो । इतरै इहां रै वाग ऊठी सो प्राण सरदार मेळी सो इसो ही जे रीठ वाजियौ सो देखियौ चाहिजे । पणी सरदारियां रा माह ऊछळ छै । पणी बरछी प्रायोसत्ते नीसरी छै । सिनै प्रग साये कटै छै । भडाका फींफरा बोल रहिया छै । मार-मार ज होम रही छै । वीर नाचै छै । सो इण तरह पोहर दिन चढ़तां कजियौ फारिग कियौ ।

साढ़े तीन सौ चोसरां री साथ में सू प्रादमी कांम प्रायौ । सौ प्रादमी इहां रा कांम प्राया छै । पण पड़ियोडा साम्हां चोयौ[1] नहीं । लोग हाजियो तिणरी पीठ लागिया ही ज प्राइया । सो लोग गढ़ी मांहीं बड़तां प्राडा दिया जद देखियौ । दरवाज ऊपर महल थौ सो बारी मांक'र[2] ऊपर चढ़ तीर लगाया । जिण प्रादमी रै लागै सो ही कबूतर ज्यूं लौट प्रावै । प्रादमी दसेक दरवाज रै मांहीं रो कांम प्रायौ । दरवाज लग सकै नहीं । इतरा में बेरसी प्राय लोगां नू लड़खड़ाया सो मांणस कांप रहिया छै । प्रौर खान करम सू हाथ प्राइयौ । सो खान नू कमर सू मूसियां पाछो खांच लियौ प्रर खान फर मचको कर बारी रै मोंहडै तीर मारै सो प्रामे घुस प्रावै फेर पाछै खींच ले प्रावै । इव करतां बेरसी प्रक ठौर प्रोले में खडो थौ सो खान बारी रै मोंहडै नजर प्रायौ सो तीर लगाइयौ । तीर भवारा बीच भ्रकुटी मांहां कर पार नीसरियौ सो सांस री साथ ही प्राण निकल गया । खान ढळक पड़ियौ । इतरै में सारै कूको पड़ियौ[3] । सारां रा हाणा फूक ऊभा रहिया । तद लोग कई तौ भाग नीसर गया । प्रादमी तीसेक पोळ खोल दरवाजे बाहर कांम प्राया ।

थोड़ी घड़ियां इहां रो साम भींतर आय वड़ियौ[4] । उठै घोड़ा ऊठ था सो सारा खोस लिया । वीजी वस्तु असबाब सिलैखाना सभाळ लीन्हा । प्रै दोनू सरदार जनानां रै बाहर आय ऊभा रहिया । इहां मू मांहीं बड़णे नहीं दिया । राजूलां री बीबी बाहर प्राय कही—दादा थांरो बैर थां लेय ही लियौ । साबास छै, बड़ी रजपूती राखी । जसा पुरसा रा थ लड़का था विसी[5] ही कीवी । पनामी मरजाद मतां भांजो । तद बेरसी सलाम कर कही—ज इसी ही होणहार

---

[1]देखा [2]में होकर [3]रोने-पीटने लगे [4]घुसा [5]वैसी ।

थी सो हुई। थ म्हारै मायत छौ। म्हांनू ती थांहरी घणी सहायता थी। हेकण कांम कजिये थांहरो वळ राम्हे थी सो सांई रो खेल इसो हुवो सो थांसूं ही थे थण गई। तद बोधी कही—होणहार होय सो मिट नहीं होणर ही रहै छै। मिटै भी क्यूंकर। तद साथ रा सगळा लोगां कही—थां दूर ऊभा रहौ। इण घर माहा रो मास छै सो दुस्मण रै घर रो पत्तो भस्यो। तद वेरसी लोगां नूं ललकारिया अर मना किया। आपरो सगळो साथ नेम बाहर नीसरियो। बाहर आय आयसां नू सभाळिया। कांम आयोड़ां नू दाग दियो।

पाछै सारो साथ भेळो कर खुसी होय हालिया तद चारणां कही—

मोटा चाकर चावता तिलका[1] करता तीर।
चोकर धणो चितारसे[2] हीमसी रा हीर॥

सो अै घरां कुसळ सूं आया। मारसिां रा लोग आया त्यांनू घोड़ा दिया। मनुहारां सूं घणी घणी मिजमानी कर सीख दीन्ही। आयस था त्यांनू पट्टा बन्धाया। सरपो दीन्ही। घणौ रस राख विदा किया। घणी गोठां करणै लागिया। जागड़िया गाण लागिया। अबा धीर वीर हुवा। तिणरो नांम मुलकां चावौ[3] हुवौ।

इति श्री कान्हलोत री बात समाप्त।

---

[1]हर रोज [2]याद करेगा [3]प्रसिद्ध।

जलाल बूबना

■

डाढ़ाली सूर

■

■

साईं री पलक में खलक

■

पलक दरियाव री बात

टिप्पणियाँ

~

ढोला-मारू

हस्तलिखित प्रति—लिपिकाल सं० १८७२

पत्रों का आकार १०३/४ × ७३/४ जिसमें १ इन्च का हाशिया छोड़ा गया है।

पृष्ठ संख्या—७१

विशेष—ढोला मारू की बात का प्रारम्भ जिस पद्यांश से हुआ है उसका साम्य ढोला मारू रा दूहा के परिशिष्ट में दिये गये पद्यांश से भी है। आगे कथा का निर्वाह भी कुछ दूर तक उसी के अनुरूप चला है। ढोला मारू के प्रचलित दोहों के अतिरिक्त भी कितने ही दोहे स्थान स्थान पर बात के बीच बीच में आए हैं। ढोला मारू के प्राचीन दोहों से इन दोहों में भाषागत सरलता भी दृष्टिगोचर होती है। श्री उदयराज उज्ज्वल का कहना है कि इस बात का रचयिता चारण कवि महाराज महड़ है। कई बातों की प्रतियों में महाराज महड़ स्वयं पात्र के रूप में भी उपस्थित होता है (ढोला जब पुंगळ पहुँचता है तब महाराज से रास्ते में भेंट होती है)। उनके मतानुसार जैनियों द्वारा लिखी गई ढोला मारू की प्रतियों में तथा अन्य प्रतियों में घटनाओं आदि के सम्बन्ध में कुछ भिन्नता भी है।

ढोला मारू का समय अनिश्चित होने से इस सम्बन्ध में प्रामाणिक रूप से कुछ कहना कठिन है।

□

जसमा ओडणी

हस्तलिखित प्रति—लगभग १ वर्ष प्राचीन।

पत्रों का आकार—११ × ८३/४ जिसमें १ इन्च । दोनों ओर हाशिया छोड़ा गया है।

पृष्ठ संख्या— १

विशेष—यह बात काफी प्रसिद्ध है और कई हस्तलिखित प्रतियाँ इसकी उपलब्ध होती हैं। अधिकांश प्रतियों में 'जसमा ओडणी री बात' शीर्षक है।

नाहाळी सूर

हस्तलिखित प्रति—अप्रमय १ वर्ष प्राचीन ।

पत्रों का आकार—११ × ८३/४ जिसमें १ इन्च का दोनों ओर हाशिया छोड़ा गया है ।

पृष्ठ संख्या— २

■

राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री बात

हस्तलिखित प्रति—अप्रमय १ वर्ष प्राचीन ।

पत्रों का आकार—११ × ८३/४ जिसमें १ इन्च का दोनों ओर हाशिया छोड़ा गया है । अक्षर बड़े और साफ लिखे हुए हैं ।

पृष्ठ संख्या— १४

विशेष—अमरसिंह प्रसिद्ध ऐतिहासिक पात्र है । इनके पिता गजसिंह (जोधपुर के राजा) की मृत्यु के पश्चात् इनके छोटे भाई जसवन्तसिंह से जोधपुर की गद्दी के लिए झगड़ा हुआ पर जोधपुर प्राप्त न कर सके और नागौर को अपनी राजधानी बनाया । शाहजहाँ ने इन्हें मनसब दिया और सामन्तों में रखा । इनके बारे में यह किम्वदंती है कि शाहजहाँ के दरबार में सलाबत खाँ द्वारा अपशब्द कहने पर इन्होंने उसे मार डाला और आगरे के किले की दीवार घोड़े सहित फाँद कर निकल भागे । तत्पश्चात् अर्जुन गौड़ ने इन्हें धोखे से पकड़ कर मरवा डाला । पर इस बात में इन्हें दरबार में ही युद्ध करते काम आना बतलाया गया है ।

■

महाराजा श्री पदमसिंह री बात

हस्तलिखित प्रति—अप्रमय १ वर्ष प्राचीन ।

पत्रों का आकार—११ × ८३/४ जिसमें १ इन्च का दोनों ओर हाशिया छोड़ा गया है ।

पृष्ठ संख्या— १४

विशेष—पदमसिंहजी (बीकानेर) और इनके भाइयों के कई वीरतापूर्ण किस्से प्रचलित हैं । पदमसिंहजी की बात काफी प्रचलित है । इस बात में सम्पूर्ण किस्से नहीं हैं । केवल कुछ चुने हुए किस्सों का ही संकलन है । यही बात 'करणसिंहजी रै बेटा री बात' के नाम से भी प्रचलित है ।

सांई री मलक में मलक

हस्तलिखित प्रति—सजमय १ वर्ष प्राचीन।
पत्रों का आकार—११ × ८½ जिसमें १ इन्च का दोनों ओर हाशिया छोड़ा गया है।
पृष्ठ संख्या— ८

■

मलक दरियाव री बात

हस्तलिखित प्रति—इसकी नकल श्री सीताराम की लाळस के सौजन्य से प्राप्त हुई है। नकल प्राचीन प्रति से की गई है। नकल किए हुए पत्रों की संख्या २१ है। अन्य बातों की तरह इसकी भी भाषा पुरानी है पर अधिक प्राचीन नहीं।

■

सूरे खींवे कांधळोत री बात

हस्तलिखित प्रति—लगभग १ वर्ष प्राचीन।
पत्रों का आकार—११ × ८½ जिसमें १ इन्च का हाशिया छोड़ा गया है।
पृष्ठ संख्या— ४०

विशेष—प्रस्तुत बात में लोकमान्य पात्र हैं पर इनका विवरण इतिहास में उपलब्ध नहीं होता।

□

वात सूची

बात पभा री
पभा वीरमदे री
पराक्रमसेन री
पंचख्यात वारता री
पंचदंड री
पंचसहेली री
पाबूजी री
पाहुवारी
पिंगळा री
पीठवै चारण री
फीरोजसाह पातिसाह री
पीपैजी री
प्रतापमल देवड़े री
प्रिथीराज चहुवांण री नै हमीर
हाहुलै री
प्रिथीसिंह पंवार री भर बूबा री
पोपांबाई री
फत्तै कोरम्भार री
फक्क हिरीना री
फिरोजसाह पातिसाह री
फूलजी भाटी री
फूलजी फूलमती री
फोगसी मेवाळ री
फोफाणंद री
बगसै हुंसणी री
बालिमा री
बुधाष्टमी री
बुधिबळ री
बुरिजा री
बूग्धी री
बोहा चहुवाणी री
बक्सकूच री
बहाचरित री
भटनेर री
बंगाळ रै मांव री

बात भागवत दसम स्कंध कथासार
भागवत दसम स्कंध मत री
भाटियां री नवा जुदी-जुदी हुई तैरी
भाटी संवै विजैराज रा
मुन्दरदास बीकपुरी री
भायला राजपूतां री
भोज री
मधुमालती री
मसकन्मार नै भाकूत खां री
महाराजा सुजांणसिंहजी री
महिन्दर बीसळोत री
माखुक तोमरी री
माम मकूंकै री
मामै भाणेजै री
मारवाड़ रा ममरावां री
मालवे पंवार री
मालमळी री
मूळराज देवराज री
मेहरै राठौड़ री
मोमल री
मोहिलां री
रतनसिंघ सूरजमल री
रतना हमीर री
रयणसी कुंवरी री
राठौड़ अकुरसी जैतस्योत री
राठौड़ रायसिंघजी री
रायसिंघ खिमावत री
राजा चन्द री
राजा करण री
राजा भार सोलंरी री
राजा नरसिंघ री
राजा नराउत री
राजा प्रिथीराज चौहाण री
राजा प्रिथीराज मुहणदेव परणिया
तैरी

बात बगड़ावतां री
बड़ा बजीबे बडै गहरू बाजर री
बडै राव री
बजीर रै बैर री
बहुलिमा री
बाखी बारै री
बाणबेच री (भ्रिगीराज रासो)
बोरणा री
बासै बापै री
बिलबारै बिसबारी री
बिसनी बे बरन री
बीबस बिजोमण री
बीरबळ री
बीरमजी री
बीरमदे सोनगरै रै भवसै जनम री
बीसा बोबी री
बीमरै महीर री
बीमै सोरठ री
बूठी ठग राजा री
बैताल पच्चीसी री
बैरसल बीमोत बीसल मोहबै री
सगुणा सम साळ री
सदैवच्छ सावळिंगा री
सनीसरजी री
समणी चारणी री
सरवहिमै बीरमदै रै बेटै बनपाळ री
ससीपजा री
सावण बाईस री
सांचोर रै चहुवाणा री
सात बटियां मार्ळ राजा री
सातळ सोम री
सारै मोहिलोत मालोळाई रै बणी री
साह ठाकुरै री
साह रामहणसी हेमराज री
साह रामदत री

बात साहणी भर मेहीवाळ री
साहिबारै फूलमदी री
साहूकार रा बेटा भर नाई री
साईं कर रहियौ तेरौ
सांखळा बहियां सूं वामळ तिमी तेरौ
सांखळा री
सांगण बाढ़ स री
सांवण हामू मूंबै री
सांयमराज राठौड़ री
सांयै पंवार री
सांवनसी मोकाई री
सिकारी बहेलवै भयौ रहे तेरौ
सिरोही रा बणिया री
सिवराव री
सिंहासण बत्तीसी री
सीहै मांवण री
सीहै सीधळ री
सुक बहत्तरी री
सुवबुद्ध सालिंगा री
सुपियारदे री
सूर्य मालदे भर बस पंवार री
सूरजमल हाडै री
सूर सांवळै री
सूरो भर सतवादियां री
सूरिजमल री
सेवापता री
सेवराम बरबोई सैनीत री
सेजावी रा बणी राव नूणा री
सोरणा री
सोमगिरा री
सोमारी रै तपावस री
सोनिगरै मासदे री
सोमवती री
सोरठ री
सोळ्ह सहेलड़ियां री

मूल्यांकन

से साथ जुड़ते थे। इसीलिए जैन धर्म के प्रवर्तकों और प्रचारकों ने तत्कालीन लोकभाषा में ही अपना उपदेश जारी रखा और बिना पढ़ा-लिखा साधारण व्यक्ति भी सरलता से उसे समझ व ग्रहण कर सके इसलिए लोक-प्रसिद्ध दृष्टांतों और कथानकों को उन्होंने अपने धर्म-प्रचार में विशेष रूप से अपनाया। भगवान महावीर के उपदेशित ११ अंग सूत्रों में ज्ञाताधर्म कथा नामक छठा सूत्र ऐसी कथाओं का बहद भंडार था। परम्परा के अनुसार इस सूत्र में साढ़े तीन करोड़ कथायें थीं पर स्मृति की कमी होती गई और जैनागम सूत्र लगभग १ वर्ष तक मौखिक रूप से ही प्रचारित रहे। इसलिए वर्तमान में प्राप्त ग्रंथ मूल परिमाण की अपेक्षा बहुत ही थोड़ा है। ज्ञाताधर्म कथा सूत्र में अब तो बहुत थोड़ी सी कथाएँ रह गई हैं पर उनमें कई कथा ऐसी हैं जिन्हें हम लोक-कथायें कह सकते हैं। इनका प्रचार जैन धर्म में ही सीमित नहीं पर बौद्ध व वैदिक धर्म के साथ साथ विदेशों में भी पाया जाता है। इसके सम्बन्ध में डा० जगदीशचन्द्र जैन की लिखी हुई 'ढाई हजार वर्ष पुरानी कहानियाँ' नामक पुस्तक देखनी चाहिए। मूल आगम ग्रंथों के बाद उनकी विविध टीकाओं में अनेकों ऐसे दृष्टांत व कथाएँ प्राप्त होती हैं, और देवी शताब्दी से तो स्वतंत्र रूप से प्राकृत भाषा में कई कथा-ग्रंथ लिखे जाते रहे हैं जिनमें कई पौराणिक व लोक-कथायें भी सम्मिलित हैं। वसुदेवहिण्डी नामक ऐसा ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। पउमचरियम् में प्रसिद्ध रामायण की कथा मिलती है पर वाल्मीकि रामायण से उसमें वर्णित कथा कई बातों में भिन्न पड़ जाती है। १२वीं शताब्दी तक जैन विद्वानों के रचित अनेक स्वतंत्र कथा-ग्रंथ और कई कथा-संग्रह ग्रन्थ प्राकृत भाषा में रचे हुए मिलते हैं। वैसे संस्कृत और अपभ्रंश में ही कथा-ग्रंथों की रचे जाने की परम्परा चलती रही है। १३वीं शताब्दी से सम्भवतः लोक-रुचि में एक बड़ा परिवर्तन आया। इस समय के लिखे हुए छोटे-छोटे प्रबंधों के कई संग्रह ग्रंथ मिलने लगते हैं, जिनमें कई प्रबन्ध ऐतिहासिक हैं। कुछ लोक-कथाओं पर आधारित हैं। प्रबन्धसंग्रह की यह परम्परा १५वीं शताब्दी तक विशेष रूप से चालू रही। १३वीं शताब्दी से ही विक्रमादित्य संबंधी लोक प्रचलित कथायें लिपिबद्ध की गईं। यद्यपि सम्राट विक्रम एक ऐतिहासिक पुरुष थे पर उनके सम्बंध में जनता में अनेक प्रकार की ऐसी कथायें प्रसिद्ध हो गईं जिन्हें ऐतिहासिक नहीं कहा जा सकता उन्हें लोक-कथा ही कहा जा सकता है। जैन विद्वानों ने विक्रमादित्य संबंधी कथाओं को लेकर संस्कृत प्राकृत राजस्थानी गुजराती भाषाओं में ६ से अधिक ग्रंथ लिखे हैं जिनका कुछ परिचय मैं अपने "विक्रमादित्य संबंधी जैन साहित्य" नामक निबंध में दे चुका हूँ, जो विक्रम स्मृतिग्रंथ और जैन सत्यप्रकाश में प्रकाशित हो चुका है। विक्रम के संबंध में इतनी अधिक रचनायें जैनेतर विद्वानों की भी प्राप्त नहीं होती। इससे जैन विद्वानों ने लोक-कथाओं को कितने विस्तृत रूप में अपनाया इसका सहज ही पता चल जाता है। राजस्थानी भाषा में रचे गए जैन कवियों के विक्रम संबंधी कई ग्रंथ तो विक्रमादित्य के पूरे चरित्र पर आश्रित हैं और कई उसके जीवन से संबंधित किसी एक प्रसंग को लेकर रचे गये हैं—जैसे सिंहासनबत्तीसी बैतालपच्चीसी पंचदण्ड कथा विक्रमचरित्र व विक्रमसेन चापकटा चोर, चौबोली लीलावती कनकावती लानी कथा आदि। इसी प्रकार विद्याविलासी महाराजा भोज और मम्म आदि ऐतिहासिक पुरुषों से सम्बन्धित जैन विद्वानों की राजस्थानी लोक-कथायें प्राप्त हैं।

१३वीं शताब्दी से १५वीं शताब्दी तक संस्कृत में बने हुए अनेक प्रबन्ध-संग्रह और कथा ग्रंथों में लोक-कथायें मिलती हैं। १५वीं शताब्दी से तो राजस्थानी भाषा में भी जैन विद्वानों ने लोक-कथायें संबंधी स्वतंत्र ग्रंथ लिखने प्रारम्भ किये। वैसे राजस्थानी में रचे गये रास चौपाई आदि कथा-ग्रंथों का प्रारंभ तो १३वीं शताब्दी से ही बराबर होता रहा है पर १५वीं शताब्दी से पहले का कोई राजस्थानी काव्य लोक-कथा को लेकर नहीं बनाया गया। जैन महापुरुषों व पौराणिक कथायें और ऐतिहासिक चरित्र ही १३-१४वीं शताब्दी में राजस्थानी काव्यों में पाये जाते हैं। फिर पूर्ववर्ती प्राकृत व संस्कृत ग्रंथों की अनेक कथायें राजस्थानी भाषा में अवतरित होती रही और बहुतसी नई लोक-कथा जो जनता में खूब प्रचलित थीं उन्हें भी जैन विद्वानों ने धार्मिक रूप देकर प्रचारित किया। ऐसी रचनाओं की संख्या सैकड़ों पर है जिनका प्रारंभ व अंत का धार्मिक प्रेरणा वाले कुछ हिस्से को अलग कर देने पर उसमें विशुद्ध लोक-कथा का दर्शन होता है। अभी तक ऐसे समस्त राजस्थानी काव्यों का सूक्ष्म निरीक्षण नहीं हो सका है इसीलिये जैन कवियों की रास चौपाई आदि संज्ञक राजस्थानी काव्यों में लोक-कथायें कितनी हैं, इसका ठीक अनुमान नहीं किया जा सकता। श्री मंजुलाल मजूमदार का विस्तृत निबंध 'गुजराती में लोक-वार्ताओ" के नाम से 'गुजराती साहित्य' खंड ५ (मध्यकालनो साहित्य प्रवाह) नामक ग्रंथ में संवत् १९८५ में प्रकाशित हुआ था। उसमें विक्रमचरित्र सिंहासनबत्तीसी पंचदंड वैताल पच्चीसी चंदन मलयागिरी चापराचोर, शनिश्चर विक्रम अंबड पंचाख्यान कपूरमंजरी सुखबहोतरी माधवानल कामकंदला ढोला-मारू विल्हणपंचासिका विद्याविलास नन्द बत्तीसी सदासदाह हंसावली या हंस-वच्छ, शीलवती सदयवच्छ सावलिंगा आदि लोक-कथाओं संबंधी जैन रचनाओं का परिचय दिया गया था। तदनन्तर श्री भोगीलाल सांडेसरा के 'आपणी लोकवार्ता विषयक प्राचीन साहित्य' नामक निबंध में कुछ नई जानकारी के साथ उपर्युक्त लोक-कथाओं संबंधी जैन रचनाओं का परिचय दिया गया है। इसमें लीलावती आरामसोभा नामक लोक-कथाओं का परिचय और जोड़ दिया गया है। नागरी प्रचारिणी पत्रिका में 'लोक-कथाओं संबंधी जैन साहित्य' नामक मेरा भी एक लेख प्रकाशित हो चुका है और कई लोक-कथाओं के संबंध में स्वतंत्र रूप से मेरे और मेरे भतीजे भंवरलाल के लेख राजस्थान भारती कल्पना, मरुभारती वरदा आदि पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें से कतिपय लेखों की सूची नीचे दी जा रही है—

१ सदयवत्स सावलिंगा की प्रेम-कथा राजस्थान भारती वर्ष ३ अंक १
२ जैन साहित्य में चंदराजा की प्रेम कथा व्रजभारती वर्ष ४ अंक १०-१२
शोध पत्रिका मरुभारती वर्ष ६, अंक ३
३ विद्याविलासी महाराजा भोज संबंधी जैन साहित्य विक्रम वर्ष ५, अंक २—चोपा ठेली व भोज की कथा (पद्य में)
४ मित्रमेलक तीर्थ मरुभारती वर्ष ३ अंक ४
५. पुरन्दर कुमार, मरुभारती वर्ष ३ अंक २

६ मानतुंग मालवती मरुभारती वर्ष ९, अंक ३
७ सती लीलावती मरुभारती वर्ष ९, अंक ४
८. रत्नचूड़ व्यवहारी मरुभारती वर्ष ६, अंक २
९. पद्मावती व पद्मसी वरदा वर्ष १ अंक ४
१० विद्याविलास कल्पना
११ चंदनमलयागिरि कथा व तत्संबंधी साहित्य कल्पना वर्ष ८ अंक १२
१२ चित्रसेन पद्मावती नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ४९, अंक १
१३ कान्हड़ कठियारा जैन भारती जैन सम्बोध चरित्र निर्माण कनकरथ कथा (जैन भारती १९५९)
१४ टीकमचंद रचित चंदहंस कथा अहिंसा वाणी वर्ष ७ अंक ६
१५. वंकचूल कथा जैन सिद्धान्त भास्कर जैन भारती
१६ मोतीचंद कथा साहित्य संदेश वर्ष १८ अंक ९, विजयानंद
१७ वाग्विलास कथा संग्रह, वरदा वर्ष १ अंक १
१८. बुद्धिरास (कथा) चरित्र निर्माण वर्ष ६, अंक ९
१९. माधवानल कामकंदला संबंधी साहित्य हिन्दी अनुशीलन
२० महाकवि विल्हण की प्रेम कथा विपथगा में प्रेषित
२१ मृगांक पद्मावती कथा ग्रामजन में प्रेषित
२२ मत्स्योदर कथा
२३ मदनशतक
२४ क्षुल्लक कुमार कथा
२५. रत्नपाल
२६ उत्तमकुमार
२७ उमासेन बखसेन कथा

और भी कई लोक-कथायें राजस्थानी जैन काव्यों के सार के रूप में लिखी जा चुकी हैं। लोक-कथाओं सम्बन्धी जैनेतर गद्य-पद्यात्मक राजस्थानी रचनाओं की अनेक प्रतियाँ जैन ज्ञान भंडारों में सुरक्षित हैं। इनमें से कई कथाएँ ऐसी हैं जिनकी प्रतियाँ अन्यत्र कहीं नहीं मिलती। अतः राजस्थानी लोक-कथाओं संबंधी साहित्य-निर्माण व संरक्षण में जैन विद्वानों की देन महान् है। कई लोक-कथायें तो जैन समाज में इतनी अधिक लोक-प्रिय हुईं कि १-१ कथा सम्बन्धी ५-१ रचनाएं मिलती हैं। जैन राजस्थानी गद्य में भी १५वीं शताब्दी से कथाएँ लिखी जाती रही हैं पर उन में लोक-कथायें कम ही हैं, जैन पौराणिक कथायें ही अधिक हैं।

■

लोक-कथाओं की एक प्रकृति—जादू की डोरी

[कन्हैयालाल सहल]

लोक-कथाओं के वैज्ञानिक अध्येताओं ने जादू की डोरी को भी एक मूल अभिप्राय (Motif) के रूप में स्वीकार किया है। डोरी जैसी छोटी-सी वस्तु भी एक स्वतंत्र मूल अभिप्राय का रूप धारण कर सकी है, यह पढ़-सुन कर चौंकने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में किसी वस्तु का महत्त्व उसकी अल्पता अथवा दीर्घता पर निर्भर नहीं करता। महत्त्व का मुख्य कारण है उसकी प्रभविष्णुता। वैसे देखा जाय तो यज्ञोपवीत भी तो एक सूत्र ही है किन्तु फिर भी उसको कितना महत्त्व दिया गया है। उसी प्रकार दक्षिण भारत में सम्पन्न होने वाले विवाहों के अवसर पर गले में जो 'मंगल-सूत्र' बाँधा जाता है वह भी आखिर है तो सूत्र मात्र ही किन्तु दक्षिण भारत के निवासी फिर भी उसे कितना महत्त्व देते आये हैं। दूर जाने की आवश्यकता नहीं रक्षा-बन्धन को ही लीजिये—वह भी एक प्रकार का रक्षा-सूत्र ही तो है किन्तु फिर भी उसके महत्त्व को कौन नहीं जानता? यही कारण है कि डोरी भी यदि जादू के गुणों से समन्वित हो जाय तो फिर उसकी करामात देखने ही योग्य है। केवल भारतवर्ष में ही नहीं विश्व के बहुत से देशों में अनेक कार्यों की सिद्धि के लिए जादू की डोरी का प्रयोग हुआ है। स्त्रियों के बन्ध्यात्व को दूर करने तथा बहुविध रोगोपचारों में जादू की डोरी अथवा डोरे का प्रयोग होता रहा है। इतना ही नहीं आज के वैज्ञानिक युग में भी उसका प्रयोग बराबर देखने में आता है।

लोक-कथाओं के मूल अभिप्राय के रूप में प्रयुक्त 'जादू की डोरी' का जो रूप है उसका कुछ स्पष्टीकरण कथासरित्-सागर की निम्नलिखित कथा से हो सकेगा—

"वाराणसी में सोमदा नाम की एक युवती थी जो बड़ी सुन्दरी थी। वह पुंश्चली थी और गुपचुप जादूगरनी का भी काम करती थी। एक दिन उसने भवशर्मा के गले में एक डोरी बाँध कर जादू कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप भवशर्मा एक बैल के रूप में परिवर्तित हो गया। सोमदा ने इस बैल को एक ऊँटवाल के यहाँ बेच दिया। ऊँटवाल ने बैल पर जब सामान लादना शुरू किया तो एक बलनमोचिनी नामक जादूगरनी को उस बैल पर बड़ी दया

गई। उसने अपनी अलौकिक शक्ति से जान लिया कि सोमदा ने भवशर्मा नामक एक निरपराध व्यक्ति को बैल बना दिया है। बन्धनमोचिनी ने दयार्द्र होकर उस समय बैल के गले में से डोरी निकाल ली जब कि बैल का स्वामी उसे देख नहीं रहा था। गले में से डोरी निकलते ही वह बैल फिर भवशर्मा बन गया। मालिक ने बैल की तलाश करना शुरू किया किन्तु मालिक के लिए अब उस बैल की छाया तक भी पहुँचना सम्भव नहीं था। उधर बंधनमोचिनी और भवशर्मा दोनों साथ-साथ चलने लगे। संयोग से सोमदा भी उसी रास्ते से आ निकली। भवशर्मा को फिर से मनुष्य रूप में देख कर उसके क्रोध का ठिकाना न रहा। 'माया जाने जन की ही माया' के अनुसार सोमदा सब रहस्य समझ गई। उसने बंधनमोचिनी को आड़े हाथों लेते हुए कहा— दुष्टे! तूने इस भवशर्मा को क्यों बन्धन-विमुक्त कर दिया? अवश्य ही तुझे इसका फल चखाऊँगी। कल प्रभात तुम दोनों को मौत के घाट न उतार दूं तो मेरा नाम सोमदा नहीं। यह कह कर बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किये ही सोमदा वहाँ से चली गयी। उसके चले जाने के बाद बंधनमोचिनी ने भवशर्मा से कहा—"कल सोमदा हम दोनों का प्राणान्त करने के लिए एक काली घोड़ी का रूप धर कर आवेगी। उस समय मैं रंगबिरंगी घोड़ी का रूप धारण करूंगी। जब हम दोनों आपस में लड़ने लगें तब तुम काली घोड़ी को तलवार से मार डालना।

"प्रातःकाल होते ही भवशर्मा तलवार लेकर बंधनमोचिनी के घर गया। कुछ समय बाद सोमदा काली घोड़ी का रूप बना कर वहाँ आ पहुँची। बंधनमोचिनी ने लाल-भूरी घोड़ी का रूप बना लिया और दोनों में गुत्थमगुत्थी होने लगी। मौका देख कर भवशर्मा ने काली घोड़ी पर तलवार का वार किया जिससे सोमदा नामक जादूगरनी का सदा के लिए काम तमाम हो गया और भवशर्मा ने भी सन्तोष की सांस ली।"•

उक्त कथा से स्पष्ट है कि जब तक जादू की रस्सी बंधी रहती है, तब तक जादूगर या जादूगरनी द्वारा परिवर्तित रूप से मुक्ति नहीं मिलती। जादू की रस्सी ज्योंही टूटी मनुष्य अपने पूर्व रूप को प्राप्त कर लेता है। ऊपर दी हुई कथा में यदि बंधनमोचिनी बैल के गले से डोरी न निकालती तो भवशर्मा को बैल ही बने रहना पड़ता।

कथा सरित्सागर के अतिरिक्त अन्य अनेक कृतियों में 'जादू की डोरी' नामक मूल अभिप्राय के बहुत से उदाहरण मिलते हैं। जैन-धर्म की एक अप्रकाशित कृति 'उत्तम चरित्रकथानक' *है जिसमें मदनसेना नामक मालिन राजकुमार उत्तमचरित्र के प्रेम में पागल हो उठती है।* जब वह राजकुमार को प्राप्त नहीं कर पाती तो उसकी टांग में जादू का डोरा बांध देती है जिसके परिणामस्वरूप तत्काल ही उत्तमचरित्र तोते का रूप धारण कर लेता है। दिन में वह उसे तोता बना रखती और रात्रि में उसके पांव में से जादू का सूत्र निकाल लेती जिससे फिर

• द्रष्टव्य The Ocean of Story (pp. 193-94,95)

वह मनुष्य बन जाता। इस प्रकार रात्रि में वह राजकुमार को अपनी विलासिता का साधन बनाती।'

'उत्तमचरित्र कथानक' से मिलता-जुलता प्रसंग ही 'चौबोली' नामक राजस्थानी लोक-कथा में भी उपलब्ध है जिसका आवश्यक अंश यहाँ उद्धृत किया जा रहा है—

"ठाइरां मूरिखै रो नाम रतन पारखू दियौ। रतन परखावण लोक आवै। खोटै-खरै री खबरि करिदै। ठाइरां कुंवरी अैड़ी—सिद्ध आया इसी राखड़ी कराई जे बांधीजै तो सुवटो हुवै खोलीजै तो आदमी हुवै। एक समै सुवटो करि बैसारियौ हुतौ सु स्याम करतां उड़ियौ। बाई सहर के राजा री कवरी पंचकली नै मिल्यौ। पंचकली बंधे री कली सु सुवली तेसूं नाम पंचकली कहावती। तैरै मोहल आइ बैठौ। पंचकली पकड़ि लियौ घर स्याम करतां देखै तो राखड़ी छै। राखड़ी खोलै तौ मनिख हुवौ। रति मानिस करै। दिन सुवटो करै। इम करतां उवैसूं चूकी। अर्थात् तब मूर्ख का नाम रत्न-पारखी रखा गया। रत्न-परीक्षा करवाने के लिये लोग आने लगे। मूर्ख खोटे-खरे की जाँच कर देता। तब राजकुमारी ने किसी सिद्ध से ऐसा रक्षा-सूत्र बनवाया कि जिसे यदि किसी के बाँध दिया जाय तो वह व्यक्ति सुआ हो जाय और यदि रक्षा-सूत्र खोल दिया जाय तो सुआ पूर्ववत् मनुष्य का रूप धारण कर ले। एक समय राजकुमारी ने मूर्ख को सुआ करके बिठला रखा। सुआ खेल ही खेल में उड़ा और जाकर शहर के राजा की लड़की पंचकली से मिला जो चम्पे की कलियों से तुलती थी और इसलिए जिसका नाम भी पंचकली था। सुआ उसके महल पर जाकर बैठ गया। पंचकली ने उसे पकड़ लिया और ध्यान करते हुए देखा तो उसे राखी (रक्षा-सूत्र) दिखाई दी। राखी ज्योंही खुलाई गई, सुआ मनुष्य हो गया। इस प्रकार राजकुमारी रात को उसे मनुष्य बना देती और दिन में सुआ बना देती। इस प्रकार करते हुए वह पथ भ्रष्ट हो गई।

जैसा ऊपर कहा गया है 'उत्तमचरित्र कथानक और चौबोली की इस उपकथा में बहुत साम्य है किन्तु फिर भी उपकथा अपनी विशेषता लिए हुए है जिसकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट हुए बिना नहीं रहता। लोक-कथाओं में सामान्यतः यह देखा जाता है कि राजकुमारी गले में जादू का डोरा डाल कर जिसे सुआ बना देती है, वह सुआ साधारणतः उड़ कर अन्य राजकुमारी के पास नहीं जाता। किन्तु चौबोली का सुआ उड़ कर एक दूसरी राजकुमारी पंचकली के पास पहुँच जाता है।

नाल्स (Knowles) द्वारा संपादित काश्मीरी लोक-कथाओं में एक ऐसे जादूगर की लड़की का प्रसंग आता है जो एक राजकुमार से प्रेम करने लगती है। वह राजकुमार को राजकुमारी से वियुक्त कर देना चाहती है। इसलिए राजकुमार के गले में एक जादू की डोरी अथवा सूत्र बाँध देती है जिसके परिणाम-स्वरूप राजकुमार तत्काल ही एक मेंढ़े का रूप धारण कर लेता है।

उक्त काश्मीरी लोक-कथा को पढ़ कर हम एक ऐसी ही प्रसिद्ध राजस्थानी लोक-कथा का स्मरण हो आता है जो तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से यहाँ संक्षिप्त रूप में उद्धृत की जा रही है—

"एक समय की बात है कि मारवाड़ के एक पहाड़ी इलाके में एक विधवा राजपूत स्त्री रहती थी। संयोग से एक रात के समय जब कि मूसलाधार वर्षा हो रही थी उसका एक लड़का बाहर निकला। घोर अन्धकार में पानी की बौछारों से वह बालक अपनी सुधबुध खो बैठा। दुर्भाग्यवश उसका पाँव पानी की तेज धार में फँसा गया और वह बह निकला।

"उस समय दिल्ली में एक बादशाह राज्य करता था। उसके वजीर के कोई पुत्र न था। वजीर की आयु ढल चुकी थी तथा वह और उसकी पत्नी पुत्रहीन होने के कारण बहुत दुखी रहते थे। वजीर नियम से नित्य प्रातःकाल यमुना-स्नान करने जाता था। एक दिन वह ज्योंही घाट पर गया उसने देखा कि एक बालक नदी में बहता हुआ जा रहा है। वह तुरन्त नदी में से उस बालक को निकाल लाया और उसे घर ले जाकर अपनी पत्नी से कहा— "भगवान ने हमारे लिए पुत्र भेजा है इसका पालन पोषण कर।" वजीर की स्त्री ने बालक का रूप-रंग देखा तो वह मुग्ध हो गई।

"दिन मास और वर्ष व्यतीत होने लगे। लड़के की आयु अब पन्द्रह वर्ष की हो चली। एक दिन तीज का मेला देखता हुआ लड़का ऐसे स्थान पर जाकर रुका जहाँ से बादशाह का महल बहुत नजदीक था। बादशाह की बेटी झरोखे में खड़ी हुई मेले की शोभा देख रही थी। वजीर के बेटे को देख कर वह उस पर मुग्ध हो गई। उसने तुरन्त एक दासी को भेज कर लड़के से कहलवाया कि आज अर्द्ध रात्रि के समय घोड़ा लेकर तुम मेरे महल के नीचे आकर खड़े हो जाना। मैं वहीं तुमसे मिलूँगी।

'वजीर का बेटा निश्चित समय पर वहाँ पहुँचा। बादशाह की लड़की पहले ही वहाँ घोड़ा लिए खड़ी थी। दोनों रातों-रात नगर से बाहर निकल गये। मंजिल-दर-मंजिल चलते वे कामरूप देश में पहुँचे। एक सराय में उन्होंने डेरा किया। बादशाह की बेटी भोजन के प्रबन्ध में लग गई और वजीर का बेटा दोनों के लिए खाना-दाना लाने बाजार गया। कामरूप देश की स्त्रियाँ जादू-टोने के लिए विख्यात हैं। वहाँ की एक स्त्री वजीर के लड़के को देख कर उस पर मोहित हो गई। उसने वजीर के लड़के के गले में एक जादू की डोरी बाँध दी जिससे वह मेंढ़ा बन गया।

'बहुत समय तक बाट देखने पर भी जब वजीर का लड़का न लौटा तो राजकुमारी ने मर्दाना वेश बनाया और उसकी खोज में निकल पड़ी। कई दिनों तक घूम कर उसने नगर की गली-गली छान डाली किन्तु वजीर के बेटे का कुछ पता न चला। नगर में घूमने से उसे एक बात का निश्चय अवश्य हो गया कि किसी ने जादू के बल से उसके प्रेमी को पकड़ लिया है। एक दिन कामरूप के राजा ने पुरुष वेषधारी राजकुमारी को देखा। राजा ने जब परिचय पूछा तो बादशाह की लड़की ने कहा कि मैं दिल्ली का राजकुमार हूँ। राजा ने अपनी राजकुमारी का विवाह उसके साथ कर दिया। बादशाह के बेटे ने कहा— 'हमारे यहाँ ऐसा रिवाज है कि विवाह के पश्चात् सात दिन तक रात जगायी जाती है। आप नगर के सारों मुहल्लों को आदेश दे दीजिए कि हर मुहल्ले की स्त्रियाँ एक-एक रात जगावें।

राजा के हुक्म से सभी स्त्रियाँ बारी-बारी से रात जगाने आती। बादशाह की बेटी बड़ी

सावधानी से उन्हें देखती। इस प्रकार रात पचास-पचास छः रातें गुजर गयीं। सातवीं रात उस मुहल्ले की स्त्रियों की बारी आयी जिसमें वह मेंढ़ा बना देने वाली स्त्री भी थी। वह स्त्री मेंढ़े को भी अपने साथ लाई थी। बादशाह की बेटी ने मेंढ़ा अपने पास रख लिया और राजा से उसका मूल्य चुका देने को कह दिया। वह यद्यपि मेंढ़ा देना नहीं चाहती थी तथापि उसकी एक न चली और उसे मजबूर होकर मेंढ़े के बदले मूल्य ले लेना पड़ा।

"बादशाह की बेटी ने दूसरे दिन दिल्ली के लिए प्रस्थान कर दिया। राजा ने उसे बहुत धन देकर विदा किया। मार्ग में बादशाह की लड़की ने मेंढ़े के गले में बंधा हुआ मन्त्र का धागा तोड़ डाला। ऐसा करते ही मेंढ़ा वही सुन्दर वजीर का बेटा बन गया।

'बादशाह की बेटी ने राजकुमारी तथा वजीर के बेटे को सब वृत्तान्त कह सुनाया और उससे प्रार्थना की कि वह उन दोनों को पत्नी रूप में स्वीकार करके सुखपूर्वक जीवन बितावे। वजीर के बेटे ने इस प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार कर लिया।"

इसीसे मिलती-जुलती एक कहानी मालजी हीरजी की है जिसका आवश्यक अथवा संबद्ध अंश यहाँ उद्धृत किया जा रहा है —

"अब मालजी बजार में आर बांण्या हाट्या में तो बांण्या की सा' दीयाया अर फेर तमोळी कै बीड़ा लेवाने गया। सो तमोळण तो बाने मींढो कर'र बैठाण लीना। हीरजी रसोई पोह'र मालजी नै हेरवा लाग्या जिद देखी कांई तो मालजी तो मींढो हुया तमोळण कै मंड्या छै। देख'र उमटाई चल्या गया। ऊं सैर को राजा नार की सिकार खेलवाने रोजीना जाव अर हीरजी भी रोजीना देखवाने जाव। एक दिन भटा में अस्यो नारयो नार आ गयो गो कोई सूं ई को मरयो नै जिद हीरजी आपका जोरा माड्या सूं तीर की देर ऊं नार नै मार नाख्यो। जिद राजा हीरजी नै बुला'र कैवे—रे भाई जुवान था सूं म्हांकी साथ रैबो कर। हीरजी साथ रैवा लाग्या। राजा राजी हुं'र हीरजी नै कैवे—भाई जुवान तूं चावे सोई मांग। जिद हीरजी कैवे—और तो कांई की भांपू नै खाना का सौ टका रोजीना चायजे छै। सो राजा भी टका सौ सोना का रोजीना कर दीना अर ऊंनै चाकरी बड़ी परगणा दीनी। अब हीरजी को नाम नगरसेठियो जुवान पड़ गयो अर राज मोबी सब काम कोई करवा लाग गयो। फेर वो सब जिनावरां की लड़ाई करवाई। बड़े हाती की बड़े पाड़ा की बड़े कोई की बड़े कोई की अर कोईसाई मींढा की। जिद सब सैर का मींढा आया अर तमोळण को मींढो भी आयो। हीरजी ऊं मींढा को डोरो तोड़'र मालजी कर लीना। फेर आपका देस जावानै राजा सूं सीख मांगी। राजा वाने घणो धन-दौलत देर, सीख देर बिदा कर दीना। हीरजी अर मालजी अर वा राजा की कांई ठंग्यूं चाल्या। आम आम र मालजी हीरजी अर राजा की कांई मं ब्याह कर लियो अर सीम्यूं सुख सूं रैवा लाग्या।।[1]

---

[1] देखिये Specimen of the Dialects spoken in the State of Jeypore by Rev G Macalister M A (pp. 53-61)

"जालजी और हीरजी में प्रेमी-प्रेमिका का सम्बन्ध था। जब हीरजी का विवाह-सम्बन्ध किसी दूसरे से स्थिर हो गया तो एक दिन जालजी और हीरजी दोनों पुरुष वेश में अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर एक साथ निकल पड़े। चलते चलते वे एक शहर में पहुँचे। अब जालजी तो बाजार में खाने वालों के यहाँ जाकर खानों की 'सारें' ले आए और फिर तमोळी के यहाँ बीड़ा लेने गए। तमोळिन ने उन्हें मेंढ़ा बना कर बिठा लिया। हीरजी रसोई का काम छोड़ कर जालजी को तलाश करने गई तो क्या देखती है कि जालजी तो मेंढ़ा बने तमोळिन के यहाँ बंधे हैं। देख कर हीरजी लौट गयीं। उस शहर का राजा सिंह की शिकार के लिए प्रतिदिन जाता और हीरजी भी रोज शिकार का दृश्य देखने जाती। एक दिन एक झाड़े में एक ऐसा भारी शेर आ गया जो किसी से भी नहीं मारा गया। तब हीरजी ने अपने घोड़े पर से तीर चला कर उस सिंह को मार डाला। तब राजा ने (पुरुष-वेश धारण किए हुए) हीरजी को कहा— हे भाई नौजवान! आ तू मेरे साथ रहा कर।

हीरजी ने साथ रहना स्वीकार कर लिया। एक दिन राजा ने प्रसन्न होकर कहा— 'नौजवान तुम्हें जो चाहिए मांग।" हीरजी ने कहा— 'मुझे और तो कुछ नहीं चाहिए, प्रतिदिन सोने के सौ टके चाहिएं'। राजा ने हीरजी को सौ टके प्रति दिन देना स्वीकार कर लिया और अपनी पुत्री का विवाह उससे कर दिया। अब हीरजी का नाम सवाटकिया जवान पड़ गया और राजा का भी सब काम वही करने लग गया। फिर उसने सब पशुओं की लड़ाई करवाई—कभी हाथियों की कभी घोड़ों की कभी भिन्सी की और कभी किसी की और अंत ही अंत में मेंढ़ों की। जब उस शहर के मेंढ़ आये तो तमोळिन का मेंढ़ा भी आया। हीरजी ने उस मेंढ़ का 'डोरा' तोड़ कर उसे जालजी बना लिया। फिर अपने जाने के लिये राजा से छुट्टी मांगी। राजा ने उन्हें बहुत सा धन-द्रव्य देकर विदा किया। हीरजी जालजी तथा उस राजा की लड़की ये तीनों चले। आगे चल कर जालजी ने हीरजी तथा उस राजा की लड़की दोनों से विवाह कर लिया और तीनों सुखपूर्वक रहने लगे।

'जादू की डोरी' नामक मूल अभिप्राय के सम्बन्ध में जो दो राजस्थानी लोक-कथाएँ उद्धृत की गई हैं, उनमें विवरणों का कुछ अंतर होते हुए भी दोनों की आत्मा एक है। एक कथा में भेद को प्राप्त करने के लिए 'रात्रि-जागरण' का आश्रय लिया जाता है, जब कि दूसरी कथा में पशुओं की लड़ाई का आयोजन किया जाता है।

किसी भी मूल अभिप्राय के सम्बन्ध में दो बातें द्रष्टव्य हैं—एक तो यह कि मूल अभिप्राय एक कथानक-रूढ़ि के रूप में प्रयुक्त होता है जिसका तात्पर्य यह है कि किसी एक देश-विशेष की लोक-कथाओं में ही नहीं बल्कि अन्य देशों की लोक-कथाओं में भी सामान्यतः उसकी बार बार आवृत्ति देखी जाती है। दूसरी बात यह है कि इस प्रकार का मूल अभिप्राय कथानक को आगे बढ़ने में भी सहायक होता है। 'जादू की डोरी' नामक मूल अभिप्राय के स्पष्टीकरण के लिए जिन लोक-कथाओं के उदाहरण ऊपर दिए गए हैं उनसे यह बात स्पष्ट है कि 'जादू की डोरी' कथा को गति देने में सहायक होती है। यति ही क्यों कथा की परिणति में

टोटेम' जादू और धर्म की जो धारणायें थीं—वही आगे चलकर समाज की विकसित अवस्था में विज्ञान एवं कला का रूप ग्रहण करती गईं। किन्तु एक महत्त्वपूर्ण बात है—मनुष्य की चाहे वैज्ञानिक-क्षुधा हो अथवा कलात्मक-क्षुधा हो—दोनों ही के लिए मनुष्य ने अपने सामाजिक इतिहास में बार-बार कथाओं का उदाहरणों का दृष्टांतों का सहारा लिया। मनुष्य अपनी बात कहने के लिए, अपने मन के रहस्यभरे और अस्फुट विचार को व्यक्त करने के लिए कहानी और दृष्टांतों की शरण में गया है।

मनुष्य के आदिम-मानस पर कथा-कहानी का अद्भुत प्रभाव पड़ता था। उसके सभी प्रकार के विश्वासों के पीछे एक सुसम्बद्ध कथा का आधार हुआ करता था। वह शिकार के लिए जाता तो पशुओं के व्यवहारों और उनकी चतुरता से बचने के तरीकों की कितनी ही वह गियाँ गुथी हुई होती थीं। वही कहानियाँ उसकी शिकार-शिक्षा थी। इसी प्रकार हवाओं के रुख पर कथा-कहानियाँ होती थीं। सूरज का उगना चाँद का अस्त होना पेड़ का पैदा होना वर्षा की बूँदों का आना नदियों में पानी का बहना पानी के किनारे किनारे पशुओं का चरना—अर्थात आदिम जीवन की सभी आवश्यकताओं के अनुकूल एवं अनुरूप कथा-कहानियाँ बनी हुई हैं। प्रकृति के इन उपकरणों के अलावा मनुष्य के सामाजिक जीवन को सुसंगठित बनाने की दृष्टि से भी अनेक कथानक अस्तित्व में आये। व्यक्ति और उसकी वैयक्तिक समस्याओं ने भी कथा का स्वरूप ग्रहण किया। कहने का तात्पर्य यह कि आदिम समाज का संपूर्ण कलात्मक एवं वैज्ञानिक जीवन कथाओं के माध्यम से व्यक्त होता था।

कथाओं के मुख्यतः दो रूप हो सकते हैं। एक—वे कथायें जो सहज स्वाभाविक और यथातथ्य घटनाओं का ज्यों का त्यों वर्णन करें अर्थात कथा के पात्र घटनायें चरित्र सभी कुछ जीवन के यथार्थ पर निर्भर करें।

कथा का दूसरा स्वरूप—वे कथायें जो कल्पना के सानुपातिक उपयोग द्वारा अनुभूतियों एवं घटनाओं के यथार्थ को विरूप (Deform) करके जीवन के सत्य को उद्घाटित करें। आदिम-जीवन की सभी कथा-कहानियाँ विरूपात्मक' हैं और 'विरूप' के माध्यम से वे संकेतात्मक अर्थ प्रदान करती हैं। परियों जादू-टोनों असम्भाव्य घटनाओं एवं पशु-पक्षियों की कथाओं के पीछे जीवन की संकेतात्मक अनुभूति छिपी हुई रहती है।

कथाओं के यही दो मुख्य बीज हैं। इन्हीं बीजों को सामाजिक भूमि पर मनुष्य के अनुभवों का जीवन-दायी पानी मिला और कथाओं की लता जीवन के नानारूपात्मक संकेतों में पल्लवित एवं पुष्पित होने लगी।

कथाओं का क्रम मनुष्य के सामाजिक जीवन की ही भाँति अविच्छिन्न एवं सतत् प्रवाहशील रहा है। इन कथाओं ने अपने मुख्य विभाजनों के आधार पर इतिहास समाज दर्शन शिक्षा धर्म राजनीति आचार-विचार एवं नीतिशास्त्र सम्बन्धी अनेक जीवन प्रसंगों में यथार्थ का सहारा लेकर कथा शैली एवं विषयों को विकसित बनाया। इसी प्रकार विरूपात्मक' शैली में मनुष्य के सूक्ष्म एवं अमूर्त विचारों को अभिव्यक्ति मिली।

यह दोनों प्रकार की कथा-शैलियाँ समाज की विकसित अवस्था पर पहुँच कर, बहुत कुछ अन्योन्याश्रित होने लगीं। ऐतिहासिक आख्यानों में असम्भाव्य घटनाओं एवं रचनात्मक सूक्ष्मताओं का प्रभाव पड़ने लगा और दूसरी ओर कल्पना-जन्य विचारात्मक कथाओं में यथार्थ का प्रभावशाली अंश आने लगा।

प्रारंभिक अवस्था में जब मनुष्य के पास अपने भावों एवं विचारो को व्यक्त करने के लिए केवल वाणी का सहारा था तब वह कथा कहता था और सुनता था। बाद में जब उसने भावों एवं विचारों को वाणी के संकेतों (अर्थात् लिपि) में लिखना सीख लिया तो वह कथाओं को लिपि-बद्ध करने लगा। किन्तु उस समय की लिपि-बद्ध भाषा में आज जितनी सहजता एवं यथार्थ को निश्चित स्वरूप में व्यक्त करने की शक्ति नहीं थी। अत उन कथा कहानियों को ऐसा स्वरूप ग्रहण करना पड़ा जो सांकेतिक शब्दों के माध्यम से गहरे एवं सुन्दर भावों को ध्वनित कर सके और इसीलिए उस समय के कथाकारों को 'पद्य' का सहारा लेना पड़ा। पद्य-बद्ध कथा लिखने के पीछे कुछ और कारण भी थे। उस समय के कथाकार के सामने अपनी 'बात' को व्यक्त करने के लिए एक ओर भाषा की सीमा थी और दूसरी तरफ प्रारम्भतम अयत्न होने के कारण भाषा स्वयं ही छन्द का सहारा लेने लगती थी। साथ ही 'बात' को स्थायित्व प्रदान करने के लिए कथा को ऐसा स्वरूप देने की कोशिश की जाती थी जिसमें वह सहजता से मनुष्य के कंठ में जीवित रह सके। उस समय लिपि का जन्म तो हो चुका था किन्तु उस लिपि का सम्पूर्ण समाज में प्रचार होना सम्भव नहीं था। अत लिपि के जन्म के साथ ही साथ कथाओं के सुनने एव सुनाने का क्रम निरन्तर चलता रहा। सच बात तो यह है कि लिपि का सही-सही उपयोग तो छापेखाने के बाद ही हो सका है। उसके पूर्व का जितना भी साहित्य है वह सब तो कथात्मक अथवा कथनात्मक साहित्य ही है।

भारतीय कथा-साहित्य को एक विहंगम दृष्टि से देखें तो पता चलेगा कि चाहे वे कथायें वेदों की हो चाहे पुराणों-उपनिषदो की कहानियां हों चाहे जातक की आख्यायिकायें हों चाहे बृहत्कथा सरित्सागर हितोपदेश सिंहासन बत्तीसी बैताल पच्चीसी के किस्से हों—सभी कथाओं की लिखने की शैली में 'कहने के प्रकार' का प्राधान्य है। इन सभी कथाओं में 'सुनने एवं सुनाने' का भाव निहित है।

इस बात को समझने के लिए आप किसी भी प्राचीन कथा को ले लीजिये और उसकी तुलना आधुनिक कहानी से कीजिये। आज की कहानी का अपना टेक्नीक है—उसकी अपनी शैली है। कहानी केवल कथा ही नहीं है। वह अपनी शैलीगत विशेषता के कारण विशिष्ट भी है। प्रेमचन्दजी अथवा शरतबाबू की कहानी को पढ़ कर आनन्द तभी प्राप्त हो सकता है जब हम उन्हीं के द्वारा लिखे गये रूप को पढ़ते हैं। उनकी लिखी हुई कहानी को हम बयान करके वह आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते। किन्तु प्राचीन कथाओं में लेखक की इस 'वैयक्तिकता' का नितान्त अभाव है। कथा को लिखने वाला अथवा कहने वाला कथा से लो-की-गरी निरपेक्ष है। जो कुछ है—वह कथा ही है। उस कथा को जो

गुण कहना — वह लेखक की शैली अथवा वैयक्तिकता के बिना ही कह सकती है। उन कथाओं का यह सर्वश्रेष्ठ गुण भी है और सम्भवतया उनकी सबसे महत्वपूर्ण दुर्बलता भी है।

कथाओं की विकासमान यात्रा की एक अद्भुत कहानी है। जब केवल वाणी थी—उसका स्वरूप एक था। जब लिपि का जन्म हो गया तो उसके स्वरूप ने पलटा खाया। समाज की आवश्यकतायें एवं नैतिक मान्यतायें बदलीं तो उसे अपना पथ बदलना पड़ा। ज्यों-ज्यों मनुष्य के ज्ञान की परिधि विस्तृत होती चली गई—त्यों ही त्यों कथाएं जीवन की गहराई में उतरती चली गई। कथाओं ने कभी समाज के आदर्शों को व्यक्त करने की कोशिश की तो कभी आदर्शों की रूढ़िवादिता और कठोरता को भग करने की कोशिश की। कभी कथा ने इतिहास को अपने में समाहित करने का प्रयत्न किया तो कभी उसने दर्शन की गुत्थियों को सुलझाया। कभी कथा ने रीति-नीति की बात की तो कभी उसने रीति-नीति की व्यर्थता को साबित किया। कभी कथा ने समाज को बलवान बताया तो कभी उसने एक व्यक्ति के चरित्र को ही समाज की मर्यादा बना दिया। सूर्य की रोशनी समाज और व्यक्ति के मन के गहरे अंधेरे में पहुँची या नहीं पहुँची नहीं कह सकते किन्तु कथा की उज्ज्वल किरणों ने अवश्य समाज और व्यक्ति के अन्तर को प्रकाशवान बनाया है।

कथाओं के सामने एक ही भाषा कभी बंधन बन कर नहीं आई। विश्व भर के सभी मनुष्यों की सभी भाषाओं में उसने अपना रूप बदला। वह एक देश से दूसरे देश की सीमा में ठीक हवा की भांति जा मिली। और दूसरे देश में जाकर वह पहिचानने जैसी भी नहीं रही। उसका देशीय अथवा राष्ट्रीय स्वरूप न मालूम क्यों और कैसे बदल जाता है?

किन्तु साथ ही यह बात भी स्पष्ट है कि कथाओं का अपना राष्ट्रीय स्वरूप होता है। भारत की कथाओं में भारतीय आत्मा का निवास है। यदि कोई भारतीय कथा अन्य किसी देश में चली गई है तो उस कथा ने उस राष्ट्र की आत्मा को ग्रहण कर लिया है और अब वह उस राष्ट्र की सम्पत्ति बन चुकी है। इसी प्रकार कथाओं में हमारे अतीत के अनुभवों एवं इतिहास के घटनाओं की छाप भी होती है।

इसी जगह हम विश्वजनीन कथा साहित्य को अपने देश और काल की सीमा में बांध सकते हैं।

भारत एक बहुत बड़ा देश है। यह देश अनेक संस्कृतियों का पवित्र संगम है। इसके इतिहास में अनेक 'देश अथवा राष्ट्र' बने और बिगड़े। इस भू-भाग पर अनेक भाषायें बोली गई—लिखी गई कितनी ही भाषायें अतीत में अपना आप खत्म करके विलीन हो गई। कितनी ही भाषायें निरन्तर रूप से बदलती रहीं और उनका सतत् विकास होता रहा। भारत के भूगोल इतिहास एवं संस्कृति की अपनी अपनी कहानियाँ हैं। इन कहानियों ने भारत को निश्चित मार्गों में बांधा और उन्हीं मार्गों को निश्चित 'अनुभवों' और 'आवश्यकताओं' के अनुरूप ढालने का प्रयत्न किया। इसीलिए हम भारत को विभिन्न संस्कृतियों का एक महान देश कहते हैं।

भारत के पश्चिमी छोर पर एक प्रदेश है जो राजस्थान के नाम से जाना जाता है। इतिहास के उहापोह और विभिन्न कबीलों के निकट सम्पर्क के कारण धीरे-धीरे यह प्रदेश अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता के तत्वों को एकत्रित करने लगा। प्रारंभ में राजस्थान की सांस्कृतिक सीमायें एकदम स्पष्ट नहीं थीं जैसी आज हैं। इतिहास के दौर में अनेक बार राजस्थान की सांस्कृतिक सीमायें पंजाब सिंध मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश एवं गुजरात की सीमाओं में प्रवेश कर जातीं और कभी-कभी इन पड़ौसी प्रदेशों का गहरा प्रभाव राजस्थान की सीमा पर पड़ने लगता। मध्यकाल में अनेक राज्य बनते और बिगड़ते थे—उनके सीमा-परिवर्तनों के साथ-साथ प्रदेशों का स्वरूप भी बनता और बिगड़ता था। किन्तु इसी दौर में धीरे-धीरे, भारत की वर्तमान राज्यों की निश्चित सीमायें बनना प्रारम्भ हो गई थीं—इन सीमाओं के निर्माण के पीछे आर्थिक ढांचे की सम्पन्नता राजनीति अथवा राज्यों की स्थिति रहन-सहन खान-पान भाषा एवं संस्कृति की एकता तथा इतिहास एवं भूगोल के अनुभवों का पुष्ट आधार था।

इन्हीं मुख्य आधारों पर राजस्थान की सांस्कृतिक इकाई का जन्म हुआ। इस प्रदेश की भाषा—राजस्थानी ने अपना विशिष्ट भाषागत स्वरूप ग्रहण करना प्रारम्भ किया। यह अपभ्रंश से जन्मी किन्तु उसने अपने निकट के प्रदेश गुजराती एवं पंजाबी से पृथक ही स्वरूप ग्रहण किया। अपभ्रंश के ठीक पश्चात राजस्थानी भाषा के निर्माण का काल सातवीं शताब्दी के बाद से प्रारंभ हो जाना चाहिये। इसी काल से विभिन्न अपभ्रंशों का स्वरूप विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं में समाहित होकर निश्चित स्वरूप लेने लगा था।

जब राजस्थान प्रदेश की सांस्कृतिक सीमायें बनने लगीं और उसकी भाषा का स्वरूप स्थिर होने लगा तो सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अनुभवों के आधार पर राजस्थानी भाषा में साहित्य-सृजन होना प्रारंभ हुआ। ११ वीं शताब्दी तक आते-आते तो राजस्थानी भाषा में महत्वपूर्ण और सुन्दर ग्रंथों की रचना होने लगी। साथ ही यह भी निश्चित है कि राजस्थानी की रचनायें भारतीय संस्कृति की ही एक पवित्र धारा बनी रहीं। उसका मुख्य प्रेरणा स्रोत संस्कृत प्राकृत एवं अपभ्रंश का वाङ्मय ही था।

राजस्थानी भाषा के निर्माण में राजस्थानी बातों अथवा कथाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। यह कथायें पद्यबद्ध भी लिखी गई एवं गद्य में भी लिखी गईं। साथ ही साथ कथाओं की दो अन्य समानान्तर धारायें राजस्थान में प्रवाहित होती रहीं। एक धारा तो उन कथाओं की थी जिनको लिपिबद्ध स्वरूप मिला और दूसरी धारा वह थी जो राजस्थान के निवासियों के कंठों में ही जीवित रही—अर्थात यह कथायें केवल कही व सुनी जाती रहीं—उन्हें किसी ने लिखने का प्रयत्न नहीं किया।

प्रस्तुत राजस्थानी बात-संग्रह में राजस्थान की लिपिबद्ध पद्य कथाओं का सम्पादन किया गया है। यह सभी कथायें प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त हुई हैं। इन कथाओं का कथा-स्वरूप के अतिरिक्त भी बहुमूल्य महत्व है। राजस्थानी भाषा के स्वरूप तथा

की समस्त परंपरा भाषा-विज्ञान एवं व्याकरण की दृष्टि से इनका अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

इन कथाओं की कथा-शैली के रूप में समीक्षा करते समय एक बात समझ लेना बहुत आवश्यक है। यह सही है कि यह कथायें गद्य में लिखी गई हैं। इनमें कथानक पात्र एवं चरित्र-चित्रण आदि—सभी कथा के गुण मौजूद हैं। किन्तु साथ ही इन कथाओं का मुख्य प्रयोजन कथा लिखना नहीं था—अपितु कथा को भली प्रकार कह सकने के लिए, उसके मुख्य स्वरूप को स्मृति के रूप में लिपिबद्ध कर लेना मात्र था। राजस्थान की संस्कृति से परिचित लोग भलि भाँति जानते हैं कि मध्यकाल में सभी मुख्य राजघरानों एवं ठिकानेदारों के यहाँ लोकनायकों की ही तरह कथाकार भी रखे जाते थे। उनका काम ही कहानी कहना था। वे कितनी ही रातों एक ही कहानी कहा करते थे। यह कहानी क्या—एक अलिखित वृहदाकाय काव्य उपन्यास ही होता था। इन कथाओं का आन्तरिक रूप-विधान 'कहने की प्रणाली' पर निर्भर करता था। बात कहने में कहने वाले के स्वरों का उतार चढ़ाव उसके हाथों-आँखों के संचालन इशारे और सुनने वाले के साथ उसका एकदम निकट सम्पर्क रहता था। इस कारण सारी कथा में सुनाने वाला एवं सुनने वाले एकाकार हो जाते थे। कहीं-कहीं तो श्रोता ही कहने वाले के वाक्य को पूरा करते थे। कथा कहने की इस कलात्मक प्रणाली में बोलचाल की भाषा नाटकीयता और सुन्दर पद-बद्ध पदों का प्रयोग होता था। कथा का सम्पूर्ण सौन्दर्य उसके सुनने में था। यही सुनाई जाने वाली कथायें धीरे-धीरे कागज की सुविधा के कारण लिपिबद्ध की जाने लगीं। लेकिन कथा का अभिव्यक्त स्वरूप वही 'कहने के तत्व' पर निर्भर बना रहा। लिखते समय वह विस्तार एवं स्वतंत्रता नहीं मिल सकती थी—जो बोलते समय होती है। इसलिए लिपिबद्ध कथा को केवल कही जाने वाली कथा के कलात्मक सौन्दर्य की ओर संकेत मात्र समझना चाहिए।

राजघरानों में पलने वाली इन कथाओं के अलावा धार्मिक आख्यानों का रूप भी मुख्य रूप से सुनाने का ही था। जैन मुनि अथवा नाथ-संप्रदाय के लोगों ने राजस्थानी बात साहित्य को बहुत समृद्ध बनाया और ये धर्मगुरु अपने जीवन-दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए कथा का सहारा लेते थे। इन लोगों द्वारा लिखी गई कथाओं में भी 'कहने का तत्व' ही महत्वपूर्ण रहा।

तीसरे प्रकार की लोक-कथाओं का अस्तित्व राजस्थान के जन-साधारण में था। यह कहते थे सुनते थे हँसते थे सीखते थे और उन्हें भूल जाते थे। कहावत मुहावरे और पहेलियों में वे अपना आत्मानुरंजन करते थे। इन लोक-कथाओं को बहुत कम लिखा गया और आज भी असंख्य कथायें लोगों के कंठों में जीवित हैं।

राजस्थानी बात संग्रह में कुल आठ कथायें हैं। इन कथाओं का विषयानुक्रम विभाजन हम इस प्रकार कर सकते हैं—

१ प्रेम संबंधी	ढोला-मारू री बात जलाल-बूबना री बात

२	इतिहास संबंधी	अमरसिंह गजसिंहोत री बात पदमसिंह री बात सूरे-खींवे कांधळोत री बात
३	प्रतीकात्मक	डाफाळा सूर री बात
४	पौराणिक	पलक दरियाव री बात
५	हितोपदेश	पलक में खलक

राजस्थानी भाषा में प्रेम-संबंधी कथाओं का विपुल भंडार है। उनमें से कुछ ही कथाओं के नामों का उल्लेख करना चाहता हूँ—नागजी-नागवन्ती जींवजी-आमसदे चस्मादे-मोहण लाखां-फूलांणी राणो काछबो रतनां-हमीर मूमल-महेन्दरो सिहामदे सुल्तान बींझा सोरठ एवं बैठवा-ऊजळी। इन सभी कथाओं में प्रेम की प्रशस्ति गाई गई है। समाज की नानारूपात्मक परिस्थितियों एवं घटनाओं के बीच में प्रखर अमर और शाश्वत प्रेम के पुष्प को प्रस्फुटित किया गया है। इन प्रेम-कथाओं में प्रेमियों का पवित्र सहज और मानवीयता का प्रबलतम पक्ष अभिव्यक्त हुआ है। इन प्रेम-कथाओं में जातीय राष्ट्रीय सामाजिक धार्मिक एवं पारिवारिक बंधनों का इंद्रजाल नहीं है। यहां सभी सहज मानव हैं और प्रेम ही उनका जीवन-लक्ष्य है। और लक्ष्य तक पहुँचने में कोई भी कृत्रिम बाधा उनके लिए बंधन नहीं है।

इन प्रेम-कथाओं के संसार में से बात-संग्रह में ढोला-मारू एवं जलाल-बूबना की बातें ली गई हैं। राजस्थान की प्रेम-कथाओं में इन दोनों कथाओं का अन्यतम स्थान है।

ढोला—राजस्थान का सहज सहृदय वीर बलवान और एक औसत नवयुवक है। उसका पालन-पोषण सामन्ती व्यवस्था में हुआ। वह राजकुमार है। उसके हृदय में प्रेम की औसत मात्रा है। वह परिवार में सीधे-सीधे जीवन बिता लेता यदि बचपन में ही उसके माता-पिता उसका विवाह मारवणि से न कर देते तो। ढोले का मोह सुन्दरता से था। उसमें जब मारवणि का विरह-दीप्त संदेश और उसके सौन्दर्य का वर्णन सुना तो उनके औसत मन की प्रेम-भावना जागृत हो उठी। इस संदेश से पूर्व ढोला को अपने शैशवकालीन विवाह का ज्ञान नहीं था। उसे अपने वैवाहिक कर्त्तव्य का ध्यान भी आया। किन्तु इसी बीच में उसके पिता ने उसका विवाह मालवा की एक राजकुमारी माळवणि से कर दिया था। उसके मन में एक क्षण के लिए भी संघर्ष उत्पन्न नहीं हुआ कि वह मारवणि के प्रेम-संदेश को ठुकरा दे। वह चलने को उद्यत हो जाता है।

ढोला-मारू की कथा का नायक-प्रेम कथा का एक साधन मात्र है और साधन होने के नाते वह वे सब कार्य सम्पन्न करता है जो परिस्थितियां उसे करने के लिए बाध्य करती हैं। ढोला के व्यक्तित्व की बागडोर परिस्थितियों के हाथ होती है। इसके विपरीत इस कथा में मारवणि एवं माळवणि का चरित्र कहीं अधिक सकारात्मक है। मारवणि को ज्योंही ज्ञात होता है कि उसका विवाह ढोला के साथ हो चुका है वह नवयौवना अपने जीवन की सम्पूर्ण एकाग्रता से ढोला को प्राप्त करने की कोशिश करने लगती है। वह ढोला तक संदेश पहुँचाने

की कोशिश करती है। उसके पिता ब्राह्मण को भेजना चाहते हैं किन्तु मारवणि तो ब्राह्मण को 'बीतस बात' कह कर भेजना नहीं चाहती। अत में ढाढ़ियों को भेजा जाता है। मारवणि इससे भी संतुष्ट नहीं है। वह स्वयं प्रेम-संदेश को रूप देती है। ढाढ़ी उसी के संदेश के कारण ढोला के मन पर काबू पा सके।

ढोला जब पूंगळ आ पहुँचता है और मारवणि के साथ वह वापस लौटता है तो ऊमर सूमरा के चंगुल से निकालने के लिए मारवणि की ही चतुराई काम में आती है। ढोला तो निपट मारू के प्रेम का 'साधन मात्र' है जिसका मानो निर्माण ही मारू के प्रेम की अभिव्यंजना के लिए किया गया हो। ढोला तो एक रसिक प्रेमी है जो मारवणि का सौन्दर्य वर्णन सुन कर उसकी ओर लालायित हो उठता है और जब उसे मारू की वृद्ध अवस्था या अनुन्दरता की खबर मिलती है तो निराश हो जाता है। किन्तु मारू के सामने ढोला के रूप या सौन्दय का कोई अर्थ नहीं है।

मारवणि के समान ही मालवणि का चरित्र भी सकारात्मक है। वह चतुर, क्रूर, गर्वीली और अपने पति पर एकाधिकार चाहने वाली निरंकुश स्त्री है। अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए वह अमानवीय कृत्य करते हुए भी नहीं झिझकती। अपने स्वार्थ के सामने वह साधारण शिष्टता को कुछ भी नहीं गिनती। मालवणि की इस अदूरदर्शिता एवं क्रूरता की वजह से ही मारू के प्रेम के प्रति अद्भुत सहानुभूति जागृत होने लगती है। ढोला और मारू के मिलन में सबसे बड़ी बाधा मालवणि की ही थी।

ढोला-मारू की प्रेम-कथा एक साधारण यथार्थ शैली की कथा ही होती यदि इस कथा में इतने सुन्दर एवं हृदयग्राही काव्य प्रसंग और सजीव एवं सशक्त काव्य-अभिव्यंजना नहीं होती। इस यथार्थ कथा में दो प्रसंग ऐसे हैं जहाँ 'तथ्य' को कला-सौन्दर्य के लिए 'विकृत' किया गया है। यह प्रसंग है ऊँट से मालवणि एवं ढोला की बातचीत तथा इन्हीं दोनों पात्रों के बीच में तोते की बातचीत। पशुओं के बोलने अथवा उनके मानवीय व्यवहार का यह आरोप लोक कथा का प्रभावशाली गुण है।

प्रेम की दूसरी कथा है—जलाल-बूबना। ढोला-मारू से यह कथा एकदम भिन्न है। ढोला एक औसत नवयुवक था। जलाल औसत नहीं असाधारण है। वह वीर है, गर्वीला है, चतुर है, कल्पनाशील है, अपने निश्चय का पक्का है। ढोला परिस्थितियों के वश रहता था, जलाल परिस्थितियों को वश में रखना जानता था। इसी प्रकार इस कथा में बूबना भी चतुर, भावुक, सुन्दर और अपने निश्चय की दृढ़ नायिका चित्रित की गई है। दोनों की चतुरता के कारण ही उनका प्रिय संबंध निभ सका।

इस कथा का एक अद्भुत पक्ष यह है कि जलाल अपनी मामा की विवाहिता बूबना से प्रेम करता था। जलाल का विवाह बूबना की बड़ी बहन मूमना से हुआ था। बादशाह अमतमायची के हरम में जाकर अपनी प्रियतमा से मिल कर आजाना जलाल के ही साहस का काम था। बादशाह को जलाल के इस अनैतिक कार्य के बारे में उसकी अन्य पत्नियाँ बार बार कहती थी। किन्तु जलाल या बूबना कोई न कोई ऐसा हल निकाल देते थे जिससे

बादशाह का संदेह मिट जाता था। बादशाह को अपने मानजे जलाल की बहादुरी का गर्व भी था इसलिए वह उसे कहना भी नहीं चाहता था। कठिन से कठिन परीक्षाओं में भी जलाल बूबना के पास जाने में नहीं हिचका। उसने सांपों शेरों और पानी के पहरों को पार किया फूलों के ढेर में छिपा रहा चौकीदार को जान से मार डालना पड़ा किन्तु जलाल अपने प्रेम की बाजी में हार जाने को तैयार नहीं था। इस कथा में सुन्दर चरित्र-चित्रण हुआ है। कथा की घटनाओं के मुकाव भी बहुत कलात्मक हैं। जलाल की बुद्धिमानी की पृष्ठभूमि में बादशाह अमतमायची की विश्वासभरी बेवकूफी के कारण पाठकों के होठों पर निरन्तर मुस्कान रहती है। अजीब बात तो यह है कि अपनी मामी को प्रियतमा बना कर स्नेह करने वाले प्रेमी पर पाठक का क्रोध नहीं सहानुभूति उमड़ती है। प्रेम का ऐसा सहानुभूतिपूर्ण चित्रण उपस्थित करना निश्चय ही कथा की उच्चता का उदाहरण है या प्रेम के क्षणों का जादू है।

ऐतिहासिक कथानकों के सभी पात्र इतिहास-सम्मत हैं। सही बात तो यह है कि इन कथानकों के सामने एक स्पष्ट लक्ष्य महसूस नहीं होता। इन बातों का ध्येय न कथा कहना है और न पूरे अर्थों में इतिहास को सुरक्षित रखना है। इन कथाओं का जब इस कथानक की दृष्टि से विश्लेषण करते हैं तो इतिहास की गुत्थियों में उलझ जाते हैं और जब इनमें इतिहास की तलाश करते हैं तो कथानक की रचना हावी होने लगती है। ये कथाएँ, इसलिए, इतिहास और साहित्य के बीच की एक अरवंत दुर्लभ कड़ी हैं। किन्तु इनका एक महत्व है। इन कथाओं में इतिहास की केवल इतिवृत्तात्मक प्रवृत्ति नहीं है इतिवृत्त में मनुष्य की सजीवता का भास है। इसलिए अमरसिंह या पद्मसिंह इतिहास की कठपुतली की भाँति महसूस नहीं होते बल्कि वे सजीव प्राणियों अथवा पात्रों की भाँति जीवित-से महसूस होते हैं।

यहाँ यह कहना आवश्यक नहीं है कि अमरसिंह और पद्मसिंह वीर पुरुष थे अभिमानी थे और अपनी वीरता की वजह से वे दिल्ली के बादशाहों के यहाँ आदर एवं भय की नजर से देखे जाते थे।

इन ऐतिहासिक कथाओं के विश्लेषण का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है—उस समय के समाज का यथातथ्य चित्रण। इन दोनों कथाओं का सम्बन्ध भारत की एक मुस्लिम सत्ता से है। दोनों ही कथाओं में राजस्थान के रजवाड़ों एवं दिल्ली की सत्ता के आन्तरिक सम्बन्धों का पता चलता है। मध्यकाल में सामन्ती राज्यों के षड़यन्त्रों का ताना-बाना कितना उलझ चुका था यह इन कथाओं से स्पष्टतया समझा जा सकता है। चारों ओर युद्ध चारों ओर विग्रह मार-काट जीतना हारना। और इन्हीं के बीच में वीरता के मापदंडों का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन। मध्यकालीन भारत की सर्वत्र व्याप्त सामाजिक स्थिति का दिग्दर्शन।

सूरे एवं खीवे की कथा—अन्य दो ऐतिहासिक कहानियों से भिन्न है। इस कथा में इतिहास के साथ ही साथ कथा के गुण भी हैं। सूरे एवं खीवे का अपने मौसेरे भाई राठूड़ा के यहाँ जाना और बालक के स्वभाव की उद्दंडता के कारण एकदम झगड़ा हो जाना कथा

जो शुरू से ही आकर्षक बना देता है। पाठक की उत्सुकता बढ़ने लगती है। राजूखाँ का यह प्रसंग सूरे एवं सींवे के घुस जाता है कि क्या वे उसकी घोड़ी ले जायेंगे? बात ही बात में वीरोचित दम्भ के कारण इस छोटी सी बात पर झगड़ा हो जाता है। दो मौसेरे भाई लड़ पड़ते हैं। भूपर सींखे की चालाकी से घोड़ी को उड़ा लेते हैं। राजूखाँ घोड़ी के विरह में फकीर होकर निकल जाता है। घूमते-घूमते फिर एक दिन अपने मौसेरे भाइयों के यहाँ आ पहुँचता है। वहाँ उसकी घोड़ी बंधी हुई होती है। उसे ले भागता है। युद्ध होता है। सूरा-सींवा भी युद्धस्थली में काम आ जाते हैं।

सामन्ती-व्यवस्था का शासक वर्ग दंभी और बात की टेक पर मर मिटने वाला होता है। बात चाहे कितनी ही छोटी क्यों न हो। इतिहास में इसके अनेकानेक उदाहरण मिल जाते हैं। राणा प्रताप और शक्तिसिंह की लड़ाई इसी बात पर हो गई—सूअर को किसने पहले मारा? बड़ा भाई छोटे भाई की पहल स्वीकार नहीं कर रहा था और छोटा भाई बड़े भाई की सतर्कता पर सन्देह कर रहा था। यही बात सूरे एवं सींवे की कथा में भी है। उसके तरकश के चाबुक का हाथ लगाना ही चिन्ता की बात हो गई। यहीं से कथा का बीज बढ़ते-बढ़ते युद्ध भूमि की विकराल स्थिति में बदल जाता है। निरपेक्ष वीरता काव्य के समान *नाजुक इज्जत और प्रतिशोध की अग्नि इन्हीं तीन शब्दों* में सामन्ती-व्यवस्था के सामन्त का मानसिक चित्रण उपस्थित किया जा सकता है।

सूरे एवं सींवे की बात का एक और महत्त्वपूर्ण सामाजिक महत्व है। सूरा एवं सींवा दोनों भाई राजपूत थे किन्तु उनका मौसेरा भाई राजूखाँ मुसलमान था। उनमें परस्पर स्नेह भी था। एक दूसरे के प्रति भाईचारे का निश्चित भाव था। यदि आपस में झगड़ा नहीं होता तो उनके स्नेह में कमी नहीं आती। हिन्दू एवं मुसलमानों के इस पारिवारिक संबंध को कथा ने अत्यन्त स्वाभाविक भाव से निभाया है।

इन कथाओं के पश्चात 'डाबाळी सूर' एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कथा है। यह प्रतीक शैली में लिखी गई एक वीरता की कहानी है। यहाँ वीरोचित कार्यों का आरोपण एक सूअर परिवार पर किया गया है। यहाँ यह कह देना भी आवश्यक है कि अन्य मानवीय मूल्यों की भाँति 'वीरता' का मूल्य भी समाज-सापेक्ष है। कल जिस कार्य में वीरता का भाव था वह सम्भवतया आज उस रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता। मुगल दरबार में खड़े होकर पर्वतसिंह जिस वीर-भाव से किसी का नशा पाबर-भूमी की तरह उतार सकते थे वैसे ही भाव की जनतंत्रीय पद्धति से चुनी विधान सभा का कोई सदस्य यही व्यवहार नहीं कर सकता। अतः 'डाबाळी सूर' की वीरता का प्रतीक अपने युग की वीर-भावना के अनुकूल एवं अनुरूप है। किन्तु सहज ऐतिहासिक कथा और इस प्रतीक कथा में एक बहुत बड़ा अन्तर है। सूअर का प्रतीकात्मक चित्रण होने के कारण उसमें साधारणीकरण का भाव आ गया है। इसलिए 'वीरता' स्थान काल एवं घटना में निहित न होकर एक अमूर्त तत्व के रूप में व्यक्त हो सकी है। इसलिए हमें कथा के माध्यम से काल की परिधि में और परिधि से परे वीरता का अमूर्त भाव ग्रहण करना पड़ता है।

'प्रतीक' के ही कारण इस कथा में भी एक प्रकार से सत्य का बिम्बात्मक प्रयोग हुआ है। वीरता के तथ्य का सूअर के परिवार पर आरोपण किया गया है। और उसके बाद सूअर की व्यवहारगत और स्वभावजन्य परिस्थितियों के आधार पर मानवोचित वीर-भाव की अभिव्यंजना की गई है। सूअर के जीवन से उन्हीं घटनाओं अथवा व्यवहारों को लिया गया है जो मनुष्य के कार्यों के सम-तुल्य रखे जा सकते हैं। यहाँ यह कहना भी असंगत नहीं होगा कि प्रत्येक बिम्बात्मक कथा में एक बार तथ्य को एक विशिष्ट प्रकार से मोड़ देने के बाद कथाकार को उस 'मोड़' के अनुसार ही संपूर्ण सम-तुल्यता का अनुपात बिठाना पड़ता है। 'डाकाळा सूर' की कथा में यह 'बिम्ब' एक वीर-सूअर परिवार के प्रतीक रूप में स्थापित किया गया और सफलतापूर्वक निभाया भी गया।

इस कथा में एक वीर परिवार का प्रतीक सूअर-परिवार को बताया गया। आबू की गिरि कन्दराओं में रहने वाले—वहाँ के निर्द्वन्द्व वीर सूअर को किस बात की कमी थी? सूअर के परिवार के लिए आबू का प्राकृतिक सौन्दर्य फली-फूली और भूमती हुई वनस्पति कलकल करते बहने वाले झरने और आकाश को चूमने वाले विकट पहाड़। ऐसी ही सुन्दरता और भयानकता के बीच में सूअर का परिवार रहता था। उनके पाँच पुत्र हुये। पाँचों की जन्म-पत्रियाँ बनीं और इन जन्म-पत्रियों के बहाने से कथाकार ने भविष्य की ओर पहिले ही संकेत कर दिया।

इस कथा में सूअरनी और सूअर का युद्ध-वर्णन उनकी सहज-वीरता की पारस्परिक बातचीत जय का अंश मात्र भी नहीं साहस अपने बालकों को युद्ध की शिक्षा अन्य किसी के राज्य की सीमा पर अनधिकार किन्तु निश्चित अधिकार, सेना को तितर-बितर कर देने की अतुलनीय शक्ति और आक्रमण को सहने में असीम वीरता का परिचय मिलता है। इस कथा के पीछे एक और अनुभव की बात भी है। राजस्थान में सूअर का शिकार स्वयं राजाओं का एक मनपसन्द खेल रहा है। सारी कथा में सूअर के मार्ग-कलापों एवं युद्ध के तरीकों का सूक्ष्म वर्णन हुआ है।

'डाकाळा सूर' की बात में कुछ ऐसे मार्मिक संकेत भी आये हैं जिससे 'प्रतीक' का भाव स्पष्टतर हो गया है। यह सूअर एवं सूअरनी वस्तुतः पशु नहीं थे। ये कुबेर के यक्ष थे और कुबेर के श्राप के कारण ही इनको बारह वर्ष की तपस्या करने के बाद जीवन-संघर्ष में आने का अवसर मिला। सूअर, अन्त में मरते समय कहता है कि मैं वीर के हाथ से मर कर वीर गति को प्राप्त हो रहा हूँ। कथा में भावों की महत्ता शिव की आराधना और श्राप व तपस्या का वर्णन भी आया है। यह सब बातें कथाकार इसीलिए कहना चाहता है कि कहीं पाठक यह न समझलें कि यह केवल सूअर की स्थूल वीरता का चित्रण है। सूअर को मनुष्य बनाने के लिए 'श्राप' की कल्पना सहज ही करली गई है।

इस कथा को व्यंग्य कथा नहीं कहना चाहिए। क्योंकि कथा का मुख्य प्रयोजन हास्य नहीं है— अपितु एक गंभीर भाव 'उत्साह और वीरत्व' है। इस कथा में कहीं भी यह भाव नहीं आता है कि वीर पुरुष का प्रतीक—सूअर एक पशु मात्र है। सूअर के परिवार की

वीरता का संकेत हमें 'व्यंग' में नहीं प्रतीक में ही खोजना चाहिए।

राजस्थानी बात संग्रह में एक मनुष्य के हित के उपरेण की बात भी है। हितोपदेश की इस कहानी में घटना ही प्रधान है। पात्रों का प्रयास तो केवल एक उपदेश की बात को व्यक्त करने के लिए किया गया है। सर्प और उसमें बचाने वाली ऐसी कथायें विभिन्न देशों विभिन्न भाषाओं और एक ही भाषा में विभिन्न रूपों में प्रचलित हैं। किन्तु 'पराग में तलक' कथा के बीच में एक दिमागदार बादशाह की सुन्दर प्रासंगिक कथा है। प्रासंगिक कथाओं का प्राचीन बातों में खूब ही प्रयोग होता था। हर आदमी अपना काम करने के लिए एक नई कथा का आधार लेता था। बृहत्कथा सरित्सागर में इसी प्रासंगिक-कथा-पद्धति का आधार लिया गया है।

विवेचन की अन्तिम कहानी है—पलक दरियाव री बात। मैंने इस कथा को 'पुराण संबंधी' कहा है। यद्यपि ब्राह्मण उपनिषद एवं पुराणों में अनेकानेक प्रसंगानुकूल कथायें हैं। किंतु सभी कथाओं का जीवन के प्रति भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण है और साथ ही उनका पृथक पृथक ऐतिहासिक धार्मिक दार्शनिक एवं सामाजिक आधार है। पुराणों की कथाओं में वेद ब्राह्मण और उपनिषदों की कथाओं की स्पष्टता नहीं है। भारतीय संस्कृति के विकास में पुराणों का उदय बहुत बाद में हुआ है इसलिए पुराणों की कथाओं में हर प्रकार की चमत्कारिता और देवी-देवताओं के अलौकिक कार्यों के अतिरंजनापूर्ण वर्णन आने लगे। उनमें अनेकानेक कथाओं का एक साथ ही समावेश होने लगा।

अवतारों के मंगलकारी कार्यों का वर्णन मनुष्यों की कठिन परीक्षाएं, ईश्वरीय सत्ता से संपूर्ण होने वाले अद्भुत कार्य और ऋषियों-मुनियों के अलौकिक अनुभवों से पुराणों की कथाएं परिपूर्ण हैं।

पलक दरियाव री बात सीधे पुराणों की कथा नहीं है, किन्तु उसका कथात्मक कलेवर पौराणिक कथाओं के समान है। यों पुराणों का बहुत कुछ आधार वैष्णव व विष्णु के स्वरूप पर भी निर्भर है। यह कथा भी विष्णु के अलौकिक कार्यों की प्रशस्ति के रूप में लिखी गई है।

इस कथा में से यदि हम अलौकिक तत्व को निकाल देते हैं तो कथानक बहुत सहज और मनोरम बन जाता है। इस कथा में भगवान विष्णु की लीला का तत्व कथानक की प्रभविष्णुता को तीव्रतम बनाता है। इस अलौकिक तत्व के कारण ही देवीदास और कुंवर विचित्र—एक ही 'व्यक्ति' बने रह सके। कुंवर विचित्र के जन्म से युवक होने तक के कुछ वर्ष—कुछ ही क्षणों के रूप में बयान किये गये हैं। अपने पिता के पास से उसका पुत्र देवीदास विष्णु भगवान की पूजा के लिए गया और वहीं लक्ष्मी की अनुकम्पा से वह भगवान से 'पलक दरियाव' का तमाशा देखने का आग्रह करता है। उधर उसके पिता भोजन की थाली पर पुत्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

इन्हीं कुछ क्षणों में देवीदास राजा रूपकरण के यहां जन्म भी लेता है, विवाह भी करता है और उसके पुत्र भी उत्पन्न हो जाता है। अन्त में राजा के यहां से मुक्त होकर वह वापस देवीदास बन जाता है, और जब वह वापस अपने घर लौटता है तो उसके पिता

उसी पालकी पर बैठे हुए हैं। देवीदास—कुंवर विचित्र की सारी जिन्दगी जीकर, कुछ ही क्षण में वह अपने पिता के पास आ जाता है। यहाँ काल की यथार्थ सीमाओं के अतिक्रमण के पीछे एक अलौकिक अथवा दिव्य चमत्कारी सत्ता के विश्वास की गहरी नींव डाली गई है। इसलिए काल के अतिक्रमण की ओर हमारा यथार्थवादी मन जाने का प्रयत्न नहीं करता।

कथा के तत्त्वों की दृष्टि से यह इस संग्रह की सर्वश्रेष्ठ रचना है। घटनाओं का उद्भव पात्रों का निश्चित व आवश्यक स्थल पर प्रस्तुत आगे आने वाले महत्त्वपूर्ण परिणामों का पूर्व-संकेत पाठक के मन को आग्रह आकर्षित करने की शक्ति एवं कथा की सब कर्षणमयी घटनाओं का समग्र और चरम तक विकास—यह सभी गुण इस कथा में हैं। यों तो इस कथा का पौराणिक प्रयोजन भगवान विष्णु की अपरम्पार माया उनकी कृपाभूता उनकी अलौकिक शक्ति और अपने भक्तजनों पर स्नेह है किन्तु यदि हम पौराणिकता के इस तात्त्विक पर्दे को हटा कर देखें तो हमें सांसारिक मनुष्यों के मन की प्रकृत स्थितियों के दर्शन होते हैं। पिता का अपने पुत्र के प्रति प्रेम देवीदास की अपने कार्य के प्रति लगन कुंवर विचित्र का मित्र-भाव रामदास आदि की स्वामिभक्ति सभी सामाजिक जीवन को सभ्य बनाने वाले तत्त्व हैं। इन्हीं भावों के पोषण पर कथा के घटनाओं का क्रम निर्मित हुआ है।

राजस्थानी बात संग्रह की कथाओं में राजस्थान के निवासियों के उत्तर-मध्यकालीन विश्वासों एवं परिस्थितियों का चित्रण हुआ है। यदि हम इन कथाओं के द्वारा उस समय के समाज को परखना चाहें तो पर्याप्त सामग्री मिल सकती है। उनका रहन-सहन खान-पान वेश-भूषा वेषभूषा मकान-महल यात्रा के तरीके व रास्ते युद्ध की सामग्री राजाओं के पारस्परिक एवं बादशाहों से संबंध आम आदमी का साधारण जीवन सुकाल और दुष्काल की समस्यायें देश-वर्णन पुरुष का स्वामित्व और स्त्री का समर्पण सामाजिक संबंध पति-पत्नी सास-बहू पिता-पुत्र के संबंध, मुगल-राज्य की हकीकत राजपूतों का मुसलमानों से संबंध राजनैतिक चक्रव्यूह आदि आदि जीवन के अनेक प्रसंगों का चित्रण इन कथाओं में मिलता है। किन्तु यह सभी प्रसंग तो मनुष्य के बाह्य-जीवन से सम्बन्धित हैं। उसका अन्तरतम 'मन' तो उसकी अनुभूतियों विचारों आकांक्षाओं और कार्य कलापों से ही जाना जा सकता है। राजस्थान का उत्तर-मध्यकालीन औसत मनुष्य सहज ही वीरत्व और गौरव की उद्दीप्त भावना पर मर मिटने वाला सहज व्यक्ति था। उसके मन में भी अपने जीवन के सुकोमल क्षणों में प्रेम का सौरभ महक उठता था। वह अपने देश पर, अपनी मातृभूमि पर न्यौछावर होना जानता था अपने मित्रों के लिए सभी कुछ करने को तत्पर था अवस्था के अनुभव को मन ही मन पूजता था अपनी बात का पक्का था दृढ़-निश्चयी था अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में जीवन की बाजी लगाना उसके बाएँ हाथ का काम था धर्म भीरु था अन्ध विश्वासों का भार उसके कन्धे पर था ईश्वर और समाज के विधान को ज्यों का त्यों स्वीकार करता था स्वामिभक्त रहना जानता था नीतिवान था समय पड़ने पर अपनी शक्ति और बुद्धि का निश्चित ही प्रयोग करता था जीवन को

जीना जानता था कोई न कोई लक्ष्य उसके सामने था निष्प्रयोजन जीवन उसके लिए मौत थी उसके जीवन में एक सुनिश्चित दर्शन चाहे न हो—किन्तु जीवन के कार्यक्रम की मोटी रूपरेखा उसके सामने स्पष्ट थी। अपने व्रत उत्सव त्यौहारों में वह मस्त रहता था और अन्त में वह मनुष्य के अविरल विकास का सहायक बनना चाहता था। वह ऐसे जीवन-मूल्यों की स्थापना करना चाहता था जिससे मनुष्य का भविष्य उज्ज्वल हो सके। यह सभी तथ्य इन्हीं कथाओं से उद्घाटित होते हैं। यह सही है कि इन कथाओं में अनेक ऐसी बातें हैं जो समाज एवं कालसापेक्ष होने के कारण आज के जीवन-यथार्थ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खोटी दिखाई देने लगी हैं किन्तु उनके पीछे जो तथ्य और संकेत हैं उन्हीं को ऐतिहासिक मूल्यांकन के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए। हम उस समय से बहुत आगे निकल चुके हैं। इसलिए उस सामाजिक मनुष्य से हम कहीं अधिक उमर वाले हो चुके हैं अतः बहुत दूर तक उनकी कलापूर्ण क्रीडाओं को 'वात्सल्य भाव' से देखना भी आवश्यक है।

कथा काव्य-कला का एक अंग है। काव्य के सभी प्रयोजन कथा के भी प्रयोजन हैं। इसलिए अनुभवों की विविधता और अनुभूतियों की अमूर्त-छायाओं के संसार में मनुष्य कथाओं से संतुष्टि और अपने जीवन-दर्शन का तथ्य ग्रहण करता है। कथाओं के माध्यम से पाठक या श्रोता घटनाओं के संवपक्षीय विवेक और मनुष्य के व्यवहारों की गहराई में उतरने की क्षमता प्राप्त करता है। कथायें—लोकजीवन की संघर्षपूर्ण यात्रा की हृदयस्थल में चलती हैं। और इन कथाओं में कुछ तत्त्व ही ऐसा है कि साधारण मनुष्य निश्चित होकर इनके सहारे अपने दैनिन्दिन जीवन के कर्तव्य और अकर्तव्य का निर्णय ले सकता है। इन कथाओं का गुण अथवा अवगुण केवल मनोरंजकता और धर्म की भुलाने वाली शक्ति ही नहीं है। यह जीवन को क्रियाशील कर्तव्यवान और कर्मप्रधान बनाने में विश्वास रखती हैं। इन कथाओं को समाज की किसी बलवान सत्ता ने बचाने का प्रयत्न नहीं किया। जन साधारण के बीच से ही रसिक पाठकों ने अपने लिए हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार करवाई हैं। और सौभाग्य से वह कथायें हमारे लिए सुरक्षित रह गयी। कथा के साथ ही साथ उस समय के जीवन का सही प्रतिबिंब हमें सुरक्षित मिल गया।

कथाओं की सुरक्षा सहज नहीं थी। इन कथाओं को जीवित रखने के लिए राजस्थान के अनेक अनाम साहित्य-सेवियों ने अपना परिश्रम अपना और समय दिया है और वह भी बिना किसी आशा और आकांक्षा से मानों कथा-साहित्य को सुरक्षित रखना एक निरपेक्ष तपस्या थी।

मानव-जीवन के पग-पग पर कथाओं के सवैगों का पहरा रहता है। जब मनुष्य अबोध शिशु होता है तो कथा गुनगुनाती माता में चिड़ियों के पंखों पर और नानी की बूढ़ी गोद में बैठी हुई—शिशु के साथ जागती है और उसी के साथ सोती है। वही मनुष्य जब बालक हो जाता है तो कथा की भाषा में कुछ सिमटता आ जाती है। तब वह अपना रूप बदल लेती है। बालक के सहज औत्सुक्य को जगाए रखती है और उसका निदान कर उसे संतुष्ट

करती है। जब वही मनुष्य बाप बन जाता है तो कथा शिक्षक बन कर उसे रीति-नीति ज्ञान-विज्ञान और जीने के तरीकों को समझाती है। मनुष्य जब नवयुवक होने लगता है उसकी मसें भीगने लगती हैं तो कथा—प्रेम उदारता त्याग और मनुष्यता की गरिमा लेकर उपस्थित हो जाती है। लेकिन मनुष्य की यह अवस्था बहुत विकट होती है। उसका मन कसे हुए बलवान और मचलते घोड़े की तरह चंचल और अस्थिर रहता है। कथा इस नव जवान युवक पर लगाम का बंधन रखती है। मनुष्य के जीवन का यह अग्नि-परीक्षा-काल होता है। कथाएँ मनुष्य को वनवासी साधुओं की तरह इस मार्ग से सुरक्षित निकाल लाती हैं। आदमी के बुढ़ापे के साथ कहानी भी बूढ़ी हो जाती है। वह लोक-परलोक की चिन्ता में ही अपने जीवन के साथी के साथ घुलने लगती है और अन्त में सच्चे मित्र की तरह मनुष्य की मृत्यु के साथ उसकी चिता की चिन्गारियों में विलीन हो जाती है। और इन्हीं चिन्गारियों के रूप में बिखर कर यह वापस मनुष्य के शिशुत्व के अबोध भोलेपन में पुनर्जन्म ले लेती है।

यही कथा का चिर क्रम है। यही कथा की बात है।

□